246

रूपेश

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

रावणसंहिता

[रावण जीवन चरित, रावण का तंत्र ज्ञान, आयुर्वेद ज्ञान,
ज्योतिष ज्ञान एवं उनकी शिवभक्ति आदि विषयों
से सम्बन्धित अनुपम एवं संग्रहणीय ग्रन्थ]

लेखक
आचार्य पं० शिवकान्त झा
ज्यौतिषरत्न, वेदविशारद

प्रकाशक—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी २२१००१

प्रकाशक—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी
दूरभाष : २३९२५४३
२३९२४७१

©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

लेखक—
आचार्य पं० शिवकान्त झा

मुद्रक—
भारत प्रेस, वाराणसी

दो शब्द

'जिज्ञासा, प्राणी के विज्ञानात्मक-उत्कर्ष की आधारशिला है'', इस तथ्य को प्राय: सभी मानते व जानते हैं। यह भी जानते हैं कि निसर्गत: जिज्ञासु प्राणी अपनी चारों ओर घटित होने वाली घटनाओं के प्रति भी सर्वदा संवेदनशील रहने के आदी रहे हैं। इस आधार पर यह सोचना अनुचित नहीं ही है कि आदि काल से ही मनुष्य खगोलीय घटनाओं के प्रति भी स्वभावत: आकृष्ट होता रहा है। चूँकि आज भी जब लोग रात्रि के समय आकाश की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो उन्हें भव्य, चित्ताकर्षक एवं चमत्कारिक दृश्य स्वत: अपनी ओर आकृष्ट कर, कुछ विशेष सोचने को बाध्य कर देती हैं। निश्चय ही वे आकाशीय चमत्कारिक दृश्य लोगों को आह्लादित एवं आनन्दित करने वाली तो होती ही हैं; आश्चर्योत्पादक व डरावने अनुभव भी प्रदान करती हैं।

जिस प्रकार आकाश में चमकते अनन्त ताराओं को देखकर कभी तो आनन्दानुभूति होती है, कभी ग्रहण, उल्कापात, धूमकेतुओं आदि को देख लोग विस्मित व भयभीत भी हो जाते हैं। उसी प्रकार यह सोचना कथमपि अनुचित नहीं है कि सृष्टि के प्रारम्भिक दिनों में लोग उपरोक्त प्रकार की चमत्कारिक घटनाओं या दृश्यों से निश्चय ही अत्यधिक विस्मित व भयभीत ही होते रहे होंगे, जिन्हें कभी लोगों द्वारा परमेश्वर का कोप भी समझा गया होगा। फिर श्नै:-श्नै: उनके रहस्यों को उद्‌घाटित करने का सार्थक प्रयत्न भी किया गया होगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ रावणसंहिता के प्रवर्त्तक लंकेश्वर दशानन रावण के प्रसङ्ग में देवताओं से भगवान् श्री विष्णु का यह कहना कि वे अभी उसे युद्ध में परास्त नहीं कर सकते, रावण को प्राप्त दिव्य शक्तियों की ओर ही संकेत करता है। यह अजेयता प्रजापति ब्रह्मा से प्राप्त वर के कारण ही थी। इसे प्राप्त करने के लिए रावण ने घोर तपस्या की थी। परन्तु प्राकृतिक कुछ विलक्षणता का परिणाम ही सही मनुष्यों और वानरों की उपेक्षा का फल पराजय के रूप में उसके सामने आया। लेकिन यह क्या कम महत्त्वपूर्ण है कि लंकेश को पराजित करने के लिए निराकार को साकार रूप लेना पड़ा। उनके युद्ध की चर्चा करते समय किसी ने सच ही कहा है—वैसा कोई युद्ध न कभी हुआ और न कभी होगा।

रावण ने अपने अभियान को पूरा करने के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों साधनों को अपनाया। वह तंत्रशास्त्र का परम ज्ञाता था, उसने औषध ज्ञान को स्वयं जांचा-परखा और फिर प्रयोग किया था, वह एक अच्छा दैवज्ञ भी था। इस ग्रन्थ

में उसके इन्हीं विविध रूपों पर प्राप्त सामग्रियों की सहायता से प्रकाश डाला गया है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि 'रावण संहिता' नाम का कोई भी ग्रंथ मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। किसी अंश में सही हो सकता है, परन्तु सम्पूर्णता से अलभ्य भी नहीं कहा जा सकता है।

पौराणिक और ज्यौतिषीय गणना के आधार पर रावण की मृत्यु को लगभग नौ लाख वर्ष हो चुके हैं और इतने लंबे समय तक किसी ग्रंथ का मूल रूप में रह पाना संभव नहीं है। अर्थात् समय-समय पर इसमें काफी कुछ जुड़ा ही है। फिर भी प्रस्तुत ग्रंथ में उसकी उपलब्ध मौलिकता को बनाए रखते हुए ही कुछ ऐसा प्रयास किया गया है कि इसमें कुछ इस प्रकार की जानकारी और उपयोगी सामग्री जोड़ी जाए जिससे इस ग्रन्थ की मूल विषय सामग्री की जटिलता को कम कर सके तथा उसे अधिक महत्त्वशाली और उपयोगी भी बनाने में सहायक हो सके।

विश्वासपूर्वक यह कहा जा सकता है कि यह 'रावणसंहिता' ग्रंथ प्राचीन साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों को महाबली व शास्त्र मर्मज्ञ रावण के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी देने में सक्षम हो सकेगा।

अन्त में यह कि ग्रन्थ प्रलेखनादि व प्रूफादिशोधन के समय जिन महानुभावों का मुझे सहयोग प्राप्त हुआ और जिनके ग्रन्थ या पाण्डुलिपियों से सहयोग मिला, उन लोगों का हृदय से आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ। विशेषकर प्रकाशक महोदय की मैं मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए उनकी चिरायु की कामना करता हूँ, जिनके सत्प्रयास से ही यह ग्रन्थ आप विज्ञजनों की सेवा में प्रस्तुत हो सका है।

वैसे मैंने ग्रन्थ के प्रूफादि शोधन करने में निश्चय ही प्रमाद रहित प्रयास किया है। फिर भी यदि कहीं अशुद्धि रह गई हो, तो गलती करना मानवस्वभाव मान कर विद्वान् पाठक उसे सुधार कर पढ़ेंगे और सूचित भी करेंगे, तो बड़ी कृपा होगी।

अक्षय सप्तमी २०६६ **शिवकान्त झा**

वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक
[प्रथम परिच्छेद]	
रावण जीवन वृत्तान्त	**२१-६२**
विश्रवा की उत्पत्ति प्रसङ्ग वर्णन	२२
वैश्रवण कुबेर की कथा	२४
राक्षसों का पूर्व इतिहास तथा उन्हें महादेव-पार्वती का वरदान	२५
सुकेश का वंश-विस्तार	२६
सुकेश के पुत्रों द्वारा सताये गये देवताओं की ओर से विष्णुजी का कुपित हो उन्हें मारने जाना	२८
देवासुर संग्राम	३०
राक्षस माली और माल्यवान् के मरने पर सुमाली का रसातल-वास और कुबेर का लंका में वास	३१
रावण, कुम्भकर्ण, सूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म	३२
रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण का तप तथा वरदान	३४
कुबेर का लंकापुरी त्याग कैलाश पर अलकापुरी बसाना तथा रावण का लंका प्रवेश	३६
रावण को सूर्पणखा के विवाह की चिन्ता	३८
रावण का कुबेर के दूत को मारना	३९
रावण का विजय हेतु पर्यटन और कुबेर से युद्ध	३९
रावण का कुबेर को युद्ध में परास्त कर पुष्पक विमान प्राप्त करना	४०
रावण को नन्दी का शाप	४१
वेदवती द्वारा रावण को शाप	४२
रावण का राजा मरुत् को जीतना	४३
इक्ष्वाकुवंशी महाराज अनरण्य का रावण को शाप	४४
नारद जी द्वारा रावण को यमपुर विजय की प्रेरणा	४५
रावण-यमराज युद्ध	४६
रावण का यमराज को जीतकर आगे बढ़ना	४७
रावण का बहुत-सी कन्याओं और स्त्रियों का हरण करना तथा उनसे शापित होना	४९
खर और दूषण को जनस्थान भेजना	४९
रावण को नलकूबर का शाप	५१
देवताओं और राक्षसों का युद्ध तथा सुमाली वध	४३
मेघनाद का इन्द्र को बाँधकर लंका लाना	५४
ब्रह्मा का वर दे इन्द्र को छुड़ाना	५५
रावण की पराजय का इतिहास	५६
सहस्त्रार्जुन द्वारा रावण का बाँधा जाना	५७
पुलस्त्यजी का रावण को मुक्त कराना तथा रावण का लज्जित हो लंका को लौट आना	५९
जब रावण किष्किन्धा गया था	६०
[द्वितीय परिच्छेद]	
तन्त्र मन्त्र साधना	**६३-१७८**
षट्-कर्म	६४
षट्-कर्म-लक्षणम्	६४
विषय-कथनम्	६४
मारण-प्रयोग	६६
ज्वर द्वारा शत्रु का मारण	६७
आर्द्रपटी साधन का विनियोग	६८
बैरिमारण कवच	६९
काली का ध्यान	६९
माला-निर्णय	७१
जप-लक्षण	७१
मोहनाभिधान	७३
जल स्तम्भन का प्रयोग	७४
अग्नि स्तम्भन का प्रयोग	७५
आसन स्तम्भन का प्रयोग	७५
बुद्धि स्तम्भन प्रयोग	७५
मेघ स्तम्भन-प्रयोग	७६

विषय	पृष्ठांक
निद्रा स्तम्भन का प्रयोग	७६
सैन्य स्तम्भन प्रयोग	७६
सैन्य पलायन प्रयोग	७६
विद्वेषण प्रयोग	७७
उच्चाटन प्रयोग	७८
वशीकरण प्रयोग	७९
रावशीकरण	७९
कुचकाठिन्य की विधि	८१
योनि संस्कार	८१
रोभ-नाशन	८२
योनि-संकोचन	८२
स्त्री-द्रावण	८२
आकर्षण प्रयोग	८३
यक्षिणी साधन	८४
महायक्षिणी साधन	८४
भूतिनीसाधनम्	८५
शव-श्मशान-साधन	८६
मृतसञ्जीवनी प्रयोग	८७
विद्याधर सिद्धि	८८
भूतकरणम्	८८
कुष्ठीकरण प्रयोग	९०
मक्षिकानिवारण प्रयोग	९०
मूषकनिवारण प्रयोग	९०
मत्कुण-निवारण	९०
सर्पनिवारण प्रयोग	९०
मशक-निवारण	९१
क्षेत्रोपद्रवनाशन प्रयोग	९१
अन्नोत्पादन-मन्त्र	९१
रक्त निवारण	९१
बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग	९१
गर्भस्तम्भन	९२
सुखप्रसव प्रयोग	९४
गर्भमोचन मन्त्र	९४
विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी मन्त्र प्रयोग	९४
विद्या यक्षिणी साधन	९५
डाकिनी साधन	९५
तस्कर ग्रहण चेटक	९५
ग्रहनाशनभूतेश्वर मन्त्र	९६
भूतोपद्रवनाश का उड्डीश मन्त्र	९६
डाकिनी से बालक को छुड़ाने का मन्त्र	९६
प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र	९७
नजर झाड़ने का मन्त्र	९७
डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र	९८
डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना	९८
डाकिनी दूर करने वाला मन्त्र	९८
डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र	९९
प्रेतादि झाड़ने का मन्त्र	९९
दूसरे के कृत्य को उलटना	९९
रात्रिज्वर निवारण तन्त्र	९९
अर्श निवारण तन्त्र	९९
दाँत के कीडे झाड़ने का मन्त्र	१००
हूक का मन्त्र	१०१
प्लीह निवारण मन्त्र	१०१
कखलाई निवारणार्थ मन्त्र	१०१
रींघनवायु का मन्त्र	१०१
सुखप्रसव	१०१
नेत्रपीडा निवारण मन्त्र	१०२
कण्ठवेल का मन्त्र	१०२
बिच्छू झाड़ने का मन्त्र	१०२
सर्प झाड़ने का मन्त्र	१०३
सर्पकीलन का मन्त्र	१०४
सर्पों को भगाने का मन्त्र	१०४
पागल कुत्ते का मन्त्र	१०४
आधासीसी का मन्त्र	१०४
कमल झाड़ने का मन्त्र	१०५
दर्द और थनपल को झाड़ना	१०५
जमोगा का मन्त्र	१०५
दबा पसली झाड़ने का मन्त्र	१०५
सर्व रोग निवारक मंत्र	१०६
बवासीर नाशक मंत्र	१०६
पीलिया झाड़ने का मंत्र	१०६
कण्ठवेल पीड़ा मुक्ति मंत्र	१०७

विषय	पृष्ठांक
बालज्वर नाशक मंत्र	१०७
नक्सीर स्तम्भन मंत्र	१०७
मसान रोग (सूखा रोग) नाशक प्रभावशाली झाड़ा	१०७
आधाशीशी नाशक मंत्र	१०८
नेत्र बाधा निवारण मंत्र	१०८
अन्न पचाने का मंत्र	१०८
आँख की फूली काटने हेतु	१०९
शारीरिक पीड़ा नाशक मंत्र	१०९
बवासीर नाशक मंत्र	१०९
सूखा रोग झाड़ने का मन्त्र	१०९
सर्वरोग नाशक तान्त्रिक यन्त्र अथवा तावीज	११०
अंडकोष वृद्धि रोकने का यन्त्र	११०
नियमित मासिक-धर्म हेतु तान्त्रिक टोटके	१११
मृतवत्सा दोष निवृत्ति हेतु दो मन्त्र	१११
मृतवत्सा नारी हेतु झाड़ा	११२
गर्भाशय के विकार मिटाने का झाड़ा व गंडा	११२
ज्वरों के लिए झाड़ा	११२
दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र	११३
वायु नाशक हनुमान् मन्त्र	११३
समस्त व्याधियाँ नाशक हनुमान् मन्त्र	११३
बाय रोग झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११४
कान दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११४
अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान् मन्त्र	११४
हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११५
दाद झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११५
आधा शीशी विनाशक हनुमान् मन्त्र	११५
कान की पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	११६
नकसीर रोग निवारक हनुमान् मन्त्र	११६
समस्त रोग शान्ति का हनुमान् मन्त्र	११६
आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र	११६

विषय	पृष्ठांक
डिब्बा (पहली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान् मन्त्र	११७
नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	११७
बवासीर नाशक हनुमान् मन्त्र	११७
बगली दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११८
आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र	११८
उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान् मन्त्र	११८
बाला झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११८
सिर दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र	११९
आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान् मन्त्र	११९
नेत्र रोग नाशक हनुमान् मन्त्र	११९
दन्त पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	१२०
स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान् मन्त्र	१२०
सर्व-शूल नाशक हनुमान् मन्त्र	१२०
रोग-दोष नाशक हनुमान् मन्त्र	१२१
दुर्बलता दूर करने का हनुमान् मन्त्र	१२१
रोग लकवा ठीक करने का मंत्र	१२१
रोग बिच्छू का विष उतारने का मंत्र	१२२
रोग दन्त शूल नाशक मंत्र	१२२
रोग बवासीर (खूनी) दूर करने का मंत्र	१२३
रोग नेत्र पीड़ा नाशक मंत्र	१२३
रोग शिरः शूलादिशामक मंत्र	१२३
रोग गांठ या फोड़े को ठीक करने के मंत्र	१२३
मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र	१२४
सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र	१२४
आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र	१२४
उदर वेदना निवारक मन्त्र	१२४
नेत्र पीड़ा निवारक मन्त्र	१२४
रोग निवारण मन्त्र	१२५
ऋतु वेदना निवारण मन्त्र	१२५
मासिक विकार दूर करने का मन्त्र	१२५
प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र	१२५
मृगी रोग हरण मन्त्र	१२६
रतौंधी विनाशक मन्त्र	१२६
नैन वेदना विनाशक मन्त्र	१२६

विषय	पृष्ठांक
मस्तक शूल विनाशक मन्त्र	१२६
आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र	१२६
दन्त शूल नाशक मन्त्र	१२७
तपेदीक (टी० बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र	१२७
पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र	१२७
बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र	१२८
दूसरा मन्त्र (डंक झाड़ने का)	१२८
पीलिया (कँवर) का मन्त्र	१२८
ज्वर नाशक तन्त्र धूप	१२९
ज्वर नाशक मन्त्र	१२९
ज्वर नाशक अन्य मन्त्र	१२९
बाई झारने का यन्त्र	१२९
बालकों को रोना दूर करने का मन्त्र	१२९
जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र	१२९
वायु गोला का मन्त्र	१३०
वायु गोला झाड़ने का मन्त्र	१३०
कान का दर्द झाड़ने का मन्त्र	१३०
मृगी (मिरगी) का मन्त्र	१३०
प्रसव आसानी से होने का मन्त्र-यन्त्र	१३०
दूसरा प्रसव मन्त्र	१३०
आँख दुखने का मन्त्र	१३१
जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र	१३१
आधा शीशी झाड़ने का मन्त्र	१३१
रतौंधी झाड़ने का मन्त्र	१३१
बवासीर झाड़ने का मन्त्र	१३१
द्यूत विजय मन्त्र	१३२
गोमहिषी दुग्धवर्धन उपाय	१३२
भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र	१३३
प्रेतादि दोष नाशक मंत्र	१३३
भूत-प्रतों को भगाने का तन्त्र	१३४
भूतप्रेत भगाने का मन्त्र	१३४
भूत-प्रेत से स्वयं मुक्ति	१३५
भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी निवारण यन्त्र	१३६
भूतादि दुष्ट आत्माओं के निवारण के मन्त्र	१३६

विषय	पृष्ठांक
डाइन-चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए मन्त्र	१३८
चुड़ैल भगाने की दूसरी विधि	१३८
मसान	१३८
डाकिनी मन्त्र	१३८
चुड़ैल हेतु मन्त्र	१३९
औपरा हेतु मन्त्र	१३९
डायन हेतु मन्त्र	१३९
भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र	१३९
श्री मणिभद्र भूत-प्रेत-बाधा निवारण-मन्त्र	१३९
भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र	१४०
सुख-समृद्धि दायक कालिका मन्त्र	१४०
भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र	१४१
चुड़ैल भगाने का मन्त्र	१४१
भूत भय नाशन मन्त्र	१४१
डायन, पिशाचिनी भगाने का मन्त्र	१४१
भूत भय नाशन	१४१
भूत बाधा नाशन प्रयोग	१४२
चामुण्डा मन्त्र प्रयोग	१४२
नजर उतारने का मंत्र	१४२
दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र	१४४
नजर लगने पर इन मन्त्रों का प्रयोग करें	१४४
नजर झाड़ने का मन्त्र	१४४
नजर दोष दूर करने का मंत्र	१४५
डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र	१४६
नजर झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	१४६
अतर मोहिनी	१४६
लूणमोहिनी	१४७
सुपारीमोहिनी	१४७
इलायचीमोहिनी	१४७
लौंग मोहिनी	१४७
राजवशीकरण	१४७
सभा मोहिनी	१४८
नग्न मोहिनी	१४८
शत्रु मोहिनी	१४९

विषय	पृष्ठांक
मूली मन्त्र प्रयोग	१४९
वशीकरण तन्त्र	१४९
राजावशीकरण तन्त्र	१५२
पति वशीकरण तन्त्र	१५३
स्त्रीवशीकरण तन्त्र	१५३
अथाकर्षण तन्त्र	१५४
पगच्छेदन	१५४
कुछ अन्य प्रयोग	१५५
शत्रु मूत्रबन्धन मन्त्र	१५६
शत्रुशिरसि पादुकाहनन	१५७
शत्रुपीडन	१५७
मूठचालन मन्त्र	१५८
सर्वकार्य सिद्धि भैरव मन्त्र प्रयोग	१५९
मेघ स्तम्भन	१६०
सेना स्तम्भन	१६०
स्नापलायन	१६०
अग्नि स्तम्भन	१६१
पदस्तम्भन	१६१
व्यापार वृद्धि मंत्र	१६२
व्यापार बंधन मुक्ति का मंत्र	१६३
रोजगार बाधानाशक एवम् व्यापार वृद्धि कारक मन्त्र	१६३
धन प्राप्ति का मंत्र	१६४
धन वृद्धि करने का मन्त्र	१६५
अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र	१६५
गाय भैंस आदि को दूध बढ़ाने का मन्त्र	१६५
अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र	१६६
ऋद्धि करण मन्त्र	१६६
आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र	१६६
नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि	१६६
अष्टगन्ध बनाने की विधि	१६७
पुराणोक्त रवि मन्त्र	१६८
वैदिक रवि मन्त्र	१६८
तन्त्रोक्त रवि मन्त्र	१६८
सूर्य गायत्री मन्त्र	१६८
चन्द (चन्द्रमा) का यन्त्र-मन्त्रादि	१६८
पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र	१६९
वैदिक चन्द्र मन्त्र	१६९
तन्त्रोक्त मन्त्र	१६९
सोम गायत्री मन्त्र	१६९
मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि	१६९
पुराणोवत भौम जप मन्त्र	१६९
वैदिक जप मन्त्र	१७०
तन्त्रोवत भौम मन्त्र	१७०
भौम गायत्री मन्त्र	१७०
ऋणमोचन मंगल स्तोत्र	१७०
बुध का यन्त्र-मन्त्रादि	१७१
पुराणोक्त बुध जप मन्त्र	१७१
वैदिक बुध मन्त्र	१७१
तन्त्रोक्त बुध मन्त्र	१७२
बुध गायत्री मन्त्र	१७२
बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मन्त्रादि	१७२
वेदोक्त गुरु मन्त्र	१७२
तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र	१७२
गुरु गायत्री मन्त्र	१७३
शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि	१७३
पुराणोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
वेदोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
शुक्र गायत्री मन्त्र	१७४
शनि का यन्त्र-मन्त्रादि	१७४
पुराणोक्त शनि जप मन्त्र	१७४
वैदिक शनि मन्त्र	१७४
तन्त्रोक्त शनि मन्त्र	१७४
शनि गायत्री मन्त्र	१७४
राहु का मन्त्र	१७५
पुराणोक्त राहु मन्त्र	१७५
वैदिक राहु मन्त्र	१७५
तंत्रोक्त मन्त्र	१७५
राहु गायत्री मन्त्र	१७५
केतु का यन्त्र-मन्त्रादि	१७६

विषय	पृष्ठांक
पुराणोक्त केतु मन्त्र	१७६
वैदिक केतु मन्त्र	१७६
तन्त्रोक्त मन्त्र	१७६
केतु गायत्री मन्त्र	१७६
नवग्रहों का यन्त्र-मन्त्रादि	१७६
नवग्रह स्तोत्र	१७७
अशुभ फलवाले ग्रहों के उपाय	१७७

[तृतीय परिच्छेद]

रोग चिकित्सा ज्ञान १७९-४२०

प्रथम रोग परीक्षा की आवश्यकता	१७९
वातादिज्वर का उपचार	१८६
कफज्वर का उपचार	१८८
वातपित्तज्वर का उपचार	१८९
सन्निपातज्वर का उपचार	१९१
जीर्णज्वर का उपचार	१९७
ग्रहणी का उपचार	२१०
अर्श (बवासीर) का उपचार	२१४
क्षुधा या भूख वृद्धि के उपचार	२२३
विसूचिका रोग का उपचार	२२९
कृमिरोग का उपचार	२३०
पाण्डुरोग का उपचार	२३१
कामला और पाण्डु रोग का उपचार	२३२
रक्तपित्त रोग का उपचार	२३५
राजयक्ष्मा-क्षय रोग (टी.बी.) का उपचार	२४०
खाँसी का उपचार	२४६
हिचकी एवं श्वास का उपचार	२४९
स्वरविकृति का उपचार	२५२
आम रोचकता का उपचार	२५३
उबकाई एवं वमन का उपचार	२५४
तृष्णा या पिपासा का उपचार	२५७
मद्यपानजनित रोग का उपचार	२५९
दाह या जलनशीलता का उपचार	२६१
उन्माद रोग का उपचार	२६२
अपस्मार या मृगीरोग का उपचार	२६३
वातरोग का उपचार	२६५

विषय	पृष्ठांक
वातरक्त का उपचार	२७८
ऊरुस्तम्भ रोग का उपचार	२८२
आमवात का उपचार	२८४
शूलरोग का उपचार	२८९
परिणामशूल का उपचार	२९४
उदावर्त एवं आनाह का उपचार	२९८
हृदयरोग का उपचार	३०५
मूत्रकृच्छ्र का उपचार	३०७
मूत्राघात का उपचार	३०९
अश्मरी रोग का उपचार	३११
प्रमेहमधुमेहपिडिका रोग का उपचार	३१३
मोटापा रोग का उपचार	३१७
उदररोग का उपचार	३१९
उदर कृत प्लीहा रोग का उपचार	३२२
शोथोदर रोग का उपचार	३२४
शोथ रोग का उपचार	३२४
वृद्धिब्रध्न रोग का उपचार	३२७
गलगंड, गण्डमाला, ग्रंथि अर्बुद और अपची आदि रोगों का उपचार	३२९
श्लीपद रोग का उपचार	३३३
विद्रधि रोग का उपचार	३३५
सद्योव्रण का उपचार	३३९
शस्त्रादि भग्ना का उपचार	३४१
नाड़ीव्रण का उपचार	३४२
भगन्दर रोग का उपचार	३४४
उपदंश रोग का उपचार	३४६
शूकदोष रोग का उपचार	३४७
कुष्ठ रोग का उपचार	३४८
उदर्द कोठशीतपित्त का उपचार	३५९
अम्लपित्त का उपचार	३६०
विसर्पविस्फोटक का उपचार	३६२
मसूरिका (चेचक) रोग का उपचार	३६५
क्षुद्ररोग का उपचार	३६६
मुखरोग का उपचार	३७२
कर्णरोग का उपचार	३७९
नाक के रोग का उपचार	३८२

विषय	पृष्ठांक
नेत्र रोग का उपचार	३८४
शिरोरोग का उपचार	४००
प्रदर रोग का उपचार	४०४
योनिव्यापद का उपचार	४०६
सूतिका रोग का उपचार	४०८
बालरोग का उपचार	४१६
सर्प आदि विष विनाशक उपचार	४१४
रसायन का वर्णन	४१७
वाजीकरण का वर्णन	४१९
[चतुर्थ परिच्छेद]	
काल (ज्यौतिष) शास्त्र	**४२१-५२४**
काल के प्रकार	४२१
कालपुरुष शरीर के अङ्ग और राशियाँ	४२२
राशि स्वरूप ज्ञान	४२२
मेष आदि राशियों का अधिवास	४२२
मेष आदि राशियों की लघुता दीर्घता	४२३
राशियों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२३
राशियों की जलचरादि संज्ञा	४२३
चतुष्पदादि संज्ञा	४२४
राशियों के दिवारात्रि बल	४२४
राशियों के धातु मूल जीव संज्ञा	४२४
मेषादि राशियों की द्विपदादि संज्ञा	४२४
राशियों के वर्ण	४२४
राशियों का स्वामी	४२४
भाव विचार	४२५
ग्रहों के आत्मादि विचार	४२६
ग्रहों के राजादि संज्ञा	४२६
ग्रहों का वर्ण ज्ञान	४२६
ग्रहों का शुभाशुभ ज्ञान	४२६
चन्द्र का बलाबल	४२७
ग्रहों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२७
ग्रहों के विहगादि स्वरूप	४२७
ग्रहों के बालादि अवस्था	४२७
ग्रहों के धातु आदि संज्ञा	४२७
ग्रहों के ताम्रादि वर्ण	४२७
ग्रहों के द्रव्य व अधिदेवता	४२७

विषय	पृष्ठांक
ग्रहों के माणिक्यादि रत्न	४२८
ग्रहों के वस्त्र	४२८
पूर्वादि दिशा स्वामी ज्ञान	४२८
ग्रहों के विप्र आदि संज्ञा	४२८
ग्रहों के पुरुषादि संज्ञा व तत्त्व	४२८
ग्रहों के मज्जा आदि ज्ञान	४२८
ग्रहों के लवणादि रस व अयनादि परिज्ञान	४२९
उच्चादि परिज्ञान	४२९
ग्रहों के मूलत्रिकोण राशियाँ	४२९
ग्रहों का फल परिमाण	४२९
ग्रहों का विफल स्थान	४२९
ग्रहों का बालादि अवस्था	४३०
सूर्य स्वरूप	४३०
चन्द्र स्वरूप	४३०
भौम स्वरूप	४३०
बुध स्वरूप	४३०
गुरु स्वरूप	४३०
भृगु स्वरूप	४३०
शनि स्वरूप	४३०
ग्रह वध क्रम	४३१
ग्रहों के मित्रादि ज्ञान	४३१
ग्रहों के स्थिरादि संज्ञा	४३१
ग्रहों की दृष्टि	४३१
ग्रहों का कारक	४३१
ग्रहों का स्थिरकारक	४३२
ग्रह अरिष्ट ज्ञान	४३२
ग्रहों से अरिष्ट नाश	४३२
सूर्य कृत दोष	४३२
चन्द्र कृत दोष	४३२
मङ्गल कृत दोष	४३२
बुध कृत दोष	४३३
गुरु भृगु कृत दोष	४३३
शनि केतु कृत दोष	४३३
राहु कृत दोष	४३३
ग्रह भाव योग	४३३

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ सूर्य फल	४३३
द्वितीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
तृतीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
चतुर्थ भावस्थ सूर्य फल	४३४
पंचम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
षष्ठ भावस्थ सूर्य	४३४
सप्तम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
अष्टम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
नवम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
दशम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
एकादश भावस्थ सूर्य फल	४३४
द्वादश भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
लग्नस्थ चन्द्र फल	४३४
द्वितीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
तृतीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल	४३५
पंचम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
षष्ठ भावस्थ चन्द्र	४३५
सप्तम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
अष्टम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
नवम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
दशम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
एकादश भावस्थ चन्द्र फल	४३६
द्वादश भाव में स्थित चन्द्र फल	४३६
लग्नस्थ मंगल फल	४३६
द्वितीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
तृतीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
चतुर्थ भावस्थ मंगल फल	४३६
पंचम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
षष्ठ भावस्थ मंगल फल	४३६
सप्तम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
अष्टम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
नवम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
दशम भाव में स्थित मंगल फल	४३७
एकादश भावस्थ मंगल फल	४३७
द्वादश भाव में स्थित मंगल फल	४३७

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ बुध फल	४३७
द्वितीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
तृतीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
चतुर्थ भावस्थ बुध फल	४३७
पंचम भाव में स्थित बुध फल	४३७
षष्ठ भावस्थ बुध फल	४३७
सप्तम भाव में स्थित बुध फल	४३७
अष्टम भाव में स्थित बुध फल	४४०
नवम भाव में स्थित बुध फल	४४०
दशम भाव में स्थित बुध फल	४४०
एकादश भावस्थ बुध फल	४४०
द्वादश भाव में स्थित बुध फल	४४०
लग्नस्थ बृहस्पति फल	४४०
द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
तृतीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
पंचम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
षष्ठ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
नवम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
दशम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
एकादश भावस्थ बृहस्पति फल	४४१
द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
लग्नस्थ शुक्र फल	४४१
द्वितीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
तृतीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
चतुर्थ भावस्थ शुक्र फल	४४१
पंचम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
षष्ठ भावस्थ शुक्र फल	४४२
सप्तम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
अष्टम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
नवम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
दशम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
एकादश भावस्थ शुक्र फल	४४२
द्वादश भाव में स्थित शुक्र फल	४४२

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ शनि फल	४४२
द्वितीय भाव में स्थित शनि फल	४४२
तृतीय भाव में स्थित शनि फल	४४३
चतुर्थ भावस्थ शनि फल	४४३
पंचम भाव में स्थित शनि फल	४४३
षष्ठ भावस्थ शनि फल	४४३
सप्तम भाव में स्थित शनि फल	४४३
अष्टम भाव में स्थित शनि फल	४४३
नवम भाव में स्थित शनि फल	४४३
दशम भाव में स्थित शनि फल	४४३
एकादश भावस्थ शनि फल	४४३
द्वादश भाव में स्थित शनि फल	४४३
भावों का शुभाशुभत्व विचार	४४४
केन्द्रस्थ दो ग्रह योग फल	४४४
केन्द्र में स्थित सूर्य-चन्द्र योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य भौम योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य बुध योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य गुरु योग फल	४४५
सूर्य शुक्र योग फल	४४५
सूर्य शनि योग फल	४४५
चन्द्र भौम योग फल	४४६
चन्द्र बुध योग फल	४४६
चन्द्र गुरु योग फल	४४६
चन्द्र शुक्र योग फल	४४७
चन्द्र शनि योग फल	४४७
भौम बुध योग फल	४४७
भौम गुरु योग फल	४४७
भौम शुक्र योग फल	४४८
भौम शनि योग फल	४४८
बुध गुरु योग फल	४४८
बुध शुक्र योग फल	४४९
बुध शनि योग फल	४४९
गुरु शुक्र योग फल	४४९
गुरु शनि योग फल	४४९
शुक्र शनि योग फल	४५०
दो तीन आदि ग्रह योग	४५०
सूर्य चन्द्रमा योग फल	४५०
सूर्य भौम योग फल	४५०
सूर्य बुध योग फल	४५०
सूर्य गुरु योग फल	४५१
सूर्य शुक्र योग फल	४५१
सूर्य शनि योग फल	४५१
चन्द्र भौम योग फल	४५१
चन्द्र बुध योग फल	४५१
चन्द्र गुरु योग फल	४५१
चन्द्र शुक्र योग फल	४५१
चन्द्र शनि योग फल	४५१
भौम बुध योग फल	४५२
भौम गुरु योग फल	४५२
भौम शुक्र योग फल	४५२
भौम शनि योग फल	४५२
बुध गुरु योग फल	४५२
बुध शुक्र योग फल	४५२
बुध शनि योग फल	४५२
गुरु शुक्र योग फल	४५२
गुरु शनि योग फल	४५३
शुक्र शनि योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र मंगल योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र बुध योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र गुरु योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शुक्र योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शनि योग फल	४५३
सूर्य मंगल बुध योग फल	४५३
सूर्य मंगल गुरु योग फल	४५४
सूर्य भौम शुक्र योग फल	४५४
सूर्य भौम शनि योग फल	४५४
सूर्य बुध गुरु योग फल	४५४
सूर्य बुध शुक्र योग फल	४५४
सूर्य बुध शनि योग फल	४५४
सूर्य गुरु शुक्र योग फल	४५४
सूर्य गुरु शनि योग फल	४५४
सूर्य शुक्र शनि योग फल	४५४

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम बुध योग फल	४५५
चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५५
चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र भौम शनि योग फल	४५५
चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५५
चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र बुध शनि योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५५
चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५६
भौम बुध गुरु योग फल	४५६
भौम बुध शुक्र योग फल	४५६
भौम बुध शनि योग फल	४५६
भौम गुरु शुक्र योग फल	४५६
भौम गुरु शनि योग फल	४५६
भौम शुक्र शनि योग फल	४५६
बुध गुरु शुक्र योग फल	४५६
बुध गुरु शनि योग फल	४५७
बुध शुक्र शनि योग फल	४५७
गुरु शुक्र शनि योग फल	४५७
माता व पिता के सुख विचार	४५७
शुभ ग्रहों के योग फल	४५७
पाप ग्रहों के योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध शुक्र योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध शनि योग फल	४५९
सूर्य भौम गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य भौम शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य गुरु शुक्र शनि योग फल	४५९
चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६१
भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
भौम बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
एक राशि में सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६५
सृष्टि के समय योग	४६५
स्थावर जङ्गम की अभिव्यक्ति	४६५
मनुष्येतर जन्म ज्ञान	४६५
वर्णाकृति भेद ज्ञान का विचार	४६५
पशु शरीर में राशि विभाग का ज्ञान	४६५
वियोनि का वर्ण व चिन्ह ज्ञान	४६६
ग्रहों के वर्णों का ज्ञान	४६६
प्रकारान्तर से वर्ण का ज्ञान	४६६
पक्षी जन्म ज्ञान	४६६
वृक्ष जन्म योग	४६७
लग्नांश पति से वृक्षों से भेद का ज्ञान	४६७
वृक्ष के शुभाशुभ फल का ज्ञान	४६७
वृक्षों की संख्या का ज्ञान	४६७
वियोनि जन्म ज्ञान	४६७
वियोनि ज्ञान में विशेष कथन	४६८
चतुष्पद जन्म ज्ञान	४६८
विशेष रीति से वियोनि जन्म ज्ञान	४६८
जन्तुओं की आकृति व यमलादि का ज्ञान	४६८
एक से अधिक वियोनि जन्म ज्ञान	४६८
लोक विपरीत प्रसव ज्ञान	४६९
वृश्चिक लग्नस्थ द्विपद वा नवम नवांश फल	४६९
धनु लग्न धनु नवांश या धनु द्वादशांश फल	४६९
मकर लग्नस्थ मकर नवांश या मकर द्वादशांश फल	४६९
मीन लग्नस्थ मीन नवांश या मीन द्वादशांश फल	४६९
मेष या वृष लग्नस्थ मेष या वृष नवांश फल	४६९
गर्भाधानयोग्य रजोदर्शन	४७०
रजो दर्शन में कारण	४७०
गर्भाधान में अक्षम रजोदर्शन	४७०
स्त्री पुरुष संयोग कथन	४७०
अन्य पुरुष संयोग कथन	४७१
संभोग प्रकार का विचार	४७१
गर्भ सम्भव योग	४७१
गर्भस्थिति का स्वरूप	४७१
गर्भ में पुत्रादि का ज्ञान	४७२
पुत्र जन्म योग	४७२
नपुंसक जन्म योग कथन	४७२
यमल योग विचार	४७२
गर्भ में तीन बालकों का योग	४७३
प्रत्येक मास में गर्भ की स्थिति विचार	४७३
गर्भ के दस मासों का स्वामी	४७३
गर्भपात योग	४७३
गर्भपुष्टि ज्ञान	४७४
गर्भ सहित गर्भवती मरण विचार	४७४
गर्भ वृद्धि योग	४७४
गर्भ समय से प्रसव मास का ज्ञान	४७४
सर्वसम्मत से जन्म राशि ज्ञान	४७५
प्रसव काल का ज्ञान	४७५
प्रसवकालिक लग्नादि का ज्ञान	४७५
नेत्रहीन योग	४७५
मूक योग	४७५

विषय	पृष्ठांक
जड एवं सदन्त योग	४७५
अधिकाङ्ग योग	४७५
वामन एवं कुब्ज योग	४७६
पङ्गु योग	४७६
बिना शिर, पैर, हाथ के जन्म योग	४७६
लग्नादि से जन्मयोग का ज्ञान	४७६
प्रसव स्थान का विचार	४७६
सूतिकागृह विचार	४७७
सूतिका गृह में शयन स्थान ज्ञान	४७७
सूतिका गृह के स्वरूप ज्ञान	४७८
सूतिका की शय्या का विचार	४७८
सूतिका का भूमि शयन एवं उपसूतिका ज्ञान	४७८
दीपक की वर्त्ति व तेल का ज्ञान	४७८
अधिक दीप का ज्ञान	४७९
प्रसव के समय अन्धकार विचार	४७९
पिता की अनुपस्थिति में जन्म योग	४७९
कष्ट में प्रसव एवं माता के सुख का विचार	४८०
परजात जन्म योग	४८०
प्रसव समय में मातृकष्ट का विचार	४८०
सर्पवेष्टित जन्म योग	४८०
माता पिता का सुख योग	४८०
पुरुष–स्त्री ग्रहों के बल का ज्ञान	४८१
तीन प्रकार के अरिष्ट	४८१
तृतीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
द्वितीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
नवम वर्ष के बाद अरिष्ट योग	४८१
एक मास में अरिष्ट योग	४८१
एक वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
छठवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
चौथे वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
दो मास में अरिष्ट योग	४८२
शीघ्र अरिष्ट योग	४८२
जन्माधिपति के द्वारा शारीरिक पीड़ा का ज्ञान	४८२

विषय	पृष्ठांक
सात वर्ष में अरिष्ट का ज्ञान	४८२
दश या सोलह वर्ष में अरिष्ट का विचार	४८२
शीघ्र मरण विचार	४८२
स्वल्पकाल में मरण योग	४८२
एक, चार, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
एक, छः, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८३
चतुर्थ मास में अरिष्ट का विचार	४८३
माता के साथ अरिष्ट का विचार	४८३
शीघ्र निधन अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट का ज्ञान	४८३
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८४
मातृ अरिष्ट योग	४८४
पितृ अरिष्ट योग	४८४
पिता के अरिष्ट का योग	४८४
माता के साथ निधन योग	४८४
जन्म के समय पिता का स्थान	४८४
पिता का निधन योग	४८४
माता एवं जातक में एक के निधन का ज्ञान	४८५
नेत्र हानि योग	४८५
पुनः नेत्र हानि योग	४८५
कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
चन्द्र राशि से कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
तीन दिन जीवन योग	४८६
एक दिन का जीवन योग	४८७
सात दिन का जीवन योग	४८७
रोगारम्भ से अरिष्ट का विचार	४८७
पुनः रोगारम्भ से अरिष्ट	४८७
पुनः जन्माङ्ग से अरिष्ट योग	४८७
एक मास वा सात दिन का आयु योग	४८८
मृत जातक योग	४८८
त्रिकोण गत पापग्रह से अरिष्ट योग	४८८
शीघ्र निधन योग	४८८
१०८ वर्ष की आयु का योग	४८८

विषय	पृष्ठांक
१२० वर्ष की आयु का योग	४८८
देवतुल्य आयु योग	४८८
गतायु योग	४८९
अनुक्तकाल योगों में निधन समय का विचार	४८९
पाँचवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
ग्यारहवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
चतुर्थ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
तीन वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
नौ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
पाँच वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
बारह वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
दुर्मुहूर्त में अरिष्ट योग	४९०
अल्प समय में अरिष्ट योग	४९०
प्रत्येक राशि में चन्द्रकृत अरिष्ट योग	४९०
कथित अंशों में निधन समय का विचार	४९०
गुरुवश निधन वर्ष का विचार	४९१
राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान् योग	४९१
क्रूरकर्मा व सत्कृत राजयोग	४९१
नीचकुल में उत्पन्न होने वाले राजयोग	४९१
नीच कुलोत्पन्न राजयोगों के बत्तीस प्रकार	४९१
अधमवंशोत्पन्न का राजयोग	४९२
अखिलभूमण्डल पालक योग	४९२
विज्ञान कुशल राजयोग	४९२
सद्भूपाल राजयोग	४९२
अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग	४९२
इन्द्र तुल्य राजयोग	४९२
शत्रु से अजेय राजयोग	४९२
शत्रु को पराजित कर्त्ता राजयोग	४९२
स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग	४९३
अधिराजयोग	४९३
अपारकीर्तियुत राजयोग	४९३

विषय	पृष्ठांक
प्रसन्न राजयोग	४९३
इन्द्रतुल्य बलशाली राजयोग	४९३
अखण्ड भूपतियोग	४९३
यशस्वी व समस्त शत्रुहन्ता राजयोग	४९३
सार्वभौम राजयोग	४९३
देव–दानवों से वन्दित राजा	४९४
शत्रुरहित राजयोग	४९४
सार्वभौम राजयोग	४९४
सगरादि तुल्य राजयोग	४९४
तपस्वी राजयोग	४९४
बृहस्पति की बुद्धितुल्य राजयोग	४९४
दुर्वार शत्रुमारक राजयोग	४९४
यशस्वी राजयोग	४९४
अधिक हाथी रखने वाला राजा	४९४
स्वकीर्ति से दिशाओं का शुभ्रकर्त्ता राजयोग	४९५
शत्रुजेता राजयोग	४९५
सार्वभौम राजयोग	४९५
अधिक हाथी वाला राजयोग	४९५
अपूर्व यशस्वी राजयोग	४९५
निषाद कुलोत्पन्न राजयोग	४९५
महाराज योग	४९५
ग्रामीण राजयोग	४९५
अधिक यशस्वी राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
देवतुल्य राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
लक्ष्मीयुत राजयोग	४९६
प्रसिद्ध राजयोग	४९६
ब्राह्मणकुलोत्पन्न का राजयोग	४९६
गौपालक राजयोग	४९६
सकलनृप पालक राजयोग	४९७
यशस्वी राजयोग	४९७
कुत्सित राजयोग	४९७
नीचकुलोत्पन्न राजयोग	४९७
शत्रुजेता राजयोग	

विषय	पृष्ठांक
निराकुल राजयोग	४९७
चक्र व समुद्र राजयोग	४९७
अधिक सम्पत्तिवान् राजयोग	४९७
नगर नामक राजयोग	४९७
प्रशान्त राजयोग	४९७
कलश संज्ञित राजयोग	४९८
पूर्ण कुम्भ नामक राजयोग	४९८
सर्ववन्दित राजयोग	४९८
स्थिर लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
अति लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
चन्द्रांशतुल्य यशस्वी राजयोग	४९८
स्वगुण प्रख्यात राजयोग	४९८
यशस्वी राजयोग	४९९
पराक्रम धन वाहन से युक्त राजयोग	४९९
सर्पराज के तुल्य प्रतापी राजयोग	४९९
राजराजेश्वर राजयोग	४९९
शत्रुजित राजयोग	४९९
लक्ष्मीपति राजयोग	४९९
ब्राह्मणकुलोत्पन्न राजयोग	४९९
अंग देशाधिप राजयोग	४९९
मगधाधिप राजयोग	४९९
शत्रुदमन राजयोग	४९९
गोप कुलोत्पन्न राजयोग	५००
समस्त भूमण्डल का स्वामी राजयोग	५००
कश्मीरमण्डलीय राजयोग	५००
तीन ओर समुद्र से वेष्टित भूमि का राजयोग	५००
प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
द्वीपाधिप राजयोग	५००
त्रिभुवनाधिप राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
विमल कीर्तिमान् राजयोग	५००
प्रसिद्ध यशस्वी राजयोग	५०१
स्वभुज विजयी राजयोग	५०१
अस्थिर स्वभावी राजयोग	५०१

विषय	पृष्ठांक
अजेय राजयोग	५०१
द्विज देवभक्त राजयोग	५०१
सर्ववन्दित राजयोग	५०१
स्वबाहुबल से शत्रु को जीतने वाले राजा का राजयोग	५०१
कीर्तिमान् राजयोग	५०१
पुष्कल नामक राजयोग एवं फल	५०१
शतयोजन भूमि का स्वामी	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
वर्धितश्री राजयोग	५०२
शत्रुजेता राजयोग	५०२
विश्व का कल्याण करने वाला राजा	५०२
वीर राजयोग	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
अतुल्य बलवान् राजयोग	५०२
अहंकारी राजयोग	५०२
कुबेर के समान धनी राजयोग	५०२
त्रिसमुद्रपारग राजयोग	५०३
सिंहासनाधिशायी राजयोग	५०३
अपने बाहुबल से पृथ्वी को जीतने वाला राजा	५०३
समस्त नृपों से वन्दित राजा	५०३
सुनफादि योग में भी राजयोग का विचार	५०३
अतुल कीर्तिमान् राजयोग	५०३
सार्वभौम राजयोग	५०३
जातक भङ्ग योग	५०३
चाण्डाल सदृशी योग	५०३
ब्राह्मण सदृशी योग	५०३
भिक्षाटन-धनरहित-नित्य लुब्ध योग	५०४
दास और भिक्षाटन योग	५०४
श्वास क्षयप्लीहगुल्मविद्रधि रोग योग	५०४
अङ्ग वैकल्य व तनु शोषण योग	५०४
सूखा रोग-अंधापन-विक्षिप्तता योग	५०४
उन्माद व स्मृति भ्रंश योग	५०५

विषय	पृष्ठांक
अन्य वसु (धन) स्त्री भोग करने वाला योग	५०५
कुलनाशक-अल्पायु-भिक्षुक योग	५०५
भिक्षाशनी-दुःखित देहभोग योग	५०६
अपस्मार (मृगी) रोग योग	५०६
'गदा' नामक योग अपस्मार रोग योग	५०६
चाण्डाल योग-कुलाचार-सत्कर्महीन योग	५०६
वाग्दोष-परिभ्रंश योग	५०६
कुलघ्न आदि योग	५०६
कुलध्वंस-विदार योग	५०७
गृह से बहिष्कृत-स्त्री-पुत्रहीन-मूर्ख योग	५०७
अति हीन वृत्ति योग	५०७
जन्मभूमि भ्रष्ट-भाग्यहीन योग	५०७
राज योग भङ्गार्थ योग	५०७
परप्रैष्य (दूत) योग	५०८
फटे-चिथड़े वस्त्र और बन्धन योग	५०८
मन्द-अक्षि रोगी योग	५०८
अन्धा योग	५०८
विकलाङ्गता-जाति भ्रष्टता योग	५०८
कुष्ठ रोगी योग	५०९
गुल्म और कण्ठ रोगी योग	५०९
उन्माद (बाबलापन) क्रोधी-कलह प्रिय योग	५०९
हृदयशूल-भाग्यहीनता योग	५०९
ज्ञान धनादि हीन-परान्नभुक्-रुग्णदेह-कलहप्रिय योग	५०९
संस्कारहानि योग	५१०
वाहन से भयप्रद योग	५१०
शारीरिक उष्णता और जल में पिता मृत्यु योग	५१०
पिता की जल में मृत्यु योग	५१०
द्विज (ब्राह्मणादि) प्रहर्ता-कर्ण रहित-शिशुघ्न योग	५१०
शिशुघ्न और गोमृग जाति हन्ता योग	५११
नित्य पक्षिहन्ता योग	५११
गलान्तमृत्यु और वामनयनहीन योग	५११
शिथिली भय-कृकलास भय योग	५११
कौल्यादि पातित्य-कूर्म भय-दंशभय-स्त्रियों के निद्रा से भय योग	५१२
स्त्री गमन योग	५१२
सम्भोग और सम्भोग स्थान योग	५१२
पशुसङ्ग या समान सम्भोग योग	५१३
स्त्रियों के स्तन आदि स्वरूप योग	५१३
ग्रह स्थिति योग	५१३
द्विज-देवतार्थ धन योग	५१३
विंशोत्तरी महादशा जन्मनक्षत्र से दशेश ज्ञान प्रकार	५१३
विंशोत्तरी दशा ज्ञानार्थ महा-दशान्तर्दशा चक्र	५१४
ग्रहदशा वर्ष और भुक्त भोग्य वर्ष ज्ञान प्रकार	५१५
विंशोत्तरी दशा क्रम जानने का प्रकार	५१५
पुनः अन्तर्दशा ज्ञान प्रकार	५१५
सूर्यान्तर्दशा फल	५१५
चन्द्रान्तर्दशाफल	५१५
भौमान्तर्दशा फल	५१५
राह्वन्तर्दशा फल	५१५
गुर्वन्तर्दशा फल	५१६
शन्यन्तर्दशा फल	५१६
बुधान्तर्दशा फल	५१६
केत्वन्तर्दशा फल	५१६
शुक्रान्तर्दशा फल	५१६
योगिनी दशा के स्वामी कथन	५१६
जन्मनक्षत्र वश योगिनी दशा ज्ञान	५१६
योगिनी दशा के नाम	५१६
योगिनी दशा वर्ष	५१६
अन्तर्दशा लाने में विशेष	५१७
योगिनी दशा फल	५१७
पुनः मंगलादिदशा फल	५१८

विषय	पृष्ठांक
वर्ष दशा क्रम प्रकार	५१८
ग्रहों की नित्यानित्य दशाओं का प्रकार	५१९
नित्यदशाज्ञानार्थ अन्य प्रकार	५१९
पञ्चमहापुरुष-भूत विचार	५१९
पञ्चमहापुरुष लक्षण कथन	५१९
रूचक लक्षण	५१९
भद्र लक्षण	५१९
हंस लक्षण	५२०
मालव्य लक्षण	५२०
शश लक्षण	५२०
पञ्चमहाभूत का प्रयोजन	५२०
जातक प्रकृति	५२१
पंचभूत स्वभाव लक्षण	५२१
प्रयोजन	५२२
सत्त्वादिगुणफल	५२२
गुण के प्रकार	५२२
उत्तम-मध्यम-अधम के लक्षण	५२३
उदासीन के लक्षण	५२३
गुण प्रयोजन	५२३
मेलापन विचार	५२३

[पञ्चम परिच्छेद]

सदाशिव उपासना	**५२५-५६८**
शिव और ॐकार	५२५
ॐ मंत्र का उपदेश	५२५
ॐकार मंत्र जप का काल	५२६
लिङ्ग पूजन की विशेषता वर्णन	५२७
शिवलिङ्ग पूजन विधान	५२८
शिप प्राप्ति के उपाय	५२९
शिव की वैदिक पूजन विधि	५३२
पार्थिव पूजन पद्धति:	५३५
शिवलिंग का अभिषिञ्चन मन्त्र	५४१
शिवताण्डवस्तोत्रम्	५४२
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	५४३
शिवषडक्षरस्तोत्रम्	५४३
ॐकार का स्वरूप निरूपण	५४४
पञ्चकलात्मक ॐकार	५४५
पतितोद्धारक ॐकार	५४६
शिवभक्ति महिमा	५४७
नाम मन्त्र का उपेदश	५४८
शिवलिङ्ग पूजार्थ विधान	५४९
योग भेद वर्णन	५५४
योग मार्ग के विघ्नों का वर्णन	५५७
योगी के ऐश्वर्यों का वर्णन	५५८
योग योग्य स्थान आदि वर्णन	५५९
योग प्रयोग कथन	५६०
नैमित्तिक कर्म पालन	५६१
काम्य कर्म का फल	५६३
ध्यान की महिमा	५६५

❑❑❑

॥श्रीः॥

रावणसंहिता

प्रथम परिच्छेद

रावण जीवन वृत्तान्त

भगवान् विष्णु से खिन्न शुक्राचार्य द्वारा मेघनाद को शिवयज्ञ के लिये उत्साहित करते हुए कल्पान्तर की घटित रावण की उत्पत्ति, उसकी तपश्चर्या आदि के साथ राम-रावण युद्ध आदि घटनाओं की कथा जैसा कहा गया है, वैसी ही कथा के आधार पर यहाँ रावण के जीवन वृत्तान्त को प्रस्तुत किया जा रहा है—

राक्षसों का वध कर जब श्रीराम ने राज्य ग्रहण किया, तब समस्त मुनिगण राम-लक्ष्मण के बल-पराक्रम की प्रशंसा करने को अयोध्या में पधारे। पूर्व दिशा के निवासी कौशिक, यकृत, गार्ग्य, गालव और मेधातिथि के पुत्र कण्ड्व, दक्षिण के निवासी स्वस्त्यात्रेय, नमुचि, अगस्त्य, सुमुख और विमुख, पश्चिम दिशा के आश्रयी नृषंगु, कवषी, धौम्य और सशिष्य कौषेय तथा उत्तर दिशा के आश्रयी—वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भरद्वाज—ये सात ऋषि आये।

समस्त ऋषि रघुनाथजी के राजभवन पर पहुँच कर ड्योढ़ी पर खड़े हो गये। वे सभी अग्नि के समान तेजस्वी थे। द्वारपालों ने इन्हें सादर बैठाया। तब वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता, अनेक शास्त्रों में निष्णात, मुनिश्रेष्ठ धर्मात्मा अगस्त्यजी द्वारपालों से बोले—'दशरथनन्दन श्रीराम से जाकर हम मुनियों के आगमन की सूचना दो। द्वारपाल तत्क्षण ही रामचन्द्र के पास गया और ऋषि श्रेष्ठ अगस्त्य आदि के पधारने का समाचार सुनाया।

महर्षियों का आगमन सुनकर श्रीराम ने कहा—सबकों यहाँ यथा सुख से ले आओ। फिर तो वे सब ऋषिश्रेष्ठ राम के पास पहुँचे। श्रीरामचन्द्र हाथ जोड़ उठ खड़े हुए। सबका अर्घ्य, पाद्यार्घ्य से पूजन किया और बड़े आदर से सबको एक-एक गौ दान दिया।

तत्पश्चात् सबको प्रणाम करके शुद्ध भाव से उन्हें सुवर्ण के आसन पर बैठाया, जिस पर कुशासन और मृगचर्म बिछे थे। राम ने उन सबकी कुशल पछी। तब उन वेदवेत्ता महर्षियों ने कहा—हे रघुनन्दन! हे महाबाहो! आपके कुशल से हम सभी कुशलपूर्वक हैं।

आपने सब लोकों को रुलाने वाले रावण का वध किया, यह सौभाग्य की बात है। हे राम! आपके लिए पुत्र, पौत्रवान् रावण का नाश करना कोई बड़ी बात न थी। निःसन्देह आप त्रैलोक्य विजयी हैं। राक्षसेन्द्र रावण का वध कर आपको सीता सहित विजयी देखकर हम अपना सौभाग्य समझते हैं।

धर्मात्मन् लक्ष्मण आपके ऐसे हितकारी भ्राता हैं कि, माताओं और बन्धुओं सहित हम आपको सकुशल देख रहे हैं। यह तो दैवात् ही था कि आपने प्रहस्त, विकट, विरूपाक्ष, महोदर और अकम्पन आदि राक्षसों को मारा। अन्यथा ये सब तो बड़े ही दुर्धर्ष थे। कुम्भकर्ण तो ऐसा था कि जिसके समान विशालकाय भूमण्डल में कोई था ही नहीं।

दैवात् ही आपने उसे भी मार डाला। त्रिशिरा, देवान्तक, नरान्तक भी ऐसे ही थे, पर उन्हें भी आपने मार डाला। राक्षसेन्द्र रावण तो अवश्य ही था। उससे द्वन्द्व युद्ध कर आपने विजय प्राप्त की—यह भी बड़ा आनन्द हुआ। परन्तु हे वीर! रावण का पराभव उतना अशक्य नहीं था जितना इन्द्रजीत का। युद्ध में उसे मार डालना—यह तो बड़े हर्ष की बात है, क्योंकि वह मायायुद्ध करता था। उसका वध सुनकर हम लोग बड़े आश्चर्य में पड़ गये।

परन्तु हमें तो आपके जय की इच्छा थी। उससे भी आपने विजय-लाभ किया, यह हमारा सौभाग्य है। क्योंकि उसे कोई मार नहीं सकता था। आपने हमें अभय दान दिया। भवितात्मा मुनियों के इन वचनों को सुनकर राम ने भी आश्चर्यचकित होकर हाथ जोड़ लिया और पूछा कि, हे भगवन् ! महाबली रावण और कुम्भकर्ण को छोड़कर आप इन्द्रजीत की प्रशंसा क्यों कर रहे हैं?

यह रावण से बढ़ कर क्यों हुआ? अतिकाय त्रिशिरा आदि भी तो ऐसे ही दुर्धर्ष थे? इन्द्रजीत का प्रभाव, बल और पराक्रम कैसा था? उसने इन्द्र को कैसे जीता था और वह कैसे प्राप्त हुआ था? पुत्र से बलि पिता क्यों नहीं था? युद्ध में वह अपने पिता से अधिक पराक्रमी कैसे हुआ? मेरा यह निवेदन है कि मुझसे यह कथन कीजिये।

विश्रवा की उत्पत्ति प्रसङ्ग वर्णन

महात्मा राघव के इस वचन को सुनकर महातेजस्वी कुम्भयोनि अगस्त्यजी ने कहा—हे राम! सुनिये, इन्द्रजीत महत् तेजस्वी और बलवान् था जिससे उसका कोई शत्रु उसे मार नहीं सकता था, वह अपने शत्रु का वध करके ही रहता था। हे राघव! इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें पहले रावण का जन्म और उसकी वर-प्राप्ति का वर्णन करता हूँ।

पूर्व सत्युग में ब्रह्मा के एक पुत्र पुलस्त्य नामक थे। जिनके तप का प्रभाव ब्रह्माजी के ही समान था। तब एक तो उनका ऐसा तप दूसरे विमल गुणवान् भी थे। इससे ये सभी के मित्र बन गये। तप करने की इच्छा से वे मुनिश्रेष्ठ मेरुपर्वत के समीप तृणबिन्दु के आश्रम में जाकर तप करने लगे। तब उनको तप:स्वाध्याय में रत देख, वेदमंत्र श्रवण और विहार की इच्छा से बहुत-सी कन्याएँ वहाँ जाने लगीं।

उनमें अप्सराएँ भी रहती और ये सब ऋषियों, नागों और राजर्षियों की कन्याएँ थीं। इनके कारण तपस्वी पुलस्त्य के तप में विघ्न पड़ने लगा। इससे एक दिन पुलस्त्य जी ने कह दिया कि अब कल से जो कन्या यहाँ मुझे दिखाई पड़ेगी वह गर्भवती हो जायेगी। इस ब्रह्मशाप के भय से दूसरे दिन कन्याएँ वहाँ नहीं गयीं। परन्तु उनमें राजर्षि तृणबिन्दु की कन्या ने नहीं सुना था, इसलिए वह दूसरे दिन पुलस्त्यजी के आश्रम में चली गई और स्वच्छन्दता से विचरने लगी।

परन्तु उसने अन्य कन्याओं को वहाँ नहीं देखा। इससे उसे कुछ आश्चर्य हुआ। फिर भी वह राजर्षिकन्या वेद ध्वनि सुनने की इच्छा से मुनि का दर्शन करने चली गयी। किन्तु जैसे ही उन तेजस्वी मुनि को देखा, वैसे ही उसका शरीर पीला पड़ गया और वह गर्भवती हो गई। उसे अपना शरीर देखकर बड़ी व्यग्रता हुई और वह भागकर अपने पिता के आश्रम में चली आयी। यहाँ पिता ने देखते ही उससे जो समाचार पूछा तो उसने कहा—और तो कुछ नहीं।

आज पुलस्त्य मुनि के आश्रम में जाते ही मेरे अंगों में यह परिवर्तन अनायास हो आया है। मुनि ने नेत्र बन्द कर देखा तो उन्हें सबकुछ ज्ञात हो गया। वे उस कन्या को साथ ले पुलस्त्य मुनि के आश्रम पर आये और उनसे प्रार्थनापूर्वक उसे अपनी सेवकिनी बना लेने की प्रार्थना की। ब्राह्मण श्रेष्ठ पुलस्त्य जी धार्मिक राजर्षि तृणबिन्दु के उन वचनों को सुन उस कन्या को 'बहुत अच्छा' ऐसा कहकर अंगीकार किया।

कन्या को पुलस्त्य जी को सौंप राजा तृणबिन्दु अपने आश्रम में लौट आये। वह राजतनया भी अपने गुणों से पति को सन्तुष्ट कर वहाँ रहने लगी। तब एक दिन उसके शील-स्वभाव से सन्तुष्ट हो मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्यजी उससे बोले कि 'हे सुश्रोणि! मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिए हे देवि! आज मैं अपने ही तुल्य एक ऐसा पुत्र देता हूँ कि जो उत्तम वंशों का वर्द्धक होगा और पौलस्त्य नाम से प्रसिद्ध होगा।

परन्तु तुमने मेरी ध्वनि सुनकर गर्भ धारण किया है जिससे उसका नाम विश्रवा होगा। ऐसा वर पाकर वह देवी प्रसन्न हुई। फिर तो कुछ ही समय पश्चात् त्रिलोक विख्यात यशोधर्म समन्वित विश्रवा नामक पुत्र को प्रसव किया। यह विश्रवा भी वेदज्ञ मुनि व्रतचारी तथा अपने पिता के समान तपस्वी हुए।

वैश्रवण कुबेर की कथा

अल्पकाल में ही पुलस्त्य-पुत्र मुनिश्रेष्ठ विश्रवा अपने पिता के ही समान तप करने लगे। वे सत्यवादी, शीलवान्, जितेन्द्रिय, स्वाध्याय निरत, पवित्र, भोगों में अनासक्त और सर्वदा धर्म तत्पर रहा करते थे। जब विश्रवा के आचरण को देखकर महामुनि भरद्वाज ने अपनी देवाङ्गना तुल्य सुन्दरी कन्या का उनसे विवाह कर दिया।

फिर सन्तानेच्छुक उस कन्या से धर्मात्मामुनि विश्रवा ने एक ऐसा पुत्र उत्पन्न किया जो ब्राह्मणोचित समस्त गुणो से युक्त परम अद्भुत बलवान् था। उसके जन्म से पितामह पुलस्त्यजी को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने पौत्र में कल्याणकारिणी बुद्धि देखकर कहा कि यह तो धनाध्यक्ष होगा। फिर तो उन्होंने ही देवर्षियों सहित उसका नामकरण किया और कहा कि 'यह बालक विश्रवा से उत्पन्न हुआ है और वैसा ही है भी।

अत: इसका नाम वैश्रवण होगा। फिर तो उस महातपोवन में रहते हुए वह वैश्रवण भी बड़े तेजस्वी हुए। उन्होंने सोचा कि, धर्म की ही परमगति है। अत: मैं भी धर्माचरण करूँगा। उन्होंने कठिन व्रत के साथ हजारों वर्ष के घोर तप किए, जिसमें वे कभी जल पीकर, कभी वायु पान कर और कभी निराहार ही रह जाते थे।

इस प्रकार उन्होंने एक हजार वर्ष, एक वर्ष की भाँति व्यतीत कर दिये। तब तो ब्रह्माजी उनके इस तप को देखकर प्रसन्न हो गए और इन्द्रादिक देवताओं को साथ ले उन्हें वर देने के लिए उनके आश्रम पर पधारे और बोले—हे सुव्रत! हे वत्स! मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ, वर माँगो।

तब अपने समक्ष ब्रह्माजी को उपस्थित देख वैश्रवण ने कहा—भगवन् ! मेरी इच्छा है के मैं लोकपाल बनूँ और समस्त धन मेरे पास रहे। वैश्रवण की यह बात सुनकर ब्रह्माजी को और भी प्रसन्नता हुयी और उन्होंने 'तथास्तु' कहकर उसकी प्रार्थना स्वीकार की तथा वैश्रवण से फिर बोले—हे वत्स! मैं चौथा लोकपाल रचने ही वाला था, अब तुम्हीं उस पद को स्वीकार करो। जाओ अपार धन के स्वामी बनो। इन्द्र, वरुण और यम के साथ तुम्हारा चौथा स्थान होगा।

यह सूर्य के समान तेजस्वी पुष्पक विमान है, इसे तुम अपनी सवारी के लिए लो और आज ही से देवताओं की समानता प्राप्त करो। अब मैं अपने लोक को जाता हूँ, तुम्हारा कल्याण हो।

ऐसा कहकर ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये। ब्रह्मादि देवताओं के चले जाने पर धनेश वैश्रवणजी ने हाथ जोड़कर अपने पिता से कहा—'भगवन् ! मैंने पितामह ब्रह्माजी से अभीष्ट वरदान तो प्राप्त किया है, किन्तु उन्होंने मेरे रहने का कोई

स्थान नही बताया है। अत: अब आप ही मेरे लिए किसी ऐसे निवास स्थान का विचार कीजिये, जहाँ रहने से किसी भी प्राणी को कष्ट न हो?' पुत्र के इस प्रकार कहने पर मुनि श्रेष्ठ विश्रवा बोले—धर्मज्ञ! सुनो। दक्षिण समुद्र के तट पर एक त्रिकूट नामक पर्वत है, जिसके शिखर पर एक विशाल पुरी है, जिसका नाम लंका है।

विश्वकर्मा ने उसे राक्षसों के लिये बनाया था। वह अमरावती के ही समान रमणीक है। अत: तुम लंका में ही निवास करो। उसके चतुर्दिक् चौड़ी खाई खुदी है और वहयन्त्रों तथा शस्त्रों से परिपूर्ण है। वह लंकापुरी रमणीय है। सुवर्ण और वैदूर्य मणि के उसके द्वार हैं। पहले उसमें राक्षस रहा करते थे। किन्तु अब विष्णु के भय से वे वहाँ से भागकर पृथ्वी के नीचे रसातल में जा बसे हैं। तुम वहाँ जामकर सुख से रहो।

वहाँ तुम्हें या और किसी को भी कोई कष्ट न होगा। तब अपने पिता विश्रवा मुनि के ऐसा कहने पर धर्मात्मा पुत्र वैश्रवण अब राक्षस की चारों ओर समुद्र से घिरी हुई लंका में प्रसन्नतापूर्वक निवास करने लगे। देवता और गन्धर्व उनका यशोगान करने लगे। उनका हृदय बड़ा विनीत था। धर्मात्मा धनेश्वर वैश्रवण पुष्पक द्वारा समय-समय पर अपने माता-पिता के समीप प्राय: आते-जाते रहते थे।

राक्षसों का पूर्व इतिहास तथा उन्हें महादेव-पार्वती का वरदान

अगस्त्यजी के कहे हुए इस वृत्तान्त को सुनकर श्रीराम विस्मित हो गये। उन्होंने बारम्बार शिर कम्पितकर अगस्त्यजी की ओर देखते हुए पूछा—हे भगवन् ! आपसे यह सुनकर कि लंका में पहले ही से राक्षस रहते थे' मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या वे राक्षस रावण, कुम्भकर्ण आदि से भी बढ़कर बली थे? हे ब्रह्मन् ! उनके मूल पूर्वज कौन थे और उनका क्या नाम था। विष्णु से उनका क्या बैर था कि उन्होंने उन्हें मार भगाया?

तब राम के ऐसा पूछने पर अगस्त्यजी बोले—हे राम! ब्रह्माजी ने पहले जल की सृष्टि की और उसकी रक्षार्थ अनेक प्राणियों को उन्होंने उत्पन्न किया। उनमें हेति और प्रहेति नाम के दो राक्षस थे। वे दोनों भ्राता मधु-कैटभ के समान ही वीर थे। उनमें प्रहित बड़ा धार्मिक था, जो तपोवन में जाकर तप करने लगा और हेति ने विवाह के लिए बड़ा यत्न किया। उस समय काल की एक बहन थी जिसका नाम 'भया' था। अभी वह कुमारी ही थी कि उसका रूप अति भयंकर हो गया। हेति ने उसी भया के साथ विवाह किया। उससे एक पुत्र हुआ जिसका नाम विद्युत्केश था।

उसका विवाह संध्या की पुत्री से हुआ, जिसका नाम सालकटङ्कटा था। उसे पाकर निशाचर विद्युत्केश बड़ा प्रसन्न हुआ और सुख से रहने लगा। कुछ काल पश्चात्

उस संध्या पुत्री ने विद्युत्केश से गर्भ धारण किया और मन्दराचल पर जाकर वहाँ एक पुत्र प्रसव किया और उस नवजात शिशु को वहीं त्याग फिर विद्युत्केश के पास चली आयी। इधर उसका वह त्यागा हुआ पुत्र मेघ की भाँति शब्द करने लगा। फिर मुँह में मुट्ठी डालकर धीरे-धीरे रोने लगा। उसी समय वृषभारूढ़ शिव-पार्वती आकाश मार्ग से उधर होकर कहीं जा रहे थे।

उन्होंने वहाँ उस बालक के रोने का शब्द सुना। जब निकट जाकर देखा तो पार्वतीजी को बड़ी दया आई। उन्होंने उनके कहने से उस राक्षस-पुत्र का वय उसकी माता के समान कर दिया और उसे अमरत्व भी प्रदान कर दिया। महादेवजी के लिए ऐसा करना कोई बड़ी बात नहीं थी। क्योंकि वे अक्षर और अविनाशी हैं। महादेवजी ने पार्वतीजी को प्रसन्न करने के लिए एक पुर के समान एक विमान भी दे दिया और हे नृपात्मज! पार्वतीजी ने राक्षसियों को यह भी वर दे दिया कि 'राक्षसियाँ गर्भ धारण करते ही शिशु उत्पन्न करें और वह तत्क्षण माता की आयु का हो जाया करें।

हे राम! फिर तो वह विद्युत्केश का पुत्र सुकेश के नाम से प्रसिद्ध हुआ और महादेवजी के वरदान से वह बड़ा अभिमानी हो गया। अब आकाशचारी यान (विमान) और लक्ष्मी को प्राप्त कर वह सर्वत्र विचरण करने लगा।

सुकेश का वंश-विस्तार

तदनन्तर सुकेश को वरदान प्राप्त तथा धार्मिक देखकर विश्वावसु के समान तेजस्वी ग्रामणी नामक गन्धर्व ने अपनी 'देववती' रूप यौवनशालिनी कन्या, जो दूसरी लक्ष्मी के ही समान तीनों लोकों में प्रसिद्ध थी—उसे दे दी। उसमें सुकेश से अग्नि के समान शरीरधारी तीन पुत्र उत्पन्न हुए। बलवानों में श्रेष्ठ उन तीनों के क्रमशः ये नाम थे।

माल्यवान्, सुमाली और माली। सुकेश के ये तीनों पुत्र तीन लोकों के समान, तीनों अग्नियों के समान, तीनों वेदों के समान अथवा वात, पित्त, कफ के समान उग्र और भयङ्कर थे। तेजस्वी तो ऐसे थे कि शीघ्र ही बढ़कर युवा हो गये। फिर वे तीनों मेरु पर्वत पर जाकर कठोर नियमों द्वारा सब प्राणियों को भयोत्पादक तप करने लगे। उनके घोर तप से देवताओं और मनुष्यों सहित त्रैलोक्य संतप्त हो उठा। तब तो अपने विमान पर बैठकर ब्रह्माजी उन्हें वर देने आये। कहा, वर माँगो।

इस पर वे राक्षस वृक्षों की तरह थर-थर काँपते हुए हाथ जोड़कर बोले—हे देव! यदि आप हमें वर देना चाहते हैं तो हम आपसे यही माँगते हैं कि हममें परस्पर प्रीति बनी रहे और हमें कोई जीत न पावे। हम अपने शत्रुओं के संहारक हों और अजर-अमर हों। ब्राह्माजी ने कहा—तथास्तु। तुम लोग ऐसा ही होओ, सुकेश

के पुत्रों को ऐसा वर दे, ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये। हे राम! अब वे राक्षस वरदान पाकर अत्यन्त निर्भय हो देवताओं और असुरों को सताने लगे।

देवता, महर्षि और चारण अनार्यों की भाँति अपना रक्षक ढूँढ़ने लगे। फिर उन्हें कोई रक्षक न मिला। तब वे शिल्पियों में श्रेष्ठ विश्वकर्मा के पास गए और कहा कि देवताओं की इच्छानुसार आप ही उनके गृह-निर्माणकर्त्ता हैं। अत: हम लोगों के लिए भी किसी उच्चस्थान पर एक ऐसा भवन दीजिए जो शिव-भवन के समान बड़ा विस्तृत और ऊँचा हो। तब उन महाबलवान् राक्षसों के वचन सुनकर विश्वकर्मा ने उन्हें वास करने के लिए इन्द्र के समान स्थान बतलाते हुए कहा कि—'दक्षिण समुद्र के तट पर सुवेल पर्वत के समीप ही एक त्रिकूट नाम का पर्वत है, जिसके मध्य का शिखर बड़ा ही उन्नत मेघ के सदृश दीख पड़ता है, जिसके ऊपर पक्षी भी नहीं पहुँच सकते।

उसके ऊपर तीस योजन चौड़ी और सौ योजन लम्बी एक नगरी बनी हुई है, जिसका नाम लंका है। उसकी दीवारें सोने की हैं और सुवर्ण तोरण से भूषित फाटक है। इस लंकापुरी को मैंने इन्द्र की आज्ञा से बनाया था। तुम लोग उसी में जाकर रहो। हे शत्रुओं के संहारक राक्षसों! जब तुम वहाँ बहुत से राक्षसों सहित बस जाओगे, तब शत्रुओं से दुर्धर्ष हो जाओगे। विश्वकर्मा के इन वचनों को सुनकर वे राक्षस अपने साथ सहस्त्रों सेवकों को लेकर उस नगरी में जा बसे। लंका के स्वर्णभूषित गृहों में बस कर वे बड़े हर्षित हुए।

हे राघव! इसी समय स्वेच्छया एक गन्धर्वी उत्पन्न हुई जिसका नाम नर्मदा था। उसकी तीन पुत्रियाँ थी, जो ह्री, श्री और कीर्ति के समान ही द्युतिमती थीं। उसेन अपनी तीनों पुत्रियों को क्रमश: उन तीनों राक्षसों को दे दीं। उन्होंने उनसे उत्तरा, फाल्गुनी नक्षत्र में विवाह किया। उनसे माल्यवान् ने अपनी सौन्दर्यवती सुन्दरी नामक पत्नी से वज्रमुष्टि, विरूपाक्ष, दुर्मुख, सुप्तघ्न, यज्ञकोप, मत्त और उन्मत्त ये सात पुत्र उत्पन्न किये। साथ ही उसने 'अनला' नामक एक सुन्दरी कन्या भी उत्पन्न की। फिर सुमाली की भार्या केतुमती, जो पूर्णिमा की चन्द्रमा के सामन सुन्दरी थी।

उसने अपने गर्भ से प्रहस्त, कम्पन, विकट, कालिकामुख, धूम्राक्ष, दण्ड, महाबली, सुपार्श्व, संह्रादि, प्रधर्ष और भासकर्ण ये महाबली पुत्र और कुम्भीनसी, केकसी, राका और पुष्पोत्कटा नाम की कन्याएँ भी उत्पन्न कीं। इसी प्रकार माली ने अपनी वसुधा नाम्नी सुन्दर पत्नी से अनल, अनिल, हर और सम्पाति ये चार पुत्र उत्पन्न किये। यही चारों विभीषण के मन्त्री हुए। इस प्रकार राक्षस श्रेष्ठ उन तीनों राक्षसों का परिवार बहुत बढ़ा और वे तीनों अपने सैकड़ों पुत्रों के साथ इन्द्र सहित

सब देवताओं, ऋषियों, नागों और यक्षों को सताने लगे। वे सब दुरासद राक्षस, वायु के सदृश संसार में सर्वत्र भ्रमण करते। संग्राम क्षेत्र में काल के समान अमित तेजस्वी हो जाते और वरदान के प्रभाव से गर्वित हो सर्वदा यज्ञों को नष्ट किया करते।

सुकेश के पुत्रों द्वारा सताये गये देवताओं की ओर से विष्णुजी का कुपित हो उन्हें मारने जाना

उन राक्षसों से पीड़ित होकर देवता, ऋषि और तपस्वी भय से व्याकुल हो देवदेव महादेव की शरण में गये। वहाँ जाकर उन्होंने तिपुरमर्दक कामारि शिवजी को प्रणाम किया और भय से कम्पित वाणी द्वारा यह निवेदन किया कि—'हे भगवन्! हे प्रजाध्यक्ष! ब्रह्माजी के वर से धृष्ट हो सुकेश के पुत्र सम्पूर्ण प्रजा को बड़ा कष्ट दे रहे हैं।

हमारे शरणदाता आश्रम को उन्होंने उजाड़ दिया जो अब वास करने योग्य नहीं रह गया। देवतओं को स्वर्ग से हटाकर वे स्वयं ही अधिकार कर लिये तथा देवताओं के समानही अब वे तीनों राक्षस स्वर्ग में विहार करते हैं माली, सुमाली और माल्यवान्—ये तीनों राक्षस कहते हैं कि—'विष्णु, रुद्र, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, वरुण और सूर्य मैं ही हूँ।

अब तो उन दुर्धर्ष और अहंकारी राक्षसों के साथ रहना हमारे लिये बड़ा कठिन हो गया है; क्योंकि वे हम सबको बड़ा कष्ट दे रहे हैं। हे प्रभो! हम आपकी शरण आये हैं। उनका नाश कर, हमें अभय कीजिये।' तब उन समस्त देवताओं की इस प्रार्थना को सुनकर कपर्दी, नीललोहित महादेवजी ने कहा—देवताओं! मैं तो उन राक्षसों को न मारूँगा। क्योंकि मुझसे तो वे अवध्य हैं। परन्तु मैं तुम्हें वह उपाय बतलाता हूँ कि, उन्हें कौन मार सकेगा। हे महर्षियों! तुम लोग इसी प्रकार देवताओं सहित भगवान् विष्णु की शरण में जाओ, वे उनका नाशकर डालेंगे।

भगवान् शिवजी के ऐसा कहने पर देवता उनकी जय-जयकार कर निशाचरों के भय से पीड़ित हो विष्णुजी के पास गये। वहाँ जाकर उन्होंने शंख, चक्र, गदाधारी देवनारायण के चरणों में प्रणाम किया और व्याकुलता से कहा कि—'हे देव! सुकेश के तीनों पुत्रों ने वरदान की शक्ति से आक्रमण करके हमारे स्थान हरण कर लिये हैं। त्रिकूट पर्वत के शिखर पर लंका नाम की जो दुर्गम नगरी है, वहीं रहकर वे निशिचर हम सब देवताओं को क्लेश दे रहे हैं। हे मधूसूदन! हमारे हितार्थ आप उनका संहार करें, हम सब आपकी शरण आये हैं। आप हमारी रक्षा करें।

आपके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जो हमारी रक्षा करे। राक्षस मद से मतवाले हो रहे हैं। अत:आप अपने चक्र से उनका शिर काटकर हमें अभय कीजिये।

देवताओं के इस प्रकार के निवेदन को सुनकर देवाधिदेव जनार्दन उन्हें अभय देते हुए बोले—'शिव से दीक्षित राक्षस सुकेश को मैं जानता हूँ तथा उसके पुत्रों को भी जिनमें माल्यवान् श्रेष्ठ है, मैं अपरिचित नहीं हूँ। वे अवश्य ही धर्म की मर्यादा का उल्लंघन कर रहे हैं।

मैं उनका नाश करूँगा। तुम बस चिन्ता त्याग दो।' समर्थ विष्णु से ऐसा आश्वासन पाकर देवता उनकी जय-जयकार करते हुए अपने-अपने स्थान को चले आये। जब इसका समाचार माल्यवान् को प्राप्त हुआ, तब उसने अपने दोनों भाईयों को बुलाकर विष्णुजी के कुपित होने की सब बात कह सुनाई और कहा कि अब इस विषय में हम लोग भी उचित कार्यवाही करें; क्योंकि हिरण्यकशिपु तथा अन्य देवद्रोही दैत्यों को इन्हीं विष्णु ने मारा है। नमुचि, कालनेमि, संह्राद, राधेय, यमलार्जुन, हार्दिक्य, शुम्भ और निशुम्भ आदि बड़े-बड़े बलवान् और शक्तिशाली असुर इन्हीं के हाथ से मारे गये हैं। अब वही नारायण हमें भी मारना चाहते हैं।

अत: हम सब भी कोई उचित उपाय करें। तब ज्येष्ठ भ्राता माल्यवान् की यह बात सुनकर सुमाली और माली ने कहा—'भाई! हम लोगों ने स्वाध्याय, दान और यज्ञ किये हैं। ऐश्वर्य की रक्षा तथा उसका उपयोग भी किया है। हमने आरोग्यपद जीवन पाया है तथा अपनी कुल-परम्परागत हमने धर्म की स्थापना की है। हमने देवसेना रूपी अगाध सागर में प्रवेश करके बड़े-से-बड़े शत्रु पर भी विजय प्राप्त की है। अत: हम लोगों को मृत्यु से कोई भय नहीं है। नारायण, रुद्र, इन्द्र या यमराज कोई भी क्यों न हों, हमारे समक्ष भयातुर हैं।

परन्तु विष्णुजी हम पर क्यों कुपित हैं इसका कोई कारण नहीं ज्ञात होता। सम्भवत: देवताओं के ही उत्तेजन से उनका मन हमारी ओर से विपरीत हो गया है। अतएव हम सब एकत्र होकर आज ही सब देवताओं का वध कर डालें—यह उचित है। क्योंकि उन्हीं के कारण यह उपद्रव उपस्थित हुआ।' ऐसा विचार कर उन महाबली निशाचरों ने युद्धोद्योग की घोषणा कर दी। राक्षसों की सब सेना एकत्र होने लगी। रथ, हाथी, घोड़े, गधे, बैल, ऊँट, गरुड़ के समान पक्षी, सिंह, बाघ, सूअर और नीलगाय आदि वाहनों पर वे बलोन्मत्त निशाचर लंका छोड़कर देवलोक को चल दिये। उस समय पृथ्वी और आकाश में भयंकर उत्पात प्रकट हुए। सम्पूर्ण भूतों का लय-सा होता दिखाई पड़ा।

गीधों का समूह राक्षसों पर काल सदृश मँडराने लगा। फिर भी वे कालपाशबद्ध राक्षस नहीं लौटे और बढ़ते ही चले गये। जब देवदूतों ने राक्षसों के इस उद्योग का समाचार विष्णुजी से कहा, तब वह तत्क्षण ही सहस्र सूर्य के समान चमचमाता

कवच धारणकर, बाणों से पूर्ण दो तरकस लिये, कटिसूत्र धारण किये हुए, प्रदीप्त खड्ग उठा अपने वाहन गरुड़ पर जा बैठे और इनके अतिरिक्त उन्होंने पाञ्चजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कौमोदकी गदा, नंदकी खड्ग और शार्ङ्गधनुष इस प्रकार सभी श्रेष्ठ आयुधों को उन्होंने ग्रहण कर लिया।

फिर तो श्याम स्वरूप, पीताम्बर पहने और गरुड़ की पीठ पर सवार, श्रीनारायण सुमेरु पर्वत स्थित् विद्युत् मेघ के समान शोभित होते हुए राक्षसों के संहारार्थ वहाँ जा पहुँचे। उस समय सिद्ध, देवर्षि, महानाग, गन्धर्व और यक्ष उनकी स्तुति करने लगे।

देवासुर संग्राम

अब श्रीनारायण को युद्ध के लिए उद्यत देख इन राक्षसों ने उन पर अपने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा आरम्भ कर दी। नीलवर्ण की कान्ति वाले श्रीनारायण राक्षसों के घेरे में जा पड़े। फिर तो जैसे खेतों पर टीड्डियाँ और अग्नि पर मच्छर, मधु-घट पर डाँस और सागर में मगर गिरते हों, ऐसे ही राक्षसों के चलाये हुए वज्रवत् बाण श्रीहरि के शरीर में समाने लगे। मानों प्रलयकाल में जीव भगवान् के शरीर में समा रहे हों।

राक्षसी सेना के विविध बाणों से श्रीहरि आच्छादित हो गये। किन्तु उनके प्रहारों को उन्होंने ऐसा ही सहन किया जैसे मछलियों के वेग को समुद्र सहता है। तदनन्तर उन्होंने शार्ङ्गधनुष उठा अपने वज्रवत् बाणों से राक्षसों का संहार करना आरम्भ कर दिया और मन के समान वेगवान् पैने बाणों से श्रीविष्णुजी ने सैकड़ों-सहस्रों राक्षसों को मार डाला। बचे-बचाये राक्षस भाग गये। पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु ने अपना पाञ्चजन्य शंख बजाया। उससे त्रिलोक व्यथित हो उठा। राक्षस तो और भयभीत हुए तथाकितनों को बाणों से, कितनों को अपने चक्र से मार-काट कर सर्वदा के लिये पृथ्वी पर सुला दिया।

सुमाली के सारथी का शिर काट डाला। यह देख सुमाली का भाई माली अपना धनुष तान गुरुड़ पर दौड़ा। उसके धनुष से छूटे शर विष्णुजी के शरीर में प्रवेश करने लगे। किन्तु उससे कुछ भी क्षुभित न होकर भूतभावन भगवान् ने अपना धनुर्टकोरकर माली के ऊपर कितने ही बाण बरसाकर व्याकुल कर दिये। वह युद्ध से विमुख हो गया। शंख-चक्र-गदाधारी ने उसके मुकुट, ध्वजा और धनुष को काटकर उसके रथ के घोड़ों को भी मार गिराया। अब वह अपनी प्रचण्ड गदा ले विष्णुजी से युद्ध करने चला।

उसने गरुड़ की ललाट पर गदा का प्रहार किया। गरुड़ उस प्रहार को न सह सके और विष्णुजी को उन्होंने युद्ध से विमुख कर दिया। इससे राक्षस हर्षित हो गर्जने

लगे। इस पर नारायण ने सुदर्शन चक्र चला दिया। सुदर्शन ने माली का शिर काटकर धड़ से पृथक् कर दिया। यह देख देवतओं में हर्ष ध्वनि होने लगी। माली का वध हुआ देख सुमाली और माल्यवान् शोक सन्तप्त हो सैनिकों सहित लंका की ओर भाग गये। इतने में गरुड़ भी स्वस्थ हो गये।

फिर तो वे रणभूमि में जाकर क्रोध में भरकर अपने पंखों के पवन से राक्षसों को भगाने लगे। ऊपर से विष्णुजी अपने सब अस्त्रों से उन्हें मार-काटकर चूर्ण करने लगे। राक्षसों की बड़ी दुर्गति हुई। उनका भयंकर रक्तपात हुआ। वे कटकर खण्ड-खण्ड हो गए।

राक्षस माली और माल्यवान् के मरने पर सुमाली का रसातल-वास और कुबेर का लंका में वास

इस प्रकार जब पद्मनाभ भगवान् उस राक्षसी सेना को मारते और भगाते ही चले गए, तब अपनी सेना का इस प्रकार संहार होते देख माल्यवान्, जो भागकर लंका तक पहुँचा था, फिर पीछे की ओर लौट पड़ा और क्रोध में भरकर, लाल-लाल नेत्र केये भगवान् पुरुषोत्तम पद्मनाभ से बोला—हे नारायण! तुम पुरातन क्षात्रधर्म को नहीं जानते। क्योंकि युद्ध से भयभीत हम भागे हुओं को तुम क्षुद्रवत् मार रहे हो।

युद्ध से परांमुख हुए जो मारना पाप है। ऐसा करने वाला पुण्यलोक स्वर्ग को नहीं पाता। हे शंख-चक्र-गदाधारी! यदि तेरी इच्छा युद्ध करने की ही है तो आ मैं तेरे समक्ष खड़ा हूँ। मुझ पर तू अपना बल प्रयोग करे। विष्णुजी ने उसे खड़ा हुआ देखकर कहा—तुम लोगों ने देवताओं को त्रस्त कर दिया। मैंने राक्षस नाश रूप उन्हें वर दिया है। अतः मैं इस समय राक्षसों का विनाश कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर रहा हूँ।

मैं तुम सबको अवश्य ही मार डालूँगा। भले ही तुम रसातल तक क्यों न जाओ, मैं तुम्हारा पीछा करूँगा। विष्णुजी ऐसा कर ही रहे थे कि उस राक्षसेन्द्र ने उन देवदेव के वक्षःस्थल पर अनी शक्ति चला दी। सुब्रह्मण्यप्रिय कमलनाभ भगवान् ने तत्क्षण ही उस शक्ति को अपनी छाती से निकाल उसी से माल्यवान् को मारा। भगवान् गोविन्द के हाथ से उस छूटी शक्ति ने माल्यवान् का कवच काट गिराया और उसकी छाती में प्रवेश कर उसे मूर्च्छित कर दिया। कुछ क्षण पश्चात् वह उठा और निश्चल खड़ा हो गया।

फिर उसने एक काँटेदार शूल उठा विष्णुजी को मारा। साथ ही उसने दौड़कर उनकी छाती में एक घूँसा भी मारा। फिर चार हाथ पीछे हटकर गरुड़ पर भी उसने प्रहार किया। फिर तो गरुड़जी ने जो अपने पंखों की प्रचण्ड वायु उसे दी तो

वह सूखे पत्तों की ढेर से उड़े पत्ते जैसे उड़ने लगा। तब अपने बड़े माल्यवान् को भागते देख सुमाली भी लंका को भाग गया।

माल्यवान् अपनी सेना सहित लंका में जा पहुँचा। इस प्रकार कमलनाथ भगवान् ने उन राक्षसों को कई बार मारा और भगाया और जब वे विष्णुजी की समक्षता न कर सके और सताये गये, तब वे अपने बाल-बच्चों सहित लंका का निवास त्यागकर पाताल में जा बसे। फिर सुमाली को राजा बना, वहीं सालकटङ्कटा के वश में रहने लगा। हे राम! तुमने जिन पुलस्त्य वंश वाले सब राक्षसों का संहार किया है, उनमें सुमाली, माल्यवान् और वे माली बड़े ही भाग्यशाली और प्रधान थे। अधिक क्या कहें, ये सब रावण से भी अधिक बलवान् थे।

शंख-चक्र-गदाधारी भगवान् विष्णु के अतिरिक्त और कोई भी इन सुर-शत्रु राक्षसों का नाश नहीं कर सकता था। अतःतुम्हीं चार भुजाधारी, सनातन, अजेय अविनाशी और साक्षात् नारायण हो। राक्षसों का नाश करने के लिए ही तुम्हारा अवतार हुआ है। हे नराधिप! आज मैंने तुम्हें समस्त राक्षसों की जैसे उत्पत्ति हुई है सुना दी।

हे रघुत्तम! अब मैं तुम्हें रावण और उसके पुत्रों का अन्य वृत्तान्त और उनका अतुल प्रभाव सुनाता हूँ। इस प्रकार जब सुमाली रसातल में चला गया, तब श्रीकुबेरजी लंका में जा रहने लगे थे।

रावण, कुम्भकर्ण, सूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म

कुछ दिन पश्चात् सुमाली राक्षस रसातल से निकलकर अपनी सुन्दरी कन्या सहित मनुष्यलोक में विचरने लगा। तब इस प्रकार पृथ्वी पर विचरते हुए उसने पुष्पक विमान पर आरूढ़ कुबेरजी को देखा, जो अपने पिता विश्रवा के दर्शन करने जा रहे थे। यह देख सुमाली को आश्चर्य हुआ। वह मृत्युलोक छोड़ रसातल में पहुँच अपनी पुत्री कैकसी से बोला—हे पुत्रि! अब तुम्हारे विवाह का समय हो चुका है।

अधिक क्या कहें, मानीजनों के लिए कन्या दुःख का कारण होती है। क्योंकि यह कोई पहले से नहीं जानता कि, कन्या का विवाह कैसे वर से होगा। मातृकुल, पितृकुल और श्वसुरकुल—इन तनों कुलों को कन्या सदैव संशययुक्त रखती है। अतः अब तुम ब्रह्मा के कुल में उत्पन्न पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा मुनि को स्वयं जाकर वरण कर लो। हे पुत्री! विश्रवा को वरण करने से तुझे कुबेर के समान ही तेजस्वी पुत्र लाभ होगा।

फिर तो वह कन्या अपने पिता के वचनों को सुन और पितृ-गौरव को स्वीकार कर जहाँ विश्रवा मुनि तपस्या कर रहे थे, वहाँ जाकर खड़ी हो गई। तब पूर्ण

चन्द्रानना उस परम सुन्दरी को देख परमोदार विश्रवा मुनि ने उस कन्या से कहा—'भद्रे! तू किसकी दुहिता है और यहाँ कैसे आई है? तब उस कन्या ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज! यहतो आप अपने तप से ही जान सकते है? फिर भी मैं आपको यह बतलाती हूँ कि, मैं अपने पिता की आज्ञा से आपके पास आई हूँ और मेरा नाम कैकसी है।

शेष वृत्तान्त आप स्वयं ही जान सकते हैं। विश्रवा मुनि ने ध्यान कर उसके आने का प्रयोजन ज्ञात कर लिया और तब उससे कहा—हे भद्रे! मैंने तेरे मन की बात जान ली। हे मत्तगजेन्द्रगामिनी! मुझसे पुत्र उत्पन्न कराने की तेरी अभिलाषा है, किन्तु इस दारुण समय में तू मेरे पास आई है।

अतः तुमसे क्रूर कर्मा राक्षस उत्पन्न होंगे। विश्रवा मुनि के ऐसे वचन सुन कैकसी ने कहा—हे भगवन् ! आप जैसे ब्रह्मवादी द्वारा मैं दुराचारी पुत्रों को नहीं चाहती। अतः आप मुझ पर कृपा कीजिये। इस पर मुनिश्रेष्ठ ने कहा—अच्छा, तेरा पिछला पुत्र मेरे वंशानुरूप धर्मात्मा होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हे राम! फिर तो कुछ काल पश्चात् उसने बड़ा भयंकर वीभत्सरूपी राक्षस पुत्र प्रसव किया। उसके दस सिर, बड़े-बड़े दाँत और वीस भुजाएँ थीं तथा वह काले रंग का पहाड़ के समान था। उसके लाल होंठ, विशाल शिर और चमकीले बाल थे। उसके जन्मते ही पृथ्वी काँपने लगी, समुद्र खलबला उठा,, आकाश से बड़े-बड़े उल्कापात हुए।

सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ गया और देवताओ ने रक्त की वर्षा की। तदनन्तर पितामह ब्रह्मा के समान ही उसके पिता ने उसका नामकरण किया और कहा कि इस दस शिर वाले पुत्र का नाम दसग्रीव होगा। फिर कैकसी के गर्भ से कुम्भकर्ण का जन्म हुआ जिसके समान लम्बा-चौड़ा कोई अन्य प्राणी नहीं था।

फिर विकराल मुख वाली सूर्पणखा उत्पन्न हुई और सबके पश्चात् धर्मात्मा विभीषण का जन्म हुआ। उसके जन्म के समय आकाश से पुष्प-वृष्टि हुई तथा देवताओं ने दुन्दुभी बजायी और सबने साधु-साधु कहा। कुम्भकर्ण और दसग्रीव उस महावन में बढ़ने लगे। कुम्भकर्ण बड़ा उन्मत्त हुआ।

उसको भोजन से कभी तृप्ति ही न होती थी और तीनों लोकों में घूमकर महर्षियों का भक्षण किया करता था। विभीषण बाल्यकाल से ही धर्मात्मा था। वह सर्वदा धर्म में स्थित रह स्वाध्याय करता और नियमित आहार करते हुए इन्द्रियों को अपने वश में रखता।

कुछ काल पश्चात् धनपति वैश्रवण पुष्पक विमान पर बैठ अपने पिता का

दर्शन करने के लिए वहाँ आये, जो अपने तेज से प्रदीप्त हो रहे थे। तब उन्हें देखकर राक्षस-कन्या कैकसी अपने पुत्र दशग्रीव के पास आई और बोली—हे पुत्र! अपने भाई वैश्रवण को देखा, ये कैसे तेजस्वी हैं।

क्या ही अच्छा होता यदि तुम भी अपने भाई के समान हो। यद्यपि तुम बड़े पराक्रमी हो, तथापि ऐसा प्रयत्न करो, जिससे तुम भी वैश्रवण के ही समान तेजस्वी और वैभवशाली हो जाओ।' माता की यह बात सुनकर प्रतापी दशग्रीव को बड़ा रोष हुआ।

उसने कहा—माँ! तुम चिन्ता न करो। मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि, अपने पराक्रम से भाई वैश्रवण के समान या उससे भी बढ़कर हो जाऊँगा। यह कहकर उसने तपस्या करने का विचार किया और गोकर्ण के पवित्र आश्रम पर जाकर वहाँ भाईयों सहित तप करने लगा। उसने घोर तपकर ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लिया। उन्होंने प्रसन्न होकर उसे विजयदायक वर प्रदान किया।

रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण का तप तथा वरदान

इतना सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने अगस्त्य मुनि से पूछा—हे ब्रह्मन! उन महाबली भाईयों ने कैसे तपस्या की? यह सुन अगस्त्यी प्रसन्न होकर बोले—हे रामजी! कुम्भकर्ण अपनी इन्द्रियों को संयमित कर धर्म-मार्ग में स्थित हुआ और ग्रीष्मकाल में अपने चारों ओर अग्नि जलाकर पञ्चाग्नि तापने लगा। फिर वर्षा ऋतु में वीरासन से बैठकर जल की वृष्टि को सहता तथा शीतकाल में जल में बैठा रहता। इस प्रकार तप करते हुए उसने दस हजार वर्ष व्यतीत कर दिये। विभीषण तो सदा से ही धर्मात्मा थे। वे नित्य धर्म-परायण हो पाँच हजार वर्षों तक एक पैर से खड़े रहे।

उनका नियम समाप्त होने पर आकाश से पुष्प वृष्टि हुई तथा देवताओं ने स्तुति की। तदनन्तर विभीषण ने स्तुति की। तदनन्तर विभीषण ने अपनी दोनों भुजाएँ मस्तक के ऊपर उठाकर स्वाध्याय-परायण हो पाँच हजार वर्षों तक सूर्य की आराधना की। इस प्रकार मन को वश किये विभीषण ने भी दश हजार वर्ष व्यतीत किये। दशग्रीव ने तो दश हजार वर्ष तक निरन्तर उपवास किया और प्रत्येक हजार वर्ष के पूर्ण होने पर वह अपना एक मस्तक काटकर अग्नि में होम कर देता था। इस प्रकार नौ हजार वर्ष व्यतीत होने तक उसके नौ मस्तक अग्निदेव को अर्पित हो गये और जब दस हजार वर्ष पूर्ण होने लगा तब उसने अपना दशवाँ मस्तक काटना चाहा, फिर तो उसी क्षण उसके समक्ष ब्रह्माजी आ उपस्थित हुए।

उनके साथ देवता भी थे। तब ब्रह्माजी ने सन्तुष्ट होकर कहा—दशग्रीव! मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ, वर माँग। पितामह की यह वाणी सुनकर दशग्रीव का चित्त प्रसन्न

हो गया। उसने नत-मस्तक हो ब्रह्माजी को प्रणाम किया और हर्ष गद्‌गद वाणी में कहा—'भगवन् ! प्राणियों को मृत्यु का भय सर्वदा लगा रहता है, अतएव मैं अमर होना चाहता हूँ।' ब्रह्माजी ने कहा—ऐसा नही हो सकता। तू और कोई वर माँग। हे राम! जब लोककर्त्ता ब्रह्माजी ने ऐसा कहा, तब दशग्रीव ने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की—प्रजानाथ! मैं गुरुड़, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस तथा देवताओं के लिये अवध्य होऊँ। अन्य प्राणियों की मुझे चिन्ता नहीं है।

मनुष्य आदि जीवों को तो मैं तृणावत् समझता हूँ। दशग्रीव के ऐसा कहने पर देवताओं सहित खड़े ब्रह्माजी ने कहा—अच्छा, ऐसा ही होगा। हे राम! दशग्रीव से ऐसा कहकर ब्रह्माजी उससे फिर बोले—हे अनाथ! मैं तेरे ऊपर अति प्रसन्न हूँ। अत: मैं अपनी ओर से भी तुझे वर देता हूँ। तूने अपने जिन सिरों को काटकर अग्नि में होम किया है, वे सिर तेरे पूर्ववत् हो जायेंगे तथा एक और भी तुझे यह दुर्लभ वर देता हूँ कि जिस समय तू जैसा रूप धारण करना चाहेगा, वैसा रूप तेरा हो जायेगा।

ब्रह्माजी के यह कहते ही राक्षस दशग्रीव के होम किए सब सिर पूर्ववत् निकल आये। हे राम! दशग्रीव को ऐसा वर दे, ब्रह्माजी विभीषण से बोले—हे वत्स विभीषण! मैं तेरी धर्म बुद्धि देखकर प्रसन्न हूँ, अत: हे सुव्रत! तू वर माँग। धर्मात्मा विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा—हे भगवन् ! जब आप लोक गुरु ब्रह्माजी स्वयं ही मुझ पर प्रसन्न हैं, तब मुझे और चाहिए ही क्या? मैं तो ऐसे ही कृतार्थ हो गया। परन्तु आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो हे सुव्रत! आप मुझे यह वर दें कि, परम आपदा पड़ने पर भी मेरी बुद्धि धर्म पर ही तत्पर रहे और हे भगवान् ! बिना किसी के शिक्षित किये ही मुझे ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना आ जाय और जिस आश्रम में मैं रहूँ उसके प्रति मेरी सदैव निष्ठा वृद्धि होती रहे।

हे परमोदार! मेरा यही सर्वोत्कृष्ट अभीष्ट है। ब्रह्माजी ने कहा—एवमस्तु! तुम जैसा चाहते हो सब कुछ वैसा ही होगा। राक्षस-योनियों में उत्पन्न होकर भी तुम्हारी बुद्धि अधर्म में प्रवृत्त नहीं होती, इसलिए मैं तुम्हें अमरत्व प्रदान करता हूँ। विभीषण से ऐसा कहकर जब ब्रह्माजी कुम्भकर्ण को वर देने के लिए उद्यत हुए, तब सम्पूर्ण देवताओं ने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की—'भगवान् ! आप कुम्भकर्ण को वरदान न दीजिये।' क्योंकि आपको स्वयं ज्ञात ही है कि बिना वर पाये ही वह दुष्ट तीनों लोकों को सताया करता है। नन्दनवन में सभी अप्सराओं और इन्द्र के दश सेवकों को इसने भक्षण कर डाला है। इसके भक्षण किये ऋषियों और मनुष्यों की तो गणना ही नहीं है।

जब बिना वर पाये ही इसकी यह करनी है, तब वर पाने पर तो यह समस्त

त्रिभुवन को ही चर्वण कर जायेगा। अत: हे अमितप्रभ! वर के द्वारा इसे अज्ञान प्रदान कीजिए। इससे लोक कल्याण भी होगा और इसका भी मान बना रहेगा। तब देवताओं के ऐसा कहने पर पद्म सम्भव ब्रह्माजी ने सरस्वती देवी को स्मरण किया। उनके स्मरण करते ही सरस्वती आ पहुँची और हाथ जोड़ कर बोलीं—'हे देव! मैं आ गयी हूँ, कहिए क्या आज्ञा है? ब्रह्माजी ने कहा—'वाणी! तुम राक्षसराज कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर इसके मुँह से देवताओं के अनुकूल बात निकालो!' सरस्वती ने कहा—'बहुत अच्छा'।

यह कह सरस्वती कुम्भकर्ण के मुँह में प्रवेश कर गयी। तब ब्रह्माजी ने कहा—महाबाहु कुम्भकर्ण! तुम भी जो चाहो वर माँगो। यह सुनकर कुम्भकर्ण ने कहा—'देवदेव! मैं यह चाहता हूँ कि, मैं अनेक वर्षों तक सोता रहूँ। ब्रह्माजी ने कहा तथास्तु! ऐसा कहकर देवताओं सहित ब्रह्माजी चले गए। पश्चात् सरस्वती देवी भी उसके मुख से निकल आईं और आकाश-मण्डल में चलीं गयीं। अब कुम्भकर्ण को चेत हुआ।

वह दुरात्मा दु:खी हो चिन्ता करने लगा कि, हाय! मेरे मुख से ऐसा वचन क्यों निकल गया। मुझे ज्ञात होता है कि देवताओं ने आकर मुझे ठग लिया, इस प्रकार वे सब भाई तप द्वारा ब्रह्माजी से वरदान पाकर उस श्लेष्यान्तक वन में अपने पिता के पास फिर आ गये और सुख से रहने लगे।

कुबेर का लंकापुरी त्याग कैलाश पर अलकापुरी बसाना तथा रावण का लंका प्रवेश

उधर सुमाली इन तीनों भाईयों के वरदान पाने का समाचार सुनकर मारीच, महोदर, प्रहस्त और विरूपाक्ष अपने इन मन्त्रियों और कुछ अनुचरों सहित पाताल से बाहर निकल दसग्रीव से मिलने आया। अपने प्राचीन रोष को लिये वह आकर दशग्रीव से हृदय लगाकर मिला और उसकी वर प्राप्ति की बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की तथा यह कहा कि जिस लंका नगरी में तुम्हारे भाई धनाध्यक्ष निवास करते हैं, वह हम लोगों की है।

पूर्व में वहाँ हम राक्षसों का निवास था। अब यदि साम, दाम, अथवा प्रयोग द्वारा पुन: आप उसे लौटाकर हस्तगत कर दें तो हम सबका कार्य सिद्ध हो जाय। दशग्रीव ने कहा—नानाजी! धनेश हमारे ज्येष्ठ भ्राता हैं, उनके सम्बन्ध में आप मुझसे ऐसी बात न कहें। सुमाली चुप हो गया। तब कुछ क्षण पश्चात् अवसर पाकर प्रहस्त ने नम्रता से कहा कि, हे महाबाहो! आप यह क्या कहते हैं? आप वीर हैं। वीरों का ऐसा कोई भ्रातृभाव नहीं चलता। देखिये, अदिति और दिति दोनों

सगी बहिनें हैं। उन दोनों का ही विवाह प्रजापित कश्यप से हुआ है। उनमें अदिति ने देवताओं और दिति ने दैत्यों को जन्म दिया है। पूर्व में वनों, पर्वतों और समुद्रों सहित यह समस्त पृथ्वी दैत्यों के ही अधिकार में थी। परन्तु विष्णु ने युद्ध में दैत्यों को मारकर यह समस्त त्रिलोकी देवताओं के अधीन कर दी। आशय यह कि, एक आप ही ऐसा नहीं करने जा रहे हैं, ऐसा विपरीत आचरण पहले भी हुआ है।

प्रहस्त की यह बात सुनकर दशग्रीव प्रसन्न हो गया। उसने कहा—बहुत अच्छा! फिर तो दशग्रीव उन राक्षसों को साथ लेकर त्रिकूट पर्वत पर चला गया और वहाँ से उसने प्रहस्त को दूत बनाकर लंका में भेजते हुए यह कह दिया कि--'प्रहस्त! तुम शीघ्र ही जाकर यक्षराज कुबेर से शान्तिपूर्वक कह दो कि—'हे राजन् ! यह लंकापुरी राक्षसों की है।

यदि इसे आप प्रसन्नतापूर्वक हमें लौटा दीजिये तो आपके द्वारा यह धर्म का पालन समझा जायेगा।' फिर तो प्रहस्त कुबेर पालित लंका में गया और दशग्रीव ने जैसा सिखाया था, वैसा ही उनसे प्रस्ताव किया तथा यह कहा कि पूर्वकाल में यह रमणीक लंकापुरी सुमाली आदि राक्षसों के अधिकार में थी।

अब आप इसे इनको लौटा दें। हम प्रार्थना पूर्वक याचना करते हैं। इसीलिये आपके भाई दशग्रीव ने मुझे आपके पास भेजा है। तब प्रहस्त से ऐसी बात सुनकर कुबेर ने कहा—'पहले लंका निशाचरों से सूनी थी। उस समय पिताजी मुझे इसमें रहने की आज्ञा दी और मैंने आकर इसे बसाया।

हे दूत! तुम जाकर दशग्रीव से कह दो कि, यह पुरी तथा जो कुछ अकंटक यह राज्य मेरे पास है, वह सब तुम्हारा भी है। मेरा राज्य या धन तुमसे बँटा हुआ नहीं।' यह कहकर धनाध्यक्ष अपने पिता विश्रवा मुनि के पास चले गये और सब समाचार कह सुनाया तथा पूछा कि अब मैं क्या करूँ?

यह सुन मुनिश्रेष्ठ विश्रवा ने कहा—हे पुत्र! दशग्रीव ने मुझसे भी यह बात कही थी। इस पर उस दुर्बुद्धि को मैंने बहुत डाँटा और बार-बार कहा कि, ऐसी बुद्धि से तू नष्ट हो जायेगा। परन्तु जब से वर मिला है, तबसे वह बड़ा दुष्ट हो गया है और उसके लिए मान्य अमान्य कुछ नहीं रह गया है।

मेरे शाप से उसका स्वभाव बड़ा दारुण हो गया है। अतएव अब तुम अपने अनुयायियों सहित कैलास पर्वत पर जाओ और वहीं अपनी पुरी बनाओ और लंका को त्याग दो। कैलास बड़ा राज्य स्थान है। वहाँ तुम और भी सुखी रहोगे।

हे धनद! इस राक्षस से बैर करना उचित नहीं है; क्योंकि तुम जानते ही हो कि इसे सर्वोत्कृष्ट वर प्राप्त हो चुका है। यह सुन कुबेर अपने पिता की आज्ञा मान

सपरिवार, यात्रियों, वाहनों और धन को साथ ले, कैलास पर्वत पर चले गये। फिर तो प्रहस्त ने जाकर यह समाचार दशग्रीव से कह सुनाया, जो वहाँ पर्वत पर अपने मन्त्रियों और अनुचरों सहित बैठा था। उसने कहा—लंकापुरी खाली हो गई, अब आप हम लोगों सहित उसमें चलकर प्रवेश कीजिए।

फिर दशग्रीव अपने अनुचरों सहित लंका में जा बसा। लंका में पहुँच राक्षसों ने रावण को राजतिलक दिया तथा उसने उस पुरी को फिरसे बसाया। नीले मेघ के समान राक्षसों के समूह लंका में आकर बस गये। उधर कुबेर ने कैलास पर्वत पर जाकर अति सुन्दर इन्द्र की अमरावती के समान अपनी अलकापुरी स्थापना कर उसे बसाया।

रावण को सूर्पणखा के विवाह की चिन्ता

अब रावण अभिषिक्त हो अपने भाईयों सहित अपनी बहिन सूर्पणखा के विवाह की चिन्ता में पड़ा और कालकेयवंशी दानवेन्द्र विद्युज्जिह्व के साथ उसका व्याह कर दिया। पश्चात् जब एक दिन रावण वन में शिकार खेल रहा था कि, वहाँ उसकी दृष्टि दिति के पुत्र 'मय' पर जा पड़ी। उसके साथ एक सुन्दरी कन्या भी थी। तब रावण ने जो उसका समाचार पूछा तो 'मय' अपने जीवन का सब वृत्तान्त सुनाते हुए कहा कि, यह मेरी कन्या है जो हेमा नामक अप्सरा से उत्पन्न हुई है।

मैं इसके लिए योग्य वर की खोज में इधर-उधर विचर रहा हूँ, आप कौंन हैं, अपना परिचय तो दीजिए। पुलस्त्यनन्दन रावण ने ब्रह्मा की तीसरी पीढ़ी में अपने को उत्पन्न होने वाला बतलाकर कहा कि, इस प्रकार मेरा नाम दशग्रीव है। राक्षसेन्द्र के ऐसा कहने पर मय ने अपनी कन्या का हाथ दशग्रीव के हाथ में दे दिया और कहा कि यह मेरी कन्या हेमा अप्सरा से उत्पन्न हुई है, इनका नाम मन्दोदरी है, इसे आप पत्नी के रूप में ग्रहण कीजिये। दशग्रीव ने कहा—बहुत अच्छा।

फिर तो वहीं अग्नि प्रदीप्त कर उसने मन्दोदरी का पाणिग्रहण किया। मय ने उसको एक अद्भुत और अमोघ शक्ति भी प्रदान की। दशग्रीव ने उसी शक्ति से लक्ष्मण पर प्रहार किया था। इस प्रकार भार्या ग्रहण कर दशग्रीव लंका में चला गया। लंका में जाकर फिर उसने अपने दोनों भाईयों का भी विवाह किया।

कुम्भकर्ण का व्याह वैरोचन की पौत्री अर्थात् बलि की पुत्री वज्रज्वाला से और गन्धर्वराज शैलूष की धर्मज्ञा पुत्री सरमा से विभीषण का विवाह हुआ। समय पाकर मन्दोदरी के गर्भ से मेघनाद उत्पन्न हुआ। उसी को इन्द्रजीत कहा जाता है। उसने जन्म लेते ही मेघ-सा गर्जन किया था, जिससे समस्त लंकानिवासी स्तम्भित हो गए थे, इससे दशग्रीव ने उसका नाम मेघनाद रखा था।

रावण का कुबेर के दूत को मारना

अब कुछ दिनों के पश्चात् ब्रह्मा के वरदान के अनुसार कुम्भकर्ण को मूर्तिमती तीव्र निद्रा ने आ घेरा। तब उसने समीप स्थित अपने भाई रावण से कहा कि—'हे राजन! अब मुझे निद्रा बाधित कर रही है। अतएव मेरे सोने के लिए कोई पृथक् एक भवन बनवा दीजिए। यह सुन रावण ने एक योजन चौड़ा और दो योजन लम्बा एक सुन्दर गृह निर्माण करा दिया। उसका वह शयनगृहचित्र-विचित्र बड़ा ही दर्शनीय था।

महाबली कुम्भकर्ण निद्राविष्ट हो सहस्त्रों वर्षों तक उसमें पड़ा सोता ही रहा और जागा नहीं। उन दिनों रावण निरंकुश हो देवताओं, ऋषियों, यक्षों और गन्धर्वों को मारता-पीटता रहा। उसने बड़े-बड़े उपद्रव किये। तब धर्मज्ञ धनेश्वर ने अपना दूत भेजकर रावण को यह बतलाया कि—'आप अपने चरित्र को सुधारें और अपनी शक्ति को धर्म के कार्य में व्यय करें। यह सब उपद्रव करना उचित नहीं है।

अब तक जो कुछ किए हो वही बहुत है। अब तो ऐसा कोई कार्य न करो कि, जिससे कुल में दूषण लगे। अन्यथा देवता और देवर्षिगण मिलकर तुम्हारे मारने का उपाय सोच रहे हैं।' कुबेर का यह सन्देश सुनकर रावण के नेत्र मारे क्रोध के लाल हो गये। उसने अपने दाँत कटकटाते और हाथ मलते हुए दूत को यह कहकर मार दिया कि, 'धनेश्वर मेरा बड़ा भाई है इसी से क्षमा करता हूँ, अन्यथा मैं उसे मार डालता। परन्तु अब तू यहाँ से जीवित नहीं जायेगा। उसे मारकर दुष्ट रावण ने राक्षसों को खिला दिया। पश्चात् वह रावण त्रिलोकी को विजय करने चला और सर्वप्रथम कुबेर पर ही उसने आक्रमण किया।

रावण का विजय हेतु पर्यटन और कुबेर से युद्ध

तब यह देखकर कि रावण मुझसे युद्ध करने आया है, कुबेर ने यक्षों को उससे युद्ध करने की आज्ञा दी। यक्षों और राक्षसों का भयंकर युद्ध हुआ। अल्प क्षण में ही रावण के मंत्री व्यथित हो गए। रावण भी रुधिर से नहा गया, तथापि कालदण्ड के समान अपनी गदा उठाकर उसने अनेक यक्षों को मार डाला। बात की बात में उसने यक्षों की सेना को भस्म कर दिया। बहुत थोड़े ही यक्ष शेष रह गए। तब कुबेर ने फिर बहुत से यक्षों को राक्षसों से युद्ध करने के लिए भेजा।

संयोधकटक नामक बड़ी वीर यक्ष भी अपनी बड़ी बलवती सेना लेकर आ पहुँचा। उसने अपने चक्र के प्रहार से राक्षस मारीच को मारकर मूर्च्छित कर दिया। परन्तु मारीच फिर जी उठा और युद्ध कर उस यक्ष को मार भगाया। पश्चात् रावण कुबेर-पालित अलकापुरी के प्रधान द्वार पर जाकर जा लगा।

वहाँ कुबेर के सैनिक यक्षों सहित द्वारपाल से उसका युद्ध हुआ। द्वारपाल ने

उसे बहुत मारा भी, परन्तु ब्रह्मा के वरदान से वह वीर धराशायी ने हुआ। फिर तो रावण ने उस द्वारपाल को मारकर पुरी में प्रवेश किया।

रावण का कुबेर को युद्ध में परास्त कर पुष्पक विमान प्राप्त करना

तदनन्तर कुबेर ने मणिभद्र नामक महायक्ष को चार हजार यक्ष सैनिकों सहित रावण से युद्ध करने को भेजा। परन्तु रावण के मंत्री प्रहस्त और सहोदर ने मिलकर दो हजार यक्षों को युद्ध में मार डाला और अकेले मारीच ने दो हजार यक्षों का संहार किया। क्योंकि राक्षसों का युद्ध माया के बल से होता था और यक्षों का सरलता युक्त था।

इससे यक्षों से राक्षस प्रबल हुए। परन्तु यक्ष मणिभद्र ने राक्षस धूम्राक्ष से बड़ा युद्ध किया। उसने अपनी गदा के प्रहारों से धूम्राक्ष को मार-काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। वह लहुलूहान हो मूर्च्छित हो गया। यह देख रावण मणिभद्र पर टूट पड़ा। उसने मणिभद्र पर अपनी शक्तियों का प्रहार कर उसका मुकुट काट गिराया। इससे वह यक्ष वीर युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गया।

यह देख राक्षस सिंहनाद करने लगे। इतने में कुबेर हाथ में गदा लिये दिखाई पड़े। उनके साथ कोष-रक्षक शुक और प्रोष्टपद तथा पद्म और शंखनामक कोष-देवता भी आए। उन्होंने आकर देखा तो पितृ-शापित रावण धृष्टता से खड़ा है और अपने ज्येष्ठ भ्राता का प्रणामादि शिष्टाचार भी नहीं करता।

तब ऐसे रावण को देख कुबेरजी ने पितामह कुलोचित वचन उससे कहा—'हे दुर्मते! मेरे मना करने पर भी तू नहीं मानता। इसका कटुफल तू नरक में पायेगा। अब तुझे सूझ पड़ेगा। अज्ञान का कर्मफल पश्चात् पाकर समझ पड़ता है। क्या तुझे अपने क्रूर कर्मों का नितान्त ही ज्ञान नहीं रहा? अरे मूढ़! जो अपने माता-पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, उसे यमराज के यहाँ बड़ा कष्ट प्राप्त होता है।

परन्तु मैं तुमसे अधिक वार्तालाप क्या करूँ? क्योंकि मूर्ख से अधिक वार्तालाप न करना चाहिए।' ऐसा कह कुबेर ने रावण के मारीच आदि मन्त्रियों पर भयानक प्रहार कर दिया। वे ताड़ित हो युद्ध क्षेत्र त्याग पलायन कर गये। तब रावण के मन्त्रियों को भगाकर महाबलवान् कुबेर ने रावण के मस्तक पर अपनी प्रचण्ड गदा का प्रहार किया, किन्तु रावण अपने स्थान से विचलित न हुआ। अब कुबेर और रावण दोनों परस्पर युद्ध करने लगे।

रावण व्याघ्र, शूकर, मेघ, पर्वत, सागर, वृक्ष, यक्ष और दैत्य के रूपों में दृष्टि आने लगा। उसका मुख्य स्वरूप दृष्टिगोचर ही न होता। उसी समय रावण ने अपने एक विशाल अस्त्र से कुबेर की विशाल गदा को विद्ध कर दिया। साथ ही उनके

मस्तक पर भी प्रहार किया। उस प्रहार को कुबेर सहन न कर सके और रक्त वमन करते हुए वृक्ष के समान धराशायी हो गए!

यद्यपि निधि देवताओं ने कुबेर को उठाकर नन्दन वन में पहुँचाया और सचेष्ट किया। इस प्रकार धनेश्वर को परास्त कर रावण ने विजय स्वरूप उनका पुष्पक विमान छीन लिया। पुष्पक की विचित्र रचना थी। अब दुर्मति रावण उस पर आरूढ़ हो कैलास से नीचे उतरा। अब उसने अपने को ऐसा समझा मानों त्रिलोकी को विजय कर लिया।

रावण को नन्दी का शाप

हे राम! इस प्रकार रावण अपने भ्राता कुबेर को विजय कर स्वामिकार्तिक के जन्मस्थान 'शरतण' नामक सरकण्डों के विशाल वन में जा पहुँचा। वहां से आगे के पर्वतों पर चढ़कर जब वह चला तो पुष्पक की गति अवरुद्ध हो गयी। वहाँ रावण सोचने लगा कि, पुष्पक क्यों नहीं चलता है? इतने ही में अति करालरूप काले-पीले रंगों वाले अति लघुरूप उसे नन्दीश्वर दिखाई पड़े, जो बड़े ही विकट रूप मूँढ़ मुड़ाये शिव की सेवा में लगे रहने वाले थे।

उन्होंने रावण के निकट जाकर निर्भीकता से कहा 'हे दशग्रीव! यहाँ शिवजी क्रीड़ा कर रहे हैं। अत: तू यहाँ से चला जा। इस पर्वत पर चाहे गरुड़, नाग, यक्ष, देवता, गन्धर्व और राक्षस कोई भी हो, नहीं जा सकता।' नन्दी के इन वचनों को सुनकर रावण मारे क्रोध के जल गया, उसके नेत्र लाल हो गये। वह अपने कुण्डलों को हिलाता हुआ पुष्पक विमान से उतर पड़ा और यह कहता हुआ की यह कौन शंकर है? पर्वत के नीचे आ गया।

वहाँ रावण ने देखा कि, नन्दी दीप्त शूल लिये दूसरे महादेव के समान ही शंकरजी के निकट खड़े हैं। तब वानर-जैसा नन्दीश्वर का मुख देख-देख रावण अट्टहास करने लगा। यह देख नन्दी बड़े कुपित हुए। उन्होंने कहा—दशानन! तूने जो मेरे वानररूप की अवज्ञा कर अट्टहास किया है तो मेरे समान ही तेजस्वी वानर तेरे वंश का मूलोच्छेदन करने के लिये उत्पन्न होंगे।

वे ही तेरे इस प्रबल अहंकार और शारीरिक बल के दर्प को दूर करेंगे। यद्यपि मैं तुझे अभी इसी क्षण मार डालता, तथापि क्या करूँ, तू तो स्वकृत दुष्कर्मों से पूर्व ही मर चुका है। फिर मरे को मारना ही क्या है? महात्मा नन्दीश्वर के यह कहते ही देवताओं ने आकाश से दुन्दुभी बजायी और पुष्प वर्षा की। परन्तु महाबली रावण ने इसकी किञ्चित् भी चिन्ता न की।

पर्वत के निकट जा वृषभपति रुद्र की अवहेलना करने के लिए उस पर्वत

को ही उखाड़ देना चाहा और तत्क्षण ही अपनी दोनों भुजाएँ उसके भीतर प्रवेश कर पर्वत को उठा लेना चाहा। पर्वत काँपने लगा। पर्वत के कम्प से महादेवजी के समस्त गण काँप गये और पार्वतीजी भी भयभीत हो महेश्वर से चिपट गईं। हे राम! फिर महादेवजी ने बिना किसी प्रयास के ही अपने पैर के अँगूठे से उस पर्वत को दबा दिया।

पर्वत के दबाते उनके नीचे रावण की विशाल भुजाएँ पिसने लगी। वह रोष से तथा भुजाओं के दबने की पीड़ा से सहसा ऐसे वेग से चिल्लाया कि उसके चीत्कार से त्रयलोक कम्पित हो गया। वज्रपात जैसा शब्द सुनाई पड़ा। देवता विचलित हो गये, समुद्र संक्षुब्ध हो गये, पर्वत काँप उठे। तब दशान के मन्त्रियों ने उससे कहा— हे दशानन! अब तुम उमापति नीलकंठ महादेव को स्तुति से प्रसन्न करो।

यहाँ तुम्हारी रक्षा का अब कोई अन्य उपाय नहीं है। महादेव जी बड़े दयालु हैं। शरण जाते ही वह तुम पर प्रसन्न हो जायेंगे। तब दशानन ने शिवजी को प्रणाम कर सामवेद के विविध मन्त्रों द्वारा उनकी स्तुति करना प्रारम्भ किया और उस प्रकार रोते-बिलकते उसे एक सहस्त्र वर्ष व्यतीत हो गये, तब महादेवजी रावण पर प्रसन्न हुए और पर्वत से भुजाएँ निकालने का उसे अवसर दिया। साथ ही उसी दिनसे उसके उस चीत्कार के कारण उन्होंने ही उसका नाम 'राव' रख दिया और कहा कि अब तेरी जिधर इच्छा हो, चला जा।

उसी समय श्री महादेवजी को प्रसन्न देख रावण ने देवताओं, गन्धर्वों, दानवों, राक्षसों, गुह्यकों, नागों तथा अन्य प्राणियों से अपनी अवध्यता तथा ब्रह्माजी द्वारा वर प्राप्ति की बात कहकर यह निवेदन किया कि—इतने पर भी मेरी जो शेष आयु रह गई है वह मेरे किसी कार्य से नष्ट न हो, इसका मुझे वर दीजिये और अपना एक शस्त्र भी दीजिए। इस पर शंकरजी ने उसे अपना चन्द्रहास नामक महादीप्त खड्ग (तलवार) प्रदान किया तथा उसकी शेष आयु भी दे दी।

साथ ही यह भी आदेश दे दिया कि, इस खड्ग का कभी अनादर मत करना अन्यथा यह मेरे पास चला आयेगा। रावण महादेवजी को प्रणाम कर पुष्पक पर बैठ वहाँ से लौट पड़ा और पृथ्वी के सभी बलवानों और पराक्रमी क्षत्रियों को सताने लगा। कितने ही शूरवीर उसकी अवज्ञा पर मार डाले गये। बुद्धिमान् जनों ने उसे दुर्जय समझ अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

वेदवती द्वारा रावण को शाप

हे राजन् ! अब महाबली रावण पृथ्वी पर विचरता हुआ एक दिन हिमालय के वन में जा पहुँचा। वहाँ उसने साक्षात् देवकन्या के समान एक ऐसी कन्या देखी

जो मृगचर्म धारण किये तपोनुष्ठान में रत थी। उसे देखते ही रावण कामदेव से पीड़ित हो गया और मुसका कर उसका परिचय पूछते हुए उसे विमोहित कर अपनी अभिलाषा तृप्त करना चाहा और कहा कि तेरी युवावस्था और सौन्दर्य इस प्रकार के तप के योग्य नहीं है, तू अपने इस संकल्प को त्याग दे। फिर तू यह तो बतला कि, इतना कठिन तप किसलिए करती है?

तू किसकी पुत्री है और तेरा पति कौन है? तब रावण के इस प्रकार पूछने पर उस यशस्विनी एवं तपस्विनी कन्या ने रावण का सविधि आतिथ्य करते हुए कहा कि 'मैं ब्रह्मर्षि कुशध्वज की पुत्री हूँ। मेरा नाम वेदवती है। मेरे विवाह के लिए कितने ही देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नाग मेरे पिता से मिले और मुझसे ब्याह कर देने की प्रार्थना की, परन्तु मेरे पिता यह चाहते थे कि उनके जामात्र सुरेश्वर विष्णु हों, अन्य नहीं। इससे बलगर्वित दैत्येन्द्र शुम्भ ने उन्हें रात्रि में सोते समय मार डाला।

मेरी महाभागा माता उनकी शव के साथ सती हो गयीं। तबसे मैं अपने पिता की इच्छानुसार श्रीविष्णु को ही अपना पति बनाने के लिए तप कर रही हूँ। जो सत्य बात थी, वह मैंने तुमसे कह दी। उन पुरुषोत्तम के अतिरिक्त मेरा कोई अन्य पति नहीं हो सकता। हे रावण! मैंने तुमको जान लिया। तुम यहाँ से चले जाओ। मैं अपने तपोबल से त्रैलोक्य में जो कुछ होता है वह सब जानती हूँ। यह सुनकर कामबाण से पीड़ित रावण विमान से उतर पड़ा और अश्लीलतापूर्वक बकता हुआ उसके केशों को पकड़ कर उससे बर्बस अपनी काम-पिपाशा शान्त करना चाहा तथा विष्णु की निन्दा भी किया।

इस पर वेदवती ने क्रोध में भरकर अपने हाथ से जो इस समय खड्ग रूप हो गये थे—अपने उन बालों को काट डाला और अपने क्रोध से अग्नि प्रदीप्त कर रावण को भस्म करती हुई उस अग्नि में प्रवेश कर गई तथा यह कह गई कि रे पापात्मा! तेरा वध करने के लिए मैं पुनः उत्पन्न होऊँगी। क्योंकि पापी पुरुष को मारना स्त्रियों के वश की बात नहीं है।

यदि मैं तुझे शाप दूँ तो मेरी तपस्या क्षीण होगी। यदि मैंने कुछ भी सुकृत किया हो तो उसके पुण्य से फिर किसी धर्मात्मा के गृह में अयोनिज जन्म धारण करूँ। ऐसा कह वेदवती उस धधकती चिता में कूद पड़ी। चिता के चारों ओर पुष्प छितरा उठे। हे प्रभो! वही वेदवती जनकराजा के गृह में कन्या रूप से उत्पन्न होकर तुम्हारी भार्या हुई है। हे महाबाहो! तुम भी वे ही सनातन विष्णु हो।

रावण का राजा मरुत् को जीतना

वेदवती के अग्नि में प्रवेश करने के पश्चात् रावण पुष्पक विमान पर बैठ

चारों ओर पृथ्वी में विचरते हुये उशीरबीज नामक उस देश में जा पहुँचा कि जहाँ देवताओं सहित राजा मरुत यज्ञ कर रहे थे और बृहस्पतिजी के सगे भ्राता धर्मज्ञ संवर्त ऋषि सब देवताओं सहित उनका यज्ञ करा रहे थे। तब वरदान से अजित रावण के वहाँ पहुँचते ही उसे देख, उसके सताने के भय से बस देवता पक्षिरूप होकर पलायन कर गए। रावण अपवित्र कुत्ते के समान उस यज्ञशाला में प्रवेश कर गया और वहाँ जाकर राजा मरुत से बोला—या तो तुम मुझसे युद्ध करो या हार मानो।

मरुत ने पूछा—तुम कौन हो? यह सुनकर रावण अट्टहास करते हुए बोला—मैं तुम्हारी सरलता पर प्रसन्न हूँ। क्योंकि तुम धनद कुबेर के लघु भ्राता मुझ रावण को नहीं पहचान रहे हो। त्रैलोक्य में मेरे बल को कौन नहीं जानता? जिस रावण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता को पराजित कर उसका यह पुष्पक विमान छीन लिया, उसे कौन नहीं जानता? राजा मरुत ने कहा—तुम धन्य हो। वास्तव में तुम्हारे जैसा श्लाघ्य पुरुष तो त्रिलोकी में कोई नहीं है जिसने अपने बड़े भाई को युद्ध में परास्त कर दिया। भला इस पर भी तुम अपनी प्रशंसा करते हो? रे दुष्ट! खड़ा रह। अब तू मेरे समक्ष जीता नहीं जा सकता।

मैं अपने पैने बाणों से तुझे आज ही यमालय भेजता हूँ। तदनन्तर राजा मरुत धनुष बाण ले रावण से युद्ध करने के लिए यज्ञशाला से बाहर निकले। किन्तु संवर्त मुनि ने उनके आगे आकर उनका मार्ग रोक दिया और कहा—यह माहेश्वर यज्ञ है, इसमें क्रोध करना अपके कुल के लिय घातक होगा, अत: इससे युद्ध न कीजिये।

यज्ञदीक्षित पुरुष क्रोध नहीं करते। फिर यह राक्षस अजेय भी है। तब अपने गुरु की आज्ञा मानकर राजा मरुत ने रावण से युद्ध करने का विचार त्याग दिया। रावण के मन्त्री ने कहा—मरुत हार गया। फिर तो ऐसी घोषणा कर यज्ञ में आये हुए ऋषियों को खा-चबाकर, उनका रक्त पेटभर पीकर रावण पुन: पृथ्वी मण्डल पर विचरने लगा।

इक्ष्वाकुवंशी महाराज अनरण्य का रावण को शाप

अब राजा मरुत को जीतकर राक्षसाधिप युद्धकांक्षी रावण नगरों में विचरने लगा। उसने महेन्द्र और वरुण के समान श्रेष्ठ राजाओं के समीप जाकर कहा कि, या तो तुम मुझसे युद्ध करो या अपनी हार मानो। तब बुद्धिमान् राजाओं ने परस्पर गोष्ठी कर अपनी हार मान ली। क्योंकि रावण को वरदान का बल था। मरुत, महेन्द्र, वरुण, सुरथ, गाधि, गय और पुरूरवा आदि सब राजाओं ने उससे अपनी पराजय स्वीकार ली। तब रावण अयोध्यापुरी में पहुँचा।

वहाँ महाराज अनरण्य से भी उसने वैसा ही कहा। किन्तु अयोध्यापति

महाराज अनरण्य ने कहा—मैं तुझसे युद्ध करूँगा। महाराज अनरण्य ने पहले ही से रावण का वृत्तान्त सुनकर अपनी सेना सजा रखी थी। फिर तो उनकी वह सेना राक्षस के वधार्थ शीघ्र ही युद्ध के लिए निकल पड़ी। उसमें दश हजार हाथी, एक लाख घोड़े तथा सहस्रों अश्वारोही और पदाती सैनिक थे।

दोनों ओर से युद्ध हुआ। महाराज अनरण्य और राक्षसेन्द्र रावण का अद्भुत युद्ध होने लगा। किन्तु कुछ ही क्षणों में रावण के बलवान् मन्त्रियों एवं मायावी राक्षसों ने उनकी समस्त सेना को काट-मारकर बचे बचाये सैनिकों को मार पीटकर भगा दिया। पृथ्वी रक्तरंजित हो गई। युद्ध क्षेत्र में भयानक दृश्य उपस्थित हो गया। फिर महाराज अनरण्य ने राक्षसराज के शिर में आठ सौ बाण मार उसे विक्षिप्त कर देना चाहा।

किन्तु उन सब बाणों से रावण को खरोंच तक न लगी। इतने में क्रोध में भरकर रावण ने महाराज के मस्तक पर जो एक थप्पड़ लगाया तो उसे वे सहन न कर सके और जैसे वन में बिजली का मारा साखू का वृक्ष गिर पड़ता है, वैसे ही वे धराशायी हुए। आहत होने पर उन्होंने कहा—'हे राक्षस! यह तो तुमने इक्ष्वाकुकुल का अपमान किया है, इसके कारण मैं कहता हूँ कि यदि मैंने दान दिया हो, होम किया हो, तप किया हो और न्यायपूर्वक प्रजापालन किया हो तो इक्ष्वाकुकुल में दाशरथी राम उत्पन्न होकर तेरा वध करें।

महाराज अनरण्य के मुख से यह वचन निकलते ही मेघों की गर्जना के तुल्य आकाश से नगाड़े के बजने का शब्द सुनाई पड़ा और पुष्प-वृष्टि हुई। तदनन्तर महाराज अनरण्य स्वर्ग सिधारे और रावण भी चला गया।

नारद जी द्वारा रावण को यमपुर विजय की प्रेरणा

राक्षसाधिप रावण पृथ्वी पर मनुष्यों को कष्ट देता हुआ विचर रहा था कि उसने मेघ पर आरूढ़ मुनिपुङ्गव नारदजी को देखा। उसने उन्हें प्रणाम किया और कुशल पूछ आगमन का कारण पूछा। देवर्षि ने कहा—विश्रवानन्दन राक्षसेन्द्र! खड़े रहो। मैं तुम्हारे मन्त्रियों और तुम पर बड़ा प्रसन्न हूँ।

तुमने तो गन्धर्व और नागादिकों को वैसे ही पराजित कर दिया है कि जैसे विष्णु ने दैत्यों को। अतः मैं तुमसे बहुत सन्तुष्ट हूँ। अब मैं तुम्हारे हित की कुछ बात कहता हूँ, ध्यान से सुनो। हे तात! तुम तो देवताओं से भी अवध्य हो। फिर इन बेचारे मनुष्यो को क्यों मारते हो।

ये तो स्वयं ही मृत्यु के वशीभूत हैं। ये तो बेचारे स्वयं ही सदा विपत्तिग्रस्त रहते हैं और विशेषतः अपना कल्याण करने में अत्यन्त ही मूढ़ हैं। जरा आदि सैकड़ों

व्याधियों से आवृत्त रहते हैं। अत: ऐसों के मारने से क्या लाभ है? वे तो अपने सुख-दु:ख के समय को भी नहीं जानते। फिर ये सब मरकर यमपुरी ही में तो जायेंगे।

अतएव हे पौलस्त्यनन्दन! तुम यमराज की पुरी पर चढ़ाई करो। उस पुरी को जीतो; क्योंकि उसे जीतने पर ही तुम अपने से सबको जीता हुआ समझोगे। तब इस प्रकार नारद जी के समझाये जाने पर स्वतेज से दीप्त लंकापति रावण ने उन देवर्षि को प्रणाम किया और मुसकुराता हुआ कहने लगा—देवर्षि! आपका कहना यथार्थ है, मैं ऐसा ही करूँगा।

इस समय मैं विजयार्थ रसातल की यात्रा कर रहा हूँ। फिर त्रैलोक्य विजय कर नागों और देवताओं को अपना वशवर्ती बनाऊँगा और पुन: अमृत प्राप्ति के लिये समुद्र-मन्थन भी करूँगा। इस पर नारद जी ने कहा—अच्छा, यदि तुम्हें रसातल ही जाना है, तो अन्य मार्ग से क्यों जाते हो? यह मार्ग सीधे प्रेतराज के नगर यमपुरी को चला गया है, इससे तुम सीधे उनके समक्ष जा निकलोगे।

यह सुनकर रावण ने शरद्काल के मेघ के समान हँसकर कहा—बहुत अच्छा हम ऐसा ही करेंगे। अब मैं यम के वधार्थ ही इस दक्षिण दिशा के मार्ग से जाता हूँ। मेरी तो यही पूर्व प्रतिज्ञा थी कि, मैं चारों लोकपालों को विजय करूँ। उसमें सब प्राणियों को सताने वाले उस यम को मैं मारूँगा। ऐसा कह और नारदजी को प्रणाम कर रावण दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। नारदजी क्षण भर मौन हो विचार करते रहे। उन यमराज को कैसे यह रावण जीतेगा? इसका तो मुझे बड़ा कुतूहल है। अत: स्वयं ही चलकर यमराज और रावण का युद्ध देखूँगा।

रावण-यमराज युद्ध

यमपुरी पहुँच कर रावण ने देखा कि सब प्राणी बँधकर मारे-पीटे जा रहे हैं। सब प्राणी पुण्यों और पापों का फल पा रहे हैं। जल के स्थान में रक्त से पूर्ण अति गम्भीर वैतरणी नदी को सब पार कर रहे और बालू पर घसीटे जा रहे हैं। तब इस प्रकार के दृश्य देखते हुए रावण ने उन पापियों को, जो अपने पापकर्म फल से कष्ट भोगाये जा रहे थे, उन्हें अपने बल से मुक्त कर दिया। फिर तो रावण द्वारा जीवों को मुक्त हुआ देख यम-किन्नरों ने उस पर आक्रमण कर दिया।

यमराज के उन लाखों सैनिकों की गणना नहीं हो सकती जो अभिलषित युद्ध करने लगे। उधर रावण भी स्वयं युद्ध कर रहा था। कुछ क्षण पश्चात् सभी यम किन्नर एक स्वर से रावण पर टूट पड़े और उस पर शूलों की वर्षा करने लगे। उस शूल वर्षा से रावण का शरीर बिंध उठा और उसने रक्त स्नान सा कर लिया। परन्तु वह यमराज के सैनिकों पर बड़ी-बड़ी शिलाएँ बरसाने लगा। उधर यमकिन्नरों ने भी

अपने भी अपने भयानक प्रहारों से रावण का धनुष काट दिया और उसके कवच को .तोड़ डाला।

फिर भी वह युद्ध करता ही रहा और अब वह पुष्पक विमान से उतर पृथ्वी पर खड़ा हो हाथ में दूसरा धनुष ले, दूसरे यमराज के समान, युद्ध के लिये सन्नद्ध हुआ। फिर पशुपतास्त्र को अभिमन्त्रित कर सबको ललकारते हुए रावण ने तिष्ठ-तिष्ठ कह उन पर भयानक प्रहार किया। पशुपतास्त्र का रूप धूम्र और ज्वालमाला से युक्त था।

ज्वालमाली बना रावण यम की सेना पर उसे भस्मसात् करता हुआ दौड़ रहा था। उसके उस अस्त्र के तेज से यमराज के समस्त सैनिक त्रस्त हो गिर पड़े। यह देख भयंकर विक्रमी राक्षस रावण अपने मन्त्रियों सहित पृथ्वी को कम्पित करता हुआ-सा महानाद करने लगा।

रावण के इस घोर नाद को सुनकर यमराज ने समझ लिया कि रावण की विजय हो गई और मेरी सेना नष्ट हो गई। तब वह स्वयं अपने विशाल रथ पर बैठ पाश और मुद्गर ले युद्ध करने आया। तदनन्तर सारथी ने उनके लाल रंग वाले घोड़ों को हाँका तो वह रथ घोर शब्द करता हुआ राक्षसराज रावण की ओर चल पड़ा। यम को स्वयं आता देख रावण के मंत्री भयभीत हो यत्र-तत्र पलायन करने लगे; परन्तु रावण किञ्चित् भयभीत न हुआ।

सात दिन-रात यम और रावण एक-दूसरे पर अपने अस्त्र शस्त्र से प्रहार करते रहे। परन्तु जब यमदेव ने युद्ध में इतनी दृढ़ता प्रकट की तब वह मूर्च्छित हुआ तथा उसने युद्ध से अल्प विराम लिया। किन्तु पलायन नहीं किया। यमराज ने कहा— अब मैं रावण का संहार ही कर डालूँगा। तदनन्तर यमराज ने क्रोध से अमोघ कालदण्ड को उठा रावण को मारना चाहा।

यह देख ब्रह्माजी उनके समीप आकर बोले—वैवस्वत महाबाहो! इस दण्ड को चलाकर तुम इस राक्षस को मत मारो। क्योंकि मैं इसको वरदान दे चुका हूँ। अत: मेरा वचन मिथ्या मत करो। ब्रह्माजी के ये वचन सुनकर, धर्मात्मा यमराज ने कहा— आप मेरे स्वामी हैं।

अत: मैं इस दण्ड को इस पर न चलाऊँगा; परन्तु आप ही बतलावें कि इस युद्ध में क्या करूँ? यह तो अपाके वरदानसे अवध्य ही है। अत: अब उस राक्षस की दृष्टि से मैं अदृश्य हो रहा हूँ। यह कहकर यमराज अन्तर्ध्यान हो गये। इस प्रकार रावण ने यमराज पर विजय प्राप्त की।

रावण का यमराज को जीतकर आगे बढ़ना

तदनन्तर समर-विजयी रावण समुद्र में प्रवेश कर अपने मन्त्रियों सहित

रसातल में जहाँ दैत्य और नाग रहते हैं और जिसके रक्षक वरुणदेव हैं वहाँ चला गया। तब वासुकि नाग की भोगवतीपुरी में जाकर वह नागों को जीतकर उस मणिपुरी में गया, जहाँ निवातकवच दैत्य वास करते थे। वहाँ पहुँच रावण ने सबको युद्ध की उत्तेजना दी। अतः उन्होंने बड़े हर्ष से अपने विविध अस्त्रों द्वारा रावण से महासंग्राम किया और उभय में किसी ने भी अपनी पराजय न स्वीकार की।

तब लोकपितामह ब्रह्मजी वहाँ भी शीघ्र ही पहुँचे और उन्होंने उन्हें समझा कर मित्रता करा दी। निवात कवचों ने रावण का बड़ा सत्कार किया। वहाँ रहकर रावण ने निवातों से सौ प्रकार की मात्राएँ सीखीं। फिर वरुणदेव के नगर की खोज करता हुआ रावण कालकेय दैत्यों के 'अश्म' नामक नगर में पहुँचा। कालकेय दैत्य बड़े बलवान् थे। किन्तु रावण ने उन्हें भी परास्त कर दिया। इसी युद्ध में रावण ने अपने बहनोई विद्युज्जिह्व को तलवार के घाट उतार दिया।

उस युद्ध में रावण ने क्षणमात्र में चार सौ दैत्यों को मार डाला। तदनन्तर रावण को श्वेत मेघ के सदृश वरुण का दिव्य भवन दिखाई पड़ा। रावण ने वहीं सुरभी गौ भी देखी जिसके थन से सर्वदा दूध की धार बहा करती थी। उस परम अद्भुत सुरभि की प्रदक्षिणा कर रावण ने वरुण का वह श्रेष्ठ भवन देखा जो सैन्य-सुरक्षित और बड़ा ही भयंकर था। वहाँ पहुँच कर रावण ने वरुण के सेनापतियों को ताड़ित किया तथा युद्ध कर उन्हें मार डाला।

इतने ही में महात्मा वरुण के पुत्र-पौत्र क्रुद्ध हो रावण से युद्ध करने को आ पहुँचे। फिर तो देवासुर संग्राम की भाँति दोनों ओर से आकाश में घोर युद्ध आरम्भ हुआ। वरुण की सेना ने अपने अग्निवत् बाणों को चलाकर रावण को संग्राम से विमुख कर दिया। तब उसके महोदर आदि मंत्री वरुण के पुत्रों से युद्ध करने लगे और उन्हें परास्त-सा कर दिया।

यह देख, तब तक सचेष्ट हो रावण भी उन पर प्रहार करने लगा। फिर जलधारा के समान बाण बरसा कर वरुण के पुत्रों को मारने लगा। वरुण के पुत्र युद्ध में मूर्च्छित हो गये। सारथी उन्हें उठाकर तत्क्षण घर ले आया। रावण गर्जन करने लगा साथ ही उसने वरुण के सेवकों से कहा कि तुम मेरा संदेश वरुण से जाकर कहो।

इस पर वरुण के 'प्रहास' नामक मन्त्री ने कहा—इस समय सलिलेश्वर वरुणजी गन्धर्व गान श्रवण करने के लिये ब्रह्मलोक गये हुए हैं। उनके वीर कुमारों को तो तुम परास्त ही कर चुके हो। अब वरुण महाराज की अनुपस्थिति में तुम क्या व्यर्थ परिश्रम करते हो? यह सुन रावण ने भी वहाँ भी अपने विजय की घोषणा करा दी।

रावण का बहुत-सी कन्याओं और स्त्रियों का हरण करना तथा उनसे शापित होना

वहाँ से लौटते समय दुरात्मा रावण मार्ग के राजर्षियों, देवताओं और दानवों की कन्याएँ हरण करता हुआ लंका में आया। जिसकी भी दर्शनीय कन्या सुन्दरी स्त्री को मार्ग में देखता, उसके बन्धुजनों को मारकर उसे हरकर अपने विमान में बैठा लेता। इस प्रकार उसने कितनी ही राक्षसों, असुरों, मनुष्यों, पन्नगों और यक्षों की कन्यायें अपने विमान में बैठा लीं। वे बेचारी दु:खी हो शोकार्त भयोत्पन्न अग्नि ज्वाला सी अश्रुधारा बहाती थीं।

एक नहीं सैकड़ों ही कन्याएँ शोक सन्तप्त ऐसा ही अश्रु प्रवाहित कर रही थीं। उनके शोक और विलाप का वर्णन नहीं हो सकता। उस सब कन्याओं और स्त्रियों ने भी रावण को यही शाप दिया कि 'यह दुर्मति पर स्त्री के कारण ही मारा जावे।' उन पतिव्रताओं के मुख से यह वाक्य निकला ही था कि, आकाश में दुन्दुभी बज उठी और पुष्पों की वर्षा भी हुई। फिर तो उन स्त्रियों के शाप से रावण का पराक्रम नष्ट हो गया और उसकी कान्ति मन्द पड़ गई।

उन पतिव्रताओं के शाप को सुन रावण उदास हो गया। इस प्रकार वह उनके विलाप और शाप सुनता हुआ लंका में आया। निशाचरों ने बड़ा स्वागत किया। परन्तु वह ज्योंही वहाँ पहुँचा कि, त्योंही उसकी बहिन उसके समक्ष आकर सहसा पृथ्वी पर गिर पड़ी। रावण ने बहिन को उठाया और परिसान्त्वना देकर पूछा कि—क्या बात है?

तब उस राक्षसी ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देख कर कहा कि तुम्हारे चौदह सहस्त्र कालकेय दैत्यों को मारने के समय मेरे पति को भी शत्रु समझकर मार डाला। अत: तू मेरा नाम मात्र का ही भाई है। हे राजन् तेरे कारण तुझे वैधव्य भोगना पड़ेगा। तब रावण ने उसे उठाकर धैर्य बँधाया और कहा—बहिन युद्ध में मुझे अपने और पराये का कुछ ज्ञान न था, जिससे तेरा स्वामी मेरे हाथ से मारा गया।

अब तू अपने ऐश्वर्यवान् भ्राता खर के पास जाकर रह। तेरा वह भाई खर अबसे चौदह हजार राक्षसों का स्वामी होगा। वह तेरी सब आज्ञाओं का नित्य पालन करेगा। इसके पश्चात् खर चौदह हजार भयानक राक्षसों को साथ ले तत्क्षण ही दण्डकवन को प्रस्थित हुआ। और वहाँ पहुँच कर निष्कण्टक राज्य करने लगा शूर्पणखा भी वहीं चली गयी।

खर और दूषण को जनस्थान भेजना

इस प्रकार जब दशग्रीव उस खर की घोर सेना और बहिन को सान्त्वना देकर हर्षित और स्वस्थ हुआ, तब अपने अनुचरों को साथ लेकर, वह निकुम्भिला

नामक लंका के उस उपवन में चला कि, जहाँ उसका भयंकर रूपधारी पुत्र मेघनाद काले मृग का चर्म ओढ़े हुए और दण्ड-कमण्डल लिये यज्ञ मण्डप में शोभित हो रहा था।

वहाँ रावण ने अपनी बीसों भुजाएँ फैलाकर पुत्र को हृदय से लगाया और पूछा कि 'हे पुत्र! तू यह क्या कर रहा है?' तब पुरोहित शुक्राचार्य ने रावण से कहा—तुम्हारे पुत्र ने सविस्तार सात बड़े यज्ञों का अनुष्ठान किया है। जिसमें अग्निष्टोम, अश्वमेध, बहुसुवर्णक, राजसूय, गोमेध तथा वैष्णव यज्ञ तो इसने पूर्ण कर लिये हैं।

तत्पश्चात् महेश्वर यज्ञ आरम्भ होने पर तुम्हारे पुत्र को साक्षात् महादेवजी से कई वर प्राप्त हुए हैं। एक इच्छानुसार चलने वाला दिव्यरथ भी इसने पाया है और तापसी नाम की माया भी प्राप्त हुई है जिसके द्वारा अन्धकार व्याप्त हो जाता है। यह माया जिसे प्राप्त होती है उसकी गति को देवता या असुर कोई भी नहीं जान पाते।

इसके अतिरिक्त इसे दो अक्षय तरकस, दुर्जेय धनुष तथा संग्राम में शत्रुघाती एक बड़ा ही बलाढ्य शस्त्र भी प्राप्त हुआ है। आज ही यज्ञ की समाप्ति में यह सब इसे प्राप्त हुआ है तथा हम दोनों आज ही आपसे मिलने के इच्छुक थे।' यह सुनकर रावण ने कहा—यह कार्य अच्छा नहीं हुआ। क्योंकि इसमें तो विविध उपचारों से तुमने मेरे शत्रु इन्द्रादि देवों की पूजा भी की होगी।

अच्छा, जो किया वह ठीक ही है। इसमें सन्देह नहीं कि, तुम्हें पुण्य की प्राप्ति होगी। यह कह रावण अपने पुत्र और विभीषण को साथ ले अपने भवन में आया। वहाँ उसने उन सब रोती हुई स्त्रियों को विमान से उतार दिया। तब उन सब स्त्रियों के प्रति रावण की आसक्ति जानकर धर्मात्मा विभीषण ने कहा—राजन्! आपके ये आचरण आपके सुयश, धन और कुल का नाश करने वाले हैं। हे राजन्! जिस प्रकार आपने इन स्त्रियों के बन्धुजनों को मार-पीटकर इनको हरा है, उसी प्रकार मधु दैत्य आपके मस्तक पर पाँव रखकर आपकी वहित कुम्भनसी स्त्री को हर ले गया है।'

रावण ने पूछा—तुम सब क्या करते थे? विभीषण ने उत्तर दिया—आपका पुत्र यज्ञ में लगा था। मैं जल में निवास करता था और भैया कुम्भकर्ण नींद का आनन्दले रहे थे। इसी समय महाबली मधु ने आक्रमण किया और यहाँ के प्रधान-प्रधान राक्षस मन्त्रियों को मारकर वह कुम्भीनसी को हर ले गया। यद्यपि वह अन्तःपुर में भलीभाँति सुरक्षित थी। परन्तु आप अपनी दूषित बुद्धि के कारण, पाप प्रवृत्त हुए हैं।

इस कर्म का फल आपको इसी लोक में प्राप्त हो गया। इसे आप भली प्रकार

समझ लें। तब विभीषण का यह वचन सुनकर राक्षेन्द्र रावण क्रोध से जल उठा। उसके नेत्र लाल हो गये। उसने कहा—मेरा रथ शीघ्र जोतकर लाया जाय। शूर-वीर योद्धा युद्ध के लिये सन्नद्ध हों। भाई कुम्भकर्ण और मुख्य-मुख्य निशाचर नाना प्रकार के आयुधों से सज्जित हो वाहनों पर आरूढ़ हों। मैं मधु का आज ही वधकर देवलोक की यात्रा करूँगा।

राक्षसों की चार हजार अक्षौहिणी सेना युद्ध के लिये सन्नद्ध हो गई। मेघनाद उस सेना का अग्रणी हुआ। रावण मध्य में और कुम्भकर्ण उसके पृष्ठ भाग में स्थित हुआ। धर्मात्मा विभीषण अपने धर्माचार में रत लंका में रह गये। शेष सभी निशाचर मधुपुरी की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर दशग्रीव ने अपनी बहित कुम्भीनसी को देखा, किन्तु मधु का दर्शन नहीं हुआ।

कुम्भीनसी ने अपने भाई रावण से अपने पति मधु का जीवनदान माँगा। जब रावण हर्षित हो अपनी मौसेरी बहिन से बोला—शीघ्र बतला तेरा पति कहाँ है? मैं उसे अपने साथ लेकर जय के लिये स्वर्ग-लोक को प्रस्थान करूँगा। यह बात सुनकर कुम्भीनसी महल में सोये हुए पति को उठाकर बोली आर्यपुत्र! मेरे भाई दशग्रीव आपको स्वर्गलोक विजय पाने की इच्छा से आपको सहायक बनाना चाहते हैं।

तब पत्नी की बात सुनकर मधु ने बहुत अच्छा कहते हुए उसे स्वीकार किया और राक्षसेन्द्र के पास जाकर धर्मानुसार उसका पूजन किया। वहाँ से प्रस्थान करने के पश्चात् कैलाशपर्वत पर पहुँचते हुए सन्ध्या हो गई। इससे वहीं एक शिखर पर उसने अपनी सेना का शिविर स्थापित किया।

रावण को नलकूबर का शाप

इस प्रकार संध्या समय कैलास पर्वत के शिखर पर अपनी सेना को स्थित कर रावण स्वयं ही विश्राम करने लगा। अन्य सब सैनिक भी निद्रा विभोर हो रहे। इतने में चन्द्रोदय हुआ। महापराक्रमी रावण उठकर पर्वत शिखर पर बैठकर चन्द्रमा की प्रभा और वृक्षों के कारण वर्द्धित कैलास पर्वत की शोभा देखने लगा, जहाँ से कुबेर के भवन में गान करती हुई अप्सराओं की मधुर ध्वनि भी श्रवणगोचर हो रही थी। संगीत की तान, विविध पुष्पों की शोभा, शीतल वायु का स्पर्श, पर्वत की रमणीयता, रजनी की मधुवसा और चन्द्रोदय उद्दीपन की इन समस्त सामग्रियों के कारण रावण कामासक्त हो गया।

इसी समय सब अप्सराओं में श्रेष्ठ चन्द्रमुखी रम्भा इसी मार्ग से आ निकली। उसके सुन्दर शरीर पर दिव्य वस्त्र और आभूषण शोभ रहे थे। अङ्गों दिव्य चन्दन का अनुलेप लगा था और केशपाश में पारिजात के पुष्प गुँथे हुए थे। वह दिव्य

पुष्पों से दिव्य शृङ्गार करके किसी उत्सव में सम्मिलित होने जा रही थी। वह अपनी अलौकिक कान्ति से दूसरी लक्ष्मी के ही सदृश ज्ञात होती थी। उस समय रावण तो काम वशीभूत था ही। अतः उसने उठकर तत्क्षण ही रम्भा का हाथ पकड़ लिया।

रम्भा बहुत ही लज्जित हो गई। तथापि रावण ने मुसकाकर कहा—वरारोहे! तुम कहाँ जा रही हो। तुम्हारी क्या इच्छा है। यह समय किसे अभ्युदय का है, जो तुम्हारा उपभोग करेगा। यह सुन्दर शिला है, इस पर बैठकर विश्राम करो। हे भीरु! इस जगत् में मुझसे बढ़कर कोई नहीं है। इन्द्र, विष्णु, अश्विनीकुमार कोई भी मेरी समता नहीं कर सकते। अतः मुझे त्याग कर तेरा अन्य के पास जाना उचित नहीं। देख मैं त्रिलोकी का विधाता दशग्रीव हूँ और तुझसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ, अतः हे सुन्दरी! मेरा कहना मान ले।

रावण के ऐसे वचन सुन, रम्भा काँप उठी। उसने हाथ जोड़कर कहा—राक्षसराज! आप मुझ पर प्रसन्न होइये—मुझ पर कृपा कीजिये। आपको मुझसे ऐसी बात न कहनी चाहिये। क्योंकि आप मेरे महान् हैं, गुरु और पिता के तुल्य हैं। यदि मुझे और कोई ऐसा कहे तो आपको मेरी रक्षा करनी चाहिये। मैं धर्मतः आपकी पुत्र-वधू हूँ, यह आपसे सत्य कह रही हूँ।

मैं इस समय आपके भाई कुबेर के पुत्र नलकूबर की सेवा में जा रही हूँ और इस कार्य में विघ्न न करें। मुझे त्यागकर सज्जनों के मार्ग पर चलिए! रावण ने कहा—रम्भे! तुम अपने को मेरी पुत्र-वधू क्यों बता रही हो? यह विचार तो उस स्त्री के लिए आता है जो किसी एक पुरुष की पत्नी हो। तुम्हारे देवलोक की तो स्थिति ही कुछ और है। अप्सराओं का कोई पति नहीं होता। ऐसा कह उस निशाचर ने बलपूर्वक रम्भा को उस शिला पर बैठा लिया और कामासक्त होकर उसका उपभोग किया।

पश्चात् उस अप्सरा को उसने छोड़ दिया। वह भय कम्पित हो नलकूबर के पास चली गई और हाथ जोड़कर उसके चरणों में गिर पड़ी। नलकूबर ने कहा—'कल्याणी! यह क्या बात है?तुम मेरे पैरों पर क्यों गिर रही हो? वह थर-थर काँप रही थी। पश्चात् उसने हाथ जोड़कर, जो कुछ हुआ था वह सब बात कही। तब उस पर बलात्कार की बात सुनकर वैश्रवण कुमार नलकूबर ने ध्यान लगाकर रावण की सब बर्बरता को ज्ञात कर लिया।

उसके नेत्र क्रोध से लाल हो गये। उन्होंने तत्क्षण सविधि आचमन कर हाथ में जल ले राक्षसेन्द्र रावण को यह भयंकर शाप दिया कि—'हे भद्रे! स्त्री की इच्छा न रहने पर यदि काम पीड़ित होकर किसी स्त्री पर अत्याचार करेगा तो उसके सिर

के सात टुकड़े हो जायेंगे। नलकूबर के इस शाप को जब रावण ने सुना तब से उसने अकामा स्त्रियों पर बलात्कार करना त्याग दिया।

देवताओं और राक्षसों का युद्ध तथा सुमाली वध

इसके बाद कैलाश पर्वत को लाँघकर महातेजस्वी दशानन समस्त सेना सहित इन्द्रलोक में जा पहुँचा। रावण के आक्रमण से इन्द्र का सिंहासन डगमगा गया। फिर तो आदित्य, आठों वसु, ग्यारहों रुद्र साध्यगण तथा उनचासों देवताओं सहित उससे युद्ध करने चले।

इधर स्वयं इन्द्र भयभीत हो विष्णुजी के पास पहुँचे। ब्रह्माजी के वरदान की सब बात कह उचित मार्ग से प्रस्थान की प्रार्थना की। उन्हें उससे युद्ध करने की भी प्रेरणा दी। विष्णुजी ने कहा—अवश्य ही ब्रह्माजी से वरदान पाकर रावण इस समय बड़ा ही दुर्जय है।

तुम उससे युद्ध कर कदापि विजयी नहीं हो सकते और मैं ही इस समय उससे युद्ध करूँगा। क्योंकि शत्रु का वध किये विना विष्णु कभी समरभूमि से नहीं आते। किन्तु रावण वरदान के बल से सुरक्षित है। इससे अभी मेरा अभीष्ट पूर्ण नहीं होगा। तथापि मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि, मैं ही इस राक्षस की मृत्यु का कारण होऊँगा।

मैं ही इसे सपरिवार मारकर देवताओं को प्रसन्न करूँगा। परन्तु अभी समय की अपेक्षा है। तुम जाकर देवताओं सहित उससे निर्भय युद्ध करो। फिर तो ग्यारहों रुद्रादि सबने कवच धारण कर राक्षसों पर आक्रमण किया। प्रातःकाल से ही भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया। राक्षसों की अपार अक्षयवाहिनी को देख देवता व्यग्र हो गये। तदनन्तर विविध आयुधधारी देवताओं, राक्षसों और दानवों का घोर तुमुल युद्ध आरम्भ हो गया।

रावण के शूरवीर और मन्त्रिगण युद्ध करने लगे। उन्होंने भीषण प्रहार कर देवताओं की सेना को मार गिराया। वे दशों दिशाओं में भाग चले। तब अपनी सेना को भागते देख अष्टम वसु, सवित्र, त्वष्टा औरपूषा तथा आदित्य देव ने बड़े साहस के साथ राक्षसों का सामना किया। युद्ध होने लगा। अब देवताओं की मार से राक्षसों की सेना त्रस्त होने लगी। यह देख राक्षस सुमाली बड़े क्रोध से उनसे युद्ध करने आया।

देवसेना नष्ट होने लगी। उसने इन देवताओं को भी मार भगाया। परन्तु सवित्र वसु फिर अपनी प्रचण्ड रथवाहिनी ले उस पर टूट पड़े। उन्होंने सुमाली के वेग को रोक दिया। सुमाली और वसु का रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। फिर तो महाबली वसु ने अपने महाबाण मारकर उसके सर्परथ को खण्ड-खण्ड कर गिरा दिया, फिर

अपनी प्रचण्ड गदा के प्रहार से उन्होंने उसे मार ही डाला तथा और भी जितने आये उन सबका उन्होंने गदा से मारकर संहार कर दिया।

मेघनाद का इन्द्र को बाँधकर लंका ले आना

अब देवताओं और राक्षसों का तुमुल युद्ध होने लगा। अन्धकार की उस घोर निविड़ता में इन्द्र, रावण और मेघनाद—यह ही तीन सावधान रह सके। देवताओं ने राक्षसों का घोर संहार कर दिया। यह देख रावण अत्यन्त ही कुपित हुआ। उसने अपने सारथी सूत से कहा—तुम शीघ्र ही मेरा रथ देवताओं की सेना के उस पार उदयाचल तक चलाओ।

सूत ने शत्रु देवताओं के मध्य से ही रथ को आगे बढ़ाया। इन्द्र ने देवताओं को उत्तेजना देकर कहा—क्या कहते हो, रावण को जीवित ही पकड़ लो। क्योंकि वरदान के प्रभाव से यह मारा तो जा नहीं सकता, अत: शीघ्रता करो। देवताओं से ऐसा कह इन्द्र दूसरी ओर घूमकर राक्षसों को मारने लगे। फिर तो रावण अबाध गति से उत्तर की ओर से देवसेना में प्रवेश कर गया।

इन्द्र दक्षिण की ओर राक्षसों पर प्रहार कर रहे थे।रावण सौ योजन तक प्रवेश कर गया। उसने अपने प्रचण्ड बाणों से देवताओं को त्रस्त कर दिया, इनमें में दानवों और राक्षसों ने बड़ा हाहाकार किया कि, हा! हम सब मारे गये, इससे यह निश्चय हो गया कि इन्द्र ने रावण को पकड़ लिया। फिर तो परम क्रोधातुर हो मेघनाद उस दारुण देवसेना पर टूट पड़ा। उसने कई उत्तम बाणों से इन्द्र के सारथि को मारकर घायल कर दिया।

तब इन्द्र रथ और सारथी को वहीं त्याग ऐरावत पर जा बैठे और मेघनाद को ढूँढ़ने लगे। पर वह तो अपनी माया द्वारा अन्तरिक्ष में अदृश्य हो रहा था। इन्द्र उसकी माया में फँस गये। उसने उन्हें बाँध लिया। यह देख देवता बड़े चिन्तित हुये। यद्यपि इन्द्र स्वयं अनेक प्रकार की माया जानते थे, तथापि इन्द्रजित् उन्हें बलपूर्वक पकड़े ले गया।

इससे देवता परम कुपित हो रावण को ऐसा मारने लगे कि, वह रण से विमुख हो गया। अब उसकी युद्धशक्ति सर्वथा ही क्षीण हो गयी। बाणों की घोर वर्षा से उसका शरीर जर्जरित हो गया। उसी समय अदृश्य रह मेघनाद अन्तरिक्ष से बोला—पिताजी! आप चिन्ता न करें, हमने इन्द्र को बाँध लिया है। अब युद्ध समाप्त हो गया, चलिए घर चलें। हमने देवताओं का मानमर्दन कर दिया। त्रिलोकपति इन्द्र को हमने बाँध लिया।

यह सुन देवताओं ने युद्ध स्थगित कर दिया और इन्द्र सहित वे वहाँ से

प्रस्थान कर दिये। रावण भी अपने पुत्र की बात सुन हर्षित हो वहाँ से चलकर मेघनाद के साथ हो उसकी प्रशंसा करने लगा और कहा—हे पुत्र! तूने मेरे कुल और वंश का गौरव बढ़ाया। आज तूने देवताओं सहित इन्द्र को जीत लिया। अच्छा, अब तू इन्द्र के रथ पर चढ़ और अपनी सेना सहित लंका को चल। मैं भी तेरे पीछे-पीछे अपने मन्त्रियों सहित हर्षित होता हुआ आता हूँ। इस प्रकार मेघनाद इन्द्र को पकड़कर लंका में ले आया।

ब्रह्मा का वर दे इन्द्र को छुड़ाना

इस प्रकार जब इन्द्र पकड़ कर लंका में लाये गये, तब सब देवता ब्रह्माजी को आगे कर रावण के पास गये। वहाँ पहुँच ब्रह्माजी ने आकाश में स्थित हो, पुत्र और भ्राताओं सहित बैठे हुए रावण से कहा—वत्स रावण! मैं तेरे पुत्र की शूर वीरता से सन्तुष्ट हूँ; क्योंकि वह तुमसे भी युद्ध में श्रेष्ठ हुआ है। इस प्रकार तुमने अपने पराक्रम से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली।

अत: मैं तुम दोनों ही पर प्रसन्न हूँ। हे रावण! अबतेरा यह अतिबली पुत्र संसार में इन्द्रजीत नाम से विख्यात होगा। परन्तु हे महाबलाढ्य! अब तुम इन्द्र को छोड़ दो। इसके स्थान में बोलो कि, तुम देवतओं से क्या चाहते हो? इस महाविजयी इन्द्रजीत बोला—हे देव! यदि आप इन्द्र को छुड़ाना चाहते हैं, तो इसके बदले मुझे अमरत्व प्रदान कीजिए।

ब्रह्माजी ने कहा—हे वत्स! इस पृथ्वी का कोई भी प्राणी अमर नहीं हो सकता। मेघनाद ने कहा—अच्छा, अब मुझे यह वर दीजिए कि, मैं जब कभी शत्रु पर विजय पाने की इच्छा से संग्राम में उतरूँ और मन्त्रयुक्त अग्निदेव का पूजन करूँ, उस समय अग्नि से मुझे ऐसा दिव्य रथ प्राप्त हो जाया करे कि, जिस पर बैठकर युद्ध करते हुए मुझे कोई मार न सके। हाँ, यदि मैं जप और हवन को पूर्ण किये बिना ही युद्ध करूँ तब मेरी मृत्यु हो।

इस पर ब्रह्माजी ने कहा—एवमस्तु! ऐसा ही होगा। फिर तो यह वर पाकर मेघनाद ने इन्द्र को छोड़ दिया। सब देवता उनके साथ हो स्वर्ग को चले। उस समय इन्द्र दीन से हो रहे थे। उनका देवोचित तेज लुप्त सा हो गया था और वे चिन्तामग्न हो कुछ और ही सोच रहे थे।

तब उनकी मन: स्थिति को पहचानकर ब्रह्माजी ने कहा—देवराज! यह तुम्हारे पूर्व पापों का ही फल है। अब यह शोक क्या करते हो? तुम्हें स्मरण है, तुमने उस उत्तम गुण-सम्पन्न मेरी उत्पत्ति की हुई सुन्दरी अहल्या पर, जिसे मैंने धर्मात्मा महर्षि गौतम को अर्पण किया था—कैसा अत्याचार किया था, उस समय तुम्हें मेरा कुछ भी भय न रहा और तुमने उस निरीह मुनि पत्नी का बलात्कार किया।

मुनि ने उसे अदृश्य हो जाने का शाप दिया और तुम्हें भी शापित किया। तब अहल्या की प्रार्थना पर गौतम ने कहा कि, 'इक्ष्वाकुवंश में एक तेजस्वी महारथी का अवतार होने पर कि जिनका श्रीराम नाम होगा और जब वे तपोवन में आवेंगे तब उनके दर्शन से तू पुनः पवित्र हो मुझे प्राप्त होगी और तुम्हें कहा था कि 'तू शत्रु के हाथ में पड़ेगा।'

वही तुम्हारा पाप उदय हुआ है। अब तुम वैष्णव यज्ञ कर उस पाप से निवृत्त होओ। तुम्हारा पुत्र जयन्त युद्ध में मारा नहीं गया है। उसे उसका नाना अपने साथ लेकर समुद्र में प्रवेशकर गया है। इस समय वह उन्हीं के पास विद्यामान् है।' ब्रह्माजी के वचन सुनकर देवराज ने स्वर्ग में जाकर वैष्णवयज्ञ किया और पुनः स्वर्ग का राज्य पालन रने लगे।

हे राम! इन्द्रजीत इस प्रकार का बली था। अन्यों की तो बात ही क्या है उसने देवराज इन्द्र को जीत लिया था। अगस्त्य मुनि का वचन सुन राम लक्ष्मण बड़े आश्चर्यचकित हुये। तब वानरों सहित राम के पास बैठै विभीषण ने भी कहा—हे महर्षे! अवश्य ही यह आश्चर्य की बात है, जिसे बहुत दिन पश्चात् आज मैंने यह आपसे श्रवण किया। आपका यह कथन सर्वथा ही यथार्थ है।

रावण की पराजय का इतिहास

तदनन्तर महातेजस्वी राम विस्मित हो अगस्त्यजी को प्रणाम कर बोले—हे द्विजोत्तम! जब क्रूर रावण पृथ्वी-पर्यटन करता था, तब क्या इस पृथ्वी पर कोई वीर था ही नहीं अथवा पृथ्वी वीरों से शून्य थी? राजा या राजमात्र! क्या कोई भी ऐसा पुरुष नहीं था? तब राघव के ऐसे वचनों को सुनकर भगवान् अगस्त्य ऋषि हँसकर श्रीराम से ऐसा बोले, मानों ब्रह्माजी महादेवजी से बोलते हों।

उन्होंने कहा—पृथ्वीपते! इसी प्रकार विचरता हुआ रावण एक बार स्वर्ग तुल्य अग्निदेव के स्थान जब माहिष्मतीपुरी में जा पहुँचा, तब वहाँ का राजा अर्जुन, जो अग्नि के ही सदृश प्रभावशाली था, वह अपनी स्त्रियों सहित नर्मदा पर जल विहार करने गया था। तब वहाँ पहुँच कर रावण ने उसके मन्त्रियों से पूछकर उससे भेंट करने की इच्छा प्रकट की। मन्त्रियों ने कहा कि, इस समय महाराज राजधानी में नहीं हैं।

यह सुन उस पुरी को त्याग कर रावण हिमालय के समान उस विन्ध्याचल पर आया, जो मानों पृथ्वी को फोड़कर निकाल हुआ-सा अपने सहस्त्रशिखरों से शोभित था और जिसकी कन्दराओं में सिंहादिक अनेकों जन्तु वास करते थे। वह स्वर्गीय उन्नतशील था। हिमालय-सा उत्तुङ्ग और विशाल कन्दराओं से युक्त था। तब

उस विन्ध्यपर्वत को देखते-देखते रावण नर्मदा नदी के तट पर जा पहुँचा, जो स्वच्छ पर्वतों पर बहती हुई पश्चिमोदधि गामिनी थी।

उसके तट पर सभी दर्शनीय प्राकृतिक दृश्य थे। वहाँ पहुँच रावण शीघ्र ही पुष्पक से उतर पड़ा और श्रेष्ठ नर्मदा नदी में स्नान करने को उद्यत हुआ। उसके शुक, सारण और मारीच नामक मन्त्रिगण भी साथ हुए। तदनन्तर उसने अनायास ही अपने मन्त्रियों से कहा—'देखो, इस समय अपने तीक्ष्ण ताप से तप्त होने वाला सूर्य आकाश के मध्य में स्थित है, तथापि मुझे यहाँ देखकर चन्द्रवत् शीतल हो गया है।

मेरे ही भय से यह वायु भी नर्मदा के जल से शीतल, सुगन्धित और श्रमनाशक होकर बड़ी सावधानी से प्रवाहित हो रहा है। तुम लोग भी इस महानदी में स्नान कर पापों से मुक्त हो जाओ। मैं भी इसके स्वच्छ पुलिन पर महादेवजी को पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँगा।' रावण के ऐसा कहने पर उसके सब मन्त्रियों ने नर्मदा में प्रवेश कर स्नान किया और पुनः रावण के लिये पुष्पों का पर्वत-सा लगा दिया।

रावण स्नान करने नदी में प्रविष्ट हुआ। फिर स्नान कर बाहर आ सविधि मन्त्रों का जाप करते हुए जब हाथ जोड़कर चला तो सब राक्षस भी उसके पीछे-पीछे चले। राक्षसेन्द्र रावण जिधर जाता उधर ही अपने साथ एक सुवर्णमय शिवलिङ्ग ले जाता। उसने वहाँ भी बालुका में एक लिङ्ग स्थापित किया। उसकी सविधि पूजा की। फिर वह उसके समक्ष हाथ उठाकर भक्तिपूर्वक नाचने लगा और गाने लगा।

सहस्रार्जुन द्वारा रावण का बाँधा जाना

राक्षसेन्द्र रावण नर्मदा के जिस तट पर शिवजी की पुष्पों से पूजा कर रहा था, वहाँ से कुछ ही दूर हटकर माहिष्मती नगरी का राजा महाविजयी अर्जुन अपनी बहुत-सी रानियों के साथ जल-क्रीड़ा कर रहा था। उसकी सहस्र भुजाएँ थीं, जिनके परीक्षणार्थ नर्मदा के घाट के जल को रोक रहा था। तब उसकी भुजाओं से अवरुद्ध नर्मदा का जल समुद्र के द्वारा के समान उमँड़कर जिधर रावण बैठा पूजा कर रहा था उस ओर विपरीत गति से प्रवाहित होने लगा।

इससे रावण द्वारा शिव को समर्पित समस्त पुष्प प्रवाहित हो गये। रावण ने देखा, नर्मदा का जल समुद्र के द्वार के समान पश्चिम की ओर से बढ़कर पूर्व की ओर प्रवाहित हो रहा है। इसकी पूजा भी अभी समाप्त न हो पायी थी, कि आधे में ही जल की बाढ़ के कारण उसे अपनी पूजा समाप्त कर देनी पड़ी। वह नर्मदा की ओर घूमकर देखने लगा।

देखा तो जल की धारा पश्चिम से पूर्व की ओर अग्रसर है और अल्प समय में ही नदी शान्तपथ से पूर्ववत् प्रवाहित होने लगी। यह देख रावण मुख से कुछ न

बोला, किन्तु अपने दाहिने हाथ की अँगुली से शुक और सारण को नदी की बाढ़ का कारण ज्ञात करने के लिए संकेत किया।

वे दोनों भाई पश्चिम की ओर आकाश में उड़े। उड़ते-उड़ते जब आधा योजन निकल गये तब देखा कि, एक पुरुष स्त्रियों के साथ जलविहार कर रहा है, तो साल वृक्ष के समान परमोन्नत है, जिसके केश खुले हुए हैं और नेत्र मदात्य से लाल हो रहे हैं और वह अति मद्यपान से मतवाला हो रहा है तथा जैसे अपने सहस्त्रों चरणों से सुमेरु पर्वत पृथ्वी को दबाये हुए हो, ऐसे ही अर्जुन की सहस्त्रों भुजाओं से नदी का जल अवरुद्ध है।

वह बलवान् सहस्त्रों श्रेष्ठ स्त्रियों से समावृत्त है। शुक और सारण उस अद्भुत दृश्य को देखकर शीघ्र ही लौटे और रावणसे सब देखा हुआ वृत्तान्त का। शुक और सारण के इस प्रकार कहने पर रावण बोल उठा—'वही अर्जुन है।' तदनन्तर रावण अपने मन्त्रियों सहित युद्ध की लालसा से उधर की ओर चला और शीघ्र ही वहाँ जा पहुँचा, जहाँ अर्जुन जलक्रीड़ा कर रहा था।

वह अञ्जन के समान काला और बड़ा ही बलवान् था। वहाँ पहुँच कर उसने अर्जुन को स्त्रियों से आवृत्त जल विहार करते हुए वैसी देखा जैसे बहुत-सी हथिनियों के साथ कोई गजेन्द्र जल विहार करता हो। राजा अर्जुन को देखते ही राक्षसराज रावण के नेत्र क्रोध से ला हो गये। उसने अर्जुन के मन्त्रियों से गम्भीर वाणी में यह क़हा—'मन्त्रियों! तुम लोग दैत्यराज अर्जुन से कहो कि, तुमसे युद्ध करने के लिए रावण आया है।'

मन्त्रियों ने कहा—'इस समय महाराज स्त्रियों के मध्य में हैं और ऐसी स्थिति में आप युद्ध करना चाहते हैं? आज के दिन क्षमा कीजिए और रात भर ठहर जाइये। कल अर्जुन से मिलकर युद्ध कर लीजियेगा। और यदि आपको युद्ध करने की बड़ी शीघ्रता हो तो हम सबको संग्राम में मारकर यमराज के पास पहुँचा जाइए।' यह सुन रावण के मन्त्रियों ने अर्जुन के कितने मन्त्रियों को मार डाला और कितने ही को भूखे होने के कारण खा डाला।

उभय मन्त्रियों के युद्ध से नर्मदा तट पर बड़ा कोलाहल मच गया। अर्जुन के पक्ष के योद्धा रावण के पक्ष वालों पर और रावण के पक्ष वाले वीर तथा मंत्रिगण अर्जुन के पक्ष वालों पर बाण, तोमर, भाले, त्रिशूल और वज्र आदिक अस्त्र शस्त्रों का प्रहार करने लगे। जब यह समाचार वीर राजा अर्जुन को मिला तो वह अपने साथ क्रीड़ित स्त्रियों से बोला—'तुम सब किञ्चित् भी भयभीत न होना।'

ऐसा कह उन सबको जल से बाहर निकाला और क्रुद्ध विकृत नेत्रों से अपनी

गदा ले तीव्रता से राक्षसों पर टूट पड़ा। परन्तु तत्क्षण ही विन्ध्य के सदृश अचल प्रहस्त हाथ में मूसल ले उसके समक्ष जा पहुँचा। उसने उस लौह जटित मूसल से अर्जुन पर प्रहार किया। फिर यम-सी भीषण गर्जना की। किन्तु अस्त्रकुशल अर्जुन ने तनिक भी चिन्ता न की और अपनी गदा से उसके प्रहार को व्यर्थ कर दिया।

उस गदाघातों से प्रहस्त धाराशायी हुआ। प्रहस्त को धराशायी हुआ देख मारीच, शुक, सारण महोदर और धूम्राक्ष युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गये। यह देख स्वयं रावण ने वीर श्रेष्ठ अर्जुन पर आक्रमण किया। सहस्त्र भुजाधारी नरनाथ और बीज भुजाधारी निशाचरनाथ को रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। दोनों ही सिंह के समान बली थे।

भयानक गर्जना कर रुद्र और यमराज के समान कुपित हो एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। उस समय उन गदा-प्रहारों को वे दोनों उसी प्रकार सहन करने लगे, जैसे पर्वतों ने भयंकर वज्राघातों को सहन कर लिया था। विद्युत् की घोर गर्जन से जैसे दिशाएँ गूँज उठती हैं, उसी प्रकार उनकी गदाओं के प्रहार से सभी दिशाएँ प्रतिध्वनित हो रही थीं।

इसी क्षण अर्जुन ने कुपित होकर रावण के विशाल वक्ष:स्थल पर पूर्ण शक्ति से गदा का प्रहार किया। परन्तु रावण तो वर के प्रभाव से सुरक्षित था, अत: उसके वक्ष:स्थल से टकराकर उस गदा के दो खण्ड हो गये। तथापि अर्जुन के गदा प्रहार से रावण एक धनुष पीछे हट गया और रोता हुआ पृथ्वी पर बैठ गया। रावण को व्याकुल देखकर अर्जुन ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और अपने सहस्त्र करों के द्वारा उसे जबरन से बाँध दिया।

रावण के बँध जाने पर सिद्ध, चारण और देवताओं ने 'धन्य-धन्य' कहा, अर्जुन के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। फिर तो जैसे सहस्त्र लोचन इन्द्र राजा बलि को जीत अमरावती में आये थे, वैसे ही अर्जुन भी रावण को बाँधे हुए अपनी माहिष्मतीपुरी में आया।

पुलस्त्यजी का रावण को मुक्त कराना तथा रावण का लज्जित हो लंका को लौट आना

रावण को पकड़ लेना वायु को पकड़ लेने के ही समान था। स्वर्ग में वार्तालाप करते हुए पुलस्त्यजी ने जब देवताओं के मुख से यह बात सुनी तो वे पुत्रस्नेह वश थर्रा उठे और वायु गति से माहिष्मती नरेश से भेंट करने आये। राजा के द्वारपालों और मन्त्रियों ने उनके आगमन की सूचना राजा को दी। तब तपस्वी

पुलस्त्य का आगमन सुन वे हाथ जोड़े हुए उनकी आगवानी को आए। राजपुरोहित अर्घ्य और मधुपर्क सामग्री ले आगे चले।

राजा ने कहा—हे मुने! यह राज्य, ये स्त्री-पुत्र और हम सब लोग आपके ही हैं। आज्ञा दीजिए, अम आपकी क्या सेवा करें?' यह सुनकर, पुलस्त्य मुनि ने धर्म, अग्नि और पुत्रों का कुशलमंगल पूछा। साथ ही उन्होंने अर्जुन से कहा--'हे नरेन्द्र! तुममें अतुलित बल है। तभी तो तुम दशग्रीव को जीत लिया है। अहो! जिसके भय सेसागर और पवन भी मौन होकर आज्ञा पाने की प्रतीक्षा किया करते हैं! हे वत्स! अब मैं तुमसे यही माँगता हूँ कि, मेरा वचन मानकर, तुम रावण को मुक्त कर दो।'

अर्जुन के पुलस्त्यजी की आज्ञा शिरोधार्य की और बिना किसी आपत्ति के ही सहर्ष राक्षसेन्द्र रावण को मुक्त कर दिया। फिर अग्नि के समक्ष उपस्थित हो अपने मन को शुद्ध कर इसके साथ मैत्री भी कर ली। फिर ब्रह्माजी केपुत्र पुलस्त्यजी को प्रणाम कर राजा अर्जुन अपने भवन में प्रविष्ट हुआ। पुलस्त्य ने भी रावण को विदा किया। यद्यपि अर्जुन ने रावण का स्वागत किया, तथापि पराजित हो जाने के कारण वह लज्जित होता हुआ लंका को चला गया। ब्रह्मपुत्र पुलस्त्यजी भी रावण को छुड़ा ब्रह्मलोक को प्रस्थित हुए।

जब रावण किष्किन्धा गया था

अर्जुन द्वारा मुक्त किया गया राक्षसाधिप रावण फिर सब पृथ्वी का परिभ्रमण करने लगा। जहाँ-कहीं भी उसे अधिक बलवान् मनुष्य या राक्षसों का होना सुनाई पड़ता, वह वहीं दौड़कर जाता और उसे युद्ध के लिये ललकारता। एक दिन वह बालिपालित किष्किन्धापुरी में पहुँचा और उसने सुवर्णमालाधारी बालि को युद्ध के लिये बुलाया।

तब युद्ध की इच्छा से आये हुए रावण से बालि के मन्त्री, तारा, तारा के पिता सुषेण, अंगद और सुग्रीव ने कहा—राक्षसेन्द्र! इस समय बालि तो बाहर गये हुए हैं, जो आपके जोड़ के हैं। अभी अल्प काल के लिये आप ठहरिये। बालि चारों समुद्रों पर सन्ध्या कर, अब आना ही चाहते हैं। तब-तक शंख के समान श्वेत हड्डियों के इस ढेर को देख लो। ये उनकी हड्डियाँ हैं, जो वानरराज बालि से युद्ध करने की इच्छा से आ चुके हैं।

हे रावण! यदि तुमने अमृतरस भी पान किया होगा, तो भी बालि के समक्ष जाने पर तुम फिर जीवित न रह सकोगे। हे विश्रवा पुत्र! आज तुम इस संसार को देख लो और अल्प क्षणों तक ठहरो, फिर तो तुम्हारा जीवन दुर्लभ हो जायेगा और यदि

तुम्हें मरने की शीघ्रता हो तो दक्षिण समुद्र पर चले जाओ। वहीं समुद्र के तट पर तुम्हारी बालि से भेंट हो जायेगी।

बालि पृथ्वी पर स्थित अग्नि के समान भभकता है। तब उनकी इन बातों को सुनकर उनका तिरस्कार करता हुआ रावण पुष्पक पर बैठा दक्षिण समुद्र की ओर गया। वहाँ पहुँच उसने सुवर्णगिरि के समान उन्नत बालि को सन्ध्योपासन करते हुए देखा। काजल के समान काले रंग का रावण विमान से उतर पड़ा और बालि को पकड़ने के लिये पैरों की आहट न करते हुये तत्क्षण ही उसकी ओर चल दिया। परन्तु दैवयोग से बालि ने उसे देख लिया।

किन्तु उसके दुष्ट अभिप्राय को जानकर भी वह किञ्चित् व्यग्र न हुआ और न उसकी ओर कुछ ध्यान ही दिया। उसने निश्चय कर लिया कि, यह मुझे पकड़ना चाहता है, परन्तु इस दुष्ट को अपने पार्श्व में दबाकर अन्य तीन समुद्रों पर जाऊँगा। इसके हाथ, वस्त्र और पैर लटकते रहेंगे जिससे गरुड़ के पंजे में फँसे हुए सर्प के समान लोग इसे मेरे पार्श्व में पड़ा देखेंगे।'

यह सोचकर बालि मौन ही रहा और वेद मन्त्रों का जाप करता रहा। जब रावण ने समझा कि अब तो मैं हाथ बढ़ाकर इसे पकड़ सकता हूँ, उसी समय बालि ने दूसरी ओर मुँह किये ही उसे इस प्रकार पकड़ लिया, जैसे गरुड़ सर्प को दबोच लेता है। फिर तो वह उसे बगल में दाबे हुए बड़े वेग से आकाश में उड़ा। रावण उसे बारबार नोचता था। तब भी वायु जिस प्रकार बादल को उड़ा ले जाता है उसी प्रकार बालि उसे बगल में दबाये चलता था।

इस प्रकार रावण के परास्त हो जाने पर उसे मन्त्री उसे बालि से मुक्त करने के लिये रावण के पीछे-पीछे दौड़ते रहे। परन्तु बालि तक वे पहुँच ही नहीं पाते थे। इससे वे श्रमित होकर बैठ गये। इतने में महावेगवान् वानरराज बालि रावण को लिये हुए पश्चिम समुद्र पर पहुँचा, वहाँ स्नान, संध्या और जप करके वह उत्तर समुद्र पर आया।

वहाँ भी उसने संध्या की और पुनः पूर्व समुद्र पर आया। वहाँ भी सन्ध्योपासन करके उसे पार्श्व में दबाये किष्किन्धा लौट आया। किष्किन्धा के उपवन में पहुँचकर उसने रावण को अपनी काँख से छोड़ दिया और बार-बार हँसकर पूछा--कहिए, आप कहाँ से आ रहे हैं? तब काँख में इतनी देर दबे रहने के कारण रावण भी श्रमित हो गया था जिससे उसके नेत्र व्याकुल हो रहे थे।

राक्षसेन्द्र ने विस्मित हो बालि से कहा—वानरराज! तुम तो साक्षात् इन्द्र के समान हो। मैं राक्षसेन्द्र रावण हूँ, युद्ध करने की इच्छा से यहाँ आया था। परन्तु आज

तुम्हारे हाथ से पकड़ लिया गया। अहो! तुम्हारा बल, पराक्रम और गाम्भीर्य आश्चर्योत्पादक है। तुमने मुझे पशु के समान पकड़ चारों समुद्र पर परिभ्रमण किया है। हे वीर! तुम्हारे अतिरिक्त ऐसा कोई भी वीर नहीं है। जो मुझे लिये इस प्रकार वहन करे।

ऐसे गति तो मन, वायु और गरुड़ इन तीन की ही है। अथवा निःसन्देह चौथे आप ऐसे वेगशाली हैं। हे वानरराज! मैंने आपका बल देख लिया। अब मैं अग्नि को साक्षी बनाकर आपके साथ सर्वदा के लिए मित्रता करता हूँ। स्त्री, पुत्र, नगर, राज्य, भोग, वस्त्र और भोजन—ये सभी वस्तुएँ हम दोनों की सम्मिलित रहेंगी।' फिर तो वानरराज और राक्षसराज दोनों ने अग्नि प्रज्वलित कर परस्पर बन्धु-स्नेह की स्थापना की और एक ने दूसरे का आलिङ्गन किया।

फिर दोनों हर्षित हो एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए किष्किन्धा में गये। रावण एक मास तक किष्किन्धा में सुग्रीव के समान रहा। फिर त्रैलोक्यनाशक रावण के मंत्री वहाँ आ उसे लिवा ले गये।

हे प्रभो! यह एक प्राचीन घटना का वृत्तान्त है, जिसमें बालि ने रावण को नत किया और पुनः अग्नि-सान्निध्य में उससे बन्धुत्व स्थापित किया था। हे राम! बालि में अनुपम बल था, किन्तु अग्नि जिस प्रकार पतङ्गे को दग्धकर देती है, उसी प्रकार आपने उस बालि को एक ही बाण से मार डाला।

अन्त में अगस्त्यजी बोले—हे राम! उस लोककण्टक रावण की यह उत्पत्ति कथा है जिसने इन्द्र तथा जयन्त को भी युद्ध में परास्त कर दिया था।

अतः हे पुत्र! अपना माहेश्वर यज्ञ तुम अब सम्पन्न करने के लिए उद्यत हो जाओ और सदाशिव को प्रसन्न करो।

॥ इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत रावण जीवन वृत्तान्त प्रथम परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ॥१॥

॥ शुभमिति ॥

❑❑❑

246

रुपेश

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

[द्वितीय परिच्छेद]

तन्त्र मन्त्र साधना ६३-१७८

षट्-कर्म ६४

षट्-कर्म-लक्षणम् ६४

विषय-कथनम् ६४

मारण-प्रयोग ६६

ज्वर द्वारा शत्रु का मारण ६७

आर्द्रपटी साधन का विनियोग ६८

बैरिमारण कवच ६९

काली का ध्यान ६९

माला-निर्णय ७१

जप-लक्षण ७१

मोहनाभिधान ७३

जल स्तम्भन का प्रयोग ७४

अग्नि स्तम्भन का प्रयोग ७५

आसन स्तम्भन का प्रयोग ७५

बुद्धि स्तम्भन प्रयोग ७५

मेघ स्तम्भन-प्रयोग ७६

विषय	पृष्ठांक
निद्रा स्तम्भन का प्रयोग	७६
सैन्य स्तम्भन प्रयोग	७६
सैन्य पलायन प्रयोग	७६
विद्वेषण प्रयोग	७७
उच्चाटन प्रयोग	७८
वशीकरण प्रयोग	७९
रावशीकरण	७९
कुचकाठिन्य की विधि	८१
योनि संस्कार	८१
रोम-नाशन	८२
योनि-संकोचन	८२
स्त्री-द्रावण	८२
आकर्षण प्रयोग	८३
यक्षिणी साधन	८४
महायक्षिणी साधन	८४
भूतिनीसाधनम्	८५
शव-श्मशान-साधन	८६
मृतसञ्जीवनी प्रयोग	८७
विद्याधर सिद्धि	८८
भूतकरणम्	८८
कुष्ठीकरण प्रयोग	९०
मक्षिकानिवारण प्रयोग	९०
मूषकनिवारण प्रयोग	९०
मत्कुण-निवारण	९०
सर्पनिवारण प्रयोग	९०
मशक-निवारण	९१
क्षेत्रोपद्रवनाशन प्रयोग	९१
अन्नोत्पादन-मन्त्र	९१
रक्त निवारण	९१
बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग	९१
गर्भस्तम्भन	९२
सुखप्रसव प्रयोग	९४
गर्भमोचन मन्त्र	९४
विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी मन्त्र प्रयोग	९४
विद्या यक्षिणी साधन	९५
डाकिनी साधन	९५

विषय	पृष्ठांक
तस्कर ग्रहण चेटक	९५
ग्रहनाशनभूतेश्वर मन्त्र	९६
भूतोपद्रवनाश का उड्डीश मन्त्र	९६
डाकिनी से बालक को छुड़ाने का मन्त्र	९६
प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र	९७
नजर झाड़ने का मन्त्र	९७
डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र	९८
डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना	९८
डाकिनी दूर करने वाला मन्त्र	९८
डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र	९९
प्रेतादि झाड़ने का मन्त्र	९९
दूसरे के कृत्य को उलटना	९९
गत्रिज्वर निवारण तन्त्र	९९
अर्श निवारण तन्त्र	९९
दाँत के कीडे झाड़ने का मन्त्र	१००
हूक का मन्त्र	१०१
प्लीह निवारण मन्त्र	१०१
कखलाई निवारणार्थ मन्त्र	१०१
रींघनवायु का मन्त्र	१०१
सुखप्रसव	१०१
नेत्रपीडा निवारण मन्त्र	१०२
कण्ठवेल का मन्त्र	१०२
बिच्छू झाड़ने का मन्त्र	१०२
सर्प झाड़ने का मन्त्र	१०३
सर्पकीलन का मन्त्र	१०४
सर्पों को भगाने का मन्त्र	१०४
पागल कुत्ते का मन्त्र	१०४
आधासीसी का मन्त्र	१०४
कमल झाड़ने का मन्त्र	१०५
दर्द और थनपल को झाड़ना	१०५
जमोगा का मन्त्र	१०५
दबा पसली झाड़ने का मन्त्र	१०५
सर्व रोग निवारक मंत्र	१०६
बवासीर नाशक मंत्र	१०६
पीलिया झाड़ने का मंत्र	१०६
कण्ठवेल पीड़ा मुक्ति मंत्र	१०७

विषय	पृष्ठांक
बालज्वर नाशक मंत्र	१०७
नक्सीर स्तम्भन मंत्र	१०७
मसान रोग (सूखा रोग) नाशक प्रभावशाली झाड़ा	१०७
आधाशीशी नाशक मंत्र	१०८
नेत्र बाधा निवारण मंत्र	१०८
अन्न पचाने का मंत्र	१०८
आँख की फूली काटने हेतु	१०९
शारीरिक पीड़ा नाशक मंत्र	१०९
बवासीर नाशक मंत्र	१०९
सूखा रोग झाड़ने का मन्त्र	१०९
सर्वरोग नाशक तान्त्रिक यन्त्र अथवा तावीज	११०
अंडकोष वृद्धि रोकने का यन्त्र	११०
नियमित मासिक-धर्म हेतु तान्त्रिक टोटके	१११
मृतवत्सा दोष निवृत्ति हेतु दो मन्त्र	१११
मृतवत्सा नारी हेतु झाड़ा	११२
गर्भाशय के विकार मिटाने का झाड़ा व गंडा	११२
ज्वरों के लिए झाड़ा	११२
दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र	११३
वायु नाशक हनुमान् मन्त्र	११३
समस्त व्याधियाँ नाशक हनुमान् मन्त्र	११३
बाय रोग झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११४
कान दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११४
अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान् मन्त्र	११४
हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११५
दाद झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११५
आधा शीशी विनाशक हनुमान् मन्त्र	११५
कान की पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	११६
नकसीर रोग निवारक हनुमान् मन्त्र	११६
समस्त रोग शान्ति का हनुमान् मन्त्र	११६
आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र	११६
डिब्बा (पहली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान् मन्त्र	११७
नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	११७
बवासीर नाशक हनुमान् मन्त्र	११७
बगली दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११८
आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र	११८
उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान् मन्त्र	११८
बाला झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११८
सिर दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र	११९
आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान् मन्त्र	११९
नेत्र रोग नाशक हनुमान् मन्त्र	११९
दन्त पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	१२०
स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान् मन्त्र	१२०
सर्व-शूल नाशक हनुमान् मन्त्र	१२०
रोग-दोष नाशक हनुमान् मन्त्र	१२१
दुर्बलता दूर करने का हनुमान् मन्त्र	१२१
रोग लकवा ठीक करने का मंत्र	१२१
रोग बिच्छू का विष उतारने का मंत्र	१२२
रोग दन्त शूल नाशक मंत्र	१२२
रोग बवासीर (खूनी) दूर करने का मंत्र	१२३
रोग नेत्र पीड़ा नाशक मंत्र	१२३
रोग शिर: शूलादिशामक मंत्र	१२३
रोग गांठ या फोड़े को ठीक करने के मंत्र	१२३
मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र	१२४
सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र	१२४
आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र	१२४
उदर वेदना निवारक मन्त्र	१२४
नेत्र पीड़ा निवारक मन्त्र	१२४
रोग निवारण मन्त्र	१२५
ऋतु वेदना निवारण मन्त्र	१२५
मासिक विकार दूर करने का मन्त्र	१२५
प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र	१२५
मृगी रोग हरण मन्त्र	१२६
रतौंधी विनाशक मन्त्र	१२६
नैन वेदना विनाशक मन्त्र	१२६

विषय	पृष्ठांक
मस्तक शूल विनाशक मन्त्र	१२६
आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र	१२६
दन्त शूल नाशक मन्त्र	१२७
तपेदीक (टी० बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र	१२७
पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र	१२७
बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र	१२८
दूसरा मन्त्र (डंक झाड़ने का)	१२८
पीलिया (कँवर) का मन्त्र	१२८
ज्वर नाशक तन्त्र धूप	१२९
ज्वर नाशक मन्त्र	१२९
ज्वर नाशक अन्य मन्त्र	१२९
बाई झारने का यन्त्र	१२९
बालकों को रोना दूर करने का मन्त्र	१२९
जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र	१२९
वायु गोला का मन्त्र	१३०
वायु गोला झाड़ने का मन्त्र	१३०
कान का दर्द झाड़ने का मन्त्र	१३०
मृगी (मिरगी) का मन्त्र	१३०
प्रसव आसानी से होने का मन्त्र-यन्त्र	१३०
दूसरा प्रसव मन्त्र	१३०
आँख दुखने का मन्त्र	१३१
जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र	१३१
आधा शीशी झाड़ने का मन्त्र	१३१
रतौंधी झाड़ने का मन्त्र	१३१
बवासीर झाड़ने का मन्त्र	१३१
द्यूत विजय मन्त्र	१३२
गोमहिषी दुग्धवर्धन उपाय	१३२
भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र	१३३
प्रेतादि दोष नाशक मंत्र	१३३
भूत-प्रतों को भगाने का तन्त्र	१३४
भूतप्रेत भगाने का मन्त्र	१३४
भूत-प्रेत से स्वयं मुक्ति	१३५
भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी निवारण यन्त्र	१३६
भूतादि दुष्ट आत्माओं के निवारण के मन्त्र	१३६
डाइन-चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए मन्त्र	१३८
चुड़ैल भगाने की दूसरी विधि	१३८
मसान	१३८
डाकिनी मन्त्र	१३८
चुड़ैल हेतु मन्त्र	१३९
औपरा हेतु मन्त्र	१३९
डायन हेतु मन्त्र	१३९
भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र	१३९
श्री मणिभद्र भूत-प्रेत-बाधा निवारण-मन्त्र	१३९
भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र	१४०
सुख-समृद्धि दायक कालिका मन्त्र	१४०
भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र	१४१
चुड़ैल भगाने का मन्त्र	१४१
भूत भय नाशन मन्त्र	१४१
डायन, पिशाचिनी भगाने का मन्त्र	१४१
भूत भय नाशन	१४१
भूत बाधा नाशन प्रयोग	१४२
चामुण्डा मन्त्र प्रयोग	१४२
नजर उतारने का मंत्र	१४२
दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र	१४४
नजर लगने पर इन मन्त्रों का प्रयोग करें	१४४
नजर झाड़ने का मन्त्र	१४४
नजर दोष दूर करने का मंत्र	१४५
डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र	१४६
नजर झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	१४६
अतर मोहिनी	१४६
लूणमोहिनी	१४७
सुपारीमोहिनी	१४७
इलायचीमोहिनी	१४७
लौंग मोहिनी	१४७
राजवशीकरण	१४७
सभा मोहिनी	१४८
नग्न मोहिनी	१४८
शत्रु मोहिनी	१४९

विषय	पृष्ठांक
मूली मन्त्र प्रयोग	१४९
वशीकरण तन्त्र	१४९
राजावशीकरण तन्त्र	१५२
पति वशीकरण तन्त्र	१५३
स्त्रीवशीकरण तन्त्र	१५३
अथाकर्षण तन्त्र	१५४
पगच्छेदन	१५४
कुछ अन्य प्रयोग	१५५
शत्रु मूत्रबन्धन मन्त्र	१५६
शत्रुशिरसि पादुकाहनन	१५७
शत्रुपीडन	१५७
मूठचालन मन्त्र	१५८
सर्वकार्य सिद्धि भैरव मन्त्र प्रयोग	१५९
मेघ स्तम्भन	१६०
सेना स्तम्भन	१६०
स्नापलायन	१६०
अग्नि स्तम्भन	१६१
पदस्तम्भन	१६१
व्यापार वृद्धि मंत्र	१६२
व्यापार बंधन मुक्ति का मंत्र	१६३
रोजगार बाधानाशक एवम् व्यापार वृद्धि कारक मन्त्र	१६३
धन प्राप्ति का मंत्र	१६४
धन वृद्धि करने का मन्त्र	१६५
अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र	१६५
गाय भैंस आदि को दूध बढ़ाने का मन्त्र	१६५
अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र	१६६
ऋद्धि करण मन्त्र	१६६
आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र	१६६
नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि	१६६
अष्टगन्ध बनाने की विधि	१६७
पुराणोक्त रवि मन्त्र	१६८
वैदिक रवि मन्त्र	१६८
तन्त्रोक्त रवि मन्त्र	१६८
सूर्य गायत्री मन्त्र	१६८
चन्द (चन्द्रमा) का यन्त्र-मन्त्रादि	१६८
पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र	१६९
वैदिक चन्द्र मन्त्र	१६९
तन्त्रोक्त मन्त्र	१६९
सोम गायत्री मन्त्र	१६९
मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि	१६९
पुराणोवत भौम जप मन्त्र	१६९
वैदिक जप मन्त्र	१७०
तन्त्रोवत भौम मन्त्र	१७०
भौम गायत्री मन्त्र	१७०
ऋणमोचन मंगल स्तोत्र	१७०
बुध का यन्त्र-मन्त्रादि	१७१
पुराणोक्त बुध जप मन्त्र	१७१
वैदिक बुध मन्त्र	१७१
तन्त्रोक्त बुध मन्त्र	१७२
बुध गायत्री मन्त्र	१७२
बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मन्त्रादि	१७२
वेदोक्त गुरु मन्त्र	१७२
तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र	१७२
गुरु गायत्री मन्त्र	१७३
शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि	१७३
पुराणोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
वेदोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
शुक्र गायत्री मन्त्र	१७४
शनि का यन्त्र-मन्त्रादि	१७४
पुराणोक्त शनि जप मन्त्र	१७४
वैदिक शनि मन्त्र	१७४
तन्त्रोक्त शनि मन्त्र	१७४
शनि गायत्री मन्त्र	१७४
राहु का मन्त्र	१७५
पुराणोक्त राहु मन्त्र	१७५
वैदिक राहु मन्त्र	१७५
तंत्रोक्त मन्त्र	१७५
राहु गायत्री मन्त्र	१७५
केतु का यन्त्र-मन्त्रादि	१७६

विषय	पृष्ठांक
पुराणोक्त केतु मन्त्र	१७६
वैदिक केतु मन्त्र	१७६
तन्त्रोक्त मन्त्र	१७६
केतु गायत्री मन्त्र	१७६
नवग्रहों का यन्त्र-मन्त्रादि	१७६
नवग्रह स्तोत्र	१७७
अशुभ फलवाले ग्रहों के उपाय	१७७

द्वितीय परिच्छेद

रावण सदाशिव सम्वादात्मक

तन्त्र-मन्त्र साधना

त्रेता युग में कैलास पर्वत के शिखर पर, जो कि अनेक रत्नों से शोभित, अनेक वृक्षों एवं लताओं से व्याप्त था। जिस पर भाँति-भाँति के पक्षी मधुर ध्वनियों में किल्लोल कर रहे थे।

जहाँ पर सब ऋतुएँ अनेकानेक फूलों एवं फलों से सुन्दर ज्ञात होती थीं और शीतल, मन्द, सुगन्ध पवन चल रहा था।

जहाँ पर वृक्षों की अटल एवं सुखद छाया में अप्सराओं की सुन्दर संगीत ध्ववनि होती थी और कोकिकालाओं का समूह बनों से प्रविष्ट होकर कुहुकता था, एवं ऋतुराज बसन्त अपने सेवकों के साथ सदा निवास करते थे।

जिस कैलास पर्वत के शिखर पर सिद्ध, चारण, गन्धर्व तथा अपने गणों सहित गणेशजी और स्वामिकार्तिकेय जी सदा निवास करते थे। उसी रम्य कैलास शिखर के ऊपर चराचर जगत के श्रीशंकर जी मौन धारण कर निवास करते थे।

जो सदा कल्याण करने वाले, आनन्द मूर्ति एवं दयारूपी अमृत के सागर हैं। जिनका वर्ण कर्पूर एवं कुन्द-पुष्प की भाँति उज्ज्वल और जो पवित्र सत्त्वगुणमय तथा व्यापक हैं।

जिनके दिशायें ही वस्त्र हैं, जो दीन दुखियों के स्वामी योगियों में सर्वश्रेष्ठ तथा योगियों को अत्यन्त प्रिय हैं। जिनकी जटायें गंगाजी की धारा से सदा भीगी रहती हैं।

जो विभूति से भूषित, शान्ति स्वरूप, सर्पों की माला एवं मुण्डों की माला धारण किये हैं। जिनके तीन नेत्र हैं, जो तीनों लोकों के स्वामी तथा त्रिशूलधारी हैं।

जो शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले, ज्ञानरूप, मुक्ति प्रदान करने वाले, आदि अन्त रहित, कल्पनातीत तथा विशेष रहित निरंजन हैं।

जो सबका हित करने वाला, देवताओं के भी देवता तथा निरामय अर्थात् जो रोग रहित हैं। जिनका ललाट अर्धचन्द्र द्वारा देदीप्यमान है और जो पाँच मुख वाले तथा सुन्दर भूषणों से भूषित हैं!

इस प्रकार प्रसन्न मुख शंकरजी को देखकर रावण ने संसार के हित की कामना से उनसे पूछा।

रावण उवाच

हे देवों के देव! जगत् गुरो!! सदाशिव! संसार का सदा कल्याण करने वाले मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मेरे स्वामी, क्षण मात्र में ही सिद्धि को प्रदान करने वाली ऐसी तन्त्र विद्या को आप हमसे कहिये।

शिव उवाच

भगवान् शङ्कर बोले—हे वत्व ! तुमने संसार के हित की कामना से यह अच्छा प्रश्न किया, अत: तुम्हारे समक्ष इस उड्डीश नामक तन्त्र को कहता हूँ।

केवल पुस्तक में लिखी हुई विद्या बिना गुरु के सिद्धि प्रदान नहीं करती है, अत: बिना गुरु के इस तन्त्र शास्त्र पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता है अर्थात् तन्त्र शास्त्र की जो भी क्रियाएँ की जायँ वे गुरुओं की सहायता से ही की जायँ।

पहले इस शास्त्र में षट् कर्म—१. मारण, २. मोहन, ३. उच्चाअन, ४. विद्वेषण, ५. आकर्षण तथा ६. वशीकरणादि के लक्षणों कका वर्णन करता हूँ। जो कि तन्त्र मत के अनुसार सिद्धि रूपी फल को देने वाले हैं।

षट्-कर्म

१. शान्ति कर्म, २. वशीकरण, ३. स्तम्भन, ४. विद्वेषण, ५. उच्चाटन एवं ६. मारण इन छ: प्रकार के कर्मों को मुनियों ने षट्कर्म कहा है।

षट्-कर्म-लक्षणम्

जिस प्रयोग से रोग, या किसी प्रकार की बाधिादिकों की शान्ति या अनिष्ट ग्रहों की शान्ति आदि की जाती है, उसी प्रयोग को शान्ति कर्म कहते हैं, जिस प्रयोग के द्वारा किसी स्त्री, राजा, शत्रु या इष्ट को वश में किया जाता है अर्थात् अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण कराया जाता है, उस प्रयोग को वशीकरण करहते हैं। जिस प्रयोग से अग्नि, जल, शत्रु के पराक्रम या शत्रु की सेना की रुकावट की जाती है उसी को स्तम्भन कर्म कहते हैं। जिस प्रयोग से एक दूसरे से लगे प्रेम को छुड़ा दिया जाता है, उसको विद्वेषण कहते हैं। जिस प्रयोग से मनुष्य अपने स्थान को छोड़कर भाग जाता है, उसे उच्चाटन कहते है। जिस प्रयोग से मनुष्य का मरण हो जाता है, उसे मारण कहते हैं।

विषय-कथनम्

हे राक्षसराज रावण, इस ग्रन्थ के प्रथम प्रकरण में आकर्षण, दूसरे प्रकरण में उन्मादन, तीसरे में विद्वेषण, चौथे में उच्चाटन, पाँचवें में ग्रामोच्चाटन, छठवें में जलस्तम्भन, सातवें में स्तम्भन, आठवें में वशीकरण इसके अतिरिक्त और भी अन्धा, बहिरा एवं गूँगा आदि बनाने का प्रयोग नवें, दशवें प्रकरण में वर्णित है।

इस ग्रन्थ में बहिरा बना देना, मूर्ख बना देना, भूत लगा देना, ज्वर चढ़ा

देना, बुद्धि का स्तम्भन करना, दही को नष्ट कर देना, पागल बनाना, हाथी-घोड़ा को कुपित कर देना, सर्प एवं मनुष्य को बुला देना, खेती आदि का विनष्ट करना, दूसरे के ग्राम में प्रवेश करना इसके अतिरिक्त भूतादिकों की सिद्धि, पादुका सिद्धि एवं नेत्र के अञ्जन आदि की सिद्धि शास्त्रीय रीति से वर्णित है।

इन्द्र जाल की क्रीड़ा, यक्षिणी मन्त्र साधन, गुटिका बनानाा, आकश में गमन करना, मरे हुए को जिलाना इसके अतिरिक्त और भी भयंकर विद्याओं, उत्तम मन्त्रों एवं उत्तम औषधियों तथा गुप्त कार्यों का वर्णन करूँगा। जो शङ्कर जी के कहे हुए उड्डीश को नहीं जानता वह क्राधित होकर क्या कर सकता है। यह उड्डीश तन्त्र सुमेरु पर्वत को हिला देने वाला तथा पृथ्वी को सागर में डुबा देने वाला है।

यह तन्त्र शास्त्र नीच कुलोत्पत्र को, पापी को, मूर्ख को, भक्ति हीन को, भूख (दरिद्र को), मोह में फँसे हुए को, शंकित चित्त वाले को और विशेष करके निन्दा करने वाले प्राणी को कदापि न देना चाहिए। क्योंकि इनसे उड्डीश तन्त्र की क्रिया नहीं हो सकती है। फिर सिद्धि त्रथा फल तो दूर रहा।

यदि इस विद्या की प्रतिष्ठा एवं अपनी आत्मा की रक्षा चाहे तो देवता व गुरु-भक्त, सज्जन, बालक, तपस्वी, वृद्ध, उपकारी तथा सुमति वाले विद्वान् के प्राप्त होने पर ही उन्हें यह विद्या प्रदान करे। इसी में इस शास्त्र की प्रतिष्ठा है।

इस तन्त्र शास्त्र के प्रयोग में तिथि, वार, नक्षत्र, व्रत, होम, काल बेला आदि का विचार नहीं किया जाता है। केवल तन्त्र के ही बल से औषधियाँ सिद्धि प्रधान करने वाली होती हैं। जिसका साधन करने से क्षण मात्र में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

जैसे चन्द्रमा से हीन रात्रि, सूर्य से हीन दिवस तथा राजा से हीन राज्य सुखकर नहीं होता, उसी प्रकार गुरु से हीन मन्त्र भी सुख तथा फल देने वाला नहीं होता है। अत: इसमें गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है।

जैसे इन्द्र का वज्र दैत्यों का विनाशक है, वरुण का पाश महा बलवानों का भी बाधक है, जैसे यमराज का दण्ड सबको दण्डित करता है एवं जैसे अग्नि देव सबको भस्म करने की शक्ति रखते हैं।

उसी प्रकार इस शास्त्र में विहित प्रयोग भी शक्ति रखते हैं। यह असत्य नहीं है, कहाँ तक कहा जाय इन मन्त्रों की शक्ति तो ऐसी है कि सूर्य को पृथिवी पर बुला ले।

अपकारी, दुष्ट, दुराचारी, पापी ऐसे व्यक्तियों पर यदि मारण का प्रयोग करे तो कोई दोष नहीं है। यदि बिना प्रायोजन किसी पर मारण प्रायोग किया जाय तो

अपना ही नाश हो जाता है। जो इस तन्त्र शास्त्र पर विश्वास नहीं करते उनको सिद्धि भी नहीं मिलती है।

मारण-प्रयोग

हे रावण ! अब मैं तुमसे मारण नाम का प्रयोग करता हूँ। जो कि मनुष्यों को शीघ्र सिद्धिकर है।

मारण का प्रयोग जिस किसी पर थोड़ी सी गलती कर देने पर भी नही करना चाहिये। मारण का प्रयोग किसी पर तब करे, जब जान ले कि यह हमको जान से मार डालना चाहता है।

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को स्वयं नष्ट कर देता है, अत: अपनी आत्मा की रक्षा को चाहने वाला मारण का प्रयोग भी न करे, क्योंकि इसमें अपना ही प्राण जाने का भय रहता है।

जो व्यक्ति अपने ज्ञान-दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को देखने वाला है तथा प्रत्येक जीवात्मा को ब्रह्मा के ही समान समझता है, वह संकटापन्न स्थिति उत्पन्न होने पर मारण का प्रयोग कर सकता है। यदि दूसरा कोई मारण करेगा तो दोष का भागी होगा। कथञ्चित् मारण का प्रयोग करना ही पड़े तो नीचे लिखे प्रमाण के अनुसार करे।

शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा चिता की भस्म एवं मध्यमा (बिचली) अंगुली का रक्त मिलाकर एक पुतली मूर्ति बनावे।

और उस मूर्ति को काले कपड़े में लपेट एवं काले डोरे से बाँध कुशासन पर सुला कर एक दीप जलावे।

तथा मारण मन्त्र का दशहजार जप कर पश्चात् १०८ उर्दी लेकर प्रत्येक को मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

उस पुतली के मुख में मारण-मन्त्राभिमन्त्रित उर्दी डाल देवे। अर्धरात्रि के समय इस मारण प्रयोग को करने से इन्द्र तुल्य शत्रु भी मारा जाता है।

रात्रि में उक्त प्रयोग को करके प्रात:काल उस मूर्ति को श्मशान भूमि में गाड़ दे। इस प्रकार बराबर एक माह तक प्रयोग करते रहने पर निश्चित शत्रु की मृत्यु होती है।

मारणमन्त्र—**ॐ नमः कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं हुं फट् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।**

इस ग्रन्थ के प्रयोग में जहाँ अमुक शब्द आवे वहाँ शत्रु का नाम लेता जावे। चार अँगुली प्रमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेट उसी से शत्रु का नाम लिखे पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम से चिता के अङ्गार पर धूप

देवे। इस प्रकार तीन या सात रात्रि तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्णपक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे और निम्न लिखित मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपे।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोरदंष्ट्रिणे ग्रहयक्षभूतेनानेन शङ्कर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण हुं फट् स्वाहा ठः ठः।**

चार अङ्गुल प्रमाण मनुष्य की हड्डी लेकर पुष्य नक्षत्र में सिसके घर गाड़ दे। उसका परिवार सहित नाश हो जाय। यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही प्रसिद्ध है।

इसी प्रकार एक अंगुल प्रमाण सर्प की हड्डी लेकर आश्लेषा नक्षत्र में शत्रु के घर में गाड़ दे और निम्नलिखित मन्त्र का दश हजार जप कर दे तो शत्रु की सन्तति का विनाश होता है।

मन्त्र—**ॐ सुरेश्वराय स्वाहा।**

बिना मन्त्र जाप के कार्य नहीं सिद्ध होगा। अतः मंत्र जपे।

चार अंगुल प्रमाण घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दे तो शत्रु के परिवार का नाश होता है।

मन्त्र—**ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा। सप्तदशाभिमंत्रितं कृत्वा निखनेत्।**

सत्रह बार मंत्र से अभिमंत्रित करके तबी हड्डी गाड़े।

निम्ब की कील आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के शयनागार में गोड़ने से शत्रु का मरण होने लगता है और उसे उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाता है।

इसी प्रकार शिरीष की कील शत्रु के घर आर्द्रा नक्षत्र में गाड़ने से शत्रु का नाश होता है।

मन्त्र—**हुँ हुँ फट् स्वाहा।**

एकविंशतिवारमभिमन्त्रितं कृत्वा द्वयोरपि प्रयोगे निखनेत्।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों में २१ बार अभिमन्त्रित करके गाड़ने से सपरिवार शत्रु का विनाश होता है।

ज्वर द्वारा शत्रु का मारण

मन्त्र—**ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं: डः अमुकं गृह्ण गृह्ण हुँ हुँ ठः ठः। अनेन मंत्रेण सहस्त्रवारमभिमन्त्रितं नरास्थि श्मशाने निखननेन मृत्युः।**

उपरोक्त मंत्र से हजार बार जिसके नाम पर अभिमन्त्रित कर मनुष्य की हड्डी श्मशान में गाड़े तो उसकी मृत्यु होय।

रिपु की विष्ठा (मल) तथा बिच्छू एक हँड़िया में बन्दकर ऊपर से मिट्टी

लगाकर पृथ्वी में गाड़ दे तो शत्रु का मलावरोध (मल रुकने से) मरण तुल्य कष्ट पाने लगता है और भूमि खोदकर हंडी खोल देने से पुनः सुखी हो जाता है।

मंगलवार को शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी ला गोमूत्र में भिगोकर एक प्रतिमा (पुतली) बनावे।

जहाँ कोई मनुष्य न आ-जा सके ऐसे एकान्त स्थान पर या नदी का किनारा हो या बनादि हो, वहाँ पर एक वेदी बना उस पर पुतली को सुला दे और उसकी छाती में एक चोखा शूल (सूजा) गाड़ दे, पश्चात् बाम भाग में काल भैरव की स्थापना कर प्रतिदिन बलि एवं पूजन करे।

प्रयोग स्थान पर ११ वेद पाठी ब्राह्मण-ब्रह्मचारी बटुओं (बालकों) को भोजन करावे तथा कालभैरव के समक्ष कडुआ तेल का दीपक जलावे।

मूर्ति के दक्षिण (दाहिने) भाग में व्याघ्र के चर्मासन पर दक्षिण मुख बैठकर जितेन्द्रिय होकर रात्रि में निम्नलिखित मंत्र जपे।

सावधान चित्त हो रात्रि काल में उक्त मंत्र का दश हजार जप करे, ऐसा करने से १९ दिनों में शत्रु का मरण होता है।

आर्द्रपटी साधन का विनियोग

ॐ अस्य श्रीआर्द्रपटी महाविद्यामंन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिर्गायत्री छंदः, हुं बीजं, स्वाहाशक्तिः, ममाऽमुकशत्रु-निग्रहार्थं जपे विनियोगः।

आर्द्रपटीसाधन मन्त्रः—**ॐ नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे चाण्डालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्रानयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि एहि जीवितापहारिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवशाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुं फट् स्वाहा।**

केवल जपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम्।

स्नानादि से शुद्ध हो पवित्र आसन पर बैठकर पहले आर्द्रपटी का विनियोग करे अर्थात् 'ॐ अस्य श्री.) से लेकर 'विनियोगः' तक वाक्य पढ़कर हाथ में लिये हुए जल को पृथ्वी पर छोड़ दे। इस आर्द्रपटी मन्त्र का केवल एक मास पर्यन्त जप करने मात्र से ही शत्रु का मरण हो जाता है। यह आर्द्रपटी मन्त्र सब मंत्रों से श्रेष्ठ तथा तत्काल फलदायक है।

प्रयोग–कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ कर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त समाप्त करे तथा अमुकशब्द के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारणसहित १०८ बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करे। समाप्ति के दिन शत्रु के पैर के नीचे मिट्टी लाकर पुतली

बनावे तथा काली को बकरा की बलि देकर उसी रक्त में वस्त्र को भिगोवे ओर उक्त वस्त्र में पुतली को लपेट दे। पश्चात् मन्त्र का जप करता रहे। जब तक रक्त सूखेगा उतने ही समय में शत्रु समाप्त हो जायेगा।

बैरिमारण कवच

ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषिर्गायत्री छन्दः, श्रीकालीदेवता, सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोग।

हाथ में जल से उपरोक्त मंत्र मढ़कर पृथ्वी पर छोड़ दे।

काली का ध्यान

ध्यान—इस प्रकार करे कि भगवती काले वर्ण की तीन आँखों वाली, चार भुजाओं वाली, जिसकी जिह्वा बाहर निकलती हुई है और वह देवी चन्द्रमा के समान कान्तिमान है।

तथा नील कमल के समान श्याम है, शत्रुओं का नाश करने वाली, नरमुण्ड, खड्ग, खप्पर एवं कमल पुष्प अपने चारों हाथों में लिये हुई हैं।

लाल वस्त्र पहिने, भयंकर दाँतों वाली, बड़े जोरों से हँसती हुई एवं नंगी शरीर वाली काली।

मुर्दे पर बैठी हुई, मुण्डों की माला पहनी हुई, महादेवी काली का ध्यान करते हुए निम्नलिखित कवच का पाठ करना चाहिये।

कवच

हे भयंकर रूप धारण करने वाली एवं सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सब देवताओं द्वारा स्तुति की जाने वाली काली हमारे शत्रु का नाश करो।

ह्रीं ह्रीं स्वरूप वाली, ह्रीं ह्रीं सं हं रूपी बीज को धारण करने वाली, पुनः ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपवाली काली, आप सदा शत्रुओं का नाश करने वाली हैं, अतः हमारे भी शत्रु का विनाश कीजिये।

श्रीं ह्रीं ऐं रूपवाली तथा संसार का बन्धन छुड़ाने वाली हे भगवती, आपने जिस प्रकार शुभ-निशुभ का वध किया था उसी प्रकार अमुक नाम वाले मेरे शत्रु का वध कीजिये।

ब्राह्मी (गायत्री), शैवी (पार्वती), वैष्णवी (लक्ष्मी), वाराही एक नारसिंही आदि अनेक रूप धारण करने वाली शंकर प्रिया हे कालिके शत्रु का विनाश करने के लिये आपको नमस्कार करता हूँ।

कौमारी, श्री (लक्ष्मी रूपी), सुरेश्वरी (इन्द्राणी रूपी) तथा भयंकर रूप धारण करने वाली और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली हे चामुण्डे! हमारे शत्रुओं को भक्षण कर जाओ।

ह्रीं ह्रीं रूपिणी तथा मुण्डों की माला धारण करने वाली हे कालिके, विकराल दाँतों दाँतों वाली एवं रक्त पान से प्रसन्न होने वाली हमारी सदा रक्षा करो।

मन्त्र—**रुधिरपूर्णवक्त्रे च रुधिरावितस्तिनि मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषण शोषय यातुधानिके चामुण्डे ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा। ॐ जहि जहि किटि किटि किरि किरि कटु-कटु मर्दय मर्दय मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्वजनान् राजपुरुषान् राजश्रियं देहि देहि नूतनं नूतनं धान्यं भक्षय भक्षय क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं स्वाहा।**

हे राक्षसराज रावण, मैंने इस दिव्य कवच का तुमसे वर्णन किया। जो इस कवच का भक्ति पूर्वक नित्य पाठ करेंगे उनके शत्रुओं का नाश होगा तथा शत्रु रोग से पीड़ित होंगे एवं धन-पुत्र सुख से रहित हो जायेंगे। इस कवच के एक हजार पाठ करने के बाद सिद्धि मिलती है। कवच सिद्ध होने पर मारण प्रयोग में अवश्यमेव सफलता प्राप्त होती है अन्यथा नहीं।

मारण कवच एवं मंत्र सिद्ध करके जलती हुई चिता से अंगार लावे पश्चात् अग्नि शान्त होने पर कोयले को चूर्ण कर शत्रु के पैर से स्पर्शित जल मिलाकर खूब घोंटकर स्याही बनावे, जब स्याही बन जाय फिर लोहे की कलम से शत्रु की कुरूप मूर्ति बनावे, जिसके पैर दक्षिण एवं शिर उत्तर की ओर हो पश्चात् उस मूर्ति हृदय पर अपना हाथ रखकर मंत्र सहित उक्त कवच का पाठ करे।

प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र जानने वाले विद्वान् से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करावे या स्वयं प्राणप्रातिष्ठा मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा करे पश्चात् मूर्ति के कण्ठ को तीखे शस्त्र से एक ही बार में काट दें, फिर कटी हुई मूर्ति के मय शिर व धड़ के ऊपर जलते हुए अंगार से लेपन करें। इस प्रकार करने से शत्रु ज्वर से पीड़ित होकर प्राण त्याग देता है और केवल बायाँ पैर पोंछने से दरिद्र हो जाता है।

यह कवच बैरियों का नाश करने वाला तथा उनको वश में करने वाला और महान् ऐश्वर्य का दाता एवं पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि करने वाला है। प्रातः काल या सायंकाल पूजा के समय इसका पाठ करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है।

और इसके केवल पाठ मात्र से शत्रु का उच्चाटर होता है, अर्थात् देश छोड़कर परेदश भाग जाता है। पश्चात् दास की तरह वश में होकर रहता है, यह शंकरजी का वचन सत्य है, सत्य है इसमें संशय नहीं है।

माला-निर्णय

मूँगा, हीरा तथा मणि की माला पुष्टि एवं वशीकरण प्रयोगों में आवश्यक है, आकर्षण प्रयोग में हाथी दाँत की माला से जप करे, विद्वेषण तथा उच्चाटन में स्फटिक या घोड़े के दाँतों की माला सूत में या बालों में गूँथकर जप करे। जिस प्रयोग में जिस प्रकार की माला लिखी है उसी प्रकार की माला पर जप करने से सिद्धि होती है।

शत्रु-मारण प्रयोग में या शत्रु सैन्य-स्तम्भन प्रयोग में गदहे के दाँतों की माला या स्फटिक की माला से जप करे।

धर्म, अर्थ एवं काम की सिद्धि के लिये शंख की माला से जप करे तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिये कमल की माला से जप करे।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रों का जप किया जा सकता है। स्फटिक, मोती, मूँगा, रुद्राक्ष तथा पुत्रजीव की माला पर जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

शान्ति एवं पुष्टि के प्रयोग में माला को कमल के सूत्र में पिरोवें, आकर्षण तथा उच्चाटन के प्रयोग में घोड़े की पूँछ के बालों में माला को गूँथें।

मारण प्रयोग में मनुष्य की स्नायु (हड्डी) में रहने वाले पतले चर्मतन्तु (तागे) में माला को पिरोवे और अन्य कार्यों के लिए कपाल का सूत ही प्रशंसनीय है। अर्थात् सूती तागे में माला पिरोनी चाहिये।

सत्ताइस दाने क माला सिद्धि प्रदान करने वाली होती है, अभिचार कर्म प्रयोग में १५ दाने की माला होनी चाहिये। जिस प्रयोग में जैसी माला का वर्णन है, उसमें वैसी ही माला द्वारा प्रयोग करना चाहिए।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रसिद्धि किये जा सकते हैं, ऐसा मन्त्र शास्त्र के तत्त्वदर्शियों ने कहा है तथा एक सौ आठ (१०८) दाने) की माला सब कार्यों में सिद्धि प्रदान करने वाली होती है।

वशीकरण प्रयोग में पूर्व मुख होकर बैठे तब फिर जपादिक कर्म आरम्भ करे एवं अभिचार में दक्षिण मुख बैठे, धन की इच्छा से जप करने वाले पश्चिम मुख बैठे तथा शान्तिकर्म, आयु, रक्षा, पुष्टि एवं विद्या आदि प्राप्ति के लिए उत्तर मुख बैठकर जप करना चाहिए।

जप-लक्षण

जप तीन प्रकार का होता है। १. वाचिक, २. उपांशु तथा ३. मानसिक। १. जिस जप में मन्त्र का उच्चारण दूसरे को भी सुनाई पड़े उसे वाचिक जप कहते हैं।

२. जो दूसरे को और अपने को भी स्वयं सुनाई न पड़े उसे उपांशु जप कहते हैं। ३. जिसमें जिह्वा, दाँत तथा ओष्ठ का हिलना न दिखाई दे, मंत्र के अक्षरों को केवल मन से ही चिन्तन किया जाय उसे मानस जप कहते हैं। मानस का ही विशेष अभ्यास हो जाने पर अजपा जाप के नाम से ऋषियों ने पुकारा है।

पराभिचार (मारण प्रयोग) में वाचिक जप करे अर्थात् मन्त्रों का जोर-जोर से उच्चारण करे, शान्ति एवं पुष्टि कर्म में उपांशु अर्थात् दूसरे को सुनाई न दे तथा मोक्ष एवं ज्ञान-प्राप्ति के निमित्त मानस जप करे।

काले जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अन्धे हो जाते हैं। यदि उनकी आँखों को मट्ठे से धो दे तो फिर पहले की भाँति देखने लगते हैं।

छछुन्दर का चूर्ण घोड़े की नाक में डाल देने से घोड़ा मूर्छित हो जाता है तथा जल में चंदन घिस कर पुनः नाक में पुनः नाम में डाल देने से स्वस्थ हो जाता है।

घोड़े की हड्डी की सात अंगुल की कील बना अश्विनी नक्षत्र ओन पर घोड़साल में गाड़ दे तो घोड़े मरने लगते हैं।

अश्वमारणमन्त्रः—**ॐ अश्वं पच पच स्वाहा।**

(अयुत-जपात् सिद्धिः)

उक्त मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है, उपरोक्त कील इसी से अभिमंत्रित करके घोड़साल में गाड़े।

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मल्लाह के घर में गाड़ दे तो उसकी सब मछलियाँ नष्ट हो जायेंगी।

मस्त्यनाशनमन्त्रः—**ॐ जले पच पच स्वाहा।**

(इत्येनन मन्त्रेणायुतजपात् सिद्धिः)

यह मंत्र दश हजार जपने पर सिद्ध होता है। इसी मंत्र से अभिमंत्रित कर कील गाड़नी चाहिए।

चमेली (फूल) की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र—**ॐ कुम्भं स्वाहा।**

(अयुत् -जपात् सिद्धिर्भवति)

यह मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है।

महुआ के काष्ठ की चार अंगुल की कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरने के स्थान

पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल विनष्ट हो जाता है।

तैलनाशनमन्त्रः—**'ॐ दह दह स्वाहा' (इत्यनेन सहस्रसंख्याकजपः)**

यह मन्त्र एक हजार जपने से सिद्ध होता है। उपरोक्त कील इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके ही गाड़े।

गन्धक का चूर्ण पानी में घोलकर शाक के ऊपर छिड़क देने से सब शाक नश्ट हो जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

जामुन की लकड़ी की आठ अंगुल की कील अहीर के घर में जहाँ गायें दूही जाती हों वहाँ अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूख जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा उतारने वाले के घर में गाड़ देने से मदिरा नष्ट हो जाती है। यह भी प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सोपाड़ी के लकड़ी की नव अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घर में या खेत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं।

भगवान् शंकर बोले कि, हे राक्षसराज रावण! मैं खेती के विनाश की विधि संक्षेप में कहता हूँ कि, जिस क्रिया को करने मात्र से अन्न के फसलों का सम्यक् विनाश होगा।

जहाँ पर आकाश से बिजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी लाकर एक वज्र बनावे तथ निम्नलिखित मंत्र से अभितंत्रित कर जिस खेत में गाड़ दे उसकी फलस विनष्ट हो जायेगी।

सस्यनाशनमन्त्रः—**ॐ नमो वज्रपाताव सुरपतिराज्ञापयति हुं फट् स्वाहा।**

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

मोहनाभिधान

हे रावण! अव इसके आगे मोहन कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो, जो शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।

सिन्दूर, केशर व गोरोचर को आँवले के रस में पीसकर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सहदेई के रस में तुलसी का बीज घोटकर रविवार के दिन तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

मैनसिल एवं कपूर मिलाकर केला के रस में घोंटकर तिलक करने से सभी लोग निश्चित मोहित हो जाते हैं।

हरताल, असगन्ध तथा गोरोचन कदली के रस में घोटकर तिलक करने से सब लोग मोहित होते हैं।

काकड़सिंगी, चन्दन, वच तथा कूट इनको एक में मिलाकर इसका धूप कपड़े एवं शरीर तथा मुख आदि पर देने से मोहन शक्ति प्राप्त होती है, अर्थात् उस आदमी को देखकर राजा, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि जीव भी मोहित हो जाते हैं, पान की जड़ का तिलक भी मोहनकारक है।

सिन्दूर तथा वच मिलाकर पान के रस में घोटकर मोहन मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जात हैं। बिना मोहन मंत्र मोहन मंत्र सिद्ध किये ये सब प्रयोग सिद्ध नहीं होते, अत: मन्त्र अवश्य सिद्ध कर लें।

चिड़चिड़ा, भृङ्गराज, लाजवन्ती तथा सहदेविका इन सबको साथ घोटकर मोहन मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करेन से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

श्वेत दूर्वा (सफेद दूब) तथा हरताल एक साथ पीसकर एवं मोहन मंत्र से अभिमंत्रित करके तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते है।

विल्वपत्र को अच्छी तरह छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध में घिसकर गोली बनावे ओर उसे मोहन मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो सब जगत् मोहित होता है।

मोहनमन्त्र:—**ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।**

यह मन्त्र एक लक्ष जप करने पर सिद्ध होता है। जब मन्त्र सिद्ध कर ले तो सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तब तिलक करना चाहिये।

स्तम्भन प्रयोग

श्री शंकरजी बोले—हे रावण ! अब मैं आगे स्तम्भन प्रयोग का वर्णन करता हूँ, ध्यान देकर सुनो कि, जिसके साधन से सिद्धि निश्चित रूप से हाथ में आ जाती है।

जल स्तम्भन का प्रयोग

शंकरजी बोले कि, इस स्तम्भन प्रयोग में पहले मैं जल का स्तम्भ कहता हूँ। केकड़ा का पैर, दाँत तथा रक्त एवं कछुआ का कलेजा, सूँइस की चर्बी तथा भिलावे का तेल इन सबको एक में मिलाकर पकावे। पकने के बाद इसका शरीर पर लेप करने से मनुष्य जल के ऊपर सुखपूर्वक स्थित हो सकता है अर्थात् डूब नहीं सकता। सर्प, नक्र (नाक) तथा नेवला की चर्बी और डुण्डुम का शिर इन सबको एक साथ भिलावे के तेल में पकावे, पकने के बाद एक लोहे के बर्तन में रख लेवे पश्चात्

कृष्ण पक्ष की अष्टमी आने पर शिवजी की पूजा एवं प्रणाम कर तथा स्तम्भन मन्त्र से एक हजार आठ बार घी की आहुति शंकरजी के नाम से देवे। पश्चात् स्तम्भन मंत्र को पढ़ता हुआ तेल का शरीर के ऊपर लेप कर जल पर सुख पूर्वक बैठ सकते हैं अथवा चल-फिर सकते हैं। इसी प्रयोग को शंकरजी के प्रसाद से सिद्ध कर प्राचीन महात्माओं ने बढ़ती हुई नदियों को पार कर चमत्कार दिखलाया है।

अग्नि स्तम्भन का प्रयोग

मेढक की चर्बी तथा कपूर एक साथ मिलाकर लेप करने से अग्नि में शरीर नहीं जलता अर्थात अग्नि का स्तम्भन हो जाता है।

घिकुआर का रस लेपन करने से कोई वस्तु आग में नहीं जलती, अग्नि का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण ! यह मेरा वचन सत्य है।

स्तम्भनमन्त्रः—**ॐ नमो भगवते जलं स्तम्भय स्तम्भय हुं फट् स्वाहा।**

यह मंत्र एक लक्ष जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध हो जाय तभी क्रिया करनी चाहिए।

आसन स्तम्भन का प्रयोग

मृतक की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें श्वेतगुञ्जा (सफेद कजींरी) का बीज बो दे और गौ के दूध से उसको खींचता रहे, जब वह जमकर लता के रूप में परिणत हो जाय तो उसकी शाखा (डालें) तोड़कर जिसके स्थान पर या जिसका निर्देश कर सामने डाल दे तो उस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध प्रयोग है।

आसन स्तम्भन मन्त्रः

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने पर एक हजार बार जप कर तब प्रयोग करना चाहिए।

बुद्धि स्तम्भन प्रयोग

उलूक (उल्लू) तथा बन्दर का विष्ठा पान में जिसको खिला दी जायेगी उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा।

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन खर मञ्जरी की जड़ लावे, पश्चात् उसको पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र द्वारा शरीर पर क्षत (घाव) नहीं होता है।

खजूर मुख में तथा केतकी कमर में एवं भुजाओं पर मदार की जड़ बाँध लेने पर सर्व प्रकार के शस्त्रों का निवारण होता है।

रविवार के दिन बेल के कोमल पत्तों को विस (कमल) के नाल के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्रः

ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्रस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है।

मेघ स्तम्भन-प्रयोग

दो ईंट लाकर दोनों ईंटों द्वारा संपुट करे पश्चात् चिता के कोयले से उस पर मेघ लिखकर उस संपुट को स्तम्भन मंत्र से अभिमंत्रित करे, फिर उसे पृथ्वी में गाड़ देवे तो मेघ का स्तम्भन होता है।

निद्रा स्तम्भन का प्रयोग

भटकटैया को मधु के साथ पीसकर नास ले तो नींद न आवे अथवा मधु तथा भटकटैया दोनों को खूब घोंटकर अञ्जन बना लेवे और दोनों आँखों में लगा ले तो नींद का स्तम्भन हो जाय।

जहाँ गायों या भैसों या अन्य पशुओं आदि के रहने के स्थान हों वहाँ पर चारों ओर ऊँट की हड्डी गाड़ देने से पशुओं का स्तम्भन होता है।

ऊँट के रोवें लेकर चाहे जिस पशु पर छोड़ दें उसका स्तम्भन हो जायेगा, यह सिद्ध प्रयोग है।

हरलात के रस से मदार के पत्ते पर जिसका नाम लिखकर किसी बगीचा में ईशान कोण में गाड़ देने से उसके मुख का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण! यह मेरा कहना सत्य है।

सैन्य स्तम्भन प्रयोग

रविवार के दिन श्वेत गुञ्जा-फल (सफेद कर्जिरी का फल) लेकर श्मशान भूमि पर गड्ढा खोदकर गाड़ देवें तथा ऊपर से पत्थर रखकर दबा दें, पश्चात् आठों योगिनियों की और रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवही, कुमारिका, लक्ष्मी तथा ब्राह्मी एवं गणेश, वटुकभैरव, क्षेत्रपाल तथा दिग्पालों का षोडशोपचार से अर्थात् चन्दन, पुष्प, धूप-दीपादिकों से पूजन कर मदिरा व मांस की बलि पृथक् पृथक् नामों से देवे, पश्चात् सैन्य स्तम्भन मन्त्र का दस हजार जप करे।

ॐ नमः कालरात्रित्रिशूलधारिणी मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र चालीस हजार जपने से सिद्ध होता है।

सैन्य पलायन प्रयोग

मंगलवार को कौआ तथा उल्लू की पाँख की कलम बनाकर गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर पलायन मन्त्र को शत्रु-नाम सहित लिखे पश्चात् भोजपत्र के सहित उन दोनों पाँखों को यंत्र में भरकर गले में बाँधकर जिस सेना के सन्मुख जाकर जोरों से डाँटते हुए शब्द करे तो केवल उसके शब्द को सुनकर राजा एवं प्रजा सहित सम्पूर्ण सेना भाग जाय।

पलायनमन्त्र:—**ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्य-पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र का दश हजार जप करने पर सिद्धि होती है।

विद्वेषण प्रयोग

श्रीशंकरजी बोले कि, हे रावण! अब मैं विद्वेषण नामक प्रयोग कहता हूँ, तुम ध्यान से उसका श्रवण करो जो कि महाकौतुक रूप है।

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत चूर्ण कर मक्खन के साथ खूब पीसकर तिलक करने योग्य बनाकर फिर उसको विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपस में लड़ने लगते हैं अर्थात् विद्वेषण हो जाता है।

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर काले डोरे से एक साथ बाँध दें और।

जल में खड़े हो तथा उस बँधे पंखों को हाथों में लेकर सात दिन तक विद्वेषण मंत्र से प्रतिदिन एक सौ आठ बार तर्पण करने से विद्वेषण हो जाता है।

शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावे तथा उसके ऊपर हाथी एवं सिंह के बाल पलेट भूमि में गाड़कर उस पर वेदी बनाकर अग्नि स्थापन के पश्चात् मालती के पुष्पों का विद्वेषण मंत्र द्वारा हवन करे तो विद्वेषण हो जाता है।

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी तथा कौवा ोड़ी को सात दिवस पर्यन्त चमेली के फूल के रस में भिगो दे पश्चात् उसे निकालकर पुन: सात दिवस पर्यन्त बिल्ली के मूत्र में भिगोवे फिर उसे निकाल लेवे पश्चात् शत्रु के घर के समीप उसी का धूप देवे। इस धूप की सुगन्धि जो-जो सूँघेगा उसमें परस्पर विद्वेषण होगा।

हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन करे उसको अन्य से विद्वेषण होवे।

भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर जिस सभा में धूप दे उस सभा में क्षण मात्र में ही विद्वेषण हो जाता है।

बिल्ली, मूषक और शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक में मिलाकर पुतली बनावे और उसे नीला कपड़ा ओढ़ावे तथा एक सौ बार विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो शीघ्र ही शत्रु सहित उसके परिवार वालों में विद्वेषण हो जायेगा।

एक हाथ में कौवे का पर तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पर ले विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर दोनों परों को एक साथ मिलाकर काले सूत से बाँधकर शत्रु के घर

में गाड़ दे तो पिता-पुत्र में विद्वेषण हो जाय, जब शान्त करना हो तो उसे निकालकर गुग्गुल का धूप दे तो शान्त हो जायेगा।

विद्वेषणमन्त्र:—**ॐ नमो नाराधणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये। एक लाख मन्त्र जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र बिना सिद्ध किये प्रयोग सिद्ध नहीं होता।

उच्चाटन प्रयोग

शिवजी बोले कि, हे रावण! ध्यान देकर सुनो, यह उच्चाटन या वध उसी पर करना चाहिये कि जिसने घर, खेत, स्त्री, धन एवं पुत्र का अपहरण किया हो।

कलिहारी की जड़ उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और उसे जिस पर उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ दे तो शीघ्र ही उसका उच्चाटन हो जायेगा।

ब्रह्मदण्डी और चिता का भस्म शिवलिङ्ग के ऊपर लेपन करे तथा ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म और सरसो शनिवार के दिन शत्रु के घर में फेंकने से उच्चाटन होता है।

गूलर की चार अंगुल की लकड़ी की कील उच्चाटन मन्त्र मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के सोने के स्थान पर खोदकर गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

कौवा और उल्लू का पर उच्चाटन कन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील उच्चाटन मंत्र से अभिमन्त्रित कर त्रु के गृह में मंगलवार को गाड़कर स्वयं पेशाब कर दे तो शत्रु का उच्चाटन निश्चित हो जाय।

सफेद सरसों और शंकरजी पर चढ़ायी हुई माला एवं जल इन तीनों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन होता है और उसे खोदकर निकाल देने से पूर्ववत् सुखी होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय कलादंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवैः सह हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय-उच्चाटय फट् स्वाहा।**

दस हजार जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध होता है। बिना मन्त्र सिद्धि के प्रयोग निष्फल होगा।

मध्याह्न (दोपहर) में जहाँ गदहा लोटा हो वहाँ की धूल पश्चिम मुख होकर बायें हाथ से उठा लेवे, पश्चात् उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सात दिन बराबर शत्रु के घर में फेंके तो गृह के स्वामी का उच्चाटन होवे।

उच्चाटनमन्त्र:—**ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।**

वशीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं— हो रावण ! अब मैं वशीकरण प्रयोग करता हूँ जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं।

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा का पञ्चांग (जल-डाल-पात-फूल-फल) सबको सम भाग ले जल के सहयोग से घोट गोली बना छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान-पान में खिलावे तो वशीकरण सिद्ध हो।

वश्यमन्त्र मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिलि ठः ट: स्वाह।**

इस मन्त्र को तीस हजार जप कर सिद्ध कर लें।

बेलपत्र तथ नीबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन तथा काक जंघा की जड़ को सम भाग ले कुमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवा वशीकरण से अभिमंत्रित तिलक कर लगाने से वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय प्राप्त होती है।

रावशीकरण

चन्दन, रोरी, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दूग्ध में घोट अभिमंत्रित कर तिलक कर लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं।

चम्पा की कली रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग की वश में हों, अन्य मनुष्यों की क्या गणना? सुदर्शन की जड़ भी उक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

वशीकरणमन्त्र—**ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय आनय स्वाहा।**

शिव उवाच

शंकर जी बोले—हे रावण, अब मैं उस विधि को कहता हूँ जिसे स्त्रियाँ वश में की जाती हैं।

मधु के साथ खस खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ डाले तो स्त्री वश में हो।

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले चूर्ण कर स्त्री के शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

वशीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं— हो रावण ! अब मैं वशीकरण प्रयोग करता हूँ जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं।

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा का पञ्चांग (जल-डाल-पात-फूल-फल) सबको सम भाग ले जल के सहयोग से घोट गोली बना छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान-पान में खिलावे तो वशीकरण सिद्ध हो।

वश्यमन्त्र मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिलि ठः ठः स्वाह।**

इस मन्त्र को तीस हजार जप कर सिद्ध कर लें।

बेलपत्र तथ नीबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन तथा काक जंघा की जड़ को सम भाग ले कुमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवा वशीकरण से अभिमंत्रित तिलक कर लगाने से वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय प्राप्त होती है।

रावशीकरण

चन्दन, रोरी, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दूग्ध में घोट अभिमंत्रित कर तिलक कर लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं।

चम्पा की कली रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग की वश में हों, अन्य मनुष्यों की क्या गणना? सुदर्शन की जड़ भी उक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

वशीकरणमन्त्र—**ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय आनय स्वाहा।**

शिव उवाच

शंकर जी बोले—हे रावण, अब मैं उस विधि को कहता हूँ जिसे स्त्रियाँ वश की जाती हैं।

मधु के साथ खस खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ ाले तो स्त्री वश में हो।

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले चूर्ण कर स्त्री शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

नीलकमल, भौंरे की दोनों पंख, तगर का जड़, श्वेत कौआगोड़ी सम भाग ले चूर्ण कर युवती के शिरपर डालने से स्त्री वश में होती है।

स्त्री-प्रसङ्ग के पश्चात् अपने वीर्य को बायें हाथ से स्त्री के बायें चरण के तलवे में लेप करने से स्त्री वशीभूत हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है।

सेंधा नमक, शहद, कबूतर की विष्ठा एक में पीस लिंग पर लेप कर स्त्री से मैथुन करने पर स्त्री वश में हो जाती है।

गोरोचन, कुरैया, पारा और काश्मीरी केशर को धतूरे के रस में घोंट लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसङ्ग करने से स्त्री अत्यन्त वशीभूत होती है।

छोटी एवं पतली इन्द्रिय द्वारा स्त्रियाँ सुखी नहीं होती हैं, उनके लिये मोटा एवं लम्बा होना चाहिये, अत: मोटा और लम्बा लिंग बनाने का प्रकार कहता हूँ।

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध, गजपीपर और कनेर को मक्खन के सहयोग से पीसकर लिंग पर लेप करे तो लिंग मोटा और लम्बा मूसल की तरह हो जाय।

लोध, केसर, असगन्ध, पीपर और शालपर्ण कड़वा तेल में पकाकर लिंग पर मालिश करने से लिंग लम्बा-मोटा होता है।

बच, खरैटी व पासा भैंस के मक्खन में खूब घोंटकर लिंग पर मलने से लिंग तुरन्त लोहा के समान हो जाता है।

भिलावा-गिरी, सेवार, कमल पत्र की राख को सेंधा नमक के साथ जल के सहयोग से घोटकर लेप करने से घोड़े की तरह लिंग बन जात है।

सूअर की चर्बी और मधु एक में मिला लेप करने से करीब एक माह के बाद लिङ्ग लम्बा तथा मोटा भी बन जाता है।

असगन्ध, सतावर, कूट, जटामासी और कटेली को चौगुने दूध और चौगुने तिल के तेल में पका लिंग तथा स्तन पर लेप करने एवं खाने से कड़ा होता है।

इसी प्रकार मुसली का चूर्ण भी घी में मिला लेप करने से काफी लाभ होता है तथा पीपर, सेन्धा नमक और मिश्री को दूध में पकाकर लेप करने से भी लिंग मोटा एवं लम्बा होता है।

यह ध्यान रहे कि उक्त औषधियाँ गालों पर भी लगाई जाती हैं तथा बाँहों में भी लगाई जाती हैं।

जटामाँसी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध तथा सतावर इनको कड़वे तेल में पका लिंग पर मलने से लिंग कड़ा, मोटा एवं लम्बा होता है।

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपर एवं मिश्री जल से सहयोग से घोटकर लिंग व स्तन पर लेप करने से अद्भुत लाभ होता है।

गोरोचन, मछली का पित्त तथा मोर की शिखा को मधु एवं घी के सहयोग से घोटकर योनि के ऊपर लगा पुरुष से प्रसंग करने पर पुरुष वश में हो जाता है।

कुलथी, विल्वपत्र, गोरोचन एवं मैनशिल को सम भाग ले चूर्ण कर ताम्रपात्र में रख सरसों के तेल में सात दिन तक मीठी आँच में पका-पकाकर उतारता जाय, पश्चात् कपड़े से छानकर उस तेल को योनि पर लगा पुरुष के साथ रमण करने से पुरुष वश में होता है।

ककुनी, सौंफ, केसर, वंशलोचन सम भाग ले घोड़े के मूत्र में घोट कर योनि पर लगा मैथुन करने से पुरुष वश में हो जाता है।

कुचकाठिन्य की विधि

रेड़ी का तेल, मछली का तेल व बिल्वफल का लासा इन तीनों को मिलाकर स्तन पर लगाने से स्तन कड़े होते हैं। यह ध्यान रहे कि मलते समय हाथ ऊपर की ओर रहे।

काले रंग का बिच्छु तथा खंभारी के रस को तिल के तेल में पकावे व केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर स्तन पर मले फिर तो गिरे स्तन भी कड़े होकर उठ जाते हैं।

श्वेत रंग के मोथे को काली गौर के दूध में पका लेप करने योग्य बना स्तन पर लेप करने से स्तन बड़ा एवं कड़ा हो जाता है।

वच, असगन्ध की जड़ तथा पत्र एवं गज पीपर इन सबको शुद्ध जल के सहयोग से पीस स्तन पर लेप करेन से स्तन ताड़ फल एवं बड़े आम्र फल के जैसे होते हैं।

गम्भारि के पत्ते का रस व तिल का तेल सम भाग लेकर दूने जल में पाक करे। जब केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर शीशी, बोतल में रख स्तन पर मले फिर तो ठीक तौर से एक बार मलने के बाद ही स्तन लोहे जैसे कड़े हो जायेंगे।

इन उपरोक्त विधियों का वर्णन स्त्री-पुरुष के प्रसङ्गार्थ श्री शंकर जी ने स्वयं किया है।

योनि संस्कार

निम्बपत्र को कोरी हाँड़ी में जल देकर खूब उबाल कपड़े से छानकर योनि

को धोवे पश्चात् काले अगर व गुग्गुल को आग में जला योनि को सेंक पति के साथ मैथुन करे तो पति बड़ा प्रसन्न होता है।

जिस स्त्री की योनि में दुर्गन्ध मालूम पड़ती हो वह तो नीम के पानी से योनि को धोकर नीम के कोमल पत्ते पीस योनि पर लेप करे फिर दो-तीन बार के ऐसा होने से योनि-दुर्गन्ध समाप्त हो जायेगी।

रोम-नाशन

पलाश पत्र का भस्म तथा हरताल भस्म का चूर्ण केले के केले के रस में मिलाकर रोग स्थान पर लगा देने से बाल साफ हो जाते हैं फिर कभी नहीं जमते है।

एक भाग हरताल का भस्म, पाँच भाग शंख का भस्म, पाँच भाग पिलखन का भस्म इन सबको केले के जल में मिला रोम स्थान पर लगाने से आराम से बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण, शंख चूर्ण और मजीठ भस्म को पलाश के फूल के साथ पीसकर लेप रने से भी बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण व शंख का चूर्ण चूने के पानी में घोटकर रोम स्थान पर लगा धूप दिखाने से बाल साफ हो जाते हैं।

सुपारी के पत्ते के रस में उत्तम गन्धक पीसकर रोम स्थान पर लगाने, धूप दिखाने से रोम साफ हो जाते हैं।

योनि-संकोचन

आमा हल्दी व खाने की हल्दी, कमल केसर तथा देवदारु की लकड़ी सम भाग ले जल में पीस योनि पर लगाने से योनि संकुचित होती है।

धव पुष्प, त्रिफला, जामुन की छाल, जामुन का रस, घी तथा मृलहठी समभाग लेकर पीसे फिर इसे योनि पर लगावे। यदि वृद्धा स्त्री हो तो भी उसका भग लकड़ी के तुल्य संकुचित हो जाता है।

नीले कमल का बीज, कटेरी, वच, काली मिर्च, कनेर की छाल व बीज, असन तथा हल्दी को समभाग घोटकर लेपन योग्य बना योनि पर लगाने से शीघ्र योनि संकुचित हो जाती है।

बीरबहूटी नाम की जड़ी को पीस पर लगाने से योनि सहज ही में कड़ी तथा गहरी भी हो जाती है।

स्त्री-द्रावण

कामशास्त्रों ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठ गुना काम अधिक बताया है सलिए औरतें जल्दी स्खलित नहीं होती हैं, एतदर्थ उन औषधियों का संक्षिप्त वर्णन करता हूँ कि, जिससे औरतें भी पुरुषों के साथ प्रेमानन्द ले सके।

सिन्दूर, इमली के फल को मधु में घोटकर भगद्वार पर लगा मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र ही पतन हो जाता है।

त्रिफला चूर्ण को अच्छी तरह कपड़े से छानकर शहद में मिला योनि द्वार पर थोड़ा लगाकर स्त्री प्रसंग करने से स्त्रियाँ शीघ्र ही स्खलित हो जाती हैं।

पीपर, चन्दन, कटेरी तथा पकी इमली इन सबको घोट पीसकर लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री स्खलित हो जाती है।

अगस्त पत्र का रस, भुने सुहागे का चूर्ण, घी एवं शहद में मिला लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री का पतन हो जाता है।

अच्छी लोध, धतूर, कटेरी व पिपरामूल सम भाग ले चूर्ण कर शहद में मिला लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र स्त्री का स्खलन होता है।

असगन्ध के पत्तों को हंडी में उबाले, पश्चात् उसे तेल में उरिद एवं मुलहठी दोनों सम भाग पीस लिंग पर लगा मैथुन करने से स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है।

बेल का फूल व मुण्डी का फूल और कपूर पीस लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसंग करने पर स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

कटेरी की जड़ एवं फल भी, पीपर, काली मिर्च, गोरोचन सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लगा संभोग करने से स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

काली मिर्च, धतूर बीज, पीपर, लोध चूर्ण सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लेप कर मैथुन करने से कैसी भी स्त्री क्यों न हो पर उसके पतन में देर नहीं होती है।

उपर्युक्त औषधियों को निम्नलिखित द्रावण मंत्र से अभिमंत्रित कर लेना चाहिये। यह मंत्र १०८ बार जपने पर सिद्ध होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुदाय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणाम्मदं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा।**

आकर्षण प्रयोग

भगवान् शंकर बोले कि, हे राक्षसराज रावण, अब मैं आगे आकर्षण विधि का वर्णन करता हूँ, जिसके ज्ञान से सचमुच आकर्षण होगा। निम्नवर्णित प्रयोगों से मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, उरग, राक्षस, स्थावर, जंगम सभी का आकर्षण हो सकेगा इसमें संशय नहीं है।

आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष की बाँझी लकड़ी लाकर बकरे के मत्र में कूट-पीसकर सुखा ले, जिससे कि भुरभुरी हो जाय, फिर तो जिसका आकर्षण करना हो उसके शिर पर थोड़ा डाल दे तो उसका आकर्षण हो जायेगा।

पंचमी की तिथि में हुरहुर की जड़ खोद लावे और जिसका आकर्षण करना हो उसे पान में खिला दे तो वह स्वयं वह स्वयं आकर्षित हो आपके पास चला आयेगा।

स्त्री के बायें पैर के नीचे की मिट्टी ला गिरगिटान के खून में सान उसकी प्रतिमा (पुतली) बनावे, पश्चात् प्रतिमा के वक्षस्थल पर उसी स्त्री का नाम लिखे, जिसका आकर्षण करना हो अर्थात् जिसे बुलाना हो। फिर उस प्रतिमा को मूत्र करने के स्थान पर गाड़ दे तथा प्रतिदिन उस पर मूत्र करे तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली स्त्री क्यों न हो पर वह आकर्षित होकर चली आवेगी।

यक्षिणी साधन

शंकरजी बोले कि मैं यक्षिणियों को सिद्ध करने का उपाय कहता हूँ कि, जिसके द्वारा मनुष्य की हर एक कामनाएँ सिद्ध होंगी।

इसके सिद्ध करने का कई प्रकार है—जैसे बहिन, माता, पुत्री तथा स्त्री के रूप में जो जिस भाव के इच्छुक हों उन्हें उन्हीं भाव का ध्यान करना चाहिये।

इस यक्षिणी साधन में मांस एवं पान का भक्षण अत्यन्त निषेध है, प्रातः काल स्नान कर नित्य क्रिया से छुट्टी पाकर जप करना चाहिये और किसी का भी स्पर्श न करना चाहिये। यह सब क्रिया तब तक करे जब तक वांछित पदार्थ देने वाली यक्षिणी प्रत्यक्ष रूप में प्रगट न हो जाय।

महायक्षिणी साधन

साधनमन्त्र—**ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः।**

उपर्युक्त मन्त्र को जितेन्द्रिय हो बेल वृक्ष पर चढ़कर एक मास पर्यन्त प्रतिदिन एक हजार जपे।

मांस तथा मदिरा प्रतिदिन रखे क्योंकि न जाने वह नाना रूप धारण करने वाली यक्षिणी कब आकर उपस्थित हो जाय।

जिस समय यक्षिणी आकर उपस्थित हो जाय उस समय उसे देखकर भयभीत न हो (वह भयानक रूप भी धारण कर सकती है), अपना जप करता जाय, जब वह यह वचन कहे कि हम अमुक दिन बलि लेंगे तथा वरदान देंगे तो उसे मानकर उसी दिन वर की याचना करें, जैसे धन की इच्छा हो तो धन माँगे, इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो तो धन माँगे, इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो वही वरदान माँगे।

प्रसन्न हुई यक्षिणी सब कुछ देती है, इसमें सन्देह नहीं है यदि प्रयोग को अपने न कर सके तो किसी निर्भीक ब्राह्मण करावे। यह यक्षिणी-साधन देवताओं द्वारा किया गया है।

अथवा अपने सहायकों को रख ब्राह्मणों से करावे और प्रतिदिन तीन कुमारी कन्याओं को भोजन कराता रहे।

धनादि की सिद्धि होने पर धन अच्छे कार्य में खर्च करें, नहीं तो सिद्धि नष्ट हो जायेगी।

धनदा-यक्षिणी मन्त्र—**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम देहि देहि स्वाहा।**

धन देने वाली यक्षिणी का जप पीपल के वृक्ष पर बैठकर करने से धनदा प्रसन्न होकर धन देती है।

पुत्र की इच्छा वाला व्यक्ति आम के पेड़ पर चढ़कर जप करे तो पुत्रदा यक्षिणी प्रसन्न होकर पुत्र प्रदान करती है।

बरगद के पेड़ पर चढ़कर महालक्ष्मी का जप करने से वह प्रसन्न होकर घर में चिरस्थायी हो जाती है।

मदार की जड़ के ऊपर बैठकर जप करने से जया नाम वाली यक्षिणी प्रसन्न होकर सब कार्यों को सिद्ध करती है।

यक्षिणियों की साधना गुप्त रूप से करनी चाहिये, प्रत्यक्ष प्रकट रूप से करने में विघ्नों का भय रहता है तथा प्रयोग सिद्ध नही हो पाता।

भूतिनीसाधनम्

भूतिनी नाम की यक्षिणी अनेक रूप धारण करती है, जैसे कुण्डल धारण करने वाली, सिन्दूर धारण करने वाली, हार पहनने वाली, नाचने वाली, अत्यन्त नाचने वाली, चेटी, कामेश्वरी और कन्या आदि।

भूतिनीमन्त्र—**ॐ ह्रां क्रूँ क्रूँ क्रँ कटुकटु अमुकी देवी वरदा सिद्धिदा च अं भः।**

भूतिनी का जप चम्पा के नीचे करे और प्रति दिन आठ हजार जप करे, पहले भूतिनी का पूजन करे पश्चात् गुग्गुल का धूप दे। उपर्युक्त विधि से करने पर सातवीं रात में भूतिनी आती है, जब इष्ट आ जाय तो उसे चन्दनमिश्रित जल से अर्घ्य देवे फिर तो प्रसन्न होकर भूतिनी उसी रूप में परिणत हो जाती है, जिस रूप में साधक की इच्छा है।

जब साधक यक्षिणी को माता के रूप में सिद्ध करता है तो वह १८ आदमियों को वस्त्राभूषण और भोजन प्रतिदिन देती है। भगिनी के रूप में सिद्ध होने

पर सुन्दर स्त्रियों को दूर-दूर से लाकर देती है तथा रसवाले दिव्य भोजनों को देती है, भार्या के रूप में सिद्ध होने पर अपनी पीठ पर चढ़ा स्वर्गादि लोकों को भ्रमण कराती है एवं भोजनादि के पदार्थों को भी उपलब्ध कराती है।

रात होने पर देवालय में सुन्दर पलंग बिछौ सजावे तथा चमेली पुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर गुग्गुल की धूनी कर मंत्र का अष्ट सहस्र जप करे। जप की समाप्ति पर सम्पूर्ण वस्त्रालंकारों से विभूषित होकर यक्षिणी प्रकट होगी और साधक का आलिंगनचुम्बनादि कर भोग करेगी तथा कुबेर के धन-कोष से धन भी लाकर देगी।

शव-श्मशान-साधन

शंकरजी बोले कि, अब मैं मसान सिद्धि-अर्थात् मुर्दे के ऊपर चढ़कर सिद्धि किस प्रकार की जाती है उस आश्चर्यजनक क्रिया का वर्णन करूँगा जिसके ज्ञन के बाद साधक सिद्ध हो जाता है।

प्रथम निराहार एवं जितेन्द्रिय हो पश्चात् श्मशान भूमि में उस दिन जाय, जिस दिन मंगलवार को अमावस्या हो, फिर पुरुष शव का अन्वेषण कर उसकी छाती पर निर्भय हो बैठकर दश हजार मंत्र का जप करे पश्चात् वहाँ से उठ एकान्त में आ श्यामा और श्यामल सुन्दरी का षोडशोपचार से पूजन करे, यही शव-साधन की क्रिया है, ऐसा करने के बाद साधक जो आज्ञा देगा वह यक्षिणी करेगी।

शवसाधनमंत्र—**ॐ ह्रीं शवमेनं साधय साधय स्वाहा।**

श्वेत काकजङ्घा, गिद्ध की चर्बी, असगन्ध इनको लेकर ऊँटनी के दूध में पीस लेप बना पैर के तलवे में लगाने से मनुष्य पन्द्रह योजन तक निरापद चल सकता है।

पादुका सिद्धि का मन्त्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत-बेताल-त्रासनाय शंख-चक्र-गदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हूँ फट् स्वाहा।

इसी मन्त्र का लक्ष जाप पादुका (खड़ाऊँ) सिद्ध करता है, इसको सौ बार पढ़कर उपर्युक्त लेप अभिमंत्रित कर लेना चाहिए।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा।

कुत्ता, बिल्ली एवं नेवले का पित्त सम भाग लेकर पैर के तलवे में लेप कर पन्द्रह योजन आदमी जा सकता है तथा काक मांस एवं रसाञ्जन का लेप कर पन्द्रह योजन लौटकर पुनः वापस आ सकता है।

पदलेपनमन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय हरति गदेश्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा।**

इस मन्त्र द्वारा लेप को सात बार अभिमन्त्रित करके तब लेप को पैर के तलवे में लगावे।

काग क कलेजी, आँख एवं जीभ, मैनसिल, सिन्दूर, गुरुच, अजवाइन, मालती तथा बिदारीकन्द को सम भाग में ले घोंट लेप बना पाद तले लगाने से सौ योजन तक जाने की शक्ति पैरों में आ जाती है। इस लेप को उपर्युक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर लेना चाहिये।

मृतसञ्जीवनी प्रयोग

शंकरजी कहते हैं कि, मैं मृत सञ्जीवनी विद्या का प्रयोग प्रेमपूर्वक कहूँगा, अकोल नाम वृक्ष के नीचे एक शिव लिंग स्थापित करे, पश्चात् घट के ऊपर कसोरे में यव रख तथा जल से परिपूर्ण करे, प्रथम शिवलिंग की विधिवत् पूजा करे फिर वृक्ष की एवं यव तथा घट की पूजा करे और वृक्ष व लिंग तथ घट तीनों को एक सूत्र में बाँध देवे।

तथा इस क्रिया में चार आदमियों को साधक बनावे फिर सब साधक बारी-बारी से प्रणाम करें और एक-एक साधक दो-दो दिन तक पूजा करता रहे जब तक कि वृक्ष में फूल-फल न लगे। जब फल पक जाय तो कलश जो कि पहले से रखा है, उसी में रखे।

उस कलश का प्रति दिन षोडशोपचार से पूजन करे, कुछ दिनों बाद फिर बीजों को निकाल उनकी गुदी निकाले, छिलके अलग फेंक दे, फिर कोंहार के यहाँ से बड़े मुँहवाला घड़ा ला उसके अन्दर एक चौथाई भाग सुहागा से लेप करे।

पश्चात् शुद्ध मिट्टी रख उसें गोलाई में बीज बो दे फिर कुछ दिनों बाद जब बीज सूख जाय तो ताम्रपात्र से ढँककर (ध्यान रहे कि इस प्रकार ढंका जाय जिसमें तेल निकल सके), घड़ा को औंधा (नीचे मुख) कर ऊपर से आंच देकर तेल निकाले, जब तेल निकल जाय तब शीशी में रख ले और आधा मासा यह तेल तथा आधा-आधा मासा तिल का तेल मिलावे और जिस रोगी की मृत्यु सर्प काटने से हुई हो उस रोगी को नास दे तो वह जीवित हो जायेगा। सर्पदंशियों की यह अचूक दवा है।

अघोरमन्त्र—**अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यः नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः।**

इसी अघोर मंत्र से घट की पूजा कर प्रतिदिन नमस्कार करने से संजीवनी प्रयोग सिद्ध होता है।

विद्याधर सिद्धि

ॐ ह्रीं गौगोंपतये नमः।

अर्ध रात्रि में विद्याधर मंत्र का तीन हजार प्रति रात्रि जप करने से विद्याधर की सिद्धि होती है तथा गन्धर्व शब्द का ज्ञान एवं पुत्र और बल भी प्राप्त होता है।

शिवज कहते हैं कि, अब मैं इन्द्रजाल कौतुक का व्याख्यान करता हूँ, जिसके ज्ञान से प्रत्येक प्रकार के कौतुकों की जानकारी हो जाती है।

भूतकरणम्

भिलोय के रस में गुञ्जा (घुँघुची) विष, चित्ता तथा केंवाच का चूर्ण मिलाकर देने से भूत लगता है।

भूत चढ़ने के लक्षण ये हैं कि, जैसे धीरे-धीरे शरीर का हिलना, बार-बार मूर्च्छा का आना अथवा हाथ कँपना, पटकना आदि।

खस, चन्दन, कंगनी, तगर, लालचंदन और कूट एक में पीस लेप करने से भूत उतरता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।**

इस मन्त्र के द्वारा सौ बार झाड़ने से भूत उतरता है।

लोहबान, घी, हींग, देवदारु, इन्द्रवारुणी, गोदन्ती, सरसों, केश, कुटकी, नीम की पत्ती, दोनों कटाई, बच, चव्य, बनउर, जव, बकरे का बाल तथा मोर की पूँछ।

बछड़े के मूत्र में पीस के सुखावे तथा मिट्टी की परई में अग्नि जला इसका धूप दे तो ग्रहादि एवं भूतादि डाकिनी-शाकिनी और भी ज्वरादि अनेक प्रकार के दुःख दरिद्रों की शान्ति होती है।

गुग्गुल, लहसुन, घी, साँप की केंचुल, बानर का बाल, मोर, मुर्गा एवं कबूतर की विष्ठा एक में मिलाकर धूप देने से बड़े-बड़े प्रेत शान्त हो जाते हैं एवं क्रूर ग्रह, पूतना, डाकिनी, एकाहिक ज्वरादि भी भयंकर से भयंकर नष्ट हो जाते है।

काली सरसों तथा काली मिर्च का अञ्जन भूत को उतार देता है, तगर, बकुची एवं निम्ब का अञ्जन भयानक ज्वर पीड़ा को शान्त करता है।

एक पात्र में गोरख मुण्डी की जड़ रखे पश्चात् हींग मिश्रित जल छोड़े फिर उस जल को पीने से ग्रहादि एवं भूतादिकों की बाधा शान्त होती है।

इन्द्र वारुणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च गौ के मूत्र में पीसकर नास लेने (नाक में सूँघने) से ब्रह्मराक्षसादि एवं भूतादि की बाधाएँ शान्त होती हैं।

भूतनाशनमन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो नमः सिद्धिरूपीरुद्राय ज्ञपति स्वाहा।**

इस मन्त्र को यथाशक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते हैं।

शंकरजी के अघोर मन्त्र का हृदय में अर्थात् अजपा जाप करने से ज्वर शान्त होता है।

बरगद के पत्ते पर निम्नलिखित मंत्र कोयले से लिखकर ज्वरग्रस्त व्यक्ति को दिखाने से ज्वर उतर जाता है।

ज्वरनाशनमंत्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि छिन्धि ज्वरं ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल पाणये हुं फट् स्वाहा।**

इस मन्त्र को सिद्धि पर्यन्त जप करने से दूसरे पर ज्वर का आवेश हो जाता है।

उपर्युक्त मंत्र को भोजपत्र पर लिख दाहिने हाथ में बाँधे तथा नित्य १०८ बार जप करे तो सब प्रकार के ज्वर नष्ट हों।

धतूर का बीज, लोहे का मुर्चा, गोह की विष्ठा, करंज का बीज समान भाग ले चूर्ण कर जल में मिला खाने-पीने के साथ देने से पागलपन होता है तथा निम्नलिखित मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर जल पिला देने से पागलपन शान्त हो जाता है।

उन्मादनाशनमंत्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशय कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा।**

इस मंत्र को एक लक्ष बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

शंकरजी कहते हैं कि अब मैं शत्रुओं को पीड़ा पहुँचाने का प्रकार कहता हूँ, जिसके प्रयोग से शत्रु व्रणी (फोड़ा-फुन्सी वाला) होकर विनष्ट हो जाता है।

सर्प, भौंरा, काला बिच्छू एवं बंदर के शिर का सम भाग ले चूर्ण कर शीशी में भर लेवे पश्चात शत्रु की शय्या या उसके वस्त्रादिकों पर डाल दे, इसके डालते ही शत्रु व्रणों से पीडित होकर मर जायेगा। यह चूर्ण यमदण्ड के सदृश है, जिसका निवारण देवतादिक भी नहीं कर सकते मनुष्यों की क्या गणना है।

जब शत्रु को पीड़ा रहित करना हो तो नील, लाल कमल एवं लाल चन्दन का मुर्गी के पित्त में मिला लेप करने से पीड़ा शान्त हो जायेगी।

विस्फोटक-करणमन्त्र—**ॐ नमो भवति गृहवराहो सुभगे ठः ठः स्वाहा।**

लक्ष जप द्वारा विस्फोटक मंत्र सिद्ध कर लेना चाहिये।

कुष्ठीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं कि, अब मैं शत्रु को कुष्ठ रोग होने की विधि कहता हूँ कि जिसके प्रयोग से शत्रु कोढ़ी होकर मर जाता है।

भिलावे का रस, घुँघुची एवं मेढ़क, गृहगोधी (छिपकली) इन सबको एक में मिला खाने-पीने के सामानों में खिला-पिला देने पर सात दिनों में ही कुष्ठ रोग उत्पन्न हो जाता है।

आँवला, खैर एवं नीम का चूर्ण, घी, शहद एवं शक्कर मिला पुराने चावल के साथ पीसकर खिलावे तथा परोरे की तरकारी और पुराने चावल का भात पथ्य दे तो कुष्ठ अच्छा हो जायेगा।

मक्षिकानिवारण प्रयोग

हरताल को जल में पीस लेप बना एक पुतली पर करके रख दे तो उसे सूँघकर मक्खियाँ भाग जायेंगी।

मूषकनिवारण प्रयोग

तिल, कुल्थी का चूर्ण, सफेद मदार के दुध में मिला मदार के पत्ते पर रख देने से चूहे भाग जाते हैं।

बकरी के मूत्र में बकरी की लेंड़ी तथा हरताल, प्याज सहित पीस कर चूहे के ऊपर इसका लेप कर लेप कर चूहा छोड़ देने से उसे देखते ही सब चूहे भाग जाते हैं।

बिल्ली की विष्टा तथा हरताल एक में पीस चूहे के ऊपर लेप कर छोड़ देने से सूँघकर सब चूहे भाग जाते हैं।

मत्कुण-निवारण

मदार की रूई की बत्ती को महावर के रंग में कड़ुवे तेल में दीपक के जलाते ही खटमल भाग जाते हैं।

अर्जुन फल एवं पुष्प, लाख, चन्दन, गुग्गुल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा, वायविडङ्ग इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से सर्प, खटमल और मूस भाग जाते हैं।

सर्पनिवारण प्रयोग

सफेद गुड़, चंदन, वायविडङ्ग, त्रिफला, लाख, मदार का फूल इन सबको एक में मिला धूप देने से सर्प, बिच्छू भाग जाते हैं।

नागरमोथा, सरसों, भिलावा, केवाच का फल, गुड़ तथा मदार का फल इनको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से खटमल, मच्छर, सर्प, मूस, और भी विषैले कीटाणु भाग जाते हैं। जैसे कि कायर पुरुष युद्ध से भाग जाते हैं।

मशक-निवारण

भिलावा, वायविडङ्ग, सोंठ, पोहकर मूल तथा जामुन इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं।

क्षेत्रोपद्रवनाशन प्रयोग

अब खेतों में उपजी फसलों को नष्ट करने वाले जंतुआं के विनाशार्थ उपाय कहते हैं। बालू, सफेद सरसों एक साथ मिला खेत में डाल देने से टिड्डी, कीड़े, सूअर, मृग, मूस, मच्छरादि सब प्रकार के जीव मन्त्र के प्रभाव से भाग जाते हैं।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में बहेड़े की बाँझी लेकर निम्न लिखे मंत्र से अभिमंत्रित कर खेत में गाड़ देने से अन्न अधिक उपजता है।

अन्नोत्पादन-मन्त्र

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

रक्त निवारण

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल की पोटरी बाँध स्त्री की योनि में रख देन से खून का गिरना बंद हो जाता है।

आँवला, बहेड़ा तथा निसोत का चूर्ण जल के साथ पीसकर पीने से अधिक गिरता रक्त भी बन्द हो जाता है।

चावल का धोवन तथा सरफोंस की जड़ को पीसकर पीने से भी स्त्रियों और का खून बन्द होता है। यह ध्यान रहे कि दवा की मात्रा १० मासे से अधिक न हो।

देवदारु, रसाञ्जन, चिरायता, भिलावा, अडूसा, नागरमोथा इन सबका क्वाथ घी और शहद के संयोग से सिद्ध कर पीने से शूलप्रशूल सब प्रकार के प्रदर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग

रविवार को सुगन्धरा की जड़ ला एक वर्णा गौर के दूध के साथ पीस ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूँग की दाल पथ्य खाने से बन्ध्यादोष विनष्ट होता है।

दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिन्ता या शोक अथवा भय, अधिक परिश्रम, दिन में सोना, गर्म चीजों का भोजन, धूप, अधिक ठंड इन सबसे बचना चाहिए। ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवाह करने से बन्ध्या अवश्य गर्भवती होती है।

नागरमोथा, कंगुनी, वैर, लाहरस तथा मधु इनको बराबर लेकर पुराना चावल के धोवन के साथ एक तोले की मात्रा में सात दिन तक पूर्वोक्त पथ्य से पीव तो बन्ध्या गर्भ धारण कर लेती है।

पीपर, केसर आदि व काली मिर्च घी के साथ चूर्ण कर खाने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

सफेद कटेली, जटामासी के पत्ते, नये दूध के साथ पीसकर पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है। पथ्य सात्त्विक भोजन करे।

असगन्ध को जल में पकाकर घी में भूने पश्चात् प्रातः स्नान के बाद दूध व घी के साथ पाय तो वन्ध्या पुत्रवती हो।

रजोधर्म शुद्धि के पश्चात् काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

पहले ब्यायी हुई गौ जिसके साथ बछड़ा हो ऐसे गौ के दूध के साथ नागकेशर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तथा घी-दूध के साथ भोजन करने से वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है।

तिल, रस, गुड़ तथा नये जवान बछड़े का मूत्र १ सेर इनको ले एक हण्डी में गौ की कंडी पर पकावे, पकने के पश्चात् ऋतु के समय सात बार पीवे तो अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो।

कदम की पत्ती, सफेद चन्दन तथा कटेरी की जड़ सबको समान भाग ले बकरी के दूध के साथ पीसकर पीने से अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो जाती है।

विष्णुक्रान्ता को जड़ सहित भैंस के नैनू (नूतन घी) के साथ सात दिन खाने से काक वन्ध्या भी पुत्रवती होती है।

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है उसे मृतवत्सा कहते हैं, जिस रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन पीत पुष्पा नाम की जड़ी जड़ सहित लावे, उसे पानी में सात दिन पर्यन्त पीस कर दस मासे पीवे तो पुत्र न मरे।

नीबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीस घी मिला पीने से पति प्रसंग द्वारा स्त्री को दीर्घजीवी पुत्र होता है।

गर्भस्तम्भन

प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात् पीड़ा उत्पन्न हो तो गौ के दूध में पद्माख, लालचन्दन व खस इन सबको बराबर ले पीस एक-एक तोला तीन दिन तक पीने से गर्भ नहीं किरता अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस का बीज, काली गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी गर्भ गिरने से रुक जाता है।

नील कमल की जड़, लाह का रस, काकड़ासिंगी ये सब बराबर ले गौ के दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है।

पीपल की छाल, काला तिल, शतावर इन सबको बराबर ले गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दूसरे मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, कमल की केशर, काकोली और असगन्ध इन सबको ठण्डे पानी के साथ पीसकर पीने से तीसरे मास के गर्भ की पीड़ा जाती रहती है।

नील कमल व कमल की जड़, गोखरू गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से चौथे महीने के गर्भ की पीड़ा जाती है।

गदहपूर्णा, काकोली, तगर, नीलकमल, गोखरू इन सबको गौ के दूध के साथ पीने से पाँचवें मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कैंथ का गूदा ठंडे पानी में पीस और गौ का दूध मिलाकर पीने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा व नीलकमल पानी में पीसकर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

मुलहठी, पद्माख, मुस्त, नागकेशर, गजपीपर इन सबको गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से आठवें मास की गर्भपीड़ा जाती है।

इन्द्रायन के बीज, कंकोल (अकोल) मधु के साथ पीस घोंट कर खाने से नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त होती है।

पुराना खाँड़, मुनक्का, छुहाड़ा, शहद व नील कमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर होती है।

सोंठ डाल कर पकाया हुआ गौ का दूध अथवा मुलहठी व देवदारु देवदारु आर सोंठ गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी दसवें महीने की व्यथा दूर होती है।

आँवला और मुलहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ-स्तम्भन पूर्णरूपेण हो जातता है, फिर नहीं गिरता है।

कुम्भकार के हाथ की लगी मिट्टी, परवह चाक के ऊपर की हो, बकरी के दूध में मिलाकर पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है, फिर नहीं गिरता।

कसेरू, सिंघाड़ा नागरमोथा और रेड़ी इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर सतावर डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ पीने से गर्भव्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है।

कोई की जड़, शहद, घी इनको दूध में डालकर खौलावे पश्चात् ठंडा कर सात दिन तक पीने से गर्भ स्राव, अरुचि आदि सब प्रकार का विकार नष्ट हो जाता है।

कमल की जड़, जिसको भसोड़ कहते हैं तथा तिल व मिर्च दूध में पीसकर पीन से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है।

ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा व काली मिर्च का काढ़ा बना पीने से गर्भ का रोग दूर होता है।

गौ के दूध में खाँड़ मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है या गंभारी के फल का चूर्ण मधु के साथ खाये या दूध पीवे तो भी गर्भ का सूखना बन्द हो जाय।

सुखप्रसव प्रयोग

बच्चा पैदा होने के समय यदि व्यथा अधिक हो और बालक उत्पन्न होने में कठिनाई मालूम पड़ती हो तो गदहपूर्ना की जड़ का चूर्ण योनि में रख देने से बालक सुख उत्पन्न है।

प्रसिद्ध काढ़ा दशमूल का और सेंधा नमक वे घी मिलाकर पीने से भी सुखपूर्वक बालक उत्पन्न हो है।

गर्भमोचन मन्त्र

ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः मन्मथवाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा।

नहा-धो शुद्ध हो उपर्युक्तं मंत्र से गरम जल अभिमंत्रित कर गर्भिणी को पिला देने से सुखपूर्वक बच्चा पैदा होता है।

करियारीकन्द, अपामार्ग (चिचिहिड़ा) या इन्दायन की जड़ को चूर्णकर पोटरी बाँध योनि में रखने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

तिल की जड़, बह्मदण्डी की जड़, मुलेठी, काली मिर्च तथा पीपर इन सबको कुचकुचाकर जल के साथ काढ़ा बनाकर पीने से बन्द हुआ मासिक खुल जाता है और रक्त गुल्म भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

माल कंगनी के नवीन पत्र, जपा (दुपहरिया) के फूल के साथ खाने से बन्द मासिक खुल जाता है।

श्री शंकरजी बोले कि, हे रावण! मेरे कहे गये इस उड्डीशतंत्र को सभी के लिए न देवे अर्थात् पात्र समझकर ही प्रदान करे अन्यथा अनिष्ट हो जायेगा। इसकी यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी मन्त्र प्रयोग

यह ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सररस्वत्यै नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

निर्गुण्डीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। विद्या प्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शङ्करोदिम्। अयुतं जपेत्।

निर्गुण्डी की जड़ पर बैठकर एकाग्र मन से जप करे। इससे नित्य विद्या प्राप्त होती है। शंकर का यह कथन निष्फल नहीं होता। इसका दश हजार जप करना चाहिये।

विद्या यक्षिणी साधन

यह ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

पञ्चविंशतिसहस्रं जपेत्। पञ्चमेवा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्त भवति।

मन्त्र का २५ हजार जप और पाँचवें दिन जप का दशांश होम करना चाहिये इससे विद्या प्राप्त होती है।

डाकिनी साधन

मन्त्र—**ॐ नमो चढ़ौ चढ़ौ सूरवीर धरती चढ्या पाताल चढ पग पाली चढ्या कुणकुण वीर हनुमन्तवीर चढ्या धरती चढ़ पगपानचढ़ी एडी चढ़ी मुरचै चढ़ी मुरचै चढ़ी पिण्डी चढ़ी पिण्डी चढ़ी गोंडां चढ़ी गोडां चढ़ी जांध चढ़ी जांघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि चढ़ी पेट चढ़ी पेटसूं धरणी चढ़ी धरणीसूं पांसली चढ़ी हियासूं छाती चढ़ी छातीसूं खबा चढ़ी खवासूं कण्ठचढ़ी कण्ठसूं मुख चढ़ी मुखसूं जिह्वा चढ़ी जिह्वासूं कान चढ़ी कानसूं आंख चढ़ी आंखसूं ललाट चढ़ी ललाटसूं सीस चढ़ी सीससूं कपाल चढ़ी कपालसूं चोटी चढ़ी हनुमान् नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसन्तावीर ये वीर चढ़े।**

ग्रहण की रात्रि को चौका लगाकर घी का दीपक जलाये और एक पैर पर खड़ा होकर मन्त्र का १०८ जप करे तो डाकिनी उपस्थित होती है। उससे भयभीत न हो और सम्मुख बात करे। ऐसा करने साधक जो काम कहेगा उसे डाकिनी करेगी।

तस्कर ग्रहण चेटक

एक अन्य प्रयोग का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः किष्किन्धापर्वतपर कदलीवन तिस्के फल तोड़नेवाला चोर तेरे कुञ्जनको देनी पकड़ दे इतनी आज्ञा फुरो। इति मन्त्रः।

जिन पर सन्देह हो उनका नाम लिखकर आटे में गोली बनाये। इसमें से प्रत्येक गोली पर २१ बार मन्त्र पढ़कर पानी में डालता जाय। जिसने चोरी किया है केवल उसी के नाम गोली तैरती रहेगी, शेष डूब जायगी। इस प्रकार चोर के नाम का पता लग जायगा।

ग्रहनाशनभूतेश्वर मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूल-खट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गराभयदण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्दधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्रफणिकालकूटा-टोपमण्डितकण्ठदेशाय जयजय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शयदर्शय नृत्यनृत्य चलचल पाशेन बन्धबन्ध हुंकारेण त्रासयत्रासयवज्रदण्डेन हनहन-निशितखड्गेन छिन्धिछिन्धि शूलाग्रेण भिन्धिभिन्धिमुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय स्वाहा। इति मन्त्रः।

गुग्गुलं मधुनाक्तेन घृतेन सह धूपयेत्। मन्त्रेण तेन हारीत तर्जयेद्ग्रपीडितम्।। ग्रहाविष्टेन चेत्तस्मै दीयते बलिरुत्तमः। मुक्तो भवति तस्माच्च संशयो नास्ति तत्र च।।

मधु से सिक्त गुग्गुल का घी के साथ धूप दे। हे हारीत! फिर हम मन्त्र से ग्रहपीड़ित को डरावे। ग्रहाविष्ट के द्वारा उसे उत्तम बलि देना चाहिये। तब वह ग्रहबाधा से मुक्त हो जाता है—इसमें संशय नहीं है।

भूतोपद्रवनाशका उड्डीश मन्त्र

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्याडम्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रों ह्रों क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय ताडय मोहय मोहय द्रम्भि द्रम्भि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीतिललाटे बन्धय बन्धय ह्रीं हृदसे स्तम्भय स्तम्भ किलि किलि ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादयप्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय प्रभूतं प्रच्छादय स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय डाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनीग्रहं साधय साधय। अनेन मन्त्रेण डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचाद्येकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकचातुर्थिकपञ्चवातिक-पैत्तिकश्लेष्मिक सन्निपातकेसरिडाकिनीग्रहादीन्मुंचमुंच स्वाहा। गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।**

लोहे की सलाई से २१ बार झाड़ने अथवा छप्पर की तीली से झाड़ने से उन्मादादि भूतबाधा दूर होती है।

डाकिनी से बालक को छुड़ाने का मन्त्र

ॐ कालाभैरो कपिली जटा रातदिन खेलै चौपटा काला भैरूं भस्म मुसाण जेहि मांगूं सो पकड़ी आन। डङ्किनी सङ्किनी पटसिहारी जरख चढन्ती

गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिणी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया। इति मन्त्रः।

तीर से झाड़ने तथा अभिमन्त्रित पानी पिलाने से बालक डाकनी से छूट जाता है—यह निश्चित है।

प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको घोरघोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बांग घोर रैगरकी कुण्ड घोर धोबीकी कुण्ड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बखेरता चल पारकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड तोड़ता चल सारका किवाड़ तोड़ता चल कुनकुनसो बन्द करता चल भूतकू पलीतकू देवकू दानवकू दुष्टकू मुष्टक चोटकू फेटकू मेलेकू घरेलेकू उलकेकू बुककेकू हिडकेकू भिडकेकू ओपरीकू पराईकू भतनीकू पलीतनीकू डङ्किणीकू स्यारीकू भूचरीकू खेचरीकू कलुबेकू मलबेकू उनकू मथवायकं तापकू तेजराकू माथाकी मथवायकू मगरांके पीडकू पेटके पीडकू सांसकू कांसकू मरेकू मुसाणकू कुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीड़ी चौपटाका मुसाण नुह्या मुसाण इन्हींको बन्दकरि एड़ीकी एड़ी बंध करि पीड़ाकी पीड़ी बंध करि जांघकी जाड़ी बंधकरि कट्यांकी कड़ी बंधकरि पेटकी पीड़ा बन्धकरि छातीकी शूल बन्धकरि सरिकी सीस बन्धकरि चोटीकी बन्धकरि नौनाड़ी बहत्तर कोठा रूमरूममें घर पिण्ड में दखलकर देस बङ्गालाका मनसारा मसेवडा आकर मेरा करज सिद्ध न करै तो गुरू उस्तादसूं लाजै सब्दसाचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।

मद्यमांस छडछरीला अतर तेल दीपक रविवारकी रविवार भाङ्गसुलफा चढ़ाना तो सिद्ध हो पीछे मन्त्र सातवार पढ़कर झाड़ दे तो सर्वोपद्रव दूर होकर सुखी होवे इसमें सन्देह नहीं।

नजर झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरूको ॐ नमो नजर जहां परपीर न जानी बोलै छलसों अमृतवानी कहो नजर कहांते आई यहाँ की ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उड़ी कहांको जाया अबही वसकरले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुह्यारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताहीके सिर पड़ै जाहर पीर नजरसो रक्षा करै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र द्वारा मोर-पंख से झाड़ने से आराम होता है।

डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र

ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीयदृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय साधय मारय मारय चूरय चूरय अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ हूं हूं हैं हौं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः

डाकिनी को चोट मारने का प्रयोग—उक्त मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित कर ओखली में डालकर मूसल से कूटने से उस मूसल की चोट डाकिनी को लगेगी। यदि इस मन्त्र से अपना सर मूंडे तो डाकिनी का सिर मुंड जायगा। किसी वस्तु पर मन्त्र पढ़कर जिसके घर में उस वस्तु को फेंक दे तो डाकिनी उसके घर में जाकर बोलेगी। इस मन्त्र को पढ़कर आंखों जल का छींटा मारने से डाकिनी जल उठेगी।

डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना

ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरौ यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय परायातकै तिस पापनका भण्डारा फूटै नरसा टूटै पाप न छूटै गुरूकी शक्ति चेलेकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार झाड़ने से डाकिनी द्वारा ग्रसित को आराम होता है।

डाकिनी दूर करने वाला मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमन्तने मारी कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सातवें पातालसूं कौन पकड़ल्याया जती हनुमन्त पकड़ल्याया एकताल दे एक कोठा तोड्या दो ताल दे दो कोठा तोड़्या तीन ताल दे तीन कोठा तोड़्या चार ताल दे चार कोठा तोड़्या पांच ताल दे पांच कोठा तोड़्या छः कोठा तोड़्या सात ताल दे सातवों कोठो खोलदेखै तो कौन खड़ी छै? डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चलै जती हनुमन्तसेरे झाड़े सूं चलै ॐ नमो आदेश गुरूको गूरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मोर के पंख अथवा लोहे से झाड़ने से सभी उपद्रव दूर होते हैं।

अन्य प्रयोग

ॐ नमो आदेस गुरूको गिरहवाज नटनीका जाया चलतीवेर कबूतर खाया पीवै दारू खाय जो मांस रोगदोषकूं लावै फांस कहांकहां सूं लादैगा गुदगुद में सुत्रावैगा वोटी वोटीमेंसूं ल्यावैगा चामचाममेंसूं ल्यावैगा नौनाडी बहत्तरकोठामेंसूं ल्यावैगा मारमार बन्दीकरकर ल्यावैगा न ल्यावैगा तो अपनी माताकी सेजपर पग धरैगा मेरा भाई मेरा देखादिखलाय तो मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मोर के पंख से झाड़ने से भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि सब भाग जाते हैं।

डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो जय नरसिंह तीनलोक जीतह भुवन में हाथ चावी और होठ चावी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाड़मार भगतनको प्राण राखि आदेश आदिपुरुषको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर पानी पिलाकर पूछने पर डाकिनी-शाकिनी निश्चित रूप से बोलती है।

प्रेतादि झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच-डाकिनीकुलोन्मूलाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हरहर विमर्दविमर पचपच हनहन कम्पयकम्पय मथमथ ह्रीं ह्रीं फट्फट् ठः ठः एहिएहि। रुद्र आज्ञापयति स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़-पढ़कर सरसों मारने से सब दोष दूर होते हैं।

दूसरे के कृत्य को उलटना

एकठोसरसों सोलाराई मोरो पठवलको रोजाई खायखाय पड़े भार जे करै ते मरै उलट विद्या ताहीपर परै शब्द साचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से राई और नमक उतारकर आग में डालने से दूसरे द्वारा की गई विद्या उलट कर करनेवाले पर ही जा पड़ती है।

रात्रिज्वर निवारण तन्त्र

काकमाचीभवं मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम्। निहन्ति नात्र सन्देहो यथा सूर्योदयात्तमः।।

काकमाची (काली मकोय) की जड़ कान में बाँधने से रात में होनेवाला ज्वर नष्ट हो जाता है। इसमें उसी प्रकार कोई सन्देह नहीं है जैसे सूर्योदय से अन्धकार नष्ट होने में सन्देह नहीं है। अथवा भाँगरा की जड़ को डोरे सहित कान में बाँधने से रात्रिज्वर दूर होता है।

अर्श निवारण तन्त्र

ॐ काका कर्ता क्रोरीकर्ता ॐ करतासे होय यो रसना दशहूंसे प्रकटै खूनी वादी बवासीर न होय। मन्त्र जानके न बतावै द्वादश ब्रह्महत्याका पाप होय लाख जप करै तो उसके वंसमें न होय शब्द सांचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से बासी पानी को २१ बार अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर (अर्श) की पीड़ दूर होकर फिर कभी नहीं होती। जो कोई इस मन्त्र का १ लाख जप करता है उसके वंस में कभी बवासीर का रोग नहीं होता। जो इस मन्त्र को जानकर अर्शरोगी को आबदस्त के लिये जल के लिये नहीं कहता उसे १२ ब्राह्मणों की हत्या का पाप लगता है। अत: आबदस्त के लिये इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल ले जाने के लिये अवश्य कहना चाहिये। यदि कहने पर भी रोगी ऐसा जल नहीं ले जाता तो उससे मन्त्री (मन्त्र जाननेवाला, दोषभागी) नहीं होता। यह मन्त्र हमारा अनेक बार का परीक्षित है।

अन्यत्। ॐ उमतीउमती चलचल स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत में गाँठ दे। इसी तरह गाँठ देकर दाहिने पैर के अँगूठे में बाँधने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर हो जायगी। यह अनुभूत प्रयोग है।

दाँत के कीडे झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको वनमें व्याई अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त काड़ा मकड़ा माकड़ा ए तीनू भस्मन्त गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र इश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

दीवाली की रात से एक लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर नीम की डाली से झाड़ने से दांत का दर्द तत्काल दूर होता है। यदि इस मन्त्र से कटाई के बीजों का धूआँ डाढ़ों में दिया जाय तो उसके सब कीड़े पानी में गिर पड़ेंगे।

अन्यत्। ॐ नमो कीडरेतूं कुण्डकुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुक काला में तोहि पूंछूं कहां ते आया तोडमांस सबको क्यौं खाया अब तूं जाय भस्म हो जाय गोरखनाथके लागूं पाय शब्द सांचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र द्वारा नीम की टहनी से ७ बार झाड़ने से सब कीड़े मर जाते हैं।

अन्यत्। ॐ नमो नाड़ीनाड़ी नौसे नीड़ी बहत्तरसौ कोठा चलै अगाड़ी डिगै न कोठा चलै न नाड़ी रक्षा करै जती हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

सूत में ६ गाँठ लगाकर उसे छल्ले की तरह बना ले फिर उसको नाभि पर रखकर मन्त्र पढ़े और उस पर फूँक मारे तो थोड़ी देर में धरण ठिकाने आ जायगी।

अन्य प्रयोग : वन में जब सह्वाहुली फूले तो उसको हल्दी से रँगे चावलों से शनिवार को निमन्त्रित करे। फिर रविवार को प्रात:काल जाकर सात प्रदक्षिणा करके

हाथ जोड़े, मस्तक झुकाये, स्तुति करे और सूर्य की ओर मुख करके उसकी जड़ में दूध डाले। फिर उसे खोद लाये। उसे कमर में बाँधते ही धरण यथास्थान आ जाती है—इसमें सन्देह नहीं है।

हूक का मन्त्र

ॐ नमो सारकी छुरी धारका वान हूकन चलै रे महम्मदा ज्वानकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और प्रत्येक बार तेज छूरी से जमीन पर रेखा खींचता जाय तो हूक बन्द हो जाती है।

प्लीह निवारण मन्त्र

ॐ नमो हुतास पर्वत जहा सुरहगा सुरहगाय के पेटमें वच्छा वच्छाके पेट में तिल्ली दबादबाकर तिल्ली कटै सरकण्डा बढ़ै फीहा कटै हरौ फुरौ। इति मन्त्रः।

छुरी से भूमि पर लकीर बनाकर उसे काटता जाय और साथ ही साथ मन्त्र भी पढ़ता जाय तो तिल्ली ठीक हो जाती है।

कखलाई निवारणार्थ मन्त्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्ता आई पकै न फूतै चलै न पीठ रक्षा करै हनुमन्त वीर, दुहाई गुरू गोरखनाथ की शब्द साचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा, सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से २१ बार झाड़कर भूमि की मिट्टी उस पर लगा दे तो तीन ही दिन में कखलाई बैठ जायगी।

रींघनवायु का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो कामरूदेसकामा७ा देवी जहां बसै इस्मायल जोगी इसमायलजोगीके पुत्री तीन एक तोड़ै एक पिछोड़ै एक रींघनवाय तोड़ै शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मङ्गल और शनिवार को मणिहारी की मुंगरी से झाड़ने से आराम होता है।

सुखप्रसव

मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिरमाचिर स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से ८ बार जल को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलाने से उसे सुखपूर्वक प्रसव हो जायगा।

कुछ अन्य मन्त्र

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिसे ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा। इति मन्त्रः।

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक के द्वारा दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भवती को पिलाने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नेत्रपीडा निवारण मन्त्र

ॐ नमो श्रीरामकी धनुही लक्ष्मणका बाण आंख दर्दकरै तो लक्ष्मण कुमारकी आन। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से इस मन्त्र को पढ़ते हुये २१ बार झाड़ने से तीन दिन में आँख की पीड़ा दूर हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं है। यह अनुभूत प्रयोग है।

अन्यत्। ॐ नमो झलमलजहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतसे आई जहां बैठा हनुमन्ता जाई फूटै न पाकै न पीड़ा जती हनुमन्त हरै पीड़ा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर नीम की टहनी से झाड़ने से पीड़ा मिट जाती है।

कण्ठवेल का मन्त्र

ॐ नमो कण्ठवेल तूं द्रुमद्रुमाली सिरपर जकड़ी वज्रकी ताली गोरखनाथ जागता आया बढ़ती बेलको तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घटगई वेल बढ़न नहिं पावै बैठी तहां उठननहिं पावै फूटै और पीड़ा करै तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

सात दिन चाकू की नोक से झाड़े और भूमि पर २१ लकीर बनाता जाय। इससे कण्ठवेल समाप्त होता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरूको कालो विच्छूं कांकरवालो उत्तर विच्छूं नकर टालो उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं गरुड़मोरपङ्ख हकालू शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा। इस मन्त्र से झाड़ने से विच्छूका विख उतर जाता है।

अन्यत्। कालीविच्छू कङ्करवाला हरी पूंछ भौंराला सोनाकागाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौकोर नीचे विच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार विच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोरके कौन वैदमानुषपर गया खातेजाते लागी वार उतर रे विच्छू तुझे ख्वाजममन्दीनचिरागतृष्टीकी आन। इति मन्त्रः।

जहाँ तक विच्छू चढ़ा हो वहाँ पकड़कर बुहारी (झाड़ू) से झाड़ दीजिये। जैसे-जैसे दर्द नीचे उतरे वैसे-वैसे आप भी नीचे पकड़ते जाँय। जब दंश स्थान पर दर्द उतर आवे तब झाड़ना बन्द कर दे और दंश स्थान पर तेलिया मोहरा पानी में घिसकर लगा दे। इससे दंश स्थान की पीड़ा भी समाप्त हो जायगी।

सर्प झाड़ने का मन्त्र

खं खः। इति द्वयक्षरो मन्त्रः।

जब कोई सर्प काटने का समाचार दे तब पानी को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके समाचार देनेवाले व्यक्ति को देकर कहे कि 'जाकर इस पानी को सर्पदष्ट को पिला दो।' इस पानी को पीने से सर्पविष उतर जाता है।

अन्यत्। ॐ नमो भगवति वज्रमये हनहन ॐ भक्ष भक्ष ॐ खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकराञ्चिते पूर्वां दिशं बन्ध बन्ध ॐ दक्षिणां दिशं बन्धबन्ध ॐ पश्चिमो दिशं बन्ध-बन्ध ॐ उत्तरा दिशं बन्धबन्ध ॐनागान् बन्धबन्धसॐ नागपत्नीं बन्धबन्ध ॐ असुरान् बन्धबन्ध ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धबन्ध ॐ प्रेतभूतगन्धार्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्षरक्ष ॐ ऊर्ध्वं रक्षरक्ष ॐ अधो रक्षरक्ष ॐ क्षुरिके बन्धबन्ध ॐ ज्वल महाबले घटघट ॐ मोदिमोदि सटावलि वज्राङ्गि वज्रप्रकारे हुं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्षरक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

जल को मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके पिलाने से विष उतर जाता है।

अन्यत्। ॐ हुं सूं ॐ नालकान्तिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणि छिलि किलि रक्त लोचने किलि किलि घोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुण्डे कट कट हन महोज्ज्वले चिलिचिलि मुण्डमालाधारिणि। स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जङ्गमं विषं नाशय नाशय ॐ महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनी वनवासिनी पर्वतविचारिणि कह कह ॐ हस नम नम दह दह क्रुध क्रुध ॐ नीलजीमूतवर्णे विस्फुर ॐ घण्टानादिनि ललज्जिह्वे महाकाये क्षुं हुं आकर्ष आकर्ष विषं धून धून हेहर यं ज्वालामुखि वज्रिणि महकाये अमुकस्य स्थावरजङ्गमविषं छिन्दि छिन्दि किटि किटि सर्वविषनिवानिणि हुं फट्। इति मन्त्रः।

पहाड़ के एक नीलवर्ण पत्थर के टुकड़े को अभिमन्त्रित करके दष्ट स्थान पर चिपका दे और मन्त्र पढ़ता जाय। जब तक विष रहेगा तब तक पत्थर दष्ट स्थान पर

चिपका रहेगा और विष के समाप्त होने पर स्वयं ही पत्थर अलग हो जायगा—इसमें सन्देह नहीं है।

सर्पकीलन का मन्त्र

ॐ नमो सर्पा रे तूं थूलं मथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरी दादी भुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरा रतन कटोरा जामे तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो धाव तेरी डाढ भस्म हो जाय गुरु गोरख धी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके वर्ष दिन पर्यन्त प्रतिदिन सवा घड़ी तक असंख्य बार जपे तो यह सिद्ध हो जाता है फिर इस सिद्ध मन्त्र से आरने उसके की भस्म को सर्प पर डालने से उसकी डाढ़ बन्द हो जायगी। फिर साधक उस सर्प को खिलौने की भाँति उठा सकता है।

सर्प कीलने का मन्त्र

बजरी बजरी बजरकिवाड़ बजरी कीलूं आसपास मरे सांप होय खाख मेरा कील्या पथर कीलै पथर फूटै न मेरा कीला छूटै मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से साँप को एक कङ्कण मारने से उसका उत्कीलन हो जायगा।

सर्पों को भगाने का मन्त्र

ॐ प्लः सर्वकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार मिट्टी को अभिमन्त्रित करके घर में डाल दे तो सर्प भाग जाँयेगे।

पागल कुत्ते का मन्त्र

ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमायलजोगी इसमायलबोगी का झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंड़ा बन्दर नाचे रीछ बजावे सीता बैठी औषध वांटै कूवरका विष भाजै शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से झाड़ देने से पागल कुत्ते का विष उतर जाता है और किसी तरह की पीड़ा नहीं होती।

आधासीसी का मन्त्र

ॐ नमो वनमें व्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय। कूदकूद शाखानपै,

कच्चे वनफल खाय। आधा तोड़ै आधा फोड़ै, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमानजी, आधा सीसी जाय। इति मन्त्रः।

वननें व्याई अञ्जनी, कच्चे वनफल खाय। हांकमारी हनुमन्तने, इस पिण्डे से आधासीसी उतरजाय। इति मन्त्रः।

इन मन्त्रों से विभूति से झाड़ने से आधा सीसी दूर होकर पीड़ा समाप्त हो जाती है।

निम्नलिखित ६ कोष्ठ के यन्त्र को लिखकर सिर में बाँधने से आधा सीसी दूर होती है। निम्नलिखित चार कोष्ठ के यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर माथे में बाँधने से निश्चित रूप आधा सीसी नष्ट हो जाती है। यह यन्त्र अत्यन्त गुप्त है।

कमल झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुपादी पीलियाकूं धिदानी कारै झारै पीलिया रहैन नकनिशान जो कहीं रहे जाय तो हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्रं ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

काँसे की कटोरी में तेल भरकर रोगा के सिर पर रखकर मंत्र पढ़े और कुशा से उस तेल को चलाता जाय। जब तेल पीला हो जाय तब उतार ले। इससे पीलिया (कवल) रोग तीन दिन में अच्छा हो जायगा।

दर्द और थनपल को झाड़ना

ॐ वनमें जाई वानरी, जिनजाया हनुमन्त्र। सज्ज खधा टाकिया, हो गया भस्मीभूत। इति मन्त्रः।

स्त्री का बांया स्तन दुखे तो अपने दाहिन, और यदि उसका दाहिना स्तन दुखे तो अपने बाये स्तन को कण्डे की राख से ७ बार झाड़ने से स्त्री को आराम हो जायगा।

जमोगा का मन्त्र

सुनरे जमोगे मतिकर अभिमान तेरा नहीं दुनिया में ठिकान, बालक दिया है श्रीभगवान बचोगे नहीं तूं जिमी आसमान दुहाई औघड़की छू खंदके मारता हूं वान। इति मन्त्रः।

रामसर की तर-कमान बनावे और मन्त्र पढ़कर तीर बालक को मारे तो जमुवे की पीड़ा से वह छूट जायगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

दबा पसली झाड़ने का मन्त्र

सत्य नाम आदेस गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतों गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करैगा सवाभार कोईला करैगा सवाभार

कोईलाकर कहाकरैगा हनुमन्त वीर नव चन्द्रहासखड्ग गढ़ैगा नव चन्द्रहास खड्ग घड कहाकरैगा जानवा डौरू पांसलीवाय काटकूट खारीसमुद्र नाखैगा जगदगुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

तिल के तेल और सिन्दूर से झाड़ने से आराम होगा।

सर्व रोग निवारक मंत्र

''पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत कटिक शिला कटिक शिला पर अंजनी जिन पाया हनुमान नेहला टेहला काँख की कखाई पीछे की आदटी कान की कनफेट रांग की बद कण्ठ की कण्ठमाल घुटने का डमरु डाढ़ की डढ़शूल पेट की ताप तिल्ली फिया इतने को दूर करे भस्मन्त नातर तुझे माता अंजनी की दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरू का।''

विधि—शनिवार को व्रत रख कर नियमपूर्वक रहकर एक माला उपरोक्त मंत्र की जपे। इसी प्रकार सात शनिवार तक करता रहे। ऐसा करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

कंखाई अदीठ, कनफेर, बद (एक प्रकार का चर्म रोग), कण्ठमाला, दाढ़ का दर्द इन्हें राख से झाड़ना चाहिए। डमरु को, ताप तिल्ली को छुरी से झाड़ें उपर्युक्त सभी रोगों के लिए भभूति बना कर देना चाहिए।

बवासीर नाशक मंत्र

''ओम नमो नमो सिद्ध नमो चौरासी उदर जड़ी रक्त सड़ी चूवे मत खड़ी पड़ी तोहे देखे लोना चमारिन धूप गुगल की दी अग्यारी जो रहे बवासीर तो हजार हराम गुरू गोरख की शक्ति आन गौरी माई की।''

विधि—दीपावली, होली अथवा ग्रहण काल में यह मंत्र जप कर सिद्ध किया जाता है। सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित काली मिट्टी की पट्टी पेड़ू पर बाँधें तथा अभिमंत्रित लाल धागा कमर में बाँधें। जिस व्यक्ति को यह रोग है वह नित्य शौच के जल को अभिमंत्रित कर प्रयोग करे तो लाभ होता है।

पीलिया झाड़ने का मंत्र

''ओम नमो वीखेताल असराल नारसिंह देव तुषादि पीलिया कूं भिदाती कौरे झौरे पीलिया रहे न नेक निशान जो कहीं रह जाए तो हनुमान की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।''

विधि—श्री हनुमान जी की मूर्ति के आगे नित्य एक हजार मंत्रों का जप कर इक्कीस दिनों तक इक्कीस हजार बार जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

साधना पूर्ण होने के बाद पीलिया ग्रस्त रोगी को सामने बैठाकर काँसे की कटोरी में तेल डाल कर उसके सिर के ऊपर रखें और तेल को कुश से हिलाते हुए इक्कीस बार मंत्र बोलें। ऐसा करने पर यदि कटोरी का तेल पीला हो जाए तो समझना चाहिए कि मंत्र सिद्ध हो गया है। इसी विधि को तीन दिन करते रहने से पीलिया का रोग मुक्त हो जाता है।

रोगी से हनुमानजी पर प्रसाद और गाय को घास, पक्षियों को अनाज आदि पुण्यप्रद कर्म करा देना चाहिए।

कण्ठवेल पीड़ा मुक्ति मंत्र

"ओम नमो कण्ठवेल महावेल तुम दरद दियो अब हिलो चलो तुरन्तहि जाओ सात लोक सात समुन्दर पार जा के डूबो हमें बचाओ न जाओ तो बहत्तर हजार चमार की नाद में गिरो दुहाई बाबा शंकर की गौरा पार्वती की।"

विधि—किसी भी नवरात्रों में प्रतिदिन एक माला जप कर उपरोक्त मंत्र को सिद्ध करलें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रोगी को मोरपंख से झाड़ें। सोमवार से रविवार तक प्रतिदिन सात बार झाड़ देने से कण्ठवेल सूख जाती है और रोगी को पूर्ण लाभ मिलता है।

बालज्वर नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश भगवती बालकष्ट, बाल रोग, बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे, जो मेरा आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई।

प्रयोग—शिशु यंत्र, (जो कि तावीज की तरह होता है) पर केशर की तिलक लगाकर नित्य एक हजार मंत्र जप करें। इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यंत्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यंत्र जिस बालक के गले में काले धागे में पहनाया जाय तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है, और वह स्वस्थ हो जाता है। इस **'चमत्कारी तावीज'** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

नक्सीर स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो गुरु की आज्ञा सार-सार महासागरे बांधूं सातवार फिर बांधूं तीन बार लोहे की सार बांधे हनुमन्त वीर पाके न फूते तुरत सेखे।

उपर्युक्त मंत्र की सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर भस्म से ७ बार रोगी को झाड़ना चाहिए।

मसान रोग (सूखा रोग) नाशक प्रभावशाली झाड़ा

मसान रोग सिर्फ बच्चों में ही पाया जाता है। यह एक अत्यंत खतरनाक बीमारी है। इसके प्रकोप से बच्चा दिन-ब-दिन बिना वजह कमजोर होता चला जाता है।

'सफेद मसान गुरू गोरख की आन यमदण्ड मसान काल भैरों की आन सुकिया मसान लोना चमारी की आन फुलिया मसान गोरे भैरों की आन हल्दिया मसान ककोड़ा भैरों की आन पीलिया मसान दिल्ली की योगिनी की आन कमेदिया मसान रामचन्द्र की आन कीकड़िया मसान कालिका की आन सिलसिलिया मसान वीर मुहम्मद पीर की आन।'

यदि किसी बालक को मसान रोग (अर्थात मृग्वा रोग) का प्रकोप हो गया हो तो इस मंत्र से दिया गया झाड़ा अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होता है।

कलिया मसान नामक एक दुष्ट प्रेतात्मा के कोप भाजन का शिकार हुए अबोध ही मसान रोग से ग्रसित होते है। अतएव भूत-प्रेतादि उतारने के झाड़ों की तरह ही यह झाड़ा दिया जाता है। इस झाड़े को मोरपंख से सुबहो-शाम दोनों ही समय पर दिया जाता है।

एक बार में पूरा मंत्र पढ़कर फिर मोरपंखी से झाड़ा देवें। इस प्रकार एक बार में सात झाड़ें देवें। लगातार दोनों समय झाड़ा देने से वह रोगी बालक सात दिनों में पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगा।

आधाशीशी नाशक मंत्र

'बन में जाई बंदरी जो आधा फल खाई खड़े मुहम्मद हांकवें आधा सीसी जाई।'

किसी भी ग्रहण के अवसर पर उक्त मंत्र को दस हजार बार जाप करके सिद्ध कर लें।

अब आधासीसी (माइग्रेन) के सिर पर २१ बार इस मंत्र को पढ़ कर फूंक मार देने से आधासीसी का रोग दूर हो जाएगा।

नेत्र बाधा निवारण मंत्र

'ओम अगाली गगाली अताल पताल गर्द मर्द अदार कार फट उल्कन हूठ।'

नेत्र बाधाओं युक्त रोगी को रविवार के दिन उक्त मंत्र का जाप करते हुए नीम के पत्तों के झोहरे (डाल) से इक्कीस बार झाड़ा देवें तो नेत्र बाधा से मुक्ति मिल जाएगी।

अन्न पचाने का मंत्र

'अन्न हाथ वज्र हाथ, भस्म करे सब पेट का भात, दुहाई हजरत शाह कुतुब आलम की।'

पाचन शक्ति नियमित करने के लिए यह एक स्वयंसिद्ध तथा प्रभावशाली मंत्र है। खाना खाने के पश्चात् अपने हाथ को इस मंत्र से ३१ बार अभिमंत्रित करके

पेट पर फेरें तो भोजन तुरन्त ही पच जाएगा। इस मंत्र के नियमित प्रयोग से पाचन संस्थान सुदृढ़ हो जाता है।

आँख की फूली काटने हेतु

'उत्तर कूल काछ सूत योगी का बाछ इस्माइल योगी की बेटी एक माशे चूहा एक काटे फूला काछ।'

यह एक स्वयंसिद्ध मंत्र है। फिर भी किसी शुभ नक्षत्र में मात्र एक माला जप करने से भी यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

किसी को आंख की फूली हो गई हो तो इस मंत्र को पढ़कर लोहे की कील से इकत्तीस बार जमीन में ठोकें तो आँख की फूली स्वत: ही कट जाएगी।

शारीरिक पीड़ा नाशक मंत्र

'लशकर फराउन हरदी नील गर्क शुद्ध जहाँ।'

पीली मिट्टी व दही से इस मंत्र को लिखकर सिद्ध कर लें। फिर उस पीली मिट्टी के वजन के समान गुड़ लेकर बच्चों में बाँट दें तो समस्त प्रकार की शारीरिक पीड़ा का नाश हो जाता है।

बवासीर नाशक मंत्र

'खुरीसानी की दोवासाई खूनी वादी तत्वा लजाय।'

बवासीर के रोगी शौच के पश्चात् उक्त मंत्र से अभिमंत्रित जल से आबदस्त (गुदा प्रक्षालन) लेवें तो बवासीर रोग शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

'ईसा ईसा ईसा काँच कपूर के सीसा, यहव अधर जाने नहीं कोय, खूनी बादी एक न होय, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।'

उक्त मंत्र स्वयंसिद्ध मंत्र है। बवासीर रोग से मुक्ति पाने का यह सर्वाधिक सरलतम प्रयोग है।

शौच के वक्त गुदा प्रक्षालन (आबदस्त) के लिए उपयोग में आने वाले जल को इस मंत्र से ५ बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन (आबदस्त) करें तो नियमित प्रयोग से कुछ ही दिनों में बवासीर दूर हो जाएगी।

सूखा रोग झाड़ने का मन्त्र

सूखा रोग का ही दूसरा नाम मसान रोग है, क्योंकि कालिया मसान नामक प्रेतात्मा की कुदृष्टि का शिकार होने पर ही बालक इसके शिकार बनते हैं। जब मसान हर समय बालक के साथ रहने लगता है, तब तो गंडे-तावीज बांधने के साथ ही यह झाड़ा देना भी अनिवार्य हो जाता है।

सपेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान, काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की

आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मदा पीर की आन।

मसान रोग का यह झाड़ा सामान्य रूप से नजर उतारने के झाड़ों के विपरीत भूत-प्रेत उतारने के झाड़ों के समान दिया जाता है। मोरपंख के झाड़न से सुबह-शाम दोनों समय देना अधिक उचित है। यह झाड़ा देते समय आप पूरा मन्त्र पढ़ने के बाद एक बार झाड़ें और इस प्रकार सात झाड़े एक समय में दें।

सर्वरोग नाशक तान्त्रिक यन्त्र अथवा तावीज

सामग्री—शिशु स्वास्थ्य यन्त्र, घी का दीपक व अगरबत्ती।

माला—मूंगे की माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप—संख्या-तीन हजार।

अवधि—तीन दिन।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेश भगवती भवानी बालकष्ट, बाल रोग, बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे, जो मेरा आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई।**

मन्त्र सिद्ध किए हुए शिशु यन्त्र को सामने रखकर और उस पर केशर का तिलक लगाकर नित्य एक हजार मन्त्र जप करें। इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यन्त्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यन्त्र जिस बालक के गले में काले धागे में पहनाया जाए तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है और वह स्वस्थ हो जाता है।

अंडकोष वृद्धि रोकने का यन्त्र

इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर रविवार के दिन लिखकर, चांदी या तांबे के तावीज में करके, लाल डोरे की सहायता से दाहिने हाथ में बांधने से अंडकोष वृद्धि रुक जाती है।

यह यन्त्र अनार की कलम से लिखा जाता है तथा गले में भी बांधा जा सकता है।

ॐ नमो नलाई-ज्यां बैठ्या हनुमत आई पके न फुटे, चले बाल जति रक्षा करे। गुरु रखवाला, शब्द साचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

नियमित मासिक-धर्म हेतु तान्त्रिक टोटके

एक सादा पान बनवाकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए सात बार अभिमन्त्रित करें और रोगिणी को खिला दें तो उसका अनियमित मासिक धर्म ठीक और नियमित समय पर हो जाएगा।

'ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का। तोडूं गांठ औंगा ठाली। तोड़ दूं लाय। तोड़ दूं मरित। परित देकर पाय। यह देख हनुमन्त दौड़कर आये। अमुक की देह शांति पाये। रोग कूं वीर भगाये। रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई। फुरो हुकुम खुदाई।'

थोड़ा-सा अदरक लेकर इस मन्त्र से सात बार फूंककर मासिक धर्ममें होने वाली पीड़ाओं से ग्रसित स्त्री को खिलाने से मासिक-पीड़ा शांत हो जाती है।

'ॐ नमो आदेश मनसा माता का। बड़ी-बड़ी अदरख। पतली पतली रेश। बड़े विष के जल फांसी दे। शेष गुरु का वचन न जाए खाली। पिया पंच मुण्ड के बाभ पद ठेलीं। विषहरी राई की दुहाई।'

मृतवत्सा दोष निवृत्ति हेतु दो मन्त्र

प्रथम मन्त्र—**ओं परब्रह्म परमात्मने अमुकी, गर्भ दीर्घजीवी सुतें।**

मृतवत्सा दोष निवारण के लिए ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को १००८ मन्त्र का विधिपूर्वक जप करें तो सिद्धि होती है।

द्वितीय मन्त्र—**ॐ अदिते दिते दिव्यां गति मासूति सुरि रस्मच गर्भा ठहः ठहः ठहः।**

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए काचनी के पेड़ के नीचे जाए। सोमवार प्रदोष के दिन जब रात्रि में एक प्रहर रह जाए तो जाने का वही समय उपयुक्त रहेगा। धूप-दीप और नैवेद्य आदि से वृक्ष का पूजन करके पकी हुई फली तोड़ लाएं। गाय के दूध में इसके बीजों से मिश्रित खीर बनावें। गर्भिणी स्त्री को स्नानादि से पवित्र कराके सफेद मिट्टी से लीपे हुए चौके अथवा किसी परम पवित्र स्थान पर बिठाएं और उसे आदेश दें कि अदिति माता का ध्यान करते हुए खीर का सेवन करे। खीर के केवल उसे ७ ग्रास ही खाने चाहिए। स्त्री को इन नियमों का भी पालन करना चाहिए कि जब तक शिशु उत्पन्न न हो जाए तब तक किसी भी दूसरी स्त्री की छाय उस पर नहीं पड़नी चाहिए। उसे कुशा के आसन पर सोना चाहिए और दिन में एक बार ही भोजन करना चाहिए। इस प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाले शिशु की सुरक्षा हो सकती है।

मृतवत्सा नारी हेतु झाड़ा

मृतवत्सा दोष से ग्रसित स्त्री का झाड़ा करने के लिए मछली पकड़ने वाला कांटा लाएं और उसे इस मन्त्र से सात बार फूंकें। इसी मन्त्र को जपते हुए रोगिणी का झाड़ा करें और इस कांटे को तानीज में भरकर कमर में पहनवा दें। वह निश्चित रूप से जीवित संतान उत्पन्न करेगी।

छोटी मोटी खप्पर, तूं धरती कितना गुण। जियके बल काट कू जान विज्ञान। दाहिनी ओर हनुमान रहे, बायीं ओर चील। चहुं ओर रक्षा करे वीर बानर नील। नील बानर की भक्ति लखि न जाय। जेहि कृपा मृतवत्सा दोष न आय। आदेश कामरू कामाख्या माई का। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

गर्भाशय के विकार मिटाने का झाड़ा व गंडा

'ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी। जाल बांधूं। जलबाई बांधूं। बांध दूं जल के तीर। पांचों दूत कलुवा बांधूं। बांधू हनुमन्त बीर। सहदेव की आन व अर्जुन का बाण। रावण रण को थाम ले नहीं तो हनुमन्त की आन। शब्द सांचा। पिंड कांचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस मन्त्र का जप करते हुए स्त्री का झाड़ा करें। लाल धागा लेकर सिर से पांव तक नापें और इस मन्त्र को उच्चारित करते हुए उसके ऊपर २१ गांठें लगाएं और स्त्री को धारण करवा दें।

ज्वरों के लिए झाड़ा

सभी प्रकार के बुखारों को उतारने में यह शाबर मन्त्र समान रूप से समर्थ है। रोगी को उत्तर की तरफ मुंह करके बैठा दें और स्वयं उसके सम्मुख बैठकर सात बार यह मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ा दें। लगातार तीन दिन सुबह अथवा शाम को यह झाड़ा दें, परन्तु तीनों दिन स्थान और समय एक ही रखें।

दोई भाई ज्वर सुरा महावीर नाम। दिन रात खटि गैर महावीर के नाम।। फर छूद से छतीस रूप महूर्तमों धराय। नाराज नामूर के घर दुआर फिराए।। ज्वाला ज्वरमाल ज्वर काला ज्वर झुमकि दार। ज्वर, उमा ज्वर, भूता ज्वर, झुमकि घोड़ा ज्वर।। भूमा, तिजारी ओ चौथाई। सवंग को भंग घोटन शिव ने बुझाई।। यह ज्वर-ज्वर सुरा ते कौन और तकाव। शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाव।। यदि आंगन में तू भूलि भटिकाय। तो महादेव के लागा तू खाय।। आदेश कामरू कामाख्या माई। आदेश हाड़ी दासी चण्डा की दोहाई।।

दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी का।। बन में ब्याई अंजनी। जिन जायाहनुमन्त।। कीड़ा मकुड़ा माकड़ा। ये तीनों भस्मन्त।। गुरु की शक्ति। मेरी भक्ति।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण के समय ११ माला जप हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय नीम की डाली लेकर दर्द वाले स्थान पर छुआते हुए मंत्र जपते हुए ही २१ बार झाड़ा करें तो उस व्यक्ति का दाँत/दाढ़ का दर्द कुछ ही क्षणों में दूर हो जायेगा तथा वह व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा, फिर रोगी व्यक्ति से पीला प्रसाद बटवा दें।

वायु नाशक हनुमान् मन्त्र

पर्वत पर बाइल काग। कै अण्डे, कै बच्चे? सात अण्डा, सात बहिन।। कौन-कौन बहिन? दाँत-चमोकनी मुँह-चमोकनी। आँख-चमोकनी। पैर-चमोकनी।। हाथ-चमोकनी।। बाय-बाय री हरहुल्ला। आवेगा अनुमान बाबा।। मारेगा लोहे का सोटा।। भाग-भाग रे बहन चोदबाय, सात समन्दर पार।। हुई जाय।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री महावीर बजरंगी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय वायु-रोग से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से करें तो पीड़ित व्यक्ति वायु-रोग से निदान पाएगा।

समस्त व्याधियाँ नाशक हनुमान् मन्त्र

कौरव-पाण्डव कहाँ गए? बन में गए। बन में क्या करेंगे? बन कटवाएँगे बन कटा के क्या करेंगे? सहस्त्र मन कोयला करेंगे? सहस्त्र मन कोयले का क्या करेंगे? छप्पन-छुरी बनाएँगे। छप्पन-छुरी का क्या करेंगे? बाय को, चीस को, भड़क को, फुँसी को, फोड़े को, टोक को, नजर को, सिर-दर्द को काट-पीट के खारे समुन्दर में बहाएँगे। खारे समुन्दर में बहा के क्या करेंगे? बहोड़ (बहुर) के उल्टे न आवे ईश्वरो वाचा, पिण्ड कांचा मेरे गुरु का शब्द सांचा देखूँ बाबा हनुमान। तेरे शब्द का तमाशा

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री राम-दूत हनुमान विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए १ माला का जप प्रतिदिन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय मंत्र में कहे समस्त रोग-दोष का झाड़ा करने से नाश होता है।

बाय रोग झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो तडम। उतड भड तेल करे।। दीजे बाती तैल बरै। गलत-सलत।। तू बाई रोग। निनाई रहै:। तो यति हनुमन्त। की दुहाई फिरै।। शब्द सांचा। पिण्ड काँचा।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मन्त्र को ग्रहण-काल, होली, दीपावली में श्री बजरंगी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र से बाय वाले रोगी का झाड़ा "भस्म" से करें तो रोगी बाय-रोग से निदान पाये।

कान दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र

आसमीन नगोर। वन्ही कर्म न जायतं।। दोहाई महावीर की। जो रहे कान की पौर।। अंजनी-पुत्र कुमार। वायु-पुत्र महाबल को मार।। ब्रह्मचारी हनुमन्तई। नमो-नमो।। दुहाई महावीर की। जो पीर मुण्ड की।।

विधि—इस मंत्र की साधन दीपावली की रात्रि में श्री रामदूत हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों को ध्यान में रख कर पाँच माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब कोई कान दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो साँप के बिल की मिट्टी लेकर इस मंत्र को जपते हुए २१ बार झाड़ा करे तो रोगी दर्द में आराम पाएगा।

अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी का। जैसे के लेहु रामचन्द्र।। कबूत ओसई करहु राध। बिनि कबूत पवनपूत।। हनुमन्त धाउ हर-हर। रावन कूट मिरावन श्रवइ।। अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड। अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ।। वाजं गर्भ हिश्रवइ स्त्री। षीलहि श्रवइ शाप हर-हर।। जंबीर हर जंबीर हर-हर। शब्द सांचा।। पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र।। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान ११ दिन का है, साधक श्री हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रातेदिन २ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र को जपते हुए अण्डकोश को हलके हाथ से मले तथा २१ बार जल को शक्तिकृत कर रोगी को पिलाए तो अण्डकोश वृद्धि शान्त हो जाती है, तथा मिट्टी के एक ढेले को २१ बार अभिमंत्रित कर साँप के बिल पर रखने से साँप निकल जाता है।

४. यदि बवासीर के मस्से फूले हुए हों और वे विशेष कष्ट दे रहे हों, तो गेंडे की जननेन्द्रिय को सुखाकर उसका कंकण बनवा लें और उसे रोगी के दाहिने

हाथ की कलाई में धारण करवायें, तो सभी मस्से सूख जायेंगे तथा बवासीर की पीड़ा भी शान्त हो जायेगी।

हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी का।। काली चिड़ी चिग-चिग करे। थोला आवे वाते आवे हरे।। यती हनुमान हाँक मारे।। मथवाई और वाई जाये भगाई। हवा हरे।। गुरु को शक्ति। मेरी भक्ति।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को होली या दीपावली की रात्रि को किसी कुएँ के ऊपर श्री हनुमान् जी की प्रतिमा स्थापित कर हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए, इस मन्त्र का अनगिनत जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय पृथ्वी पर मंत्र का जाप करते हुए २१ रेखाएं सीधी खींचे फिर रोगी को उन रेखाओं के पास बिठा कर इन रेखाओं के ऊपर रोगी के दोनों हाथ रखवा दें पुनः इन मंत्र से रोगी का २१ बार झाड़ा मोर पंख से या लोहे की वस्तु से करें, झाड़ा करते समय रोगी अचानक या अंजाने में आगे की ओर खिसक पड़ेगा तो उसकी मथवाय, वाय, हवादि रोग उसी क्षण नष्ट हो जाएँगी और वही सुखी होगा।

दाद झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ हाथ वेगे चलाई। आदि-नाथ, पवन-पूत।। हनुमन्त कर मोरकत। मेरु चाल, मन्दिर चाल।। नव-ग्रह चाल, दोष-चाल। दिनाई चाल, डोरी चाल। इन्द्रहि चाल, चाल-चाल। हनुमन्त बिना, सह-काल।। उठि विषि तरु-वर चाल। हम हनुमन्ते मुगरे।। लिंगडा परोरे वर्ध छले। तरुयरी घानपरि हि।। यष अष्टोत्तर-शत व्याधि। लावरे विशालाव अहरो।। विष आह।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण काल या दीपावली में श्री राम दूत हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए ११ माला जप व दशांश हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर ताँबे के कलश में शुद्ध जल भर कर २१ बार शक्ति-कृत कर दाद-वाले व्यक्ति को पिलायें, यह क्रिया नित्य करें जब तक दाद न दूर हो जाय।

आधा शीशी विनाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ कारी चिरई चौकही। राव तीरे बासा।। या किसी हाँक दे हनुमन्त वीर, आधा-शीश विनाशा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में पवन-पुत्र हनुमान् विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर

आधा-शीशी दर्द से पीड़ित व्यक्ति का उपलों की राख से झाड़ा करने से आधे शीशी का दर्द दूर होता है।

कान की पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

वनरा गाँठि वानरी। तो डाँटे हनुमान, कंठ।। बिलारी, बाधी, थनैली। कर्ण मूल, सम जाइ।। श्री रामचन्द्र की बानी। पानी पथ होइ जाइ।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक अंजनी-पुत्र श्री बीर बजरंगी के समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर जब कान की पीड़ा से व्यक्ति आये तो मोर पंख की भस्म से २१ बार झाड़ा करें, तो रोगी व्यक्ति की पीड़ा दूर हो, वह सुखी होवे।

नकसीर रोग निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरू जी का।। सार-सार। महा-सागरे बाँधूँ।। सप्त बार फिर बाँधूँ। तीन बार लोहे की।। तार बाँधूँ। सार बाँधेहनुमन्त वीर।। पाके न फूटे। तुरन्त सेखे।। आदेश। आदेश। आदेश।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में ११ माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, साधन में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करें एवं जब किसी व्यक्ति के नाक से रक्त गिर रहा हो तो राख लेकर इस मन्त्र को जपते हुए २१ बार नाक का झाड़ा करें तत्काल ही नकसीर बन्द हो जाएगी और पीड़ित व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा।

समस्त रोग शान्ति का हनुमान् मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत। पर्वत ऊपर स्फटिक शिला।। स्फटिक शिला पर अंजनी। जिन जाया हनुमन्त।। नेहला-टेहलाकाँख की कखड़ाई।। पीले की आदटी। कान की कनफेट।। राल की बद। कण्ठ की कण्ठमाला।। घुटने का डहरु। दाढ़ की दढ़शूल।। पेट की ताप, तिल्ली किया। इतने को दूर करो।। भस्मंत न करे तो तुझे माता अंजनी का।। दूध पिया हराम। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु जी का।।

विधि—जो साधक ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो वह इस मंत्र का जप करते हुए रोगी का झाड़ा करे तो रोगी तत्काल रोग से निदान पाएगा।

आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र

बन में ब्याई अंजनी। कच्चे बन फल खाय।। हाँक मारी हनुमन्त ने। इस पिण्ड से आधा।। सीसी उतर जाय।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण काल में १० माला का जप श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रखते हुए करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर उस

आपके पास कोई आधा-सीसी दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो राख लेकर २१ बार इस मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा करें तो वह शीघ्र ही आधा सीसी दर्द से निजात पायेगा।

डिब्बा (पल्ली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान् मन्त्र

ॐ सत्य नामआदेश गुरु जी का।। डंक खारी। खंखरा कहाँ गया? सवा लाख पर्वतो गया। सवा लाख पर्वतो जाय क्या करेगा? सवा भार को कोयला करेगा।। सवा भार कोयला कर क्या करेगा? हनुमन्त वीर नव चन्द्रहास खड्ग घड़ेगा।। नव चन्द्रहास खड्ग घड़ क्या करेगा? जात व ढोख पसली बाय काल कूट खारो समुद्र नखेगा। जगद्गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में ११ माला जप श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान में रखकर करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय तिल के तेल में असली सिंदूर मिला कर डिब्बा वाले बालक का झाड़ा करने से वह बालक शीघ्र ही इस रोग से निदान पाता है।

नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो। झल-मल।। जहर भरी तलाई।। अस्ताचल पर्वत ते आई।। तहाँ बैठा हनुमन्त जाई।। फूटे न पाकै करै न पीड़ा यती हनुमन्त राखै हीड़ा।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरो मन्त्र। इश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में सात माला का जप, हनुमान् जी के विषयक सभी नियम मानते हुए करने से यह मंत्र सिद्ध होता है, फिर आवश्यकता के समय में निम्बू की टहनी लेकर २१ बार रोगी के नेत्रों का झाड़ा मंत्र जपते हुए करने से वह नेत्र पीड़ा से मुक्ति पाता है।

बवासीर नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ काका कता। क्रोरी कर्ता।। ॐ करता से होय। यरसना दश हूँस प्रकटे।। खूँनी-बादी बवासीर न होय।। मन्त्र जान के न बताए, द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय। लाख जप करे तो उसके वंश में न होय।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक श्री हनुमान् जी के नेयमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रात्रि का रखा हुआ पानी लेकर, इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन करें तो खूनी और बादी बवासीर दोनों ठीक हो जाती है।

बगली दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र

वात् वात्। अकाल वात्।। अन्ध वात्। कुन-कुने वात्। कुट-कुटे वात्। आभार प्रति चक्रे शीघ्र फाट।। तौमार डांके। पवन-पुत्र हनुमान कार आज्ञाय।। राजा श्रीरामेर आज्ञाय।।

विधि—इस मंत्र को होली की रात्रि या मंगल-पुष्य नक्षत्र में हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए सात माला जप करें, तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता होने के समय में २१ बार झाड़ा करने तथा शुद्ध पीली सरसों का तेल को लेकर २१ बार अभिमंत्रित कर दर्द वाले स्थान पर मर्दन करने से रोगी शीघ्र रोग से मुक्ति पायेगा, रोगी के ठीक हो जाने पर रोगी व्यक्ति से सात बालकों को मीठा भोजन तथा हनुमान् जी को चोला व लंगोट चढ़वायें।

आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश-। गुरु जी का।। काली चिडी चिग-चिग करे।। घोली आवै वासे हरै। जती हनुमन्त। हाँक मारे।। मथवाई और। आधा-सी सी नाशै।। गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रख सात माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर रोगी का माथा पकड़ कर इस मंत्र से २१ बार झाड़ा करने सेरोगी व्यक्ति का आधा-सीसी का दर्द थोड़ी देर में दूर हो जाएगा।

उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी। नौ से नाड़ी।। बहत्तर कोठा। चलै अगाड़ी।। डिगै न कोठा। चले नाड़ी।। रक्षा करे यती। हनुमन्त की आन।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री पवनतनय के सभी नियमों को मानते हुए ११ माला का जप करें, तो मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति जिसकी नाभी उखड़ी होवे, उसे लिटा करके उसकी नाभि के ऊपर एक ऐसा बाँस का पोला, जिसमें कि नौ गाँठ हों, खड़ा कर दें और इस मंत्र को जपते हुए २१ बार फूँक बाँस के छेद में जोर-जोर से मारें तो उखड़ी हुई नाभि ठीक हो जायेगी।

बाला झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वारा रे। तू सदा बलवन्ता।। बाला ने खोदे। हनुमन्ता।। शब्द साँचा। पिण्ड काँचा।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मन्त्र को होली, दीपावली या पर्व-काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय साँभर नमक की कंकड़ी को २१ बार शक्तिकृत कर बाला वाले स्थान पर २१ बार झाड़ा करें, जब तक पीड़ा न दूर होवे तब तक रोज ही झाड़ा करें।

नोट—यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्ध करने के लिए किसी भी तांत्रिक या पहुँचे हुए व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। अन्यथा फायदे की जगह आपको नुक्सान हो सकता है।

सिर दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र

लंका में बैठ के। माथ हिलावे हनुमन्त।। सो देखि के राक्षस। गण पराय दूरंत।। बैठी सीता देवी। अशोक वन में।। देखि हनुमान को। आनन्द भई मन में।। गई उर विषाद देवी। स्थिर दरशाय।। ''अमुक'' के सिर। व्यथा पराय।। ''अमुक'' के नहिं कछु। पीर नहिं कछु भार।। आदेश कामाख्या हाड़ी। दासी चण्डी की दोहाई।।

विधि—इस मंत्र का सात दिन का अनुष्ठान है, साधक श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा और जब आवश्यकता हो तो रोगी व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें और उसके सिर को हाथ से पकड़ कर इस मंत्र को जपते हुए राख द्वारा २१ बार झाड़ा करें तो उसका सिर-दर्द दूर हो वह सुख का अनुभव करे।

(अमुक की जगह पीड़ित का नाम उच्चारण करें)

आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वन मे। ब्याई बानरी।। उछल वृक्ष पर। जाय, कूद-कूद।। शाखा नरी। कच्चे वन।। फल खाय। आधा तोड़े।। आधा फोड़े। आधा देय गिराय।। हंकारत हनुमान जी। आधा सीसी जाय।।

विधि—इस मंत्र की सिद्धि के लिए ग्रहण काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए १० माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। फिर जब कभी आवश्यकता हो तो राख (भस्म) लेकर आधा-सीसी से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा करे तो वह शीघ्र ही सुख का अनुभव करेगा।

नेत्र रोग नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वने बिआई। बानरी जहाँ-जहाँ।। हनुमन्त। आँखि पीड़ा।। कषावरि गिहिया। लाइ चरिउ जाइ।। भस्मन्तन। गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति।। फुरो मन्त्र।। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए १० माला का जाप करें तो यह सिद्ध होगा। फिर जब आवश्यकता हो तब नेत्र रोग से पीड़ित व्यक्ति के आँख पर हाथ फेरते हुए २१ बार इस मन्त्र को जपते हुए फूँक मारें तो रोगी की व्यथा मिट जाएगी और वह सुखी होगा।

दन्त पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ राई-राई। तू मेरी माँई।। धरती नी धूलि। मसानी छाई।। सात खवाई। सो हनुवन्त।। की दुहाई। मारा गुरु।। जपत जलत बाई। हालि मन्त्र गुरु खवाई।। मेरी भक्ति। गुरु की शक्ति।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, श्री हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब दाँत के दर्द वाला कोई व्यक्ति आये तो इस मंत्र को जपते हुए २१ बार झाड़ा करने से शीघ्र ही दाँत दर्द से पीड़ित व्यक्ति आराम पायेगा।

स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान् मन्त्र

हनुमान हठीले। लोहे की लाट।। वज्र का खीला। भूत को बाँध।। प्रेत-को बाँध। मैली कुचमैली।। कूँख मैली, रक्त मैली। ऐसी चौदा मैली। पकड़ चोटी न निकाले। तो अंजनी का दूध।। हराम करे। महादेव की जटा। में आग लगे। ब्रह्मा के वचन से।। राम चन्द्र के वचन से। मेरे वचन से।। मेरे राजगुरु। के वचन से।। इसी वक्त भाग जा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान २१ दिन का है, साधक केशरी नन्दन बजरंग बली विषयक सभी नियमोंका ध्यान रख कर प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से इस मंत्र को जपते हुए करें तो रोगी रोग से निदान पायेगा।

सर्व-शूल नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो भगवते। चिन्तामणि हनुमान?। अंग-शूल, अति-शूल। कटि-शूल, कुक्षि-शूल।। गुद-शूल, मस्तक-शूल। सर्व-शूल, निर्मूलय।। निर्मूलय, कुरु-कुरु स्वाहा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में केशरी-नन्दन हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप व दशांश हवन करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय-शूल-ग्रस्त रोगी व्यक्ति को अभिमन्त्रित जल पिलायें या भस्म अभिमन्त्रित कर खाने को दें अथवा एक निम्बू शक्ति-कृत कर शूल-ग्रस्त भाग के ऊपर फिरायें, बाद में उस निम्बू को नदी या तालाब में विसर्जित

कर दें इन तीनों प्रयोगों से रोगी की शूल-व्याधि नष्ट होगी, शूल रोग जब अच्छा हो जाय तब यथा शक्ति दान-पुण्य अवश्य करवायें।

रोग-दोष नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी का।। अहल बाँधूँ। जहल बाँधू।। अंबर तारा अस्सी। कोस की विद्या बाँधूँ।। बाँधूँ नदी की धारा। बाँधू तर्कशास्त्र का तीर।। मस्तक बैठा। हनुमन्त वीर।। वीर हनुमन्त से। क्या-क्या चले?।। चौंसठ चक्र चलै। चौंसठ चक्र से।। क्या-क्या चले? भूत-चले। प्रेत-चले।। राक्षस चले। ब्रह्म-राक्षस चले।। चुड़ैल चले। सोखा तपोखा चले।। पर्वतऔ धरणी चले। चौंठ योगिनी चलै।। ताप-तिजारी चलै। नव नाड़ि, बहत्तर।। कोठां माँहे सो निकाले। "अमुक" को आराम करे।। न निकाले, तो राजा। राम चन्द्र की दुहाई।। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री हनुमान विषयक सभी नियमों को मान कर प्रतिदिन १ माला जप तथा दशांश हवन करें तो यह सिद्ध होगा, आवश्यकता के समय मोर पंख द्वारा रोगी का २१ बार झाड़ा करने में समस्त रोग-दोष दूर होते हैं।

दुर्बलता दूर करने का हनुमान् मन्त्र

तू है वीर। बड़ा हनुमान।। लाल लंगोटी। मुख में पान।। एर-भगावै। वैर-भगावै। "अमुक" में। शक्ति जगावै।। रहे इसकी काया। दुर्बल तो माता।। अंजनी की आन। दुहाई गौरा। पार्वती को।। दुहाई राम की। दुहाई सीता की।। लै इसके पिण्ड की खबर। न रहै इस पे कोई कसर।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री बजरंग बली के सभी नियमों का पालन करते हुए १ माला प्रतिदिन जपें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, आवश्यकता के समय इस मंत्र को जपते हुए मोर पंख द्वारा २१ बार झाड़ा करें तो रोगी व्यक्ति की दुर्बलता दूर हो एवं उसके सभी रोग-दोष दूर होते हैं।

रोग लकवा ठीक करने का मंत्र

"ॐ नमो गुरुदेवाय नमः, ॐ नमो महादेवाय नमः, ॐ नमो उस्ताद गुरु कूं, ॐ नमो आदेश गुरु कूं, आदेश जमीन आसमान कूं, आदेश पवन पाणी कूं आदेश चंद्र सूरज कूं, आदेश नवनाथ चोरासी सिद्ध कूं, आदेश गूंगी देवी, बहरी देवी, लूली देवी, पांगुली देवी, आकाश देवी, पाताल देवी, उलूझणी देवी, पूकंनी देवी, टकंटुकी देवी, आरीदेवी, चंद्रगेहली देवी, हनुमान जाति अंजनी का पूत, पवन का व्याती, वज्र का कांच, वर्ज का लंगोटा ज्यू

चले, ज्यू चल, हनुमान जति की गदा चले ज्यू चल, राजा रामचंद्र का बाण चले ज्यू चल, गंगा, जमना का नीर चले ज्यू चल, दिल्ली आगरा का गैलो चले, ज्यू चल, कुम्हार का चाक चले ज्यू जल, गुरु की शक्ति हमारी भक्ति, चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।''

विधि—चदंन का धूप लगाकर, मोरपंख से दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) झाड़ा देना, प्रत्येक झाड़े में मंत्र को सात बार बोलना २१ दिन तक लगातार यह प्रयोग करने से लकवा ठीक ही जाता है। परंतु २१ दिन तक नित्य तीन बार खेजड़ी सींचनी जरूरी हैं। व्यक्ति के ठीक हो जाने पर 'उतारा' करना भी जरूरी है।

रोग बिच्छू का विष उतारने का मंत्र

ॐ नमो सुरह पर्वत पर जाप हरी दूव खाती फिरे, ताल-तलैय्या पानी पीएं, सरह गाय ने गोबर किया, जा में उपजे बिच्छू सात काले पीले, धौले लाल रंग बिरंगे और हराल उतर रे उतर बिच्छू का जाया नहीं तो गरुड़ जी डडके आया, सत्य नाम आदेश गरु का, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

उपर्युक्त मंत्र का झाड़ा मोर पंख से पीड़ित व्यक्ति को २१ बार देने पर बिच्छू का विष उत्तर जाता है।

रोग दन्त शूल नाशक मंत्र

अग्नि बांधौ अनिश्वर बांधौ सौलाल विकराल, बांधौ लोहा लुहार बांधौ वज्र के निहाय वज्र घन दांत विहाय तो महादेव की आन।

इस मंत्र को नौ दिन तक रात्रि में नित्य २१०० बार जाप करके सिद्धि कर ले, तब प्रयोग करना हो तो तर्जनी अंगुली से २१ बार मंत्र पाढकर जार देने से दूर हो जाता है। दांत वज्र के समान मजबूत हो जाते हैं।

पूर्व स्नानादि से पवित्र होकर करे। साधना करते समय एक समय भोजन करे तो साधना शीघ्र ही फलीभूत होती है।

रोग प्रेमिका (पत्नी) को वशीभूत करने मंत्र

ॐ शिवे भगवे भगे-भगे भंग, क्षोभय-क्षोभय, मोहय, मोहय, छादय-छादय, क्लेदय क्लेदय क्लीं शरीर ॐ फट् स्वाहा।

यह मंत्र एकांत में जिस किसी भी स्त्री की फोटो के सामने १०८ बार पढ़ा जाएगा, वह युवती काम के वशीभूत होकर दौड़ी चली आएगी यदि ७ दिन तक सोते समय बराबर प्रयोग किया जाए तो अभीष्ट स्त्री कामातुर होकर रात्रि में सेज पर आवेगी, ध्यान रहे, सावधान। इस मंत्र का गलत प्रयोग न करे। मंत्र से गलत कार्य न करे, वरना जातक का भयंकर अहित हो सकता है।

रोग बवासीर (खूनी) दूर करने का मंत्र

ॐ नमो हनुमंत, मेरी पीड़ा तेरी पीड़ा हर ले हनुमंत मेरी पीड़ा, बवासीर को ठीक कर, तुझे शपथ लक्ष्मण भाई की, तुझे शपथ सीता माई की;

इस मंत्र के १,००० जाप करने पर खूनी बावासीर बंद हो जाएगा। जब भी बवासीरर की तकलीफ बढ़ने लगे तो इस मंत्र का जाप आपको निश्चित रूप से लाभ प्रदान करेगा। जब तकलीफ बढ़ जाए तो २१ बार मंत्र जाप करते हुए एक मौली पीड़ित व्यक्ति के हाथ में बांध दे। खूनी बवासीर बंद हो जाएगा।

रोग नेत्र पीड़ा नाशक मंत्र

नमो रामजी धनी लक्ष्मण के बान। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कँवर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र का जाप किसी शुभ मुहूर्त (पुष्य नक्षत्र, रवियोग, अमृत सिद्ध) योग के समय आरंभ करके २१ दिवस तक १०००० जाप रोज करके, धूप, दीप और नैवेध आदि से पूरे मन से लक्ष्मण जी की पूजा करे तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता पड़ने पर केवल १०८ बार मंत्र पढ़कर जार देने से कैसा भी नेत्ररोग या नेत्र सम्बन्धी पीड़ा दूर हो जाती है।

रोग शिरः शूलादिशामक मंत्र

वन में ब्याही अजंनी कच्चे फूल फूल खाय। हाक मारी हनुमंत ने इस पिण्ड से आधा सीस उतर जाय।

कृष्ण पक्ष की चौदस (चतुद्रशी) तिथि को श्मशान में जाकर इस मंत्र के १०००० दस हजार जाप करके कुछ राख (भस्मी) अभिमन्त्रित कर ले। फिर रोगी के मस्तक पर राख (भस्मी) मलते हुए इस मंत्र के सात बार जाप करने से सिरदद्र ठीक ही जाता है।

रोग गांठ या फोड़े को ठीक करने के मंत्र

ॐ नमो हनुमंताय नमो ॐ नमो विष कटा नख फटा सिर कटा अस्थि मेद मज्जा फोड़ो फनसो आदी॰ हुंबल। रेल्या रोग रींघण वाय जावे चौसठ जोगनी बावन पीर, रक्षा कीजै भैख आय रक्षा कीजै। शब्द साँचा पिण्ड काच फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण काल में उक्त मंत्र सिद्ध होता है। सूर्य ग्रहण के समय विशेष रूप से फलदायी है। जब ग्रहणकाल में प्रयोग करना हो तो उस समय मोर की पंख को लेकर, मोरपंख से पृथ्वी साफ करते हुए, व उक्त मंत्र पढ़ते हुए सात बार जाड़े और

जमीन की धूल को प्रभावित स्थानों या फोड़े, फुँसी आदि पर लगावे, इससे निश्चित रूप से गांठ, फोड़े, फुन्सी आदि ठीक होगी।

मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र

ॐ नमः आज्ञा गुरु को केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै भेजी में कीड़ा करै न पीड़ा कंचन की छेनी रूपे का हथौड़ा पिता ईश्वर गाड़ इनको थापे श्री महादेव तोड़े शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो उवाच।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पहले १०८ बार पढ़कर सिद्धि कर लें, फिर प्रयोग करते समय राख को सात बार पढ़कर काटें तो मस्तक पीड़ा दूर हो जाता है।

सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर इक्कीस बार झाड़ने से समस्त शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दोबर रंग पीड़ा दूर कर सात समुद्र पार कर आदेश कामरु देश कामाक्षा माई हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो बन में बिआई बंदरी। खाय दुपहरिया कच्चा फल कंदरी। आधी खाय के आधी देती गिराय। हूकत हनुमंत के आधा शीशी चलि जाय।।

प्रयोग विधि—भूमि पर छुरी से सात रेखा खींच कर रोगी को सम्मुख बैठाकर सात बार मन्त्र पढ़ कर झाड़ने से आधा शीश का दर्द दूर होता है।

उदर वेदना निवारक मन्त्र

ऊं नून तूं सिन्धु नून सिंधु वाया। नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।। महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देऊं पीर भगाया।। आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई। आदेश हाड़ी रानी चण्डी का दुहाई।।

प्रयोग विधि—दाहिने हाथ की केवल तीन उँगलियों से सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से तीन बार पढ़कर, अभिमन्त्रित करें बाद में यह टुकड़ा रोगी को खिलाने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

नेत्र पीड़ा निवारक मन्त्र

ॐ नमः झिलमिल करे ताल की तलइया। पश्चिम गिरि से आई करन भलइया।। तहँ आय बैठेउ वीर हनुमन्ता। न पीड़ै न पाकै नहीं फूहन्ता।। यती मनुमन्त राखे होड़ा।।

प्रयोग विधि—सात दिन तक नित्य सात बार नीम की टहनी द्वारा झाड़ने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

रोग निवारण मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला फटिक शिला ऊपर अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त नेहला टेहला काँख की कखराई पीछे की आदटी कान की कनफटे रान की बद कंठ की कंठमाला धूटअने का डहरु डाढ़ की डढ़ शूल पेट की ताप तिल्ली किया इतने को दूर करे मस्मन्त नातर तुझे मा का दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

सिद्ध करने की विधि—सात शनिवार हनुमान् जी की मूर्ति के सम्मुख धूप दीप प्रज्वल्लित कर नैवेद्यादि अर्पित कर नित्य एक सौ आठ बार मन्त्र का जाप करें, मन को सर्वथा शुद्ध रखें, कामेच्छा आदि विकार मन में न आने पावे, इस प्रकार सिद्धि प्राप्त हो जाने पर कखबारी, बद, कंठमाला, दाढ़ शूल, कन फेर, अदीठ, रोगों को राख से एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ कर मन्त्र पढ़ कर झाड़ें तथा ताप, तिल्ली को छुरी से एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर झाड़ने से उपरोक्त रोग दूर होते हैं।

विशेष—रोग दूर हो जाने पर रोगी से हनुमान् जी को प्रसाद चढ़वा कर वितरित करें और किसी से कोई द्रव्य ग्रहण न करें।

ऋतु वेदना निवारण मन्त्र

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी-बड़ी अदरख पतली-पतली रेशे बड़े विष के जल फाँसी दे शेष गुरु का बचन जाय खाली पिया पञ्च मुण्ड के बाम पद ठेली विषहरी राई की दुहाई फिरै।।

प्रयोग विधि—अदरख को तीन बार मन्त्र पढ़ कर रोगिनी को खिलाने से ऋतुमती को वेदना शान्त होती है।

मासिक विकार दूर करने का मन्त्र

आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु को तोड़ू गाठ औंगा ठाली तोड़ दूँ लाय तोड़ि देऊँ सरित परित देकर पाय यह देखि मनुमन्त दौड़ कर आय अमुक का देह शांति वीर भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै।

प्रयोग विधि—एक पान का बीड़ा ले तीन बार मन्त्र पढ़ कर खिलाने से समस्त प्रकार के मासिक विकार दूर होते हैं।

प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। आं मुक्ता पाशा विपाशश्च मुक्ता सुर्य्येण रश्यमः।। मुक्ता सर्ध्व फयादर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतन्मत्रेणाष्ट वार जयनभि मनय पितम तत्क्षणात सुख प्रसवो भवति।।

प्रयोग विधि—केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुएँ का जल लाकर आठ बार मन्त्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है तथा बालक सुखपूर्वक होता है।

विशेष—एक हाथ से कुएँ का जल खींचने के बाद जमीन पर न रखना चाहिये अन्यथा प्रभाव निष्फल होगा।

मृगी रोग हरण मन्त्र

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्री राम जी फूँके। मृगी बाई सूखे, सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।।

प्रयोग विधि—भोजपत्र पर अष्टगन्ध से इस मन्त्र को लिखकर गले में बाँधने मात्र से मृगी रोग चला जाता है।

रतौंधी विनाशक मन्त्र

ॐ भाट भाटिनी निकली कहे चलि जाई उस पार जाइब हम जाऊं समुद्र। भाटिनी बोली हम बिछाइब हग उपसमाशि पर मुन्डा मुन्डा अंडा।

नैन वेदना विनाशक मन्त्र

नमो राम जी धनी लक्ष्मण के बान। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुवंर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मन्त्र का किसी शुभ मुहूर्त में जाप प्रारम्भ करके इक्कीस दिवस तक दस हजार बार नित्य जाप कर धूप दीप और नैवेद्य आदि से मनोयोग पूर्वक लक्ष्मण जी की पूजा करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता होने पर केवल एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ झार देने से नेत्रों का दर्द दूर हो जाता है।

मस्तक शूल विनाशक मन्त्र

''निसुनीह रोई बद कर मेघ गरजहि निसु न दीपक हलुधर फुफुनिबेरि फूनि डमरु न बजै निसुनहि कलह निन्न पुटु काच मई।''

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को इक्कीस सौ बार जाप कर सिद्ध कर लेना और प्रयोगावसर पर केवल इक्कीस मन्त्र को पढ़कर फूँक मार देने से दर्द देवता भाग जाते हैं।

आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र

''सातों रीदा सातो भाई भातों मिल के आँख बराई दुहाई सातों देव की, इन आंखिन पीड़ा करै तो धोबी को नाँद चमार के चूल्हे परै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

इस मन्त्र को दीपावली या होली की रात्रि से प्रारम्भ कर इक्कीस दिवस तक नित्य एक सौ आठ बार जाप कर पूजन करने से यह सिद्ध हो जाता है और

आवश्यकता के समय केवल इक्कीस बार मन्त्र पढ़ फूँक मार देने से दर्द देवता विदा हो जाते हैं।

दन्त शूल नाशक मन्त्र

अग्नि बांधौ अग्नीश्वर बाँधौं सौलाल बिकराल बाँधौ लोहा लुहार बाँधौ बज्र के निहाय वज्र घन दाँत विहाय तो महादेव की आन!।

इस मन्त्र को केवल नौ दिन तक रात्रि में नित्य इक्कीस सौ बार जाप करके सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो तो तर्जनी उंगली से इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर झाड़ देने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है।

तपेदीक (टी० बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र

ओम् कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिन्ना नन्द मावह। ज्वरं मृत्यु भयं घोरं विषं नाशय में ज्वरम्।।

आम के एक सौ आठ ताजे पत्ते तोड़ शुद्ध गाय के घी में डुबा दें, यदि घी कुछ कम हो तो पत्तों पर चुपड़ दें और जिस स्थान पर रोगी की शय्या पड़ी हो आम, बेरी अथवा पलाश की लकड़ी की समिधा में अग्नि प्रज्जवलित करके उपरोक्त मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दें, यदि रोगी बैठने योग्य हो तो उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा दें यदि रोगी बैठने के योग्य न हो तो उसकी चारपाई हवन कुण्ड के समीप ही डलवा दें और हवन के समय रोगी का मुँह खुला रखें। इस प्रकार की क्रिया से साधारण ज्वर तो केवल तीन या पाँच दिन में ही दूर हो जाते हैं और पन्द्रह या इक्कीस दिवस में टी० बी० जैसे राज रोग भी सदैव के लिये दूर हो जाते हैं।

हवन सामग्री में निम्न वस्तुयें बराबर-बराबर लेकर मिला लेना चाहिये। मण्डूक पर्णी, गूगल, इन्द्रायण की जड़, अश्वगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, बांसा, गुलाब के फूल, शतावरी, जटामांसी, जायफल, बंशलोचन, रास्ना, तगर, गोखरू, पाण्डरी, क्षीर काकोली, पिश्ता, बादाम की गिरी, मुनक्का, हरड़ बड़ी, लौंग, आँवला, अभिप्रवाल, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्र वामड़ी, खूब कला, अपामार्ग, चीड़ का बुरादा उपरोक्त सब चीजें बराबर भाग तथा गिलोय चार भाग, कुष्ठ १। ४ भाग, केशर, शहद, देशी कपूर, चीनी, दस भाग तथा गाय का घी सामर्थ्य के अनुसार जितना डाल सकें। समिधा ढाक, शुष्क बांस या आम की ही होनी चाहिये। हवन काल में अन्य कोई औषधि न देना चाहिये।

पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र

हं मन्दिर के किनारे सुरहा गाय सुरहा गाय के पेट में उच्छा बच्छा के

पेट में कलेजा कलेजा के पेट में डब डब कर उमा बढ़े दुहाई लेना लोना चमारी की।

इस मन्त्र को होली, दीपावली की रात्रि या ग्रहण के अवसर पर पवित्रता पूर्वक १००८ बार लोहबान की धूनी देते हुए जाप कर सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो एक सेर लकड़ी और उंगली के नाप की सात सींकें लेकर इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर झारने से पसली रोग से मुक्ति मिल जाती है।

बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो गुरह गाय पर जाप हरी दूब खाती, फिर ताल तलैया पानी पीवे, गुरह गाय ने गोबर किया, जिसमें उपजे बिच्छू सात, काले, पीले, भूरे और हराल, उतरे रे जहर बिच्छू का जाय, नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम, आदेश गुरु का, शब्द साँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—दीवाली के दिन इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर जिसे बिच्छू ने काटा हो इस मन्त्र को पढ़ कर (फूँक कर) पानी पिलावें तो विष उतर जायेगा।

दूसरा मन्त्र (डंक झाड़ने का)

ॐ सुमेर पर्वत नोना चमारी सोने रायी, सोने के सुनारी हुकबुक वाद-विलारी, धारिणी, नला, कारि-कारि समुद्र पार बहायो दोहाई नोना चमारी की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लें। जब किसी को बिच्छू काटे तो इस मन्त्र से इक्कीस बार पढ़ कर झाड़ें तो बिच्छू का विष उतर जायेगा।

मन्त्र—ओम् सुखं शिर, काली माई स्याहा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को प्रात:काल चारपाई पर से उठते ही और जैसे ही पृथ्वी पर पैर रखा जाये तब इस मन्त्र को पढ़ लें तो आपका सारा दिन ठीक रहेगा और सर्प-बिच्छू आदि से बचेंगे। (सर्प-बिच्छू नहीं काटेगा)।

पीलिया (कँवर) का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल असुराल नाहर सिंह देव जी स्वादी तरवादी सुभाल तुभाल, पीलिया को काटे, झारे पीलिया रहे न नेक निशान, जो रह जाय तो हनुमान की आन।

प्रयोग विधि—शुद्ध सरसों का तेल एक कटोरे में लेकर रोगी के मस्तक पर सफेद चन्दन से सात बार मलें और प्रत्येक बार मन्त्र का उच्चारण करता जायें और कम-से-कम दिन भर में दो बार प्रयोग करें।

ज्वर नाशक तन्त्र धूप

देवदारू, इन्द्रावणी, लोहबान, गोदन्ती, हींग, सुगंध वाला, कुटकी, नींबू के पत्ते, वच, दोनों कराई, चव्य, सूखा बिनौला, जौ, सरसों, शुद्ध घी, काले बकरे की बाल, गोर शिखा इन सब चीजों को लेकर बैल के मूत्र में पीस कर मिट्टी के कोरे बरतन में रख छोड़ें। इसे माहेश्वर धूप कहते हैं। इसकी धूनी देने से सब प्रकार के ज्वर तथा उन्मत्त रोगी को यह धूप देने से ग्रह, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, नाग, पूतना, शाकिनी, डाकिनी आदि तथा अन्य विघ्न भी क्षण में दूर होते हैं। यह परीक्षित है।

ज्वर नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये। पिशाचाधिपतये आवश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को कागज के ऊपर कोयले से लिख कर दाहिनी भुजा पर बाँधे तो नित्य आने वाला ज्वर दूर हो।

ज्वर नाशक अन्य मन्त्र

श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च। ऊषा स्मरण मन्त्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते।।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को कागज पर लिख कर धूप-दीप देकर गले में बाँधने से ज्वर दूर होता है तथा उसका जाप करने से भी ज्वर दूर होता है।

बाई झारने का यन्त्र

ओम् मूलनमः धुक्षतमः जाहि जाहि ध्वांक्ष तमः प्रकीर्ण अंग प्रस्तार प्रस्तार मुंच मुंच।

प्रयोग विधि—मंगलवार या रविवार को तिलोई पक्षी के पंख से झारें तो बाई दूर होती है।

बालकों को रोना दूर करने का मन्त्र

वावति-वावति-छोटी वावति, लम्बी केश वावति, चललीं कामरु देश, कामरु देश से आइल भगाना सिर लोट पर चढ़े मसाना, ठोकर मारी तीन, दीख लेब छीन सत्य नाम कामरु के, विद्या नोना योगिनी के, सिद्ध गुरु के वन्दौं पाँव।

प्रयोग विधि—जो बालक अधिक रोता हो या दीठ लग गई हो तो उस बालक के सिर पर हाथ रख कर मन्त्र पढ़कर फूँक मारें।

जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो कीड़ा रेकुण्ड कुण्डालों लाल पूँछ, तेरा मुँह काला। मैं

तोंहि पूँछा कंह से आका, तूने सब माँस खाया। अब तू जा, भस्म हो जाय, गुरु गोरख नाथ की दुहाई।

प्रयोग विधि—नीम की हरी ताजी डाली से मन्त्र पढ़ कर सात-बार झाड़े तो सब कीड़े मर जायेंगे।

वायु गोला का मन्त्र

ओम् ऐ चा चा।

प्रयोग विधि—चाकू से बीस आड़ी और चालीस खड़ी लकीरें खींच कर इस मन्त्र को पढ़ कर उसे फूँकें तो वायु गोला का रोग जाता है।

वायु गोला झाड़ने का मन्त्र

कान्हपुर हाई कहाँ चले वनही चले वागहे के कोयला कोयला का करवेह सारी पत्रखण्ड कर बेहु अष्टोत्तर दाँत व्याधि काटे के सिर रावण का दश, भुजा बीस, ककुही वर वटी वायु गोला बाँधू गुल्म महादेव गौरा पार्वती के नीलकंठ लोना चम्माइन की दुहाई।

इस मन्त्र से वायु गोला झारे तो लाभ होता है।

कान का दर्द झाड़ने का मन्त्र

आसमीन नगोट वन्ही कर्म हीन न जायते, दोहाई महावीर की जो रहे कान की पीर अंजनी पुत्र कुमारी वायु पुत्र महाबल को मारी ब्रह्मचारी हनुमन्तई नमो नमो दोहाई महावीर की जो रहे पीर मुण्ड को।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पढ़कर कान तथा माथे पर फूँक मारें।

मृगी (मिरगी) का मन्त्र

ओम् हाल हलं स्मगत मंड़िका पुड़िया श्रीराम फुंकै मिरगी वायु सूखे।। ओम् ठः ठः स्वाहा।।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर किसी ताँबे के यन्त्र में भरकर बाँधने से मृगी रोग दूर होता है।

प्रसव आसानी से होने का मन्त्र-यन्त्र

मन्त्र—**अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी। तस्याहः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्।।**

प्रसव वेदना से गर्भिणी बहुत परेशान हो तो वट (बरगद) के पत्ते पर ऊपर लिखा यन्त्र तथा मन्त्र लिखकर उसके (गर्भिणी) के मस्तक पर रखने से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

दूसरा प्रसव मन्त्र

गंगा तीरे तसेत काशी चरतेय हिमालये। तस्याः पक्षच्युतं तोयं पाप येच्चैव तत् क्षारणात्।। ततः प्रसूयते नारी काक रुद्रो वचो यथा।

प्रयोग विधि—श्वांस को रोककर जितनी बार यह मन्त्र जपा जा सके उतनी बार जप कर, गुड़ या गरम जल अथवा गरम दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी को लिखाने तथा पिलाने से प्रसव बालक सुखपूर्वक पैदा होगा। यह परीक्षित है।

आँख दुखने का मन्त्र

ओम् नमो झल मल जहर नली तलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहँ जा बैठा हनुमान जाई, फूटे न पाके करे न पीड़ा यती हनुमन्त की दोहाई।

प्रयोग विधि—नीम की हरी पत्तीदार डाली से सात बार मन्त्र पढ़कर झाड़ना चाहिये।

जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र

अर्जुन फलानी जिस्न सेत बाजी कपिध्वज, गिरिउ विकामुक पार्थर्व सव्य साची धनंजयः इति अर्जुन दश नामानि पशु पीड़ा हराणिचः।

प्रयोग विधि—नीम की डाली से मन्त्र द्वारा (मन्त्र पढ़ कर) झारना चाहिये।

आधा शीशी झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो वन में बसी बानरी, उछल, पेड़ पर जाय, कूद-कूद डालन पर फल खाय, आधी तोड़े-फोड़े आधा शीशी जाय।।

प्रयोग विधि—जमीन पर हाथ से सात सीधी लकीरें खींचे तथा फिर सात आड़ी रेखाओं से उन्हें काटते जायें। इस प्रकार सात बार करके रोगी के माथे पर फूंक मारते जायें और हाथ फेरते जायें तो आधा शीशी जाये।

रतौंधी झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र पढ़-पढ़ के फूँके भाट भाटिन संग चली कहाँ जाव, जायेउ समुद्र पार, भाटिन कहा मैं विआयेऊ कुश की छाली विआयेऊ उपसमा छीकर मुद्रा अंडा धों सो हिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल तर कर केदार पानी भरत रहै उन देखे पावा बालाउ गोडिया मेला उजाल तोके मैं अधोखी ईश्वर महादेव की दोहाई, हनुमान कै दोहाई यही समय उतरि जाइ।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पढ़कर सात बार झाड़े।

बवासीर झाड़ने का मन्त्र

ओम छई छलक कलाई आहुम आहुम कं कां कीं हूँ फट् फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः।

प्रयोग विधि—इतवार और मंगलवार के दिन इस मन्त्र से पानी फूक कर आबदस्त लेने से बवासीर का रोग जाता है।

द्यूत विजय मन्त्र

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुञ्जां च मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत्।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि पुष्य नक्षत्र मे श्वेत गुञ्जा की जड़ लेकर दाहिने हाथ में बाँधने से जूए में विजय होती है।

अन्यत्। धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम्। हरितालसमायुक्तं तिलकं सुदिन कृतम्। अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी। विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शङ्करोदितम्।

अन्य प्रयोग : धतूरा, कनेर तथा अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ के साथ हरिताल को बकरी के दूध में पीसकर उत्तम दिन तिलक करने से राजकुल में, शत्रु के विरोध में तथा जूए में तत्काल विजयी होती है। यह शंकर का वचन है, अन्यथा नहीं हो सकता।

अन्यत्। हस्तनक्षत्र होय रवि, तादिन ऐसा करै उपाय। न्योतै पेडपवाण्डको, दिन पहेलेही जाय। रविदिन ताकूं ल्यायके, बांध दाहिनी बांह। खेलै जूवा जो कोई, जीतै संशय नाहि।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को रेड के पत्ते पर कौवे के पंख से स्याही द्वारा रात के समय शुद्ध होकर लिखे। इस ६४ कोष्ठ के यन्त्र में :

मेखैरकन्दयेरूपाजिजनंदनीचनः छदावींयमंत्रंषहेष्ठिवामोक्षिणपात्रम्।

इस ३२ अक्षर के मंत्र को अनुलोम और विलोम रीति से लिखकर भुजा में धारण करे। फिर जूआ खेलने पर साधक सदैव जीतेगा।

अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

याअववाविर्रिज्कुल्फतूहदूकानअमुकस्यवसतनअमुकस्यजारीगद्दीवहक्व-याफताहोयावा सितो। इति मन्त्रः।

गोमहिषी दुग्धवर्धन उपाय

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं करालिनि पुरुषसुखं मुखं ठं ठः। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अनेन मन्त्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अति क्षीरदास्ता भवन्ति।

इस मन्त्र से तृण आदि को १०८ बार अभिमन्त्रित करके गाय और भैंस आदि को खिलाना चाहिये। इससे ये पशु अधिक दूध देंगे।

भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र

''ओम नमो आदेश गुरू को ओम अपर के या कट मेष खम्ब प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पाँव देवी जंघा राखे काली का मस्तक राखे महादेव जी कोई या पिण्ड प्राण को छोड़े-छोड़े तो देवदानव भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी गण्डा ताप तिजारी जूड़ी एक पहरु दो पहरु सांझ को सबेरे को किया को कराया को उलट वाही के पिण्ड परे इस पिण्ड की रक्षा श्री नरसिंह जी करे शब्द सांचा पिण्ड कांचार फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।''

विधि—सूर्य या चन्द्र ग्रहण अथवा दीपावली की महानिशा में इस मंत्र को सिद्ध कर लिया जाये। सिद्ध के समय पूजा, प्रसाद, धूप, दूप, फूल, नैवेद्य आदि का ध्यान रखना चाहिए।

आवश्यकता होने पर इस मंत्र से सात बार जल से अभिमंत्रित करके रोगी को वह जल पिला दें साथ ही बाधाग्रस्त व्यक्ति को मोरपंख से मंत्रोच्चारण करते हुए सात बार झाड़ दें।

प्रेतादि दोष नाशक मंत्र

'ओम नमो आदेश गुरू को, लड़गढ़ी सों मुहम्मद पठाण, चढ्या श्वेत घोड़ा, श्वेत पलाण, भूत बाँधि, प्रेत बाँधि, चौसठ जोगिनी बाँधि, अड़सठ स्थान बाँधि, बाँधि, बाँधि रे चोखी तुरकिनी का पूत, बेगि बाँधि, जोतू न बाँधे तो अपनी माता की शैय्या पर पाँव धरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

यदि किसी को भूत-प्रेत-जिन्न इत्यादि ऊपरी बाधा का रोग लग गया हो तो इस गण्डे को रोगी के बांध देने से समस्त ऊपरी बांधाओं का नाश होता है। परन्तु ध्यान रखें कि यह प्रयोग आमजनों या साधारण मनुष्य के करने के लिए नहीं अपितु किसी आमिल या तांत्रिक द्वारा ही सम्पन्न किया जाना चाहिए।

इस प्रयोग को करते समय आमिल (तांत्रिक) को अपने पास दीपक जलाकर रखना चाहिए, लोबान की धूनी देवें तथा सीप में थोड़ी मिठाई अवश्य रखें।

अब रोगी के सिर से लेकर पाँव तक की लम्बाई का सात रंग वाला डोरा माप कर लेवें और उक्त मंत्र को पढ़ते हुए उस सूत के डोरे में ३१ गाँठें लगाकर गण्डा तैयार कर लें।

इस प्रकार से तैयार गण्डे को उस रोगी के गले में पहना देवें। गण्डे के प्रभाव से रोगी की समस्त ऊपरी बाधाएँ दूर हो जाती हैं।

ध्यान रखें कि पृथक्-पृथक् रोगी के लिए पृथक्-पृथक् ही गण्डा तैयार

किया जाता है। इस **'चमत्कारी गण्डे'** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंद्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

भूत-प्रतों को भगाने का तन्त्र

अन्य भूतों की अपेक्षा प्रेत अधिक शक्तिशाली और दुष्ट होता है। अगर आपके घर में लोग बार-बार बीमार पड़ते हों, स्त्री-पुरुष भयानक स्वप्न देखकर भय से चौंक उठते हों, कोई स्त्री पागल की तरह अनाप-शनाप बकती हुई भूत खेलती हो अथवा घर के छप्पर और हाते में ढेले, रोड़े अथवा हड्डियों के टुकड़े बरसते हों, तो समझना चाहिए कि आपके घर में भूतों के साथ ही प्रेत की भी बाधा है। ऐसी हालत में इस भयंकर भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र का प्रयोग कीजिए।

सर्वप्रथम एक मरे हुए कौवे को तलाश कर ले आइए। फिर मंगलवार को एक कच्चा बांस काटकर ले आइए। उस बांस को करची सहित आंगन में गाड़ दीजिए और उसकी चोटी पर उस मरे हुए कौवे को टांग दीजिए। बांस गाड़ने के पहले ही उस कौवे की उसकी चोटी से बांध देना चाहिए, जिससे गाड़ने के बाद चोटी पर टांगने में कठिनाई न पड़े।

इसके बाद अमावस्या की आधी रात को किसी कौवे के घोंसले से सात लकड़ियाँ, पांच पंख और कुछ बीट ले आइए, फिर आंगन के अन्दर तिकोना होम-कुंड खोदकर उसमें बेल, आम और नीम की सूखी लकड़ियाँ, चिड़चिड़ी, धूप, गुग्गल, जौ, तिल और घी के योग से निम्नलिखित काक-मन्त्र का पाठ करते हुए होम कीजिए।

ॐ काक-पच्यै नमः स्वाहा श्री फट्।

उपर्युक्त मन्त्र का पाठ करते हुए एक सौ आठ बार आहुतियाँ देकर होम-यज्ञ समाप्त कीजिए। याद रहे, होम के समय कौवे के घोंसले की लकड़ियाँ अन्यान्य लकड़ियों में मिला देंगे और पंख एवं बीट साकल में। इस प्रकार होम-यज्ञ समाप्त करने पर घर की सभी प्रेत-बाधाएं दूर हो जाएंगी।

इस होम की भस्म उठाकर मिट्टी के पके हुए पात्र में हिफाजत से रख दीजिए। जब कभी कोई स्त्री भूत-प्रेत खेले, तो कुछ भस्म उसके सिर पर छिड़ककर जरा-सी भस्म उसे चटा दिया कीजिए। उसी समय उसके शरीर से भूत-प्रेत की बाधा दूर हो जाएगी।

भूतप्रेत भगाने का मन्त्र

किसी उल्लू पक्षी को पकड़कर उसके दाएं डैने का एक बड़ा पंख निकाल

लें तथा उल्लू को छोड़ दें। फिर उस पंख को पानी से धोकर रख लें। अगले दिन प्रात:काल स्नानादि से पवित्र होकर पूर्व की ओर मुंह करके पद्मासन लगाकर बैठें और पंख को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार जप करें—

ॐ नमः रुद्राय, नमः कालिकायै, नमः चंचलाय, नमः कामाक्ष्यै, नमः पक्षिराजाय, नमः लक्ष्मीवाहनाय, भूतप्रेतादीनां निवारणं कुरु कुरु ठं ठं ठं स्वाहा।

हर बार मंत्र जप पूरा होने पर पंख के ऊपर एक फूंक मारते जाना चाहिए अथवा गंगाजल छिड़कना चाहिये। इससे पंख अभिमंत्रित हो जाता है। जब मंत्र जप पूरा हो जाए तो अभिमंत्रित पंख को लकड़ी की किसी पेटी के भीतर रेशमी वस्त्र में लपेटकर रख दें तथा आवश्यकता के समय उसे निकालकर प्रयोग में लाएं। जिस स्त्री अथवा पुरुष को भूत-प्रेत आदि लगा हो, उसे अभिमंत्रित पंख द्वारा १०८ बार झाड़ते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते रहने से भूत-प्रेत आदि दूर भाग जाते हैं। इस अभिमंत्रित पंख को तावीज में बंद करके भुजा अथवा कंठ में धारण करने से भूत-प्रेत कभी पास नहीं फटकते।

रविवार की अमावस्या को कहीं से एक उल्लू पकड़ लाएं। उल्लू को पकड़ते समय निम्नलिखित मंत्र का ७ बार उच्चारण करें—

ॐ नमो पक्षिराजाय नमो लक्ष्मी वाहनाय मम अभिलाषा पूर्ति कुरु कुरु स्वाहा।

फिर उस उल्लू के दाएं डैने तथा पूंछ का एक-एक पंख नोचकर अपने पास रख लें और उल्लू को उड़ा दें। दूसरे दिन प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर कुश के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर उल्लू के दोनों पंखों को अपने सामने रख लें। अब धूप, दीप, गंध, अक्षत एवं पुष्प आदि से उनका पूजन करके निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार जप करें—

ॐ नमः शिवाय, नमः कमलासनाय, नमः लक्ष्मी वाहनाय, नमः मनोभिलाषा पूर्ति करणाय, मम दुष्ट ग्रहं शान्तं कुरु कुरु स्वाहा।

इस विधि द्वारा २१ दिनों तक नित्य प्रात:काल उल्लू के पंखों का पूजन तथा मंत्र का जप करें। फिर उन पंखों को लाल रंग के किसी रेशमी कपड़े में लपेटकर अपनी दाईं भुजा में बांध लें। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में अभिचार कर्म, दुष्ट ग्रहों और भूत-प्रेत का प्रभाव दूर हो जाता है तथा मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

भूत-प्रेत से स्वयं मुक्ति

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो रुद्राय नमः सिद्धाय स्वाहा।

भूत बाधा से पीड़ित व्यक्ति द्वारा स्वयं इस मन्त्र का अपनी सामर्थ्य भर अधिक से अधिक संख्या में जप करते रहने से ही भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

भूत-प्रेत हटाने हेतु शक्तिशाली यन्त्र व मन्त्र

रवि, पुष्य, रवि मूल नक्षत्र अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में नीचे दिये यन्त्र को अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम द्वारा बनाएं और चांदी के तावीज में बंद

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय जंभय जंभय अंघय अंघय वधिरय वधिरय मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

करके, १२५०० बार मन्त्र का जप करें। फिर तावीज को काले डोरे की सहायता से दाएं बाजू पर धारण कर लें। यदि शत्रु आक्रमण करने आए तो तावीज पर बायां हाथ रखकर उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ना प्रारंभ कर दें। शत्रु भाग खड़ा होगा अथवा पराजित हो जाएगा। किसी के भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, तो तावीज को दाएं हाथ की मुट्ठी में बंद करके, मन्त्र-जप करें और तावीज से झाड़ा दे दें, भूतादि का उपद्रव शांत हो जाएगा। यन्त्र को बाजू पर बांधकर और मन्त्र-जप करके किसी यात्रा पर जाएंगे, तो मार्ग में किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है।

भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी निवारण यन्त्र

इस यन्त्र को आंकडां नामक पौधे के हरे पत्ते पर गोरोचन, हरताल, हिंगुल और मैनसिल के मिश्रण से लकड़ी की कलम द्वारा लिखा जाता है। यन्त्र लिखने के बाद दीप और धूप जलाकर इसकी पूजा करें और फिर पत्ते को लपेटकर कलावे अथवा कच्चे सूत की डोरी से गले, भुजा अथवा कमर से बांध दें। कितना भी शक्तिशाली भूत हो इस यन्त्र के प्रभाव से स्वयं छोड़कर भाग जाता है।

भूतादि दुष्ट आत्माओं के निवारण के मन्त्र

ऐ सरसो पीला सफेद और काला। तू चलना-फिरना भाई-सा चाला।। तोहरे बाण से गगन फट जाय। ईश्वर महादेव के जटा कटाय।। डाकिया, योगिनी व भूतपिशाच। काला, पीला, श्वेत, सुसांच।। सब मार-काट करूं खेत खरिहान। तेरे नजर से भागे भूत लै जान।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी दोहाई।।

थोड़ी-सी सरसों लेकर उपर्युक्त मन्त्र का ३ बार उच्चारण करके भूत-बाधा से ग्रस्त रोगी पर फूंकें और उसमें से थोड़ी-सी बचाकर अग्नि में डाल दें।

ओं नमो भसाणं वरसिने भूत-प्रेतनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का प्रयोग करने से पहले इसकी सिद्धि आवश्यक है। सिद्धि प्राप्त

करने के लिए इसका १००० जप करना चाहिए। उसके बाद ही इसके प्रयोग का अधिकार प्राप्त होता है। भूत-ग्रस्त रोगी को ७ बार झाड़ना चाहिए।

जीरा जीरा महाजीरा जिरिया चलाय। जिरिया की शक्ति से फलानी चलि जाय।। जीये तो रमटले मोहे तो मशान टले। हमरे जीरा मन्त्र से अमुख अंग भूत चले।। जाय हुक्म पाडुआ पीर की दोहाई।।

ऊपर्युक्त मन्त्र से थोड़ा-सा जीरा ७ बार अभिमंत्रित कर रोगी के शरीर से स्पर्श कराएं और उसे अग्नि में डाल दें। रोगी को इस स्थिति में बिठाना चाहिए कि उसका धुआं उसके मुख के सामने लगे। इस प्रयोग से भूत-बाधा की निवृत्ति होगी।

भूत सबको भई काहे आमन्द अपार। जिसको गुमान से अमुको को भार।। हमरे संइको पऊं करो सलाम हजार। जाते होय भूत आवेश किनार।। जितनी मेथी छोर बड़े और आदि से अन्त। तिसके धूम ग्रन्थ ते जल में भूत भगते।। अमुक अंग भूत नहीं, यह मेथो के लाय। उठी के आगे रत क्षण में जाय पराय।। आलेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई।।

थोड़ी-सी मेथी को ७ बार अभिमंत्रित करके रोगीके शरीर से स्पर्श कराएं और उसे अग्नि में डाल दें। रोगी को इस स्थिति में बिठाना चाहिए कि उसका धुआं उसके मुख के सामने लगे। इस प्रयोग से भूत-बाधा की निवृत्ति होती है।

तह कुठठ इलाही का बान। कूडूम की पत्ती चिरावन। भाग भाग अमुक अंग से भूत। मारूं धुलावन कृष्ण वर पूत। आज्ञा कामरू कामाख्या हारि दासी चण्डी दोहाई।

एक मुट्ठी भर धूल लेकर उसे ३ बार अभिमंत्रित करें और भूत-बाधा ग्रस्त रोगी पर फेंकें। इससे भूत-बाधा की निवृत्ति होती है।

ओं नमः आदेश गुरु को हनुमंत बीर बीर बजरंगी वज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्न सबको अब मार मार, न मारे तो निरंजनि निराकर की दोहाई।

इस मन्त्र के प्रयोग से पहले हनुमान्‌जी की पूजा-उपासना करना आवश्यक होता है। इसका शुभारम्भ शनिवार से करना चाहिए। निरन्तर २१ दिन तक श्रद्धापूर्वक पूजा, उपासना व २२१ मन्त्र नित्यप्रति जप करने के पश्चात् किसी चौराहे की कंकड़ी लें, उस कंकड़ी और उड़द को ७ बार अभिमंत्रित करके रोगी को झाड़ा दें।

हल्दी गीरी बाण वाण को लिया हाथ उठाय। हल्दी बाण से लीनगिरी

पहाड़ थहराय।। यह सब देख बोलत बीर हनुमान। डाइन योगिनी भूत प्रेत मुंड काटौ तान।। आज्ञा कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि की चंडी की दोहाई।।

थोड़ी-सी हल्दी लेकर उसे ३ बार अभिमंत्रित करके अग्नि में छोड़ें ताकि उसका धुआं रोगी के मुख की ओर जाए। इसे हल्दी बाण मन्त्र कहते हैं।

डाइन-चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए मन्त्र

बैर बैर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सवं नासी मेरी गांसी।। वर बैल करे तूं कितना गुमान। काहे नाहीं छोड़ती यह जान स्थान।। यदि चाहै तूं रखना अपना मान। पल में भाग कलाश लै अपनो प्रान।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।।

डाइन, चुड़ैल व प्रेतनी आदि से प्रभावित रोगी को स्वस्थ करने के लिए २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए फूंक मारनी चाहिए। स्मरण रहे इस मन्त्र का प्रयोग इसे सिद्ध करने के बाद ही करना उपर्युक्त रहेगा। दशहरे में १०८ बार मन्त्र जप से इसकी सिद्धि हो जाती है।

चुड़ैल भगाने की दूसरी विधि

बैर वर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी मांसी।।

इस मन्त्र को दीपावली, होली, दशहरा या ग्रहण के दिन सिद्ध करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर मन्त्र पढ़कर रोगी पर फूंक मारें। यह क्रम तब तक करें जब तक कि रोगी चुड़ैल बाधा से पूरी तरह मुक्त न हो जाए।

मसान

सफेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मद पीर की आन।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ बार झाड़ा करने से मसान दोष समाप्त हो जाता है।

डाकिनी मन्त्र

ॐ नमो नारसिंह पार्डहार भस्मना। योगिनी बंध डाकिनी बंध चौरासी दोष, बंध अष्टोत्तर शत व्याधि बंध, खेदी खेदी, भेदी भेदी, मारे मारे, सोखे सोखे, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, कुरों नारसिंह सवीर की शक्ति।।

किसी भी ग्रहण में जपकर उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर इस मन्त्र का सस्वर उच्चारण करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देवें। तुरन्त लाभ होगा।

चुड़ैल हेतु मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। कवलाछरी बावन वीर। कलू बैठनो जल के तीर। तीन पान का बीड़ा खवाऊं। जैठे बैठा जतलाऊं। वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा।।

इस मन्त्र से झाड़ा करने से बाधाग्रस्त सभी चुड़ैल दोषों से मुक्त हो जाता है।

औपरा हेतु मन्त्र

उलटंतं देह, पलटंतं काया। उतर आव गुरु ने बुलाया। शेष सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मन्त्र का जप करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति को ३१ बार झाड़ा करें तो रोगी स्वस्थ हो जाता है।

डायन हेतु मन्त्र

जल बांका। जल बांका। अमुकेर, काया बांका। डाइनेर दृष्टि पढ़न पानी। सुनो गोमाया अधर कहानी। समन काटि के माता दिहली। बार उज्जान छोड़े भाठी। घर धूला बान। धूसर बान। शब्द भेदी महाबान। ऐहि मन्त्र पढ़ें से। ॐ हानिः श्री राम हुंकारे।

इस मन्त्र का जप करते हुए धूल-राख, सरसों पीड़ित व्यक्ति को मारने से बाधाग्रस्त व्यक्ति शीघ्र ठीक हो जाता है।

भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च-मम वांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

पीले वस्त्र, पीला आसन, पीली माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर जप शुरू करें। ११००० जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध होने पर भूत-प्रेत आदि के भय के समय एक माला फेरने से संकट टल जाएगा। अनार की कलम से अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से ज्वर जायेगा। रवि पुष्य नक्षत्र में लिखकर पास में रखने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

श्री मणिभद्र भूत-प्रेत-बाधा निवारण-मन्त्र

श्री मणिभद्र देव एषः योगः फलतु।

यह मन्त्र एक बार प्रतिदिन में ही बोला जाता है।

ओं नमो भगवते मणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्णरूपाय, चतुर्भुजाय, जिन शासन भक्ताय, नव नाग सहस्त्रवलाय, किन्नर किं पुरुष गन्धर्व राक्षस भूत प्रेत पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रहं कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

उत्तर दिशा की ओर मुंह करके, लाल रंग की माला से तीन दिन में १२५०० जप करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें और दीपक अखंड रखें तब मन्त्र सिद्ध हो। फिर रोज एक माला का जप करें, भूत-प्रेत आदि की सर्व बाधाएं दूर होंगी।

भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय जंभय अंधय बधिरय बधिरय मूकवत् कारय-कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

किसी को भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें व झाड़ें तो उपद्रव निश्चय ही शान्त हो। ईशान कोण की तरह मुंह करके आधी रात के समय आठ रात्रि तक इस मन्त्र की साधना करें, धूप-दीप करें, ११०० जप करें तो व्यन्तर-देवका उपद्रव शान्त हो। यही नहीं जिस समय शत्रु सामने आक्रमण करने आए तो मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। वह मुट्ठी शत्रु के सामने करें तो शत्रु स्वयं परास्त हो जाएगा।

आप एक सद्गृहस्थ हैं अत: ऊपरी हवाओं से लोगों को बचाने और छुड़ाने का कार्य तो अवश्य करें परन्तु इसे अपना व्यवसाय न बनाएं। दूसरों का भला करने के लिए नि:स्वार्थ भाव से जो यह कार्य करता है, उसे समाज में सम्मान और परमपिता परमेश्वर की कृपा से सभी सुख स्वयं ही मिलते रहते हैं। परन्तु जो इस कार्य को पेशा बना लेते हैं, उनका तो लोक और परलोक दोनों ही खराब हो जाते हैं, अत: इस बारे में विशेष सावधान रहें।

सुख-समृद्धि दायक कालिका मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। साथ भवानी कालिका।। बारह वर्ष कुमार। एक माई परमेश्वरी।। चौदह भुवन द्वार। दो पक्ष निर्मली।। तेरह देवी-देव। अष्ट भुजी परमेश्वरी।। ग्यारह रुद्रकर सेव। सोलह कला सम्पूर्णा।। तीन नयन भरपूर। दश अवतारी।। पाँच देव रक्षा करें। नव नाथा-चौरासी सिद्ध।। षट्-दर्शन पाइए। पन्द्रह तिथि जान।। चार वेद वखानिए। काली कर कल्याण।।।

विधि—इस मन्त्र का जो साधक नित्य सच्चे मन से माँ कालिका का ध्यान कर जप करता है वह संसार के सम्पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसको जीवन में किसी तरह का अभाव नहीं रहता है।

इस मन्त्र में महा कालिका के चौंतीस के यन्त्र की सम्पूर्ण विधि समाई हुई है इस लिए इस मन्त्र का जप कर झाड़ा करने से भूत-प्रेतादि दोषों का निवारण होता है।

भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र

तह कुष्ठ इलाही का बान कूड्डम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अंग से भूत मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञा कामरुकामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूत भय दूर होते हैं।

चुड़ैल भगाने का मन्त्र

बैर बर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुँ तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गाँसी।।

किसी भी शुभ रात्रि को १००१ बार जप करके सिद्ध कर लें फिर रोगी पर प्रयोग करना हो तो ११ बार पढ़कर जल छिड़कें।

भूत भय नाशन मन्त्र

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।।

प्रयोग विधि—दीपावली की रात्रि को एक हजार आठ मन्त्र जाप कर सिद्धि कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता और घुग्घु का मल (विष्ठा) ऊँट के बाल, सफेद घुघुंची, गन्धक, गोबर, कड़ुवा तेल, सिरस नामक वृक्ष के फल तथा पत्ते लाकर हवन कर उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करने से भूत-प्रेत-वैताल-राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी, आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं।

डायन, पिशाचिनी भगाने का मन्त्र

वर बैल करे तू कितना गुमान काहे नहीं छोड़ता यह जान स्थान यदि चाहै तूँ रखना आपन मान पल में भाग कैलाश लै अपनी प्रान आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई आदे हाड़ी दासी चण्डी की दुहाइ।

सिद्धि करने की विधि—इस मन्त्र को विजयादशमी की रात्रि को एक सो आठ बार जाप कर सिद्धि करें, फिर रोगिणी पर इक्कीस बार पढ़कर फूँक मारें तो डायन चुड़ैल पिशाचिनी आदि से छुटकारा प्राप्त हो।

भूत भय नाशन

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु-कुरु स्वाहा।

मंत्र प्रयोग करने की विधि—दीपावली की रात्रि को १००८ बार मंत्र का जाप कर मंत्र को सिद्ध ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को कुत्ता, बिल्ली

और चूहा का मल (विष्ठा) ऊंट के बाल, गंधक, गोवर कड़वातेल लाकर सबका मिश्रण तैयार कर उक्त मंत्र से १०८ बार हवन करने से भूत-प्रेत-वैताल राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी आदि समस्त बाधाएं स्वत: ही दूर हो जाती है।

भूत बाधा नाशन प्रयोग

गुग्गुल, धूप बत्तीसा, सरसों आदि लावे। इसे पीसी हुई लालमिर्च के साथ मिलाकर-घर में धूप के रूप में जलावें। भूत-प्रेत आपके घर के आस-पास भी फटक नहीं पाएंगे।

चामुण्डा मन्त्र प्रयोग

३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकीं वशमानय स्वाहा। इति द्वात्रिंशत्यक्षरो मन्त्र:।

पुष्ये पुष्पं च संग्राह्य भरण्यां तु फलं तथा। शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च।। मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात्। पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम्।। तिलकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती। काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम्।। तैर्दत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिति ध्रुवम्। प्रातर्मुख तु प्रक्षाल्य सप्तवाराभिमन्त्रितम्। यस्या नाम्ना पिबेत्तोऽयं सा स्त्री वश्या भवेद ध्रुवम्।।

काले धतूरे का पुष्प नक्षत्र में फूल, भरणी में फल, विशाखा में शाखा, हस्त में पत्र और मूल में जड़ का क्रमश: संग्रह करके उन्हें पीसकर कपूर, केसर तथा गोरोचन को समभाग मिलाकर उससे तिलक करने पर यदि साक्षात् अरुन्धती के समान पतिव्रता ही कोई स्त्री क्यों न हो वह साधक के वंश में हो जाती है। काकजङ्घा, वचा, कूठ तथा शुक्र और शोणित को मिश्रित करके भोजन में देने से बोला निश्चित रूप से श्मशान में रोती है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से प्रात:काल सात बार मुख धोकर जिसके नाम से जल का पान साधक करेगा वह स्त्री निश्चित रूप से उसके वश में हो जायगी।

नजर उतारने का मंत्र-१

मुर्गे की चोंच के ऊपरी भाग को दूध में धोने के बाद सोने या चांदी के तावीज में भरें। फिर तावीज में काले रंग का रेशमी डोरा पिरोकर उसका मुंह बंद कर दें। सोमवार के दिन प्रात: काल पूर्वाभिमुख बैठकर तावीज को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार उच्चारण करके उसे अभिमंत्रित करें अर्थात् प्रत्येक बार मंत्र पढ़ने के बाद तावीज पर एक-एक फूंक मारते चले जाएं। फिर तावीज को बालक के गले में पहना दें। इसके प्रभाव से बालक को किसी की नजर नहीं लगेगी।

ॐ नमः शिवाय दुष्टिदोषविनाशनाय नमः रुद्राय, नमः उमामहेश्वराय, कं खं गं घं ङं डिम डिम स्वाहा।

एक पूरा नीबू लेकर श्री हनुमान्‌जी का स्मरण करके निम्न मंत्र का जप करते हुए नजर से पीड़ित बच्चे के सिर से पैर तक उतारें। फिर उस नीबू को ले जाकर किसी चौरहे पर काटकर प्रत्येक मार्ग पर फेंक दें। छुरी भी चौराहे पर ही छोड़ आएं। बुरी नजर दूर हो जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ श्री हनुमते नमः।

नजर उतारने का मन्त्र-२

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, दीपावली, होली में सिद्ध करके निम्नलिखित मन्त्र से नजर झाड़े।

गुरु चरण दिया मन, श्री हरि मोक्ष कारण, देव-दानव-दैत्यादि, खाई नरसिंह वीर आसी सब उड़ाई आलाली पालाली चोटी चोटी हंकारे फूंकारि उड़ाव मारी शलि लेकर पांव पांव टुकरियां जाए, अनुकार आए, डाईनेर दृष्टि, पलायकरा अक्षा वीर नरा सिंह आज्ञा।

नजर उजारने का मन्त्र-३

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा।

इस मन्त्र को दीपावली के दिन, इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें, फिर शुद्ध जल को इस मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर, रोगी को पिलाने से कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

नजर उतारने का मन्त्र-४

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर वीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी। कहो नजर कहां से आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी का ठाम, किसकी बेटी कहो तेरा नाम। कहां को जाया, अब ही बस कर ले, तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लगाओ, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राजा की रानी, जाको दोष तुम्हारे सिर पर पड़े। हनुमंत वीर नजर से रक्षा करें। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के समय मन्त्र जप कर सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से झाड़ें। इससे लाभ होगा।

नजर उतारने का मंत्र-५

मोर का पंख या मोर पंख का झाड़ू लेकर बालक के सिर से पांव तक झार दे और झारते हुई इस मंत्र को पढ़ते जाए।

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु का, ॐ नमों हनुमंत वीर नजर को बांधे, बावन वीर कहुरे, नजर कहां से आई। यहां की राह तोहे कौन बताई। क्या है जाति तेरा क्या है नाम किस तरह की लड़की, कहां है तेरा धाम, कहां से आई कहां तक जाए, अबहि बस करले तेरी माय। मेरी जाति सुनो चितलाय। जैसी सुनाऊ आए। तेलिन, तमोलिन, चुड़ि चमारिन, कायथिन, कथरानी, कुम्हारीन्, मेहतरानी, राजा रानी, जिसकी नजरे उसी के जाए पड़े प्रत्यक्ष देव दृष्टि रक्षा करे।

उक्त मंत्र द्वारा झार से नजर उतर जाएगी। यदि मोर पंख नही हो तो जलती हुई अगरबत्ती और चाकू से भी झारा जा सकता हैं।

दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र

मंत्र को दीपवली के दिन इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें। फिर शुद्ध जल को इस मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर रोगी को पिलानेसे कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

नजर लगने पर इन मन्त्रों का प्रयोग करें

ग्रहण के समय प्रस्तुत मन्त्र को जप कर सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से झाड़े। इससे फायदा होगा।

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर वीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी। कहो नजर कहां से आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी का ठाम, किसको बेटी कहो तेरा नाम। कहां को जाया, अब ही बस कर ले, तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लगाओ, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राजा की रानी, जाको दोष तुम्हारे सिर पर पड़े। हनुमंत वीर नजर से रक्षा करें। मेरी भवित, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

नजर झाड़ने का मन्त्र-१

ॐ नमो सत्य आदेश गुरु को, ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छलसों अमृतवानी, कहो नजर कहा ते आई, यहां की ठौर तोहि कौन

बताई, कौन जात तेरो कहां ठाह, किसकी बेटी कहा तेरो नाम, कहां से उड़ी कहां को जाया, अब ही बसकर ले तेरी माया। मेरी बात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊं आय। तेलन, तमोलन, चुहड़ी, चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताही के शिर पड़े, जाहर पीर नजर से रक्षा करे, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का जप मंगलवार से प्रारम्भ कर शनिवार को समाप्त करना चाहिए, ५१ मालाएं फेरनी चाहिए। साधक को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। शनिवार की शाम को जब मालाएं पूरी हो जाएं, तब एक किलो गेहूं उबालकर जंगल में फेंकने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। इस प्रकार से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर मोर-पंख से मात्र तीन बार इस मन्त्र को पढ़कर नजर झाड़ दें तो निश्चय ही नजर उतर जाती है। चाहे वो बालक या स्त्री हो अथवा मकान या दुकान।

नजर झाड़ने का मंत्र-२

कई बार बच्चों को नजर आदि लगने की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे बच्चा बीमार हो जाता हैं, उलटी, दस्त, बुखार, जुकाम आदि समस्या उत्पन्न हो जाती है। निम्न मंत्र से २१ बार झाड़ा देने पर नजर उतर जाती है।

हरि हरि स्मरिके हय मन करुं स्थिर चाउर आदि फेक के पाथर आडिवीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बलक गण पहिरे हाड़ गला हार राम लखण दूनो भाई धनुष लिए हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माय गई पराय सब डायरी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

उपरोक्त मंत्र को २१ बार पीड़ित व्यक्ति (जो नजर या टोकार आदि से पीड़ित हो) के सामने पढ़े। पढ़ते समय अगरबत्ती अवश्य ही लगा लेवे।

नजर दोष दूर करने का मंत्र

ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी। बोले छल सों अमृत बानी।। कहौं नजर कहां ते आई? यहां की ठोरि तोहि कौन बताई? कौन जात तेरी कहां ठाम? किसकी बेटी क्या तेरी नाम? कहां से उड़ी कहां की जाया? अब ही बस कर दे तेरी माया? मेरी जात सुनो चितलाय। जैसी होय सुनाऊं आय। तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कामथनी खातरानी कुम्हारी।। महतरानी राजा की रानी। जाको दोष ताहि सिर पड़े। हनुमन्त वीर नजर के रक्षा करें। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।।

इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी को सिर से पैर की तरफ झाड़ा करे तो दृष्टि का दोष नजर लगना समाप्त हो जाता है। सूर्य-चंद्र ग्रहण के समय जप करके इस मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से ११ बार झाड़ दें। सुख व शांति होगी।

डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करुँ स्थिर चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बालक गण पहिरे हाड़ गला हार राम लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ गई पराय सब डायनी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

प्रयोग विधि—उपरोक्त मन्त्र विधि के अनुसार सिद्धि कर झाड़ने से दृष्टि बाधा दूर होती है।

नजर झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

हनुमान चलै। अवधेसरिका।। वृज-मण्डल। धूम मचाई।। टोना-टमर। डीठि-मूठि।। सबको खैचि बलाय। दुहाई छत्तीस।। कोटि देवता की। दोहाई लोना।। चमारिन की।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में, पवन पुत्र हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए १० माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय मोर पंख से २१ बार झाड़ा करने से बालकों को लगी नजर दूर हो जाती है।

अतर मोहिनी

मन्त्र—**अलहम्दोगवानीवो मेरेपर हो दिवानी जो न हो दिवानी तो सैयाद कादर अब्दुलं जलानी चुट्टा पकडकर करो दिवानी। इति मन्त्रः।**

उत्कृष्ट अतर (इत्र) को शीशी में डालकर १०८ बार मन्त्र पढ़े और शीशी के भीतर फूँक मारे। इसी तरह प्रत्येक माला पूरी होने पर फूँक मारता रहे। जब १ हजार मन्त्र पढ़ चुके और शीशी में दश फूंके लग चुकें तब शीशी को किसी स्वच्छ स्थान में रख दे। इसी प्रकार २१ दिनों तक करने से शीशी का अतर चक्कर देने लगेगा। जब अतर चक्कर देने लगे तब जान ले कि वह सिद्ध हो गया है। अगर २१ दिन में अतर चक्कर न मारे तो फिर ४० दिन तक मन्त्र का जप करे। तदुपरान्त जिस स्त्री की इच्छा से यह कार्य किया हो उसे अतर सुँघाने से वह वशीभूत हो जाती है। यह अत्यन्त चमत्कारी और अनुभूत मन्त्र है, इसे मिथ्या नहीं जानना चाहिये।

लूणमोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो हयलूण सुहावय लूण अईसा लूण मसाणां हमां पाया अमुकादिद अमुक खाय तरुवाचाटत जन्म जाय। इति मन्त्रः।**

इस मन्त्र से २१ बार नमक को अभिमन्त्रित कर खिलाने से वशीकरण होता है।

सुपारीमोहिनी

मन्त्र—**पीर मैं नाथ पीर तूं नाथ जिस्को खिलाऊं तिस्को वश करना फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

ग्रहण के समय नाभि पर्यन्त जल में खड़ा होकर एक सुपारी को सात बार अभिमन्त्रित करके निगल जाय। जब वह (मल के साथ) निकले तब उसे जल से धोकर फिर दूध से धोवे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर गूगल की धूनी दे। तदुपरान्त उस सुपारी का एक टुकड़ा भी जिसे खिला दे वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, अवश्य वश में हो जायगा।

इलायचीमोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो काला कलुवा काली रात निसकी पुतली मांझी रात काला कलुवा घाटवाट सोतीको जगाय ल्याव बैठीको उठाय ल्याव खड़ीको चलाय ल्याव वेगी धर ल्याव मोहिनी जोहिनी चल राजाकी ठाव अमुकीके तनमें चटपटी लगाव जियाले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोड़ै हमारा साथ घरको तर्ज बहेरको तजै घरके साईको तजै हमे तज और कनेजाय तो छाती फाड तुरत मरजाय सत्य गुरू आदेस गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ईश्वर महादेवकी वाचासे टरै तो कुम्भी नरकमें पड़ै। इति मन्त्रः।**

२१ दिन में इसे सिद्ध कर ले। फिर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित इलायची जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जायगा।

लौंग मोहिनी

मन्त्र—**सत्य नाम आदेश गुरूको लौंकलौंग मेरा भाई इन्हीं लौंगने शक्ति चलाई पहेली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवनमाती तीजी लौंग अंग मरोड़ै चौथी लौंग दोऊ कर जोड़ै चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पाससे फलानेकने आजाय गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

शनिवार से प्रारम्भ करके रात्रि के समय पूजन करे और मन्त्र का नित्य १०८ जप करने से २१ दिन में सिद्ध होता है। फिर ४ लौंग अभिमन्त्रित करके जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जाता है—यह बिल्कुल सत्य है।

राजवशीकरण

मन्त्र—**हथेली में हनुमन्त बसै, भैरूं बसै कापाल। नारसिंहकी मोहिनी,**

मोहा सब संसार। मोहन रे मोहन्ता वीर सब वीरनमें तेरा सीर सबकी दृष्टि बांधिदे तोहि तेल सिन्दूर चढ़ाऊ तोहि तेल सिन्दूर कहांसे आया कैलासपर्वतसे आया कौल ल्याया अञ्जनीका हनुमन्त गौरीका गणेश ल्याया कालागोरा तोतला तीनू वसै कपाल विन्दा तेल सिन्दूरका दुश्मन गया पताल दुहाई कामियां सिन्दूरकी हमें देख सीतल होजाय मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

रविवार को नृसिंह का पूजन करके १२१ बार मन्त्र पढ़े। इसी प्रकार सात रविवारों तक करे, तेल का दीपक जोड़े, लोहबान की धूप दे और मोदक चढ़ाये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध मन्त्र से सिन्दूर को अभिमन्त्रित करके मस्तक पर बिन्दी लगाने से राजा का क्रोध शान्त हो जाता है और वह प्रसन्न होता है।

सभा मोहिनी

मन्त्र—**कालूं मुख धोये करूं सलाम मेरी आंखोंमें सुरमा बसै जो देखै सो पायन परै दुहाई गौसुलआजमदस्तगीरकी छू। इति मन्त्रः।**

सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढ़े, फिर उसे पिसवाकर उसके आटे में घी और चीनी मिलाकर हलवा तैयार करे। गौसुल आजमदस्तगीरकी नियाज दिलावे और उस हलवे को स्वयं खाकर सिद्ध हो। पदुपरान्त जब राज दरबार में जाने का काम पड़े तब सुरमें को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नेत्रों में लगाकर जाय तो सम्पूर्ण सभा वशीभूत होकर साधक की हाँ में हाँ मिलायेगी।

नग्न मोहिनी

मन्त्र—**पद्मनी अञ्जन मेरा नाम इस नगरीमें पैसके मेहेसगरागाम राज करन्ता राजा मोहूं फरस बैठा पञ्चमोहूं पनघटकी पनिहार मोहूं इस नगरीमें पैसके छत्तीस पवना मोहूं जो कोई मारमार करन्ता आवै ताहि नारसिंह वाया पगके अंगूठा तरे घेरघेर ल्यावै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।**

रवि-शनि की रात को धूप, दीप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान सुपारी और लौंग से नृसिंह का पूजन करे और १०८ बार मन्त्र का जप करे। प्रत्येक मन्त्र से पान, सुपारी, शक्कर, घृत और गूगल का हवन करे। इससे सिद्धि प्राप्त हो जाने पर नन्दन वन के कपास की रूई में ओंगा की जड़ लपेटकर बत्ती बनावे और तेल से दीपक भरकर उस बत्ती को जलाकर काजल पारे। उस काजल को सात बार अभिमन्त्रित करके नेत्रों में लगा लेने पर सम्पूर्ण पुरुष, बालक, वृद्ध और तरुण वश में हो जाते हैं। जिस ग्राम में साधक जायेगा वहाँ सब ग्रामवासी उसकी सेवा करेंगे।

शत्रु मोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो उच्छिष्टचाण्डालिनि कङ्कालमालाधारिणि साधुसाधु त्रैलोक्यमोहिनि प्रकाण्डक्षोभिणि शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

यह क्षोभणी देवी का मन्त्र है। इसके जप तथा हवन से शत्रुओंको क्षोभ होता है। यदि बट और शमी वृक्ष की समिधा से घी के साथ एक हजार नित्य हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है—इसमें सन्देह नहीं।

मूली मन्त्र प्रयोग

२५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मूली मूली महामूली सर्वं संक्षोभय संक्षोभय उपद्रवेभ्यः स्वाहा। इति पञ्चविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अंजलि में जल लेकर इस विद्या का जप करने से एक मास में वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है।

वशीकरण तन्त्र

यह १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः सर्वलोकवशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री सर्वयोगान् साधयेत्। तथा च। ईश्वर उवाच। नृकपाले रविदिने तण्डुलैः पायसं कृतम्। छायाशुष्कं तु तच्चूर्णं खाने पीने च दीयते। यावज्जीवं वशं याति नारी वा पुरुषोपि वा। अदासो दासतां याति प्राणैरपि धनैरपि।

१०८ बार जप स सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सभी भोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : ईश्वर बोले : रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में चावल से खीर बनाये फिर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बना ले। उसे खान-पान में देने से चाहे नारी हो या पुरुष वह यावज्जीवन वशीकृत रहता है तथा प्राण और धन सहित दास हो जाता है।

अन्यत्। पल्लीपुच्छं गृहीत्वा तु वर्तिं ऋतुमतीस्त्रियः। ज्वालितां यं रवौ वारे दर्शयेत्स वशो भवेत्। ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं ताम्बूलमिश्रितम्। रवौ वारे कृतं चेत्स सर्वलोकेवशंकरः।

छिपकली की पूंछ को ऋतुमयी स्त्री के वस्त्र में लपेटकर बत्ती बनाकर रविवार के दिन उसे जलाकर जिसे दिखाये वह वशीकृत होता है। ब्रह्मदण्डी, वचा तथा कुष्ठ के चूर्ण को ताम्बूल के साथ रविवार के दिन मिश्रित करने से वह सर्वलोकवशंकारी होता है।

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत्। विभूत्या संयुतं तस्य तिलको लोकवश्यकृत्।

बरगद की जड़ लेकर उसे जल से घिसे। उसकी विभूति के साथ उसका तिलक संसार को वश में करनेवाला होता है।

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभि मन्त्रितम्। यस्यास्ते स भवेत्पूज्यो वधूभिः सर्वमोहकः।

पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को सात बार अभिमन्त्रित करके जो अपने हाथ में रखता है वह वधुओं से पूज्य होता है और सबको मोहित करता है।

अपामार्गरय मूलं तु कपिलाक्षीरपेषितम्। ललाटे तिलकस्तस्य वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।

अपामार्ग की जड़ को कपिला गाय के दूध में पीसकर जो अपने ललाट पर तिलक करता है वह तीनो लोकों को वशीकृत करता है।

गृहीत्वा सहदेवीं वै छायाशुष्कं तु कारयेत्। ताम्बूले निहितं तस्याश्चूर्णं लोकवशङ्करम्।

सहदेवी को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उसका चूर्ण ताम्बूल में रखकर देने से वह लोकवशंकारी होता है।

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकः कृतः। प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः। ताम्बूले या प्रदातव्यं सर्वलोकवशङ्करम्।

गूलर की जड़ को लेकर उसका तिलक ललाट पर लगाकर साधक दर्शन मात्र से सर्वप्रिय हो जाता है—इसमें संशय नहीं है। इसे ताम्बूल में देने से भी सर्वलोकों का वशीकरण होता है।

देवदालीं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेदबुधः। मुखनिक्षेपमात्रेण सर्वलोकवशङ्करः।।

बुद्धिमान साधक देवदाली तथा सिद्धार्थ (पीली सरसों) की गुटिया बनाकर उसे मुख में डालकर समस्त संसार को वश में कर लेता है।

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिलां। अनामिकाया रक्तेन तिलकः सर्ववश्यकृत्।।

कुंकुम, तगर, कूठ, हरिताल तथा मैनसिल को अनामिका अंगुली के रक्त से मिलाकर तिलक लगाते ही साधक सभी को वश में कर लेता है।

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगु रक्तचन्दनम्। एकी कृत्य जपेन्मन्त्रं सर्वलोकवशङ्करम्।।

गोरोचन, पद्मपत्र, प्रियंगु तथा रुक्तचन्दन को एकत्र कर मन्त्र का जप करने से साधक सर्वलोकों को वश में कर लेता है।

गृहीत्वा श्वेतगुञ्जायाच्छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलको लोकवश्यकृत्।।

श्वेतगुंजा को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उनका आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर तिलक बनाने से साधक समस्त लोकों को वश में करने वाला होता है।

तन्मूलं पत्रताम्बूलं सर्वलोकवशङ्करम्। तन्मूलाल्लेपयेद्देहं सर्वलोकवशङ्करः।।

श्वेतगुंजा की जड़ तथा उसके पत्तों को ताम्बूल के साथ खाने से साधक सर्वलोकों को वश में करता है। श्वेतगुंजा की जड़ को देह में लेप लगाना भी सर्वलोकवश्यकारी है।

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलाक्षीरपेषिताम्। तल्लेपनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोक-वशङ्करः।।

सफेद दूब को लेकर कपिला गाय के दूध में पीस ले। इस लेप को लगाकर साधक सर्वलोकों को वश में करता है।

श्वेतार्कं वै गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धन तिलकः सर्ववश्यकृत्।।

सफेद मदार को लेकर छाया में सुखाकर उससे आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर उससे तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है।

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलिङ्गं तथैव च। अजादुग्धेन संपेष्य तिलको लोकवश्कृत्।।

बिल्वपत्र तथा बिजौरा नीबू एकत्र करके बकरी के दूध में पीसकर तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है।

कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम्। तिलकं धारयेद्भाले सर्वलोक-वशङ्करम्।।

हरताल, अश्वगन्धा, सिन्दूर तथा केले का रस एकत्र पीसकर तिलक करना सर्वलोकवश्यकारी है।

अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत्। तल्लेनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोक-वशङ्करः।।

अपामार्ग के बीच को बकरी के दूध के साथ पीसकर लेप बनाये। इस लेप को धारण करने से साधक समस्त लोकों को वश में करता है।

हरितालं च तुलसी कपिलादुग्धपेषिता। अनेन तिलको भाले सर्वलोक-वशङ्करः।।

हरताल तथा तुलसी को कपिला गाय के दूध से पीसकर ललाट पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करनेवाला है।।७६।।

धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगन्धं मनःशिला। अनेन तिलको भाले सर्वलोक-वशङ्करः।।

आँवले के रस में अष्टगन्ध और मैनसिल को पीसकर भाल पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करने वाला है।

राजावशीकरण तन्त्र

यह २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा चः ईश्वर उवाच। कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम्। गोक्षीरघर्षितं तस्य तिलको राजमोंहनः।।

१०८ मन्त्र के जप से सिद्धि होती है। इस प्रका मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा गया है : ईश्वर बोले : कुकुंम, चन्दन, कपूर और तुलसीदल को गाय के घी में घोंटकर तिलक लगाना, राजवशीकरण करता है।

करे सुदर्शनामूलं बध्वा राजप्रियो भवेत्।

हाथ में सुदर्शना की जड़ बाँधकर साधक राजप्रिय हो जाता है।

सिंहीमूलं रहेत् पुष्ये कटिं बध्वा नृपप्रियः। हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरं च मनःशिला। अजाक्षीरेण तिलको राज्यवश्यकरः परः।।

पुष्य नक्षत्र में सिंही (भटकटैया) की जड़ को कमर में बाँधने से मनुष्य राजप्रिय होता है। हरिताल, अश्वगन्दा, कपूर तथा मैनसिल को बकरी के दूध से पीसकर तिलक लगाकर साधक राजा को वश में कर लेता है।

गृहीत्वा सुदर्शनामूलं पुष्यनक्षत्रवासरे। कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेल्लिप्तवस्त्रके। विष्णुक्रान्तानि बीजानि तैलं प्रज्वाल्य दीपके। कज्जलं पातयेद्रात्रौ शुचिः पूर्व समाहितः कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे राज्यवश्यकरो भवेत्। चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा।।

पुष्य नक्षत्र में सुदर्शना की जड़ को कपूर और तुलसी के पत्र के साथ पीसकर वस्त्र पर उसका लेप करे। विष्णुक्रान्ता के बीजों को उसमें लपेटकर दीपक में

तेल डालकर रात में पवित्र और शान्तचित्त हो उसका बत्ती जलाकर काजल पारे। उस काजल को आँख में लगाने से साधक राजा को वश में करता है! इससे चक्रवर्ती राजा भी वश में हो जाता है, फिर अन्य लोगों की बात ही क्या?।

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे। खाने पाने प्रदेयानि राजवश्य कराणि हि।।

पुष्य नक्षत्र में रविवार को अपामार्ग के बीजों को लेकर उसे खान-पान में देना चाहिये। ये बीज राजा को भी वश में करनेवाले हैं।

पति वशीकरण तन्त्र

यह १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा चः ईश्वर उवाच। गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम्। एभिस्तु तिलकं कृत्वा स्वपतिं वशमानयेत्।।

१०८ जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है ईश्वर बोले : गोरोचन और योनिरक्त को केले के साथ मिलाकर तिलक करने से नारी अपने पति को वश में करती है।

पञ्चाङ्गदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेत सर्षपसंयुताम्। योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा।।

अनार के पंचांग को पीसकर श्वेतगुंजा तथा सरसो के साथ योनि में लेप करके दुर्भगा नारी भी पति को दास बना लेती है।

जिह्वामलं लवङ्गं च खाने पाने प्रदापयेत्। पतिवश्यकरं देव पतिर्दासस्तु जायते।

जिह्वा का मैल तथा लौंग खान-पान में दे। हे देव! यह पति को वश में करनेवाला है। इससे पति दासवत हो जाता है।

स्त्रीवशीकरण तन्त्र

दत्तात्रेय तन्त्र में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कामक्षीदेवि अमुकीं मे वश्यां कुरुकुरु स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि साधयेत्। तथा चः रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूर पुष्पकम्। शाखालतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं

तथैव च। पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम्। तिलकेन वशे कुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती।।

१०८ बार जप से मन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्र को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि रविवार को काले धतूरे का फूल, शाखा, लता, पत्र और मूल लेकर उसमें कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन समान भाग डालकर पीसे। इस लेप का तिलक लगाकर मनुष्य स्त्री को वश में कर लेता है चाहे वह साक्षात् अरुन्धती ही क्यों न हो।

अथाकर्षण तन्त्र

यह २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतं जपेत्। सिद्धिर्भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा च। ईश्वर उवाच। आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः। राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत्।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा भी गया है: ईश्वर बोले: मैं आकर्षणविधि को कहता हूँ, प्रयत्नपूर्वक उसे सुनो। इससे राजा तथा प्रजा सबका आकर्षण होता है।

कृष्णधत्तूरपत्रस्य सरोचनरसेन तु। श्वेतकर्वीरलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेन्मनुम्। यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारतापितम्। शतयोजनमायाति नान्यथा शङ्करोदितम्।।

काले धतूरे के पत्ते के रस के साथ गोरोचन को पीस कर उस रंग से सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर उक्त मन्त्र को लिखे। मन्त्र के 'अमुकस्य' पद के स्थान पर साध्य का नाम लिखे। फिर खैर के कोयले पर उसे तपाने पर सौ योजन दूर रहने वाला भी साधक को पास आ जाता है। शंकर का यह कथन अन्यथा नहीं हो सकता।

पगच्छेदन

मन्त्र—**ॐ नमो गण्डियाभैरो गलत हाथ माथे गघरी मसकदारू जहां भेजूं तहां जाय अमुकाकी गांड मार गांड में लोही चलाव न चलावै तो लोनाचमारीकी कुण्ड में जाय फुरो मन्त्र फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

सवासेर मद्य, सवा पाव काला उहद, तिल दो पैसे भर—इन सबको भैरव को भेंट देकर सर्प की हड्डी की माला से नित्य ५०० मन्त्र का जप करने से बैरी की गुदा से रुधिर गिरने लगेगा।

एक अन्य ३८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सूर्यवरण निर्मल तारा साहीका कांटा नींबू मांरा अक्कासासे तारा टूटा अमुकिया तेरा पैर छूटा।

रविवार, शनिवार या मंगलवार को अर्धरात्रि के समय कुएँ में पैर लटकाकर नंगा बैठ जाय और मुख उस ओर करे जिधर वांछित स्त्री का घर हो। बायें हाथ में नीबू और दाहिने में सेहनर (नर साही) का काँटा लेकर आकाश की ओर देखता हुआ मन्त्र पढ़ता रहे जब तारा टूटने लगे तब मन्त्र द्वारा उस काँटे को नीबू के भीतर इस प्रकार चुभाये कि काँटा केवल आधे नीबू में चुभे, पार न हो। पार ही जाने पर प्राणनाशक का भय होता है। यह कृत्य करने से स्त्री को तत्काल रुधिर गिरने लगेगा, इसमें सन्देह नहीं है। उस नीबू को लाकर जल के समीप शीतल स्थान में रखने से रुधिर गिरता रहेगा। परन्तु उसका शरीर क्षीण नहीं होगा। किन्तु यदि उस नीबू को धूप में रक्खे तो शरीर भी सूखने लगेगा। उक्त प्रकार से तारा टूटने पर ही काँटे को नीबू के बाहर निकालकर नीबू के छिद्र को किसी वस्तु से बन्द करने से रुधिर का निकलना बन्द होकर आराम होगा।

कुछ अन्य प्रयोग

मन्त्र—**उलटा पुलटा नारा चलै, अर्जुन मारा बान। अमुकिया तेरा गर्भ चलै, कंसासुरकी आन। इति मन्त्रः।**

सफेद फूलवाले हुलहुल के १२१ बीजों को १२१ मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके पान में रखकर मुंह में चबाये और पीक थूके। जो स्त्री उस पीक का उल्लंघन करेगी उसको (योनि से) रक्त गिरने लगेगा। फिर उस पान सिट्टि खिला देने से रुधिरस्राव बन्द हो जायगा यह सर्वथा सत्य है।

मन्त्र—**ॐ हकालूं चौंसठ योगिनी हकालूं बावन वीर घस घट लोही झिरै नैर झिरै वानी मरैरे रक्तिया वीर हियो धरै ना धीर रक्तियो रक्तियो रङ्गकी रक्तियो मांगै मासकी बड़ी चावै चणा चलावै पीड़ मसाणकी माटी भौराके बिलमें लपेटी जिस्के ऊप करूं सही स्त्री झरती दीखै शब्द साचा पिण्डकाचा चलो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

श्मशान की ७ कंकड़ियाँ लेकर कूएँ के जगत् के ऊपर २१ बार अभिमन्त्रित करके धूप दे और उनसे स्त्री को मारे। इससे उसको रक्तस्राव होने लगेगा—यह सत्य है।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेस गुरुको काला कलवां तूं अवधूत हकालूंगा दडाव लाऊ भूत हाड काट चटपटी लगाव छाती छोल पैर चलाव हिये पैठि हूल चलाव चलावचलवा रे कालाभैरूं कालिकाके पूत चलावेगी हुकम साथ न चलावै तो माता चामुण्डाका तीर चूकै। इति मन्त्रः।**

रविवार के दिन काला चिड़ा पकड़े, रेशम का सवा दो हाथ का और सूत

का दो हाथ का डोरा बनावे। दो दीपक—एक घी का और दूसरा तेल का जलावे। तेल के दीपक में ढाई पाव तेल और घी के दीपक में सवा पाव घी डाले। सवा पैसा भर उड़द घी के दीपक में डाले, सवा पैसा भर उड़द और उक्त सूत का डोरा (धांगा) तेल के दीपक में डाले और मन्त्र पढ़े।

रेशम के डोरे से चिड़े को फाँसी लगावे और गला काट डाले, जो रक्त गिरे उसे तेल के दीपक में एकत्र करे। चारों पहरों में सात-सात मन्त्र पढ़े और गूगल की धूप देता जाय। जब रात व्यतीत होने पर दिन निकल आये तब सिद्ध हुआ जानना चाहिये। फिर तेल के दीपक की १ उड़द सात बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को मारा जाय और रेशम का डोरा स्पर्श कराया जाय उसको रक्तस्राव होने लगेगा। घी के दीपक का उड़द उसे देने से रक्तस्राव शान्त होगा।

४. सत्यानासी का बीज २ माशा और चीनी ४ माशा खिलाने से मासिक धर्म के पूर्व ही रक्तस्राव होने लगेगा इसमें सन्देह नहीं है। यह सिद्ध प्रयोग है।

५. खटमल में दो विशेष गुण हैं। उसे नीचे-ऊपर के दो भागों में विभक्त करके यदि नीचे के भाग को स्त्री को खिला दिया जाय तो तत्काल रक्तास्राव होने लगेगा। फिर ऊपर के भाग को खिला देने से रक्तस्राव रुक जायगा।।१४।।

६. कौवे की चोंच से रविवार को मार्ग में रेखा खींच दे। यदि स्त्री उस रेखा का उल्लंघन करेगी तो उसको रक्तस्राव होने लगेगा। फिर उसी चोंच को धोकर उसके धोवन को पिलाने से रक्तस्राव बन्द होगा।

शत्रु मूत्रबन्धन मन्त्र

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः। कृकलाया मुखे क्षिप्वा कंकवृक्षे च बन्धयेत्।। मूत्रबन्धो भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी। बिना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोगः उदाहृतः।।

मंगलवार को शत्रु द्वारा मूत्रत्याग किये स्थान की मिट्टी लेकर गिरगिट के मुख में डालकर उसे धतूरे के वृक्ष से बाँध दे तो शत्रु का मूत्रबन्धन हो जायगा। उसको खोल देने से पुनः शान्ति होगी। इसमें बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है यह सिद्ध योग कहा गया है।

बुदे वा शनिवारे वा कृकलां गृह्य यत्नतः। शत्रुर्मूत्रयते यत्र कृकलां तत्र निक्षिपेत्। निखनेद्भूमिमध्ये च उद्धृते च पुनः सुखी। नपुंसको भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम्।।

बुधवार को या शनिवार को गिरगिट को यत्न से पकड़ ले। शत्रु जहाँ मूतत हो वहाँ गिरगिट को खोदकर गाड़ दे तो शत्रु का मूत्र—बन्ध होगा। गिरगिट को

निकाल लेने से सुखी होगा। इससे शत्रु नपुंसक भी हो जाता है—यह शंकर का कथन असत्य नहीं हो सकता।

प्राकृत ग्रन्थ का प्रयोग : रविवार के दिन मरे हुए छछून्दर की खाल में शत्रु के मूत्र की मिट्टी भरकर ऊँचे स्थान में लटकाने से मूत्र बन्द हो जाता है और वह गूंगा तथा पागल हो जाता है। उस मिट्टी को छछून्दर की खाल से निकाल देने से सुख होता है। शत्रु के मूत्र में बिच्छू का डंक गाड़ने से भी शत्रु को अत्यन्त पीड़ा होती है। फिर डंक निकालने से शान्ति होती है।

शत्रुशिरसि पादुकाहनन

मन्त्र—**ॐ नमो हनुमन्त बलवन्त माता अञ्जनी पुत्र हलहलन्त आवो चढन्त आवो गढ़किला तोड़न्त आवो लङ्का जालि वालि भस्मकरि आवो ले लङ्का लंगूरते लपटाते सुमेरते पटकावो चन्द्री चन्द्रावली भवानी मिलगावो मङ्गलचार जीते राम लक्ष्मण हनूमानजी आवोजी तुम आवो सात पानका वीडा चावत मस्तक सिन्दूर चढ़ावो आवो मन्दोदरीके सिंहासन डुलन्ता आवो यहां आवो हनुमान आया जागते नृसिंह माया आगे भैरूं किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजै दुर्जनको डार दुष्टको मार संहार राजा हमारे सतगुरु हम सतगुरुके बालका गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

मन्त्र की सिद्धि के लिये २१ दिन या ४१ दिन में दश हजार जप करे, पान का बीड़ा तथा मोदक का भोग लगावे, नैवेद्य द्वारा हनुमान्‌जी का पूजन करे और सिन्दूर तथा सुगन्धित पुष्प चढ़ावे। फिर भूमि पर शत्रु की एक प्रतिमा बना कर यथोचित बीजों को लिखे। उसके वक्ष पर शत्रु का नाम लिखकर उस पर मन्त्र से दो जूते मारे। यदि प्रतिमा के सर पर जूता मारा जाय तो शत्रु का सर फूट जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह पागल हो जाता है—इसमें सन्देह नहीं है।

शत्रुपीडन

मन्त्र—**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरभैरव त्रिपुरवीर मम शत्रोरमुकस्य पीडां कुरुकुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।**

वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर नीचे दिये तन्त्र को लिखे। उसमें नीचे शत्रु का नाम और उसकी माता का नाम लिख कर यन्त्र को गूगल की धूप देकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के चौखट के नीचे या आँगन में अथवा मार्ग में गाड़ दे। जब शत्रु इस मन्त्र का उल्लंघन करेगा तो उसे अत्यन्त पीड़ा होगी अथवा शत्रु के पाँव के नीचे की मृत्तिका को सात करेलियों में भरकर प्रत्येक करेलों के ऊपर सात बार मन्त्र पढ़कर चरखे के टेकुये में पिरोये और फिर उन्हें अग्नि में तपाये। इससे बैरी को अवश्यमेव अत्यन्त कष्ट होगा।

मन्त्र—**ॐ कालाभैरूं झङ्कालका तीर मार तोड दुश्मनकी छाती घोर हाथ कलेजो काढ बत्तीस दांत तोड यह शब्द नाचलै तो खड़ी योगिनी का तीर छूटै गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरुको। इति मन्त्रः।**

कनेर का २१ फूल और गूगल की २१ गोली सरसों के तेल सहित मन्त्र पढ़-पढ़कर होम करे तो ११ दिन अथवा २१ दिन में शत्रु को पीड़ा प्राप्त होगी।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेश गुरूको लाल पलङ्ग औरङ्गी छाया काढ कलेजा तूही चख। इति मन्त्रः।**

चौका देकर दीपक जलावे और तीन बार कहे कि 'आओ महावीर पहलवान् हनुमान्जी।' फिर तीन बार कहे 'आओ कलुवा वीर रणधीर।' ऐसा कहने के बाद गूगल की धूप देकर नैवेद्य चढ़ावे, नित्य १ हजार मन्त्र पढ़े तथा घी, लौंग, सुपारी, जायफल, गूगल और मिश्री का १२५ बार होम करे। ऐसा करने से ११ दिन में सिद्धि होती है। फिर ब्राह्मण भोजन कराकर २१ दिन तक प्रतिदिन मन्त्र का १ हजार जप करें तो शत्रु का नाश होता है।

एक अन्य प्रयोग

मन्त्र—**ॐ नमो आगिया वैताल पैठ सातवें जाहु पाताल लावो अग्निकी जलती झाल बैठजाहु ब्रह्माके कपाल पहेरौ लाल फूलकी माल चडौ ठोकके अपनी ताल चलौ चलौ जलावो आग न जलावो तो माता कालिकाकी आन। इति मन्त्रः।**

होली से आरम्भ करके मन्त्र का १ लाख जप करके मछली का नैवेद्य लगाने और गन्धक का धूप देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर जहाँ आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट होती है।

मूठचालन मन्त्र

मन्त्र—**ॐ नमो कालाभैरों मसाणवासा चौसठ जोगनी करै तमासा उड़दकी मुट्ठी रक्तावाण चल रे भैरों कचियामसाण मै कहूं तोसों समझाय सवापहेरमें धुवा दिखाय मूवा मुरदा मरघटवास माता छोडै पुत्रकी आस जलती लकड़ी धिकै मसाण भैरों मेरा वैरी तेरा खान सेलीसिङ्गीं रुद्रबाण मेरे वैरीको नहीं मारै तो राजारामचन्द्रलक्ष्मणजतीकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

किसी मुर्दे को देखकर श्मशान में जाकर उसकी हड्डी लेकर चिता में खूब

लाल करे और उसमें एक मुट्ठी उड़द डाले दे। इन उड़दों में जो जल जायँ उन्हें अलग कर ले और जो खिल जाय उन्हें अलग कर ले जले उड़दों पर २१ बार मन्त्र पढ़कर प्रातःकाल बिना मुंह धोये शत्रु को मारे तो वह यमलोक चला जायगा।

सर्वकार्य सिद्धि भैरव मन्त्र प्रयोग

मन्त्र—**ॐ काली कङ्काली महाकालीके पुत्र कङ्कालभैरुं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काज करै मेरा भेजा रक्षा करै आन बान्धूं वान बान्धूं चलते फिरतेके औसान बान्धूं दसोंसुर बान्धूं नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बान्धूं फलमें भेजूं फूलमें जाय कोठे जो पड़ै थरथर कांपै हलहल हलै गिरगिर पड़ै उठउठ भागै बकबक बकै मेरा भेजा सवाघड़ी सवापहेर सवादि सवामास सवावरसकूं बावल न करै तो माता कालीकी शय्यापर पग धरै वाचा चूकै तो ऊभा सूखै वाचा छोड़े कुवाचा करै तो धोबीकी नाद चमारके कुण्डेमें पड़ै मेरा भेजा बावल न करै तो रुद्रके नेत्रसे अग्निकी ज्वाला कढे सिरकी लटा टूटि भूमिमें गिरै माता पार्वतीके चीरपर चोट पड़ै विना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कङ्कालभैरू फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।**

कालरात्रि अथवा ग्रहण की रात्रि को तिकोना चौका लगाकर दक्षिणमुख बैठे और लाल कनेर के फूल, मोदक, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा तथा चौमुखा दीपक रखकर इस मन्त्र का १ हजार जप तता दशांस हवन करे। जब भयङ्कर स्वरूप में भैरव सम्मुख आवे तब भयभीत न हो और तत्काल फूलों की माला उसके गले में डालकर मोदक अर्पण करे। इससे भैरव प्रसन्न हो जायगा और फिर उससे जो कार्य कहा जाय वह तत्काल कर देगा।

कुछ अन्य प्रयोग

२७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवति दुर्वचने किलिकिलि वाचोभञ्जिनि मुखस्तम्भिनि स्वाहा। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।**

इसके जपमात्र से सभी के मुख का स्तम्भन होता है॥२॥

मन्त्र—**ॐ नमो याचली याचली उस्का चश्मा कुलफ उस्का बाजू कुलफ दुश्मनको जेर कर हमको सेर। इति मन्त्रः।**

हनुमानजी का विधिपूर्वक पूजन करके मन्त्र का १ हजार जप और १ हजार गूगल की गोली का होम करने से सिद्ध होता है। तदुपरान्त सात बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंके तो वह बड़बड़ाने नहीं पावेगा।

मन्त्र—**ॐ अलफ अलफ अलफ दुसमनके मुहमें कुलफ मेरे हाथ कुञ्जी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर। इति मन्त्रः।**

शनिवार की रात्रि में घृत का दीप जलाकर फूल, बताशा चढ़ाकर गूगल की १ हजार आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर हाकिम के सामने १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंक मारकर यदि उससे बात किया जाय तो वह बोल नहीं सकेगा। यदि आवेदन पत्र पर १०८ बार पढ़कर लोहबान की धूप देकर वह आवेदन पत्र अधिकारी को दे तो निश्चित रूप से मनोरथ सिद्ध होगा।

मन्त्र—**ॐ ह्रीं श्रीं खेतलवीर चोसठयोगिनी प्रतिहार मम शत्रू अमुकस्य मुखबन्धनं कुरुकुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।**

घी, शहद और मद्य की १ हजार आहुतियाँ देकर लोहे की ४ अंगुल की कील श्मशान में गाड़ने से शत्रु का मुख स्तम्भन हो जाता है।

मेघ स्तम्भन

यह १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रूं ह्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ह्रूं फट् ठः ठः। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

पूवाभिमुखो भूत्वा लक्षं जपेत्। वैश्वानरसमीपे वेतसमिदा घृताक्तयाऽयुतं जुहुयात्। सिद्धो भवति। पुनः मन्त्रं पठित्वा मेघावलोकनेन सर्वे मेघाः प्रणश्यन्ति वासवो न वर्षन्ति। नदीं समुद्रगां शोषयति। मेघशब्दो न भवति। उदकमध्ये स्थित्वा जपेत्। आनावृष्टिर्भवति।।

पूर्वाभिमुख होकर एक लाख जप और अग्नि मेंघी से सिक्त बेंत की समिधा का दश हजार होम करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। पुनः मन्त्र पढ़कर मेघ को देखने से सभी मेघ नष्ट हो जाते हैं और इन्द्र वर्षा नहीं करते। यहाँ तक कि समुद्रगामिनी नदियों को साधक सुखा देता है और मेघों का गर्जन बी नहीं होता। पानी में खड़े होकर जप करने से अनावृष्टि के समय वर्षा होती है।

सेना स्तम्भन

२८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ मन्त्र जप से सिद्ध होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

स्नापलायन

यह २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ जप से सिद्ध होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधको तन्त्रों को करे।

अग्नि स्तम्भन

निम्नलिखित मन्त्र को बजनपत्र पर पीले द्रव्य से लिखकर पूजा करे। फिर इसे भूमि में गाड़कर पानी की धार डालता रहे। इससे घर में अग्नि का भय नहीं रहता।

यह २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमोऽग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ मन्त्रजप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

कुछ अन्य प्रयोग

१. प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वज्रयोगिनी वज्रकिवाड़, वजरी बांधू दसूं दुवार। झाड़ो झड़ै न लिङ्गी करै, तो वज्रजोगनीका वाचा फुरै।

२. अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरूको चार घाटी चार वटी रक्त चुवै चोरासी घाटी रक्त चुवै भील धीर थांभ हनुमन्त वीर लङ्कासा कोट समुदरसी खाई इस नारीके रक्त चुवै तो सोषिया वीरका दुहाई लूणा चमारीका दुही अजैपाल जोगीकी दुहाई लूंणा चमारीकी दुहाई अजैपाल जोगीकी दुहाई इति मन्त्रः।

उक्त दोनो मन्त्रों का विधान समान है।

कुमारी कन्या का काता हुआ ढाई पूणी सूत लेकर उसका डोरा बनाकर मन्त्र द्वारा सात गाँठ देकर उसे कमर में बाँधने से गर्भपात रुक जाता है। यह सत्य है।

पदस्तम्भन

मन्त्र—**ॐ नमो आदेस गुरूको चार आंटी चार वाटी नीर चढ़ै चौरासी घाटी आवै नीर भीजै चीर बांधगाय सोखता वीर सोखता वीर लङ्का वसै सोला कुण्डा रक्तका भषै शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

आधी रात को मन्त्र पढ़कर २१ बार लोहबान जलावे। २१ दिन तक ऐसा करने से सिद्धि होती है। फिर कुमारी कन्या द्वारा काते सूत का डोरा बनाकर कमर में बाँधने से पदस्तम्भन होता है।

यह २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो नारायणाय अमुकं अमुकेन सह विद्विष्टं कुरुकुरु स्वाहा। इति

षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है और सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ बारा सरसो तेरा राई यारकी मारी मसाणकी छाई पढ़के मारू कर दलवार अमुका कढ़ै न देखै अमुकीका द्वार मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

सरसों, राई और श्मशान की भस्म इन तीनों को मङ्गलवार के दिन आक की लकड़ियों की अग्नि में १०८ बार होम करे। इस होम की भस्म को स्त्री या पुरुष के द्वार पर डाल दे तो दोनों में अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जायगा।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

सत्य नाम आदेस गुरूको आकढाक दोनों वन राई अमुका अमुकी ऐसी करै जैसे कूकर और विलाई। इति मन्त्रः।

शनिवार से प्रारंभ करके ७ दिन इस मन्त्र को आक के पत्तों पर लिख अर्ध रात्रि के समय प्रत्येक पत्ते को सात मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके ढाक की लकड़ी के अङ्गारों में जलावे तो साध्यों के बीच अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जाता है।

कुछ अन्य प्रयोग

वस्त्र पुर्षसिलवालमें हरिया मङ्गलके दिन जारै। तेहिकी राख खवावै उनको वैर बन्धै या मारै।। गधामुत्र लेवै शनिरविदिन, धरतीपड़न न पावै। तामें राई रखे तीन दिन, फिरले ताहि सुखावै। रविदिन धूनी दे लेजावै, जहांमित्र दोपावै। उनके मध्य डारकर आवै, वैरबाव होजावै।।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकममुकेन सह विद्वेषय विद्वैषय हनहन पचपच मथमथ हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

इस मन्त्र से कड़वा तेल में नीम के पत्ते, तिल और चावल मिलाकर होम द्रव्य तैयार करे। फिर श्मशान की अग्नि से खैर की लकड़ियाँ जलाकर उसमें उक्त द्रव्य की १० हजार आहुतियाँ दे। इससे दो साध्यों में अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जाता है।

व्यापार वृद्धि मंत्र-१

व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण करके दुकान खोलें और व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करें तो उस दिन ब्रिकी बढ़ती है और किसी प्रकार का कोई उपद्रव या परेशानी नहीं आती। इस मंत्र

को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नित्य दुकान खोलने से पूर्व एक माला जपना ही पर्याप्त है।

श्री लुल्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो समुद्र की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोमीट तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहीई।

व्यापार वृद्धि मंत्र-२

भंवरवीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहा कर मेरा उठै जो डंडी बिकै जो माल भंवरवीर की सौंह नहि खाली जाय।

बिक्री बढ़ाने के लिए यह अनुभूत मंत्र है। इसका प्रयोग केवल रविवार के दिन ही माना जाता है और ३ रविवार तक लगातार करने से सफलता मिलती है। प्रयोग इस प्रकार से है कि काले उड़द को २१ बार अभिमंत्रित कर व्यापार स्थल पर डालें। बिक्री में वृद्धि होगी।

व्यापार बंधन मुक्ति का मंत्र

कभी-कभी अचानक ही व्यवसाय चौपट होता हुआ प्रतीत होता है। सम्भव है धन्धे की बरकत तन्त्र-तन्त्र से बाँध दी गई हो। अगर ऐसा हो तो इस मन्त्र का प्रयोग किया जाना चाहिए। तुरंत लाभ मिलने लग जाता है।

" ओम नमो आदेश गुरू को वावन वार चौसठ सातऊ कलवा पांचऊ बड़वा जिन्न भूत परीत देव दानव दुष्ट मुष्ठ मैली मशाण इन्हीं को कील कील नजर दीठ मूँठ टोना टारे लोना चमारी गाजे या धन्धे दुकान की बरकत को बन्धन न छुड़ावे तो माता हिंगलाज की दुहीई।"

विधि—नवरात्रि में एक हजार जप से उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्धि के समय धूप जलाना चाहिए। मन्त्र सिद्धि के बाद बालकों और कन्याओं को भोजन कराना चाहिए।

बंधित दुकान में पाँच नीबुओं को इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर एक सूत्र में पिरो कर दुकान में टाँगना चाहिए। सरसों के कुछ दानों पर २१ मन्त्र पढ़कर दुकान में डालें।

रोजगार बाधानाशक एवम् व्यापार वृद्धि कारक मन्त्र

'ओम नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल पूर्व को धाया देव दानवों को बाँधि लाया दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत कूं बाँधि लाया तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अयुत पितृ को बाँधि लाया चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें छलछिद्र

कोऊ रहन न पावें रोग-दोष को दूर भगावें शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

यदि किसी का धंधा ठप्प पड़ गया हो, दुकान चलती नहीं हो, व्यवसाय मंदा पड़ गया हो अथवा चलते व्यापार में विघ्न आने लग गये हों तो उक्त शाबर मंत्र का विधिपूर्वक प्रयोग करने से अप्रत्याशित रूप से रोजगार चलने लगा जाता है और व्यापार की समस्त बाधाएं नष्ट हो जाती हैं।

एक बुर्जुग फकीर बाबा ले मुझे यात्रा प्रवास के दौरान रेल में बातचीत के समय विशिष्ट प्रयोग बताया था। उनका कहना था कि यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साध इस प्रयोगल को सम्पन्न कर लिया जावे तों कोई भी ताकत व्यापार को वृद्धि करने से नहीं रोक सकती हैं इस प्रयोग को करने वाले साधक का व्यवसाय दिन-दूनी-रात-चौगनी तरक्की करने लग जाएगा।

प्रयोग इस प्रकार है कि इस कपड़े के चार पुतले बनावें और इस मंत्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूंक मारकर उन्हें अभिमंत्रित कर लेवें। तत्पश्चात् अपने व्यावसायिक स्थल के चारों कोनों में एक-एक पुतला उक्त मंत्र को पढ़ते हुए गाड़ देवें। इसके बाद प्रतिदिन प्रातः व्यापार स्थल पर जाने से पूर्व एक माला इस मंत्र की अवश्य जपें।

इस प्रकार करते रहने से रोजगार की समस्त बाधाएँ नष्ट होकर आश्चर्याजनक रूप से व्यापार चल निकलता है यह एक सिद्ध प्रयोग है। इन चमत्कारी पुतलों को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

धन प्राप्ति का मंत्र-१

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः स्वाहा।

व्याघ्र चर्म, मृग चर्म अथवा किसी भी चर्मासन पर बैठ कर या किसी नदी या जलाशय के तट पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्रं की साधना करने से साधक को अनायास धन प्राप्त होता है। साधना २१ दिन में एक लाख पच्चीस हजार मंत्र जाप द्वारा ही सम्पन्न की जा सकती है। परंतु मंत्र सिद्ध होने पर अकस्मात् धन प्राप्त होता है। यह निश्चित है।

धन प्राप्ति का मंत्र-२

ॐ सरस्वती ईश्वरी भगवती माता क्रां क्लीं, श्रीं श्रीं मेम धनं देहि फट् स्वाहा।

धन की प्राप्ति में यदि बराबर रुकावट आ रही हो, तो इन मंत्र का एक सौ आठ-आठ बार (१०८) जप ४० दिन तक करें। लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर धन देगी,

यदि किसी की उधारी बाकी हो, व्यक्ति की नियत रुपया वापस नहीं देनी की हो, तो इस मंत्र के जप द्वारा व्यक्ति की बुद्धि निर्मल व शुद्ध हो जाती है तथा आपका रुका हुआ रुपया मंत्र बल से मिलने लगता है।

धन प्राप्ति का मंत्र-३

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी, महासरस्वती ममगृहे आगच्छ-आगच्छ ह्रीं नमः।

इस मंत्र को दीपावली की रात्रि को कुमकुम या अष्टगंध से थाली पर लिखें तथा उसी रात्रि को १८०० या यथेष्ट जप करें। तो उस वर्ष में साधक बहुत अधिक दौलत या ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करता है, यह अद्‌भुत प्रयोग है।

धन का भंडार प्राप्त करने का मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय, धन धन्याधिपतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

यह देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर का अमोघ मंत्र है। इस मंत्र के तीन माह तक रोज १०८ बार जाप करे, जाप करते समय एक कौड़ी (धनलक्ष्मी कौड़ी) अपने सन्मुख अवश्य ही रखे। तीन माह बाद प्रयोग पूरा होने पर उस कौड़ी को आप अपनी तिजोरी, गल्ले या लॉकर में स्थापित कर दे। आपके धन का भण्डार हमेशा भरा हुआ रहेगा।

धन वृद्धि करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्म पदमावी ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आष पूरय सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

सिद्धि करने की विधि—विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्धि कर लें, पत्पश्चात् प्रातः शय्या त्याग से पूर्व एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं के कोणों में दस-दस बार फूँकें तो साधक को सभी दिशाओं से धन प्राप्ति हो।

अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र

''ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा''

प्रयोग विधि—सर्वप्रथम इस मन्त्र को दस सहस्त्र बार जाप कर सिद्धि करें, फिर जब प्रयोग करना हो तो जब पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो बहेड़े नामक वृक्ष का बाँदा लेकर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करें तथा जिस खेत की उपज बढ़ानी हो उस खेत में गाड़ देने से अन्न की उपज अधिक होती है।

गाय भैंस आदि को दूध बढ़ाने का मन्त्र

''ॐ नमो हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलम्''

प्रयोग विधि—उपरोक्त मन्त्र एक सौ आठ बार पढ़कर पशुओं को चारा खिलाने से दूध की वृद्धि होती है।

अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र

"ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधि दर्शन कुरु कुरु स्वाहा!"

प्रयोग विधि—शुभ दिवस तथा नक्षत्र में इस मंत्र को सहस्र बार जप करें, सिद्धि हो जाने पर जब प्रयोग करना हो तब जिस स्थान में धन गड़े होने की सम्भावना हो उस स्थान पर धतूरे के बीज, हलाहल, सफेद घुघुंची, गन्धक, मैनसिल, उल्लू की विष्ठा तथा शिरीष वृक्ष का पंचांग बराबर-बराबर लें सरसों के तेल में पकावें तथा इसी से धूप करने दस सहस्र बार मन्त्र का जाप करने से भूत-प्रेत तथा पितृ आदि का साया उस स्थान से हट जाता है और भूमि में गड़ी धनराशि साधक को दृष्टिगोचर होने लगती है।

ऋद्धि करण मन्त्र

ॐ नमो पदमावती पद्मानने लक्ष्मी दायिनी बाछां भूत-प्रेत विंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहनी सिद्ध ऋद्धि वृद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्री पद्मावत्यै नमः।

प्रयोग विधि—छार छबीला, कपूर, कचरी, गूगुल, गोरोचन समभाग लें मटर के समान गोलियाँ बनाकर रविवार या शनिवार की आधी रात से जाप प्रारम्भ करें और बाईस दिन तक एक सौ आठ बार मन्त्र जाप करें तथा एक सौ पाँच बार मन्त्र जाप कर हवन करें तथा पूजन में लाल वस्तु ही रखें तथा लाल वस्त्र ही पहने तो बाईस दिन पश्चात् लक्ष्मी जी की अनुकम्पा से ऋद्धि प्राप्त होगी।

आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः।।

प्रयोग विधि—मृगशिरा नक्षत्र में वध किये श्याम मृगचर्म पर आसीन हो किसी सरिता के तट कनकागुदी वृक्ष के नीचे बैठ श्रद्धा विश्वास पूर्वक इक्कीस दिन में एक लाख बार मन्त्र जपने से अनायास धन प्राप्त होता है।

नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि

इस जन्म तथा उस जन्म के असत् कर्मों के फलस्वरूप नौ ग्रहों की अशुभ दृष्टि से मानव को नाना प्रकार के अनिष्टों की उपलब्धि होती है अथवा यों मानिये कि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आकाश मण्डल में स्थित ग्रह पिण्डों के प्रभाव से उत्पन्न उत्पात दो प्रकार के होते हैं।

१. सम्पूर्ण राष्ट्र पर प्रभाव डालने वाले ग्रह, उत्पात ग्रह, युद्ध, भूकम्प, तूफान, रक्त वर्षा, केतूदय आदि। २. व्यक्ति विशेष पर होने वाले नाना प्रकार के ग्रह युतियों द्वारा परिलक्षित होते हैं, जिनका विवेचन ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में किया गया है।

तन्त्र शास्त्र के अन्तर्गत यन्त्र मन्त्रों का विशिष्ट महत्त्व है। इस विषय पर कई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी निर्मित किये गये हैं, मगर तन्त्र-मन्त्र गुरु परम्परा वैशिष्ट्य के कारण गुह्य हैं, इसलिये सर्वसाधारण बहुत से विषयों से अपरिचित रहते हैं। हमने परम्परा प्राप्त ग्रह दोष निवारणार्थ यन्त्रों आदि का विशेष अनुभव किया है, जिन्हें जन साधारण के लिये बहुत ही सरल रीति से यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। इन यन्त्रों को प्रारम्भ में सिद्ध करना पड़ता है, तदुपरान्त ही कोई व्यक्ति इन्हें किसी दूसरे को बनाकर दे सकता है। इन्हें सिद्ध करने की विधि संक्षेप में आगे लिख रहा हूँ।

प्रयोग विधि—प्रारम्भ में जिस ग्रह मन्त्रादि को सिद्ध करना ही उस ग्रह के देवता के बार (दिन) व्रतोपवास करें और विधिवत आठ हजार या बत्तीस हजार (ग्रह सम्बन्धित) मन्त्रों का जप-हवनादि प्रतिदिन दो हजार के हिसाब से करें, फिर उस ग्रह की काल होरा में यन्त्र निर्माण कर उसका पूजनादि करें, इसके पश्चात् अभिलाषित व्यक्ति को उपवास एवं यन्त्र पूजन कराकर यन्त्र धारण करना चाहिये और ग्रहण, होली, दीपवाली, विजयादशमी (दशहरा), रामनवमी, अमावस्या, बसंत पंचमी आदि शुभ ग्रह नक्षत्रों में यन्त्रों का पूजन करना चाहिये व जिस ग्रह का यन्त्र हो उसके वार (दिन) में प्रायः पूजन धूप-दीप, आदि करते रहना चाहिये तो अति उत्तम होगा।

विशेष ध्यान रखें—

१. यन्त्रों को भोजपत्र पर अष्टगन्ध, केशर अथवा रक्त चन्दन (लाल चन्दन) या केशर मिश्रित सफेद चन्दन आदि से अनार या तुलसी की कलम (लेखनी) अथवा सोने (स्वर्ण) की निब (कलम) से ही लिखना चाहिये।

२. यन्त्र स्वर्ण अथवा रजत (चाँदी) के पत्र पर भी अंकित हो सकते हैं।

३. यन्त्रों को ताँबा-चाँदी अथवा सोने के ताबीज (खोल) में भरकर धारण करना चाहिये।

४. इन यन्त्रों का निर्माण यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण अथवा गुरुधारक व्यक्ति ही कर सकते हैं।

५. सूर्य यन्त्र, चन्द्र, मंगल, गुरु (बृहस्पति) शुक्र इन यन्त्रों को लाल डोरे में, बुध यन्त्र को हरे डोरे में, शनि-केतु-राहु के यन्त्रों को काले रंग में डोरे में पिरोकर दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करना चाहिये।

अष्टगन्ध बनाने की विधि

असली केशर, कस्तूरी, कपूर, काला अगर, गोरोचन, हाथी का मद,

सफेद चन्दन तथा लाल चन्दन इन सबको पीस लें और घोलकर रोशनाई बना लें। हाथी मद के अभाव में पिसी हल्दी लेनी चाहिये।

नवग्रहों के यन्त्रादिकों की जानकारी निम्न प्रकार से हैं—

१. रवि (सूर्य) यन्त्र मन्त्रादि

रसेंदुनागा नगबाणरामा युग्मांववेदा नवकोष्ठमध्ये। विलिख्य धार्यं गदनाशनाय वदन्ति गर्गादिमहामुनीद्राः।।

पुराणोवत रवि मन्त्र

ह्रीं जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

अर्थात्—जपा (अढौल) के फूल के समान जिन सूर्य भगवान् की कान्ति है और जो 'कश्यप' से उत्पन्न हुए हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है, जो सभी प्रकार के पापों को नष्ट करते हैं, उन सूर्य-भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक रवि मन्त्र

ॐ आकृष्टोनेत्यस्य भन्त्रस्य हिरण्यस्तुः सविता। त्रिष्टुप् सूर्य प्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आकृष्णेनन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्य च। हिरण्ययेन सविसार थेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन्।।

तन्त्रोक्त रवि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। अथवा **ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।** जपसंख्या सात हजार। कलियुग में अट्ठाइस हजार।

सूर्य गायत्री मन्त्र

ॐ सप्त तुरंगाय विद्यमहे सहस्राय किरणाय धीमहि तन्नोरविः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

सूर्य—मध्य भाग, वर्तुल मण्डल, अंगुल बारह, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्तवर्ण, सिंह राशि का स्वामी, वाहन सप्ताश्व, समिधा मदार।

दानद्रव्य—माणिक्य (माणिक) सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, लाल फूल, केशर, मूँगा, लाल गऊ, लाल चन्दन, दान का समय अरुणोदय (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—माणिक्य (माणिक रत्न)।

यदि रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो जड़ी बिल्व पेड़ (बेल) की जड़ को गले अथवा भुजा में धारण करना चाहिये।

२. चन्द (चन्द्रमा) का यन्त्र-मन्त्रादि

नगद्विनंदा गजषट् समुद्रा शिवाक्षदिग्बाण विलिख्यकोष्ठे। चंद्रकृतारिष्ट-विनाशयनाय धार्य मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्।।

पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र

दधि, शंख, तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

अर्थात्—दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है और उत्पत्ति क्षीरसागर (समुद्र) से है, जो शिव (शंकर भगवान) के मुकुट पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रदेव को प्रणाम करता हूँ।

वैदिक चन्द्र मन्त्र

ॐ आप्याय गौतमः सोमो गायत्री सोमप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आप्यावस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्याम्। भवा वाजस्य सगथे।।

तन्त्रोक्त मन्त्र

श्रीं श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।

जपसंख्या—ग्यारह हजार, कलियुग में चौवालीस हजार।

सोम गायत्री मन्त्र

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय, धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

चन्द्र—अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल चार, यमुनातटवर्ती देश, अत्रिगोत्र, श्वेत वर्ण, कर्क राशि का स्वामी, वाहन हरिण, समिधा पलाश।

दान द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेद चन्दन। दान का समय संध्या काल। (गोधूलि वेला)

धारण करने का रत्न-मोती या चन्द्रकान्त मणि (मूनस्टोन), अभाव में सीप अत्यधिक प्रभावशाली। जड़ी-खिरनी वृक्ष की जड़ को, सफेद कपड़े में सीकर गले अथवा भुजा में धारण करें।

३. मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि

गजग्निदिश्याथ नवाद्रिबाणा पातालरुद्रारससंविलख्य। भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः।।

पुराणोक्त भौम जप मन्त्र

ह्रीं धरणीगर्भसभूतं विद्युत-कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युत-पुंज (बिजली) के

सदृश (समान) जिनकी (प्रभा) है, और जो हाथों में शक्ति धारण किये रहते हैं, उन मंगल देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक जप मन्त्र

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः रूपोऽङ्गारको गायत्री, अङ्गारकप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

अथवा

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाठ रेताठंसि जिन्वसि।

तन्त्रोवत भौम मन्त्र

क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

अथवा

ॐ हूँ श्रीं मंगलाय नमः।

जपसंख्या—दस हजार, कलियुग में चालीस हजार।

भौम गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धिमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

मंगल—दक्षिण दिशा, त्रिकोणमण्डल, अंगल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, मेष, वृश्चिक का स्वामी, वाहन मेढा, समिधा-खदिर।

दान द्रव्य—मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन।

दान का समय—सबेरे दो घटी तक।

धारण करने का रत्न—मूँगा, अभाव में जड़ी-अनन्त मूल, नागजिह्वा की जड़, लाल डोरा व कपड़ में सिलकर धारण करना चाहिये।

ऋणमोचन मंगल स्तोत्र

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थितसनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।

धरणीगर्भ-संभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् . पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।
अङ्गारक महाभाग! भगवन्! भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।
ऋण-रोगादि-दारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
अतिवक्त्र दुराराध्यं भोग-मुक्त-जितात्मनः।
तुष्टी ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
विरञ्चि शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।।
पुत्रन् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋण-दारिद्रय-दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनो युवा।।

।।ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्र सम्पूर्णम्।

४. बुध का यन्त्र-मन्त्रादि

नवब्धिरुद्रा दशनागषट्का बाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे। विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदंति यंत्रं शशिजस्य धीराः।।

पुराणोक्त बुध जप मन्त्र

ह्रीं प्रियङ्ग कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—प्रियंग की कली की भाँति जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है, उन सौम्य और सौम्यगुणी से युक्त बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक बुध मन्त्र

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सर्ठं सृजेयायमं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअद्ध्यत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

अथवा

ॐ उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, बुधप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं बहवः सनीलाः। दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावती वसे निह्वये वः।।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र

ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। अथवा **ॐ ऐं श्रीं श्री बुधाय नमः।**

जपसंख्या—नौ हजार, कलियुग में तैतीस हजार।

बुध गायत्री मन्त्र

ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

बुध—ईशानकोण, बाणकार मण्डल, अंगुल ४, मगधदेश, अत्रिगोत्र, पीतवर्ण, मिथुन, कन्या का स्वामी, वाहन सिंह, समिधा अपामार्ग, चिचिड़ा, लटजीरा।

दानद्रव्य—पन्ना, सोना, काँसी, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सफेद फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र, फल।

दान का समय—सबेरे पाँच घटी तक।

धारण करने का रत्न—पन्ना, अभाव में जड़ी-विधारा (वृद्ध मूल)। हरे रंग के डोरे या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

५. बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मन्त्रादि

दिग्बाणसूर्या शिवनन्दसप्ता षड्विश्वनागाः क्रमतोंऽककोष्ठे। विलिख्य धार्य गुरुयंत्रमीरितं रुजाविनाशाय वदंति तद्बहुधाः।।

पुराणोक्त गुरु जप मन्त्र

ह्रीं देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

अर्थात्—जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, कंचन (स्वर्ण) के समान जिनकी प्रभा है और जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार तथा तीनों लोकों के प्रभु हैं उन बृहस्पति जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त गुरु मन्त्र

ॐ बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतिप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पति अतियदर्यो अहद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र

ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

अथवा

ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

जपसंख्या—उन्नीस हजार, कलियुग में छिहत्तर हजार।

गुरु गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

गुरु—उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल ६, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण, धनु, मीन का स्वामी, वाहन हाथी, समिधा पीपल।

दानद्रव्य—पुखराज, सोना, काँसी, चने की दाल, खाँड़ घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीला फल।

दान का समय—संध्या काल।

धारण करने का रत्न—पुखराज नग। अभाव में जड़ी भारंगी (बमनेठी, पीले डोर या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

६. शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि

रुद्रांगविश्वा रविदिग्गजाख्या नगामनुश्चांकक्रमाद्विलेख्या। भृगोः कृतरिष्ट-निवारणाय धार्यं हि यंत्रं मुनिना प्रकीर्तिता।।

पुराणोक्त शुक्र मन्त्र

ह्रीं हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—तुषार, कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा (शोभा) है और जो दैत्यों के परम गुरु हैं, उन सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता श्री शुक्राचार्यजी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त शुक्र मन्त्र

ॐ शुक्रं त इत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः शुक्रो देवतास्त्रिष्टु, छन्दः, शुक्रप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ शुक्र ते अन्यद्यजनं ते अन्यद्विषुरुपे अहनीद्यौरिवासि। विश्वादि माया अवसिस्वधावोघद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र

द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

जपसंख्या—सोलह हजार, कलियुग में चौसठ हजार।

शुक्र गायत्री मन्त्र

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्येदेहाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्र—पूर्वदिशा, षट्कोण मण्डल, अङ्गुल नौ, भोजकट देश, भृगुगोत्र, श्वेतवर्ण, वृषभ (वृष), तुला का स्वामी, वाहन अश्व, समिधा उदुम्बर।

दानद्रव्य—हीरा, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, सफेद चन्दन।

दान का समय—अरुणोदय काल (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—हीरा। अभाव में जड़ी। मंजीठ की जड़ को सफेद कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

७. शनि का यन्त्र-मन्त्रादि

अर्काद्रिमन्वास्मररुद्रअंका नगाख्यतिथ्या दश मन्दयन्त्रम्। विलिख्य भूर्जोपरि धार्यविद्वच्छनेः कृ तारिष्टनिवारणाय।।

पुराणोक्त शनि जप मन्त्र

ह्रीं नीलञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यामग्रजम्। छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनश्चरम्।।

अर्थात्—नील अंजन के समान जिनकी दीप्ति है और जो सूर्य भगवान के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता हैं, सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन शनैश्चर (शनि) देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक शनि मन्त्र

ॐ शमग्निरित्यस्यरिंविठिः ऋषिः, शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः।।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र

प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

जपसंख्या—तेइस हजार, कलियुग में बानवे हजार।

शनि गायत्री मन्त्र

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः शौरिः प्रचोदयात्।

शनि—पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अङ्गुल दो, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण, मकर, कुम्भ राशि का स्वामी, वाहन गिद्ध, समिदा शमी।

दान द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, काला फल, कस्तूरी, काली गौ, भैंस, खड़ाऊँ। दान का समय-मध्याह्न काल।

धारण करने का रत्न—नीलम अथवा कालाश्वपदीय अँगूठी (काले घोड़े के पैर की नाल की अँगूठी), शनिवार के दिन के होरा में बनवा कर उँगली में धारण करना चाहिये। अभाव में जड़ी-अम्लवेत (श्वेत विरैला) की जड़ को काले कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

८. राहु का मन्त्र

विश्वाष्टतिथ्या मनुसूर्यदिश्या खगमहीद्रैकदशांककोष्ठे। विलिख्य यंत्रं सततं विधार्य राहोः कृतरिष्टनिवारणाय।।

पुराणोक्त राहु मन्त्र

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

अर्थात्—जिनमा केवल आधा शरीर है तथा जिनमें महान् पराक्रम है, जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं और सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक राहु मन्त्र

ॐ कयान इत्यस्य मन्त्रस्य वामदेवो राहु गायत्री, राहुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदसावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।।

तंत्रोक्त मन्त्र

भ्रां भ्रीं सौं सः राहवे नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

जपसंख्या—अठारह हजार, कलियुग में बहत्तर हजार।

राहु गायत्री मन्त्र

ॐ शिरो रूपाय विद्महे, अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

राहु—नैऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अङ्गुल बारह, राठीनापुर (मलयदेश), पैठीनस गोत्र, कृष्णवर्ण, वाहन व्याघ्र, समिधा दूर्बा (दूब)।

दाद द्रव्य—गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों का तेल, नीला कपड़ा, काला फूल, तलवार, कम्बल, घोड़ा, सूप।

दान का समय—रात्रि।

धारण करने का रत्न—सीलोनी गोमेद नग। अभाव में जड़ी, सफेद चन्दन।

९. केतु का यन्त्र-मन्त्रादि

मनुखेचर-भूपातिथि-विश्व-शिवा दिग्सप्तादशसूर्यमिता। क्रमतो विलिखेन्नवकोष्ठमिते परिधार्य नरा दुःखनाशकराः।।

पुराणोक्त केतु मन्त्र

ह्रीं पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह-मस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है और जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं, जो स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं ऐसे रूप वाले केतु को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक केतु मन्त्र

ॐ केतु कृण्वन्निति अस्य मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः, केतुर्देवता गायत्रीछन्दः, केतुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

तन्त्रोक्त मन्त्र

स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं केतवे नमः।

जपसंख्या—अठारह हजार, कलियुग में बहत्तर हजार।

केतु गायत्री मन्त्र

ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

केतु—वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अङ्गुल छह, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण, वाहन कबूतर, समिधा-कुशा।

दान द्रव्य—लहसुनियाँ, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा, शस्त्र। दान का समय-रात्रि।

धारण करने का रत्न—लहसुनियाँ नग या लाजवर्त नग, अभाव में जड़ी, असगन्ध की जड़ी को काले कपड़े या डोरे में गले अथवा दाहिनी भुजा में धारण करें।

नवग्रहों का यन्त्र-मन्त्रादि

जिन व्यक्तियों के कई ग्रह अरिष्ट चल रहे हों उन्हें चाहिये कि ग्रहण, होली, दीपावली, विजयादशमी, रामनवमी, अमावस्या, नागपंचमी, वसंत पंचमी आदि शुभ मुहूर्तों में विधि-विधान पूर्वक यन्त्रों का निर्माण, भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से पूरा विधान ऊपर नवग्रहों के यन्त्रों में लिखा जा चुका है। निर्माण करके

निम्नलिखित नवग्रह स्तोत्र से कम-से-कम छियानवें हजार मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके विधि-विधान पूर्वक धारण करने से नवग्रह दोषों की पीड़ा शान्ति होती है।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशङ्कतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्-कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहूं प्रणमाप्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

अशुभ फलवाले ग्रहों के उपाय

जिस समय कोई अशुभ ग्रह आप को अशुभ फल दे रहा हो उसकी शान्ति हेतु प्राचीन काल के महर्षियों-विद्वानों ने उसके यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि का जपानुष्ठान, व दानादि का विधान किया है, जो आपको उपरोक्त नवग्रह जन्य दोष

शान्ति आदि का पूरा विधान जप-संध्या आदि विस्तृत रूप से लिखकर समझाया गया है। मन्त्र-जपादि स्वयं अथवा किसी कर्मनिष्ठ यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण से करायें। जो महानुभाव असमर्थ हों वे सब ग्रहों के दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि से स्नान करें।

औषधि स्नान—लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्ला, कंगुनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, लोध, सवौषधि (कूट-जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागर मोथा ये दस औषधि सर्वौषधि हैं।), इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सभी ग्रहों की पीड़ा नाश होती है।

सभी ग्रहों के दुष्ट दोष नाश के सबसे सुलभ उपाय है, पीपल वृक्ष पर जल, दीपदान तथा गौ और ब्राह्मण पूजा आदि से ग्रहों के दोष नाश होते हैं।

मूलमन्त्र

मन्दवारे तु येऽश्वत्थं प्रातरुत्थाय मानवाः।
आलभन्ते च तेषां वै ग्रहपीडां व्यपोहतु।।
यथा ग्रहो द्विजस्तद्वद्विज्ञेयो वेदपारगः।
तोषयन् मृदुवस्त्राद्यैस्तुष्टमेनं विसजर्दयेत्।।
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर! ग्रहपापहरं परम्।।

।। इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत तन्त्र-मन्त्र साधना द्वितीय परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ।।२।।

।। शुभमिति ।।

❑❑❑

246

रुपेश

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

विषय	पृष्ठांक
नेत्र रोग का उपचार	३८४
शिरोरोग का उपचार	४००
प्रदर रोग का उपचार	४०४
योनिव्यापद् का उपचार	४०६
सूतिका रोग का उपचार	४०८
बालरोग का उपचार	४११
सर्प आदि विष विनाशक उपचार	४१४
रसायन का वर्णन	४१७
वाजीकरण का वर्णन	४१९

[चतुर्थ परिच्छेद]

काल (ज्यौतिष) शास्त्र ४२१-५२४

काल के प्रकार	४२१
कालपुरुष शरीर के अङ्ग और राशियाँ	४२२
राशि स्वरूप ज्ञान	४२२
मेष आदि राशियों का अधिवास	४२२
मेष आदि राशियों की लघुता दीर्घता	४२३
राशियों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२३
राशियों की जलचरादि संज्ञा	४२३
चतुष्पदादि संज्ञा	४२४
राशियों के दिवारात्रि बल	४२४
राशियों के धातु मूल जीव संज्ञा	४२४
मेषादि राशियों की द्विपदादि संज्ञा	४२४
राशियों के वर्ण	४२४
राशियों का स्वामी	४२४
भाव विचार	४२५
ग्रहों के आत्मादि विचार	४२६
ग्रहों के राजादि संज्ञा	४२६
ग्रहों का वर्ण ज्ञान	४२६
ग्रहों का शुभाशुभ ज्ञान	४२६
चन्द्र का बलाबल	४२७
ग्रहों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२७
ग्रहों के विहगादि स्वरूप	४२७
ग्रहों के बालादि अवस्था	४२७
ग्रहों के धातु आदि संज्ञा	४२७
ग्रहों के ताम्रादि वर्ण	४२७
ग्रहों के द्रव्य व अधिदेवता	४२७
ग्रहों के माणिक्यादि रत्न	४२८
ग्रहों के वस्त्र	४२८
पूर्वादि दिशा स्वामी ज्ञान	४२८
ग्रहों के विप्र आदि संज्ञा	४२८
ग्रहों के पुरुषादि संज्ञा व तत्त्व	४२८
ग्रहों के मज्जा आदि ज्ञान	४२८
ग्रहों के लवणादि रस व अयनादि परिज्ञान	४२९
उच्चादि परिज्ञान	४२९
ग्रहों के मूलत्रिकोण राशियाँ	४२९
ग्रहों का फल परिमाण	४२९
ग्रहों का विफल स्थान	४२९
ग्रहों का बालादि अवस्था	४३०
सूर्य स्वरूप	४३०
चन्द्र स्वरूप	४३०
भौम स्वरूप	४३०
बुध स्वरूप	४३०
गुरु स्वरूप	४३०
भृगु स्वरूप	४३०
शनि स्वरूप	४३०
ग्रह वध क्रम	४३१
ग्रहों के मित्रादि ज्ञान	४३१
ग्रहों के स्थिरादि संज्ञा	४३१
ग्रहों की दृष्टि	४३१
ग्रहों का कारक	४३१
ग्रहों का स्थिरकारक	४३२
ग्रह अरिष्ट ज्ञान	४३२
ग्रहों से अरिष्ट नाश	४३२
सूर्य कृत दोष	४३२
चन्द्र कृत दोष	४३२
मङ्गल कृत दोष	४३२
बुध कृत दोष	४३३
गुरु भृगु कृत दोष	४३३
शनि केतु कृत दोष	४३३
राहु कृत दोष	४३३
ग्रह भाव योग	४३३

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ सूर्य फल	४३३
द्वितीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
तृतीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
चतुर्थ भावस्थ सूर्य फल	४३४
पंचम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
षष्ठ भावस्थ सूर्य	४३४
सप्तम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
अष्टम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
नवम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
दशम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
एकादश भावस्थ सूर्य फल	४३४
द्वादश भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
लग्नस्थ चन्द्र फल	४३४
द्वितीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
तृतीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल	४३५
पंचम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
षष्ठ भावस्थ चन्द्र	४३५
सप्तम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
अष्टम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
नवम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
दशम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
एकादश भावस्थ चन्द्र फल	४३६
द्वादश भाव में स्थित चन्द्र फल	४३६
लग्नस्थ मंगल फल	४३६
द्वितीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
तृतीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
चतुर्थ भावस्थ मंगल फल	४३६
पंचम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
षष्ठ भावस्थ मंगल फल	४३६
सप्तम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
अष्टम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
नवम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
दशम भाव में स्थित मंगल फल	४३७
एकादश भावस्थ मंगल फल	४३७
द्वादश भाव में स्थित मंगल फल	४३७

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ बुध फल	४३७
द्वितीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
तृतीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
चतुर्थ भावस्थ बुध फल	४३७
पंचम भाव में स्थित बुध फल	४३७
षष्ठ भावस्थ बुध फल	४३७
सप्तम भाव में स्थित बुध फल	४३७
अष्टम भाव में स्थित बुध फल	४४०
नवम भाव में स्थित बुध फल	४४०
दशम भाव में स्थित बुध फल	४४०
एकादश भावस्थ बुध फल	४४०
द्वादश भाव में स्थित बुध फल	४४०
लग्नस्थ बृहस्पति फल	४४०
द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
तृतीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
पंचम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
षष्ठ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
नवम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
दशम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
एकादश भावस्थ बृहस्पति फल	४४१
द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
लग्नस्थ शुक्र फल	४४१
द्वितीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
तृतीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
चतुर्थ भावस्थ शुक्र फल	४४१
पंचम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
षष्ठ भावस्थ शुक्र फल	४४२
सप्तम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
अष्टम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
नवम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
दशम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
एकादश भावस्थ शुक्र फल	४४२
द्वादश भाव में स्थित शुक्र फल	४४२

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ शनि फल	४४२
द्वितीय भाव में स्थित शनि फल	४४२
तृतीय भाव में स्थित शनि फल	४४३
चतुर्थ भावस्थ शनि फल	४४३
पंचम भाव में स्थित शनि फल	४४३
षष्ठ भावस्थ शनि फल	४४३
सप्तम भाव में स्थित शनि फल	४४३
अष्टम भाव में स्थित शनि फल	४४३
नवम भाव में स्थित शनि फल	४४३
दशम भाव में स्थित शनि फल	४४३
एकादश भावस्थ शनि फल	४४३
द्वादश भाव में स्थित शनि फल	४४३
भावों का शुभाशुभत्व विचार	४४४
केन्द्रस्थ दो ग्रह योग फल	४४४
केन्द्र में स्थित सूर्य-चन्द्र योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य भौम योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य बुध योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य गुरु योग फल	४४५
सूर्य शुक्र योग फल	४४५
सूर्य शनि योग फल	४४५
चन्द्र भौम योग फल	४४६
चन्द्र बुध योग फल	४४६
चन्द्र गुरु योग फल	४४६
चन्द्र शुक्र योग फल	४४७
चन्द्र शनि योग फल	४४७
भौम बुध योग फल	४४७
भौम गुरु योग फल	४४७
भौम शुक्र योग फल	४४८
भौम शनि योग फल	४४८
बुध गुरु योग फल	४४८
बुध शुक्र योग फल	४४९
बुध शनि योग फल	४४९
गुरु शुक्र योग फल	४४९
गुरु शनि योग फल	४४९
शुक्र शनि योग फल	४५०
दो तीन आदि ग्रह योग	४५०
सूर्य चन्द्रमा योग फल	४५०
सूर्य भौम योग फल	४५०
सूर्य बुध योग फल	४५०
सूर्य गुरु योग फल	४५१
सूर्य शुक्र योग फल	४५१
सूर्य शनि योग फल	४५१
चन्द्र भौम योग फल	४५१
चन्द्र बुध योग फल	४५१
चन्द्र गुरु योग फल	४५१
चन्द्र शुक्र योग फल	४५१
चन्द्र शनि योग फल	४५१
भौम बुध योग फल	४५२
भौम गुरु योग फल	४५२
भौम शुक्र योग फल	४५२
भौम शनि योग फल	४५२
बुध गुरु योग फल	४५२
बुध शुक्र योग फल	४५२
बुध शनि योग फल	४५२
गुरु शुक्र योग फल	४५२
गुरु शनि योग फल	४५३
शुक्र शनि योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र मंगल योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र बुध योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र गुरु योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शुक्र योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शनि योग फल	४५३
सूर्य मंगल बुध योग फल	४५३
सूर्य मंगल गुरु योग फल	४५४
सूर्य भौम शुक्र योग फल	४५४
सूर्य भौम शनि योग फल	४५४
सूर्य बुध गुरु योग फल	४५४
सूर्य बुध शुक्र योग फल	४५४
सूर्य बुध शनि योग फल	४५४
सूर्य गुरु शुक्र योग फल	४५४
सूर्य गुरु शनि योग फल	४५४
सूर्य शुक्र शनि योग फल	४५४

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम बुध योग फल	४५५
चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५५
चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र भौम शनि योग फल	४५५
चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५५
चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र बुध शनि योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५५
चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५६
भौम बुध गुरु योग फल	४५६
भौम बुध शुक्र योग फल	४५६
भौम बुध शनि योग फल	४५६
भौम गुरु शुक्र योग फल	४५६
भौम गुरु शनि योग फल	४५६
भौम शुक्र शनि योग फल	४५६
बुध गुरु शुक्र योग फल	४५६
बुध गुरु शनि योग फल	४५७
बुध शुक्र शनि योग फल	४५७
गुरु शुक्र शनि योग फल	४५७
माता व पिता के सुख विचार	४५७
शुभ ग्रहों के योग फल	४५७
पाप ग्रहों के योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम बुध शनि योग फल	४५९

विषय	पृष्ठांक
सूर्य भौम गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य भौम शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य गुरु शुक्र शनि योग फल	४५९
चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६१
भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
भौम बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
एक राशि में सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६५
सृष्टि के समय योग	४६५
स्थावर जङ्गम की अभिव्यक्ति	४६५
मनुष्येतर जन्म ज्ञान	४६५
वर्णाकृति भेद ज्ञान का विचार	४६५
पशु शरीर में राशि विभाग का ज्ञान	४६५
वियोनि का वर्ण व चिन्ह ज्ञान	४६५
ग्रहों के वर्णों का ज्ञान	४६६
प्रकारान्तर से वर्ण का ज्ञान	४६६
पक्षी जन्म ज्ञान	४६६
वृक्ष जन्म योग	४६६
लग्नांश पति से वृक्षों से भेद का ज्ञान	४६७
वृक्ष के शुभाशुभ फल का ज्ञान	४६७
वृक्षों की संख्या का ज्ञान	४६७
वियोनि जन्म ज्ञान	४६७
वियोनि ज्ञान में विशेष कथन	४६७
चतुष्पद जन्म ज्ञान	४६८
विशेष रीति से वियोनि जन्म ज्ञान	४६८
जन्तुओं की आकृति व यमलादि का ज्ञान	४६८
एक से अधिक वियोनि जन्म ज्ञान	४६८

विषय	पृष्ठांक
लोक विपरीत प्रसव ज्ञान	४६९
वृश्चिक लग्नस्थ द्विपद वा नवम नवांश फल	४६९
धनु लग्न धनु नवांश या धनु द्वादशांश फल	४६९
मकर लग्नस्थ मकर नवांश या मकर द्वादशांश फल	४६९
मीन लग्नस्थ मीन नवांश या मीन द्वादशांश फल	४६९
मेष या वृष लग्नस्थ मेष या वृष नवांश फल	४६९
गर्भाधानयोग्य रजोदर्शन	४७०
रजो दर्शन में कारण	४७०
गर्भाधान में अक्षम रजोदर्शन	४७०
स्त्री पुरुष संयोग कथन	४७०
अन्य पुरुष संयोग कथन	४७१
संभोग प्रकार का विचार	४७१
गर्भ सम्भव योग	४७१
गर्भस्थिति का स्वरूप	४७१
गर्भ में पुत्रादि का ज्ञान	४७२
पुत्र जन्म योग	४७२
नपुंसक जन्म योग कथन	४७२
यमल योग विचार	४७२
गर्भ में तीन बालकों का योग	४७३
प्रत्येक मास में गर्भ की स्थिति विचार	४७३
गर्भ के दस मासों का स्वामी	४७३
गर्भपात योग	४७३
गर्भपुष्टि ज्ञान	४७४
गर्भ सहित गर्भवती मरण विचार	४७४
गर्भ वृद्धि योग	४७४
गर्भ समय से प्रसव मास का ज्ञान	४७४
सर्वसम्मत से जन्म राशि ज्ञान	४७५
प्रसव काल का ज्ञान	४७५
प्रसवकालिक लग्नादि का ज्ञान	४७५
नेत्रहीन योग	४७५
मूक योग	४७५

विषय	पृष्ठांक
जड एवं सदन्त योग	४७५
अधिकाङ्ग योग	४७५
वामन एवं कुब्ज योग	४७६
पङ्गु योग	४७६
बिना शिर, पैर, हाथ के जन्म योग	४७६
लग्नादि से जन्मयोग का ज्ञान	४७६
प्रसव स्थान का विचार	४७६
सूतिकागृह विचार	४७७
सूतिका गृह में शयन स्थान ज्ञान	४७७
सूतिका गृह के स्वरूप ज्ञान	४७८
सूतिका की शय्या का विचार	४७८
सूतिका का भूमि शयन एवं उपसूतिका ज्ञान	४७८
दीपक की वर्त्ति व तेल का ज्ञान	४७८
अधिक दीप का ज्ञान	४७९
प्रसव के समय अन्धकार विचार	४७९
पिता की अनुपस्थिति में जन्म योग	४७९
कष्ट में प्रसव एवं माता के सुख का विचार	४८०
परजात जन्म योग	४८०
प्रसव समय में मातृकष्ट का विचार	४८०
सर्पवेष्टित जन्म योग	४८०
माता पिता का सुख योग	४८०
पुरुष-स्त्री ग्रहों के बल का ज्ञान	४८१
तीन प्रकार के अरिष्ट	४८१
तृतीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
द्वितीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
नवम वर्ष के बाद अरिष्ट योग	४८१
एक मास में अरिष्ट योग	४८१
एक वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
छठवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
चौथे वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
दो मास में अरिष्ट योग	४८२
शीघ्र अरिष्ट योग	४८२
जन्माधिपति के द्वारा शारीरिक पीड़ा का ज्ञान	४८२

विषय	पृष्ठांक
सात वर्ष में अरिष्ट का ज्ञान	४८२
दश या सोलह वर्ष में अरिष्ट का विचार	४८२
शीघ्र मरण विचार	४८२
स्वल्पकाल में मरण योग	४८२
एक, चार, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
एक, छः, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८३
चतुर्थ मास में अरिष्ट का विचार	४८३
माता के साथ अरिष्ट का विचार	४८३
शीघ्र निधन अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट का ज्ञान	४८३
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८४
मातृ अरिष्ट योग	४८४
पितृ अरिष्ट योग	४८४
पिता के अरिष्ट का योग	४८४
माता के साथ निधन योग	४८४
जन्म के समय पिता का स्थान	४८४
पिता का निधन योग	४८४
माता एवं जातक में एक के निधन का ज्ञान	४८५
नेत्र हानि योग	४८५
पुनः नेत्र हानि योग	४८५
कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
चन्द्र राशि से कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
तीन दिन जीवन योग	४८६
एक दिन का जीवन योग	४८७
सात दिन का जीवन योग	४८७
रोगारम्भ से अरिष्ट का विचार	४८७
पुनः रोगारम्भ से अरिष्ट	४८७
पुनः जन्माङ्ग से अरिष्ट योग	४८७
एक मास वा सात दिन का आयु योग	४८८
मृत जातक योग	४८८
त्रिकोण गत पापग्रह से अरिष्ट योग	४८८
शीघ्र निधन योग	४८८
१०८ वर्ष की आयु का योग	४८८

विषय	पृष्ठांक
१२० वर्ष की आयु का योग	४८८
देवतुल्य आयु योग	४८८
गतायु योग	४८९
अनुक्तकाल योगों में निधन समय का विचार	४८९
पाँचवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
ग्यारहवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
चतुर्थ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
तीन वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
नौ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
पाँच वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
बारह वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
दुर्मुहूर्त में अरिष्ट योग	४९०
अल्प समय में अरिष्ट योग	४९०
प्रत्येक राशि में चन्द्रकृत अरिष्ट योग	४९०
कथित अंशों में निधन समय का विचार	४९०
गुरुवश निधन वर्ष का विचार	४९१
राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान् योग	४९१
क्रूरकर्मा व सत्कृत राजयोग	४९१
नीचकुल में उत्पन्न होने वाले राजयोग	४९१
नीच कुलोत्पन्न राजयोगों के बत्तीस प्रकार	४९१
अधमवंशोत्पन्न का राजयोग	४९२
अखिलभूमण्डल पालक योग	४९२
विज्ञान कुशल राजयोग	४९२
सद्भूपाल राजयोग	४९२
अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग	४९२
इन्द्र तुल्य राजयोग	४९२
शत्रु से अजेय राजयोग	४९२
शत्रु को पराजित कर्त्ता राजयोग	४९२
स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग	४९३
अधिराजयोग	४९३
अपारकीर्तियुत राजयोग	४९३
प्रसन्न राजयोग	४९३
इन्द्रतुल्य बलशाली राजयोग	४९३
अखण्ड भूपतियोग	४९३
यशस्वी व समस्त शत्रुहन्ता राजयोग	४९३
सार्वभौम राजयोग	४९३
देव-दानवों से वन्दित राजा	४९४
शत्रुरहित राजयोग	४९४
सार्वभौम राजयोग	४९४
सगरादि तुल्य राजयोग	४९४
तपस्वी राजयोग	४९४
बृहस्पति की बुद्धितुल्य राजयोग	४९४
दुर्वार शत्रुमारक राजयोग	४९४
यशस्वी राजयोग	४९४
अधिक हाथी रखने वाला राजा	४९४
स्वकीर्ति से दिशाओं का शुभ्रकर्त्ता राजयोग	४९५
शत्रुजेता राजयोग	४९५
सार्वभौम राजयोग	४९५
अधिक हाथी वाला राजयोग	४९५
अपूर्व यशस्वी राजयोग	४९५
निषाद कुलोत्पन्न राजयोग	४९५
महाराज योग	४९५
ग्रामीण राजयोग	४९५
अधिक यशस्वी राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
देवतुल्य राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
लक्ष्मीयुत राजयोग	४९६
प्रसिद्ध राजयोग	४९६
ब्राह्मणकुलोत्पन्न का राजयोग	४९६
गौपालक राजयोग	४९६
सकलनृप पालक राजयोग	४९६
यशस्वी राजयोग	४९७
कुत्सित राजयोग	४९७
नीचकुलोत्पन्न राजयोग	४९७
शत्रुजेता राजयोग	४९७

विषय	पृष्ठांक
निराकुल राजयोग	४९७
चक्र व समुद्र राजयोग	४९७
अधिक सम्पत्तिवान् राजयोग	४९७
नगर नामक राजयोग	४९७
प्रशान्त राजयोग	४९७
कलश संज्ञित राजयोग	४९८
पूर्ण कुम्भ नामक राजयोग	४९८
सर्ववन्दित राजयोग	४९८
स्थिर लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
अति लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
चन्द्रांशतुल्य यशस्वी राजयोग	४९८
स्वगुण प्रख्यात राजयोग	४९८
यशस्वी राजयोग	४९९
पराक्रम धन वाहन से युक्त राजयोग	४९९
सर्पराज के तुल्य प्रतापी राजयोग	४९९
राजराजेश्वर राजयोग	४९९
शत्रुजित राजयोग	४९९
लक्ष्मीपति राजयोग	४९९
ब्राह्मणकुलोत्पन्न राजयोग	४९९
अंग देशाधिप राजयोग	४९९
मगधाधिप राजयोग	४९९
शत्रुदमन राजयोग	४९९
गोप कुलोत्पन्न राजयोग	५००
समस्त भूमण्डल का स्वामी राजयोग	५००
कश्मीरमण्डलीय राजयोग	५००
तीन ओर समुद्र से वेष्टित भूमि का राजयोग	५००
प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
द्वीपाधिप राजयोग	५००
त्रिभुवनाधिप राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
विमल कीर्तिमान् राजयोग	५००
प्रसिद्ध यशस्वी राजयोग	५०१
स्वभुज विजयी राजयोग	५०१
अस्थिर स्वभावी राजयोग	५०१
अजेय राजयोग	५०१
द्विज देवभक्त राजयोग	५०१
सर्ववन्दित राजयोग	५०१
स्वबाहुबल से शत्रु को जीतने वाले राजा का राजयोग	५०१
कीर्तिमान् राजयोग	५०१
पुष्कल नामक राजयोग एवं फल	५०१
शतयोजन भूमि का स्वामी	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
वर्धितश्री राजयोग	५०२
शत्रुजेता राजयोग	५०२
विश्व का कल्याण करने वाला राजा	५०२
वीर राजयोग	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
अतुल्य बलवान् राजयोग	५०२
अहंकारी राजयोग	५०२
कुबेर के समान धनी राजयोग	५०२
त्रिसमुद्रपारग राजयोग	५०३
सिंहासनाधिशायी राजयोग	५०३
अपने बाहुबल से पृथ्वी को जीतने वाला राजा	५०३
समस्त नृपों से वन्दित राजा	५०३
सुनफादि योग में भी राजयोग का विचार	५०३
अतुल कीर्तिमान् राजयोग	५०३
सार्वभौम राजयोग	५०३
जातक भङ्ग योग	५०३
चाण्डाल सदृशो योग	५०३
ब्राह्मण सदृशी योग	५०३
भिक्षाटन-धनरहित-नित्य लुब्ध योग	५०४
दास और भिक्षाटन योग	५०४
श्वास क्षयप्लीहगुल्मविद्रधि रोग योग	५०४
अङ्ग वैकल्य व तनु शोषण योग	५०४
सूखा रोग-अंधापन-विक्षिप्तता योग	५०४
उन्माद व स्मृति भ्रंश योग	५०५

विषय	पृष्ठांक
अन्य वसु (धन) स्त्री भोग करने वाला योग	५०५
कुलनाशक-अल्पायु-भिक्षुक योग	५०५
भिक्षाशनी-दु:खित देहभोग योग	५०६
अपस्मार (मृगी) रोग योग	५०६
'गदा' नामक योग अपस्मार रोग योग	५०६
चाण्डाल योग-कुलाचार-सत्कर्महीन योग	५०६
वाग्दोष-परिभ्रंश योग	५०६
कुलघ्न आदि योग	५०६
कुलध्वंस-विदार योग	५०७
गृह से बहिष्कृत-स्त्री-पुत्रहीन-मूर्ख योग	५०७
अति हीन वृत्ति योग	५०७
जन्मभूमि भ्रष्ट-भाग्यहीन योग	५०७
राज योग भङ्गार्थ योग	५०७
प्रेष्य (दूत) योग	५०८
फटे-चिथड़े वस्त्र और बन्धन योग	५०८
मन्द-अक्षि रोगी योग	५०८
अन्धा योग	५०८
विकलाङ्गता-जाति भ्रष्टता योग	५०८
कुष्ठ रोगी योग	५०९
गुल्म और कण्ठ रोगी योग	५०९
उन्माद (बाबलापन) क्रोधी-कलह प्रिय योग	५०९
हृदयशूल-भाग्यहीनता योग	५०९
ज्ञान धनादि हीन-परान्नभुक्-रुग्णदेह-कलहप्रिय योग	५०९
संस्कारहानि योग	५१०
वाहन से भयप्रद योग	५१०
शारीरिक उष्णता और जल में पिता मृत्यु योग	५१०
पिता की जल में मृत्यु योग	५१०
द्विज (ब्राह्मणादि) प्रहर्ता-कर्ण रहित-शिशुघ्न योग	५१०
शिशुघ्न और गोमृग जाति हन्ता योग	५११
नित्य पक्षिहन्ता योग	५११
गलान्तमृत्यु और वामनयनहीन योग	५११
शिथिली भय-कृकलास भय योग	५११
कौल्यादि पातित्य-कूर्म भय-दंशभय-स्त्रियों के निद्रा से भय योग	५१२
स्त्री गमन योग	५१२
सम्भोग और सम्भोग स्थान योग	५१२
पशुसङ्ग या समान सम्भोग योग	५१३
स्त्रियों के स्तन आदि स्वरूप योग	५१३
ग्रह स्थिति योग	५१३
द्विज-देवतार्थ धन योग	५१३
विंशोत्तरी महादशा जन्मनक्षत्र से दशेश ज्ञान प्रकार	५१३
विंशोत्तरी दशा ज्ञानार्थ महा-दशान्तर्दशा चक्र	५१४
ग्रहदशा वर्ष और भुक्त भोग्य वर्ष ज्ञान प्रकार	५१५
विंशोत्तरी दशा क्रम जानने का प्रकार	५१५
पुन: अन्तर्दशा ज्ञान प्रकार	५१५
सूर्यान्तर्दशा फल	५१५
चन्द्रान्तर्दशाफल	५१५
भौमान्तर्दशा फल	५१५
राहवन्तर्दशा फल	५१५
गुर्वन्तर्दशा फल	५१६
शन्यन्तर्दशा फल	५१६
बुधान्तर्दशा फल	५१६
केत्वन्तर्दशा फल	५१६
शुक्रान्तर्दशा फल	५१६
योगिनी दशा के स्वामी कथन	५१६
जन्मनक्षत्र वश योगिनी दशा ज्ञान	५१६
योगिनी दशा के नाम	५१६
योगिनी दशा वर्ष	५१६
अन्तर्दशा लाने में विशेष	५१७
योगिनी दशा फल	५१७
पुन: मंगलादिदशा फल	५१८

विषय	पृष्ठांक
वर्ष दशा क्रम प्रकार	५१८
ग्रहों की नित्यानित्य दशाओं का प्रकार	५१९
नित्यदशाज्ञानार्थ अन्य प्रकार	५१९
पञ्चमहापुरुष-भूत विचार	५१९
पञ्चमहापुरुष लक्षण कथन	५१९
रूचक लक्षण	५१९
भद्र लक्षण	५१९
हंस लक्षण	५२०
मालव्य लक्षण	५२०
शश लक्षण	५२०
पञ्चमहाभूत का प्रयोजन	५२०
जातक प्रकृति	५२१
पंचभूत स्वभाव लक्षण	५२१
प्रयोजन	५२२
सत्त्वादिगुणफल	५२२
गुण के प्रकार	५२२
उत्तम-मध्यम-अधम के लक्षण	५२३
उदासीन के लक्षण	५२३
गुण प्रयोजन	५२३
मेलापन विचार	५२३

चतुर्थ परिच्छेद

काल (ज्योतिष) शास्त्र

ज्यौतिषशास्त्र का प्रधान विषय निश्चित रूप से काल है इसलिए उसको काल विधायक शास्त्र भी कहा जाता है। जैसाकि वेदाङ्ग ज्यौतिष में लगधमुनि ने 'कालज्ञानं प्रवक्ष्यामि लगधस्य महात्मना' इस प्रकार कहा भी है। अतएव ज्यौतिषशास्त्र के प्रसङ्ग में 'काल' अति महत्त्वपूर्ण है।

काल शब्द 'कल् संख्याने' सूत्रानुसार कल् धातु से निष्पन्न और गणना के अर्थ में व्यवहारार्ह माना गया है। काल के विना एक तुच्छतम कार्य का भी सम्पादन करना असम्भव है। इस तरह सर्वोपयोगी व सर्वसाधारण काल, जिसे नेत्र से देखा भी नहीं जा सकता और जिसका प्रत्यक्षीकरण मात्र कार्य से ही सम्भव होता है। वस्तुत: संसार के सभी कार्य काल की अपेक्षा रखता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इस संसार में क्रिया की अपेक्षा काल निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है। वह काल सर्वव्यापक व नित्य है, जिसमें ही अखिल ब्रह्माण्ड स्थित है। वह काल ही इस व्यापक ब्रह्माण्ड का सञ्चालक होने से उसका ईश्वर-परमेश्वर है, यह स्पष्ट हो जाता है। इस काल के प्रसङ्ग को भारतीय वैदिक साहित्य व दर्शन में अनेक स्वरूपों में प्रतिपादित व विवेचित किया गया है। उसमें उसके दो स्वरूप स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। एक सृष्टि सञ्चालक, पालक व संहारक के रूप में और दूसरा गणनात्मक या कलनात्मक रूप में। यहाँ उस काल के दूसरे स्वरूप के व्यावहारिक पक्ष की विशद चर्चा करना उद्देश्य है।

काल के प्रकार

यहाँ काल के दो प्रकार का उल्लेख हुआ है। एक वह, जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के चराचर का सृष्टि, पालन और संहार करने वाला काल या महाकाल है।

दूसरा वह जो गणना करने योग्य है। उस गणना योग्य काल के भी दो भाग है। एक स्थूल काल, जिसमें प्राण से प्रलयान्त (कल्पान्त) तक के कालखण्ड आते है, जिन्हें मूर्त्त काल कहा जाता है।

दूसरा सूक्ष्मकाल, जिसमें त्रुटि से प्राण तक व्यवहार अयोग्य काल आता है, जिसे अमूर्त्त काल कहा जाता है। इस प्रकार काल प्रमुख तीन स्वरूपों में हमारे समक्ष आता है— १. महाकाल, २. व्यावहारिक गणनायोग्य स्थूल काल (मूर्त्तकाल) और ३. व्यवहार अयोग्य सूक्ष्मकाल (अमूर्त्त काल)।

अश्विन्यादि नक्षत्रों के नव चरणों से संयुत व आकाश में चलने वाली व चक्र

में टिकी हुई मेषादिक बारह राशियाँ होती हैं और राशियों में भली-भाँति बँटी हुई क्षेत्र, ऋक्ष, राशि व भवन ये स्थानों के नाम होते हैं।

कालपुरुष शरीर के अङ्ग और राशियाँ

शीश में मेष, मुख में वृष, बाहुओं में मिथुन, हृदय में कर्क, कोखों में सिंह, कमर में कन्या, बस्ति देश में तुला, गुदा में वृश्चिक, ऊरूओं में धनु, जानुओं में मकर, जंघाओं में कुम्भ और पैरों में मीन रहता है। ये अङ्गगत राशियाँ कालपुरुष के शरीरगत अवयव कहे जाते हैं।

राशि स्वरूप ज्ञान

मीन राशि--दो मछलियों में एक के मुख पर दूसरे की पूँछ लगकर गोल बनी हुई है।

कुम्भ–कन्धे पर कलश लिए हुए पुरुष के सदृश है।

तुला–तराजू हथ में लिए हुए पुरुष के समान है।

धनु–धनुष हाथ में लिए हुए कमर के ऊपर मनुष्य नीचे जानुनी जङ्घा आदि घोड़े के समान है।

मकर–मृग के सदृश मुख वाला है।

मिथुन–नारी व पुरुष का युग्म, नारी के हाथ में वीणा और पुरुष के हाथ में गदा धारण किये हुए के समान है।

कन्या–नौका पर बैठी हुई हाथ में धान व अग्नि को लिए हुए है।

शेष (मेष, वृष, कर्क, सिंह व वृश्चिक) राशियों का स्वरूप जाति नाम के समान है। जैसे–मेष भेड़ा के समान, वृष बैल के समान, कर्क केकड़ा के समान, सिंह शेर के समान और वृश्चिक का स्वरूप बिच्छू के समान है।

मेष आदि राशियों का अधिवास

धातु व रत्नों की खान और धरातल में मेष का अधिवास है।

पर्वतों की चोटी सम भूभाग, खेत, गोकुल तथा वन में वृष का अधिवास है।

जुआ, रति और विहार करने की भूमि में मिथुन का अधिवास कहा गया है।

बावली, तालाब, पोखरा और पुलों का किनारा कर्क का वास रहता है।

घने पहाड़ों, गुफाओं और वनों में सिंह का वास रहता है।

हरी घास, रमणियों के रतिस्थान तथा कारीगरी की भूमि में कन्या का अधिवास कहा गया है।

समग्र अर्थसार, पुर, बाजार या दूकानों की भूमि में तुला का अधिवास है।

पत्थर, विष, कीट व बिलप्रदेश में वृश्चिक का वास कहा गया है।

घोड़े, रथ और हाथियों के रहने की भूमि में धनु का वास है।
नदी, जल तथा जंगलों में मकर का वास होता है।
जल, घट, भाण्डगृह में कुम्भ का अधिवास कहा गया है।
मछलियों के रहने की जगह (हदों) नदी, समुद्र और जलराशियों में मीन का अधिवास है।

मेष आदि राशियों की लघुता दीर्घता

मेष, वृष, कुम्भ ये ह्रस्व संज्ञक हैं। मकर, मिथुन, धनु, मीन और कर्क ये समसंज्ञक हैं। वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला ये दीर्घसंज्ञक हैं।

मेषादि राशियाँ पुरुष तथा नारीसंज्ञक भी होती हैं। अर्थात् मेष पुरुष, वृष नारी, मिथुन पुरुष, कर्क नारी, सिंह पुरुष, कन्या नारी, तुला पुरुष, वृश्चिक नारी, धनु पुरुष, मकर नारी, कुम्भ पुरुष, मीन नारी संज्ञक है।

मेष, वृष, मिथुन व कर्क ये चार और इनसे पाँचवीं राशि क्रम से पूर्वादि दिशाओं में रहती हैं। अर्थात् मेष पूर्व में रहता है। दक्षिण में कन्या, तुला पश्चिम में और कर्क उत्तर में रहता है तथा सिंह पूर्व में, कन्या दक्षिण में, तुला पश्चिम में, वृश्चिक उत्तर में बसता है। पूर्व में धनु, दक्षिण में मकर, पश्चिम में कुम्भ, उत्तर में मीन है।

मेषादि बारह राशियाँ क्रूर व सौम्य संज्ञक कही जाती हैं अर्थात् मेष क्रूर, वृष सौम्य, मिथुन क्रूर, कर्क सौम्य, सिंह क्रूर, कन्या सौम्य, तुला क्रूर, वृश्चिक सौम्य, धन क्रूर, मकर सौम्य, कुम्भ क्रूर और मीन सौम्य कहा जाता है।

मेषादि बारह राशियाँ चर, स्थिर व द्विस्वभावसंज्ञक भी कही जाती हैं। अर्थात् मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन द्विस्वभाव, कर्क चर, सिंह स्थिर, कन्या द्विस्वभाव, तुला चर, वृश्चिक स्थिर, धनु द्विस्वभाव, मकर चर, कुम्भ स्थिर और मीन द्विस्वभाव संज्ञक कहा गया है।

राशियों के पृष्ठोदयादि संज्ञा

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर ये राशियाँ रात्रि में बलवान् कही जाती हैं। इनमें मिथुन राशि को छोड़कर अन्य राशियाँ पृष्ठोदयसंज्ञक होती हैं। सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक व कुम्भ ये राशियाँ दिन में बली व श्रेष्ठ तथा मिथुन राशि के सहित शीर्षोदय कही जाती हैं। मीन राशि दिन और रात्रि में बलवान् व दो मछलियों के मुख पुच्छ मिलकर उभयोदयी होती है, जो पृष्ठभाग से उदय लेते हैं, वे पृष्ठोदय और जो शिरभाग से उदय लेते हैं, वे शीर्षोदयी कहलाते हैं।

राशियों की जलचरादि संज्ञा

मीन, वृश्चिक, कर्क और मकर ये जल संज्ञक कहे जाते हैं। कुम्भ, कन्या,

मिथुन और वृष ये जल का आश्रय रखते हैं, अर्थात् जलाश्रयी कहलाते हैं। मेष, धनु, तुला और सिंह ये निर्जल भूतल में विचरते हैं। ऐसा बहुत से सन्त लोग कहते हैं।

चतुष्पदादि संज्ञा

धनु का परार्द्ध, सिंह, वृष, मकर का पूर्वार्ध और मेष ये चतुष्पदसंज्ञक हैं तथा ये दशम भाव में बली होते हैं। कन्या, मिथुन, कुम्भ, तुला और धनु का पूर्वार्ध ये नर रूपधारी द्विपद कहे जाते हैं। यदि लग्न में हों, तो बलवान् होते हैं। मकर का परार्ध, मीन और कर्क ये जलचर कहे जाते हैं। यदि चौथे घर में हों, तो बलवान् होते हैं। वृश्चिक जलाश्रयी कहा जाता है। यदि सातवें घर में हो, तो बलवान् होती है।

राशियों के दिवारात्रि बल

दिन के समय केन्द्र में बैठा हुआ द्विपद बलवान् होता है। रात्रि के समय केन्द्र के चतुष्पद बलवान् होते हैं और समस्त कीटसंज्ञक यदि केन्द्र में हों, तो दोनों सन्धियों सुबह व शाम में बली होते हैं।

राशियों के धातु मूल जीव संज्ञा

विद्वानों ने मेषादि बारह राशियों की धातु, मूल व जीव संज्ञा कहा है। जैसे— मेष, कर्क, तुला व मकर की धातुसंज्ञक: वृष, सिंह, वृश्चिक व कुम्भ की मूल संज्ञा तथा मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशियों की जीव संज्ञा है एवं राशियों की सम व विषम संज्ञा भी कही गई है। वहाँ सोने से लेकर मृत्तिकापर्यन्त धातु कहलाती है। वृक्ष से लेकर तिनका पर्यन्त मल कहा जाता है। जो जीव-समुदाय दिखता है, वह जीव कहा जाता है।

मेषादि राशियों की द्विपदादि संज्ञा

मेष में द्विपदों की चिन्ता होती है। वृष में चौपायों की, मिथुन में गर्भ की, कर्क में रोजगार-व्यवसाय की, सिंह में जीवों की, कन्या में नारियों की, तुला में धन की, वृश्चिक में व्याधि की, धनु में धन की, मकर में शत्रु की, कुम्भ में स्थान की और मीन में दैवी चिन्ता करनी चाहिये।

राशियों के वर्ण

मीन, वृश्चिक और कर्क ये ब्राह्मण कहे जाते हैं। धनु, मेष और सिंह ये क्षत्रिय कहे जाते हैं। वृष, मकर और कन्या वैश्यवर्ण कहे जाते हैं और कुम्भ, मिथुन और तुला ये शूद्रवर्ण होते हैं।

राशियों का स्वामी

मेष का स्वामी मङ्गल, वृष का शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, तुला का शुक्र, वृश्चिक का मङ्गल, धनु का गुरु, मकर व कुम्भ का शनैश्चर और मीन का बृहस्पति अधिपति व अंशप है।

भाव विचार

ज्योतिषशास्त्र में कुण्डली के अन्तर्गत बारह राशियाँ और बारह ही भाव होते हैं। पृथ्वी अपनी धुरी पर भ्रमण करती रहती है। सूर्य समेत समस्त ग्रह पूरब की ओर जन्म-स्थान से विभिन्न प्रकार के कोण बनाते हैं और इस कोण से कौन-सा ग्रह किस भाव में है यह पता चलता है।

जातकशास्त्र में भाव का क्या प्रयोजन है? उनका प्रयोजन यह है कि प्रत्येक भाव शरीर के किसी अंग का, किसी सम्बन्ध का (पिता, माता, भाई इत्यादि) और जीवन के किसी भाव का द्योतक है।

किसी भी विशेष बात का निर्णय करने के लिए उस भाव के स्वामी या जो ग्रह उस भाव में बैठे हों या उसे देखते हों या उस भाव का कारक हो, इन सबका विचार करना पड़ता है।

ग्रह किस प्रकार दूसरे भावों पर दृष्टि डालता है, इसे आगे बताएगें परन्तु अभी हम यह बताएंगे कि भाव के स्वामी से हमारा क्या तात्पर्य है। यह हम पहले भी बता चुके हैं कि जब अलग-अलग राशियों का पूर्वीय क्षितिज में उदय होता है उस समय एक के बाद दूसरी राशि से एक के बाद दूसरे भावों का ज्ञान होता है।

जिस समय मेष राशि उदित हो तो मेष से चौथे भाव में कर्क राशि में होगी। अब कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है इसलिए चन्द्रमा को चौथे भाव का स्वामी कहते हैं। मान लीजिए,वृषभ लग्न से उस समय वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह चौथे भाव या चौथे भाव में स्थित सिंह राशि हुई और सूर्य क्योंकि सिंह राशि का स्वामी है इसलिए वह चौथे भाव का स्वामी हुआ।

सूर्य और चन्द्रमा एक-एक भाव के ही स्वामी होंगे; क्योंकि इन दोनों की एक-एक राशि ही है, परन्तु मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि इनमें से प्रत्येक ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी या अधिपति हैं। राहु और केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं होते, इसलिए वे किसी भी भाव के स्वामी नहीं होंगे।

भावों की संज्ञायें—(क) पहला, चौथा, सातवां और दसवां भाव केन्द्र कहलाता है। इनमें बैठे हुए ग्रह बलवान होते हैं।

(ख) दूसरा, पांचवां, आठवां और ग्यारहवां भाव पणफर कहलाता है। आठवें स्थान के अतिरिक्त यहां बैठे हुए ग्रह भी काफी बलवान होते हैं, परन्तु केन्द्र में बैठे हुए ग्रह के समान नहीं।

(ग) तीसरा, छठा, नवां और बारहवां भाव आपोक्लिम कहलाता है। नवम भाव के अलावा इन भावों में ग्रह कमजोर समझे जाते हैं, परन्तु छठे भाव में क्रूर ग्रह

अच्छे समझे जाते हैं। कौन-से ग्रह क्रूर हैं और कौन-से ग्रह शुभ यह आगे बताया जाएगा।

(घ) पांचवें और नवें भावों को त्रिकोण कहते है। त्रिकोण के स्वामी और त्रिकोण में बैठे हुए ग्रह शुभ और बलवान् होते हैं।

(ङ) तीसरा, छठा, दसवां और ग्यारहवां भाव उपचय कहलाता है। 'उपचय' का मतलब है बढ़ाना।

(च) छठे, आठवें और ग्यारहवें भावों को त्रिक कहते हैं, जो ग्रह इनके स्वामी हों या जो ग्रह इनके स्वामी के साथ बैठे या जो ग्रह इनमें बैठें, वे अशुभ होते हैं।

'त्रिक' का मतलब है—तीन खराब भाव।

संसार की प्रत्येक बातें—स्वास्थ्य, धन, बुद्धि, विद्या, प्रसन्नता, दुःख, धर्म, ज़ायदाद, सम्बन्धी, दुकानदारी और व्यापार, वैवाहिक सुख, विवाह, सामाजिक स्थिति, आमदनी, विदेश यात्राएं, बीमारी, विरासत,शत्रु, भोग-विलास इत्यादि ये सब किसी न किसी भाव से ज्ञात होते हैं।

परन्तु प्रत्येक भाव से क्या-क्या बातें पता लगती हैं, यह विस्तार से बताना सम्भव नहीं है। इसलिए संक्षेप में ही किस भाव से क्या विचार होता है, यह बताते हैं। कुछ बातें एक से अधिक भावों से देखी जाती हैं,इसलिए इसके लिए वह सब भाव देखने पड़ेंगे।

पहला भाव—शरीर, शरीर की बनावट, शारीरिक शक्ति, शक्ति, सूरत, रंग, व्यक्तित्व, स्वभाव, झुकाव, स्वास्थ्य, प्रसन्नता और दुःख, आयु, बाल और सिर, यश, सामाजिक स्तर, जन्मस्थान, नाना, दादी इत्यादि।

दूसरा भाव—चेहरा, आंखें (विशेष रूप से दाहिनी आंख), नाक, मुंह, दांत और जीभ, बोलने, बात करने की निपुणता, कठोर या नर्म वाणी (सच या झूठ बोलना) और खाना, भोजन में रुचि, धन और धान्य, सोना, चाँदी और जवाहरात, कंजूसी, वस्तुओं का खरीदना और बेचना, कुटुम्ब, मृत्यु इत्यादि।

तीसरा भाव—गला, आवाज, कान, सुनने की शक्ति, कन्धा, बाजू, छाती का ऊपर का हिस्सा, भाई या बहन (विशेष रूप से अपने से छोटे), साथी, सम्बन्धी, पड़ोसी, नौकर, अपने से नीचे कार्य करने वाले और मददगार, हिम्मत, लड़ना, क्रोध, धर्म, शारीरिक और मानसिक शक्ति, होशियारी, क्षमता, खेल-कद, छोटी यात्राएं, इधर-उधर घूमना, छोटे-छोटे लेख, आयु, धर्म इत्यादि।

चौथा भाव—हृदय और उसके समानन्तर छाती का दहिना हिस्सा, माता,

पिता और माता की ओर के सम्बन्धि, मित्र, रहने का मकान, जमीन, बाग, खेती की भूमि, गीली जमीन और वहां का उत्पादन, पशु, पानी के नीचे का स्थान, तालाब और कुआं, आराम, सोना, प्रसन्नता, सम्मान, मीठी सुगन्ध, सवारी, दक्षिण भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार विद्या, धार्मिक स्वभाव, जीवन का अन्तिम समय, जीवन के अच्छे सिद्धान्त।

पांचवां भाव—पेट, बच्चे, बच्चा जनने की शक्ति, यकृत, बच्चे (लड़के और लड़कियां), बुद्धि, विद्या, याददाश्त, मन, ज्ञान, सलाह, पुस्तक लिखने की क्षमता, भगवान् में भक्ति, साधना और प्रार्थना, पिछले जन्म में किए गए अच्छे कार्य, आनन्द, वेश्याओं से सम्बन्ध, सट्टा, जुआ, घुड़दौड़ इत्यादि।

छठा भाव—नाभि के पास शरीर का हिस्सा, नीचे की अंतड़ियां, मामा और मौसी, बीमारी, चोट इत्यादि, मानसिक और शारीरिक रोग, चिन्ता, दुष्मनी, दुश्मन, लड़ना, मेहनत, खतरे, जेल, भाई/बहन से कलह, चोरी, नौकर, नौकरी, कर्जा, गन्दी और बुरी आदतें, क्रूर कर्म, विघ्न और बाधाएं इत्यादि।

सातवां भाव—विवाह, पति-पत्नी, दूसरों से सम्बन्ध, कामेन्द्रियों का सुख, वैवाहिक प्रसन्नता, पति-पत्नी का स्वरूप और उनकी आयु, साझेदारी और साझेदारी में किया गया कार्य,यात्रा, यात्रा में रुकावट, मुकदमें, शत्रु पर विजय,पेशाब का रास्ता, दुकानदारी इत्यादि।

आठवां भाव—जननेन्द्रियों का बाहरी भाग, छूत की बीमारी (गर्मी, सुज़ाक इत्यादि), मधुमेह, भगन्दर, बवासीर, आयु, मानसिक उदासीनता, पाप, दुःख, खतरे, बीमारियां, कृति, पति-पत्नी की परेशानियां, भाई के शत्रु, जमीन के नीचे गड़ा हुआ धन, मृत्यु मृत्यु का स्थान और कारण, युद्ध, समुद्र पार की वस्तुएं, धन की हानि, राजदण्ड, डर, हार, पैतृक सम्पत्ति के अतिरिक्त दूसरा मकान, विरासत में मिला हुआ धन, पति की आर्थिक स्थिति इत्यादि।

नवां भाव—जांघ और कूल्हा, पिता (दक्षिण के ज्योतिषियों के अनुसार) पौत्र, भाई की पत्नी, पति के भाई और बहन, मठ, धर्म, अच्छे कार्य, दान, आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रवृत्ति, ज्ञानप्राप्ति के तरीके, अच्छे व्यक्तियों से सम्बन्ध, समुद्री यात्रा,समृद्धि, भाग्य स्थान कहते है 'भाग्य' में धन, प्रसन्नता, सुख सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं।

दसवां भाव—घुटना, पीठ, पिता, सास, गोद लिया पुत्र, उपार्जन करने की क्षमता, कर्म, अच्छे या बुरे कार्य,सफलता,खेती,विदेश में रहना, राजा, राज्य, सरकार,यश,जीवन-स्तर, अपने से बड़े लोग, सन्यास, नौकरी इत्यादि।

ग्यारहवां भाव—पिण्डली, बड़े भाई और बहन, मित्र, दामाद, माता की आयु, लाभ, आय, हानि, ससुर से लाभ, सांसारिक सुख की वस्तुएं, सवारी, शत्रु और उनके कार्य, कपड़े, पैतृक सम्पत्ति, कार्य कुशलता, इच्छाएं, ज्ञान और देवभक्ति इत्यादि।

बारहवां भाव—पांव (पंजे), काका, बुआ, मामी, जननेन्द्रियों के सुख, पत्नी का क्षय, दूसरी पत्नी, मानसिक उदासीनता, शरीर का व्यय, दुःख, जेल जाना, पांव का काटना, हानि, खर्चे, वस्तुओं का खरीदना, उदारता, मातृभूमि से दूर रहना, जीवन में नाम, यश वगैरह की हानि, बायां नेत्र, दांत इत्यादि।

ज्योतिष में जीवन में काम आने वाली समस्त वस्तुएं किसी न किसी भाव में या किसी न किसी ग्रहों से देखी जाती हैं।

विशेष—ग्रहों के बारे में हमारे कुछ पाठक शुरू में यह देखकर कि बहुत-सी वस्तुयें एक से अधिक भाव पर आधारित होती हैं, निष्कर्ष निकालने में कुछ कठिनाई महसूस करते हैं; परन्तु यह जानना चाहिए कि जीवन की प्रत्येक बात किसी न किसी प्रकार दूसरी बातों पर निर्भर करती है।

जैसे एक अच्छे हृदय का होना लम्बी आयु के लिए आवश्यक है, परन्तु उसके लिए पेट और अंतड़ियां ठीक से काम करें, अच्छा रक्तप्रवाह हो, मानसिक तनाव भी साधारण रहे आदि-आदि। इसीलिए यदि कुछ बातें एक से अधिक भाव से निकलें तो उसके लिए तारतम्य से निष्कर्ष निकालना चाहिए।

ग्रहों के आत्मादि विचार

सूर्य काल की आत्मा है। चन्द्रमा काल का चित्त (दिल) है। मङ्गल बल है। बुध वचन है। बृहस्पति सौख्य व विज्ञान का सार है। शुक्र कामदेव है और शनैश्चर दुःखरूप होता है।

ग्रहों के राजादि संज्ञा

सूर्य और चन्द्रमा राजा कहे जाते हैं। बृहस्पति तथा शुक्र मन्त्री कहे जाते हैं। बुध कुमार और मङ्गल नेता कहे जाते हैं। शनैश्चर दास कहलाता है।

ग्रहों का वर्ण ज्ञान

सूर्य श्याम तथा लाल वर्ण वाला होता है। चन्द्रमा सफेद अङ्ग वाला तथा जवान रहता है। बुध दूब के समान श्याम अङ्ग वाला होता है। मङ्गल लाल और गोरा होता है। शुक्र सफेद अङ्ग वाला, शनैश्चर काला, राहु नीला और केतु विचित्र वर्ण वाला कहा जाता है।

ग्रहों का शुभाशुभ ज्ञान

चन्द्रमा और सूर्य प्रकाशक कहे जाते हैं। मङ्गल आदि पाँच ग्रह तारा कहे

जाते हैं। राहु तथा केतु दोनों तमोरूपी कहे जाते हैं। चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये शुभग्रह कहे जाते हैं।

क्षीण चन्द्रमा, शनैश्चर, सूर्य, राहु, केतु और मङ्गल ये पापक्रह कहे जाते हैं। पाप ग्रहों से युक्त बुध पापी कहलाता है। उनके बीच में बृहस्पति और शुक्र अत्यन्त शुभदायक हैं। शनैश्चर तथा मङ्गल दोनों क्रूर ग्रह कहलाते हैं।

चन्द्र का बलाबल

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से दशमी तक चन्द्रमा मध्यम वीर्य वाला होता है। दशमी से कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त, यही चन्द्रमा शुभदायक है। पञ्चमी से लेकर अमावस पर्यन्त चन्द्रमा क्षीण बल वाला कहा जाता है। यदि वह शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा संयुक्त हो, तो शुभदायक हो जाता है।

ग्रहों के पृष्ठोदयादि संज्ञा

सूर्य, मङ्गल, राहु और शनैश्चर सदैव पीठ से उदय होते हैं। शुक्र, चन्द्रमा और बुध शीश से और बृहस्पति दोनों से उदय होते हैं।

ग्रहों के विहगादि स्वरूप

सूर्य तथा बुध दोनों पक्षीरूप हैं। चन्द्रमा सरीसृप रूपी होता है। बृहस्पति तथा शुक्र दोनों द्विपद कहे जाते हैं। शनैश्चर और मङ्गल दोनों चतुष्पदसंज्ञक होते हैं।

ग्रहों के बालादि अवस्था

मङ्गल बालक, बुध कुमार, बृहस्पति तीस वर्ष वाला, शुक्र सोलह वर्ष वाला, सूर्य पचास वर्ष वाला, चन्द्रमा सत्तर वर्ष वाला तथा शनैश्चर, राहु और केतु सौ वर्ष वाले होते हैं।

ग्रहों के धातु आदि संज्ञा

बृहस्पति, शुक्र, मङ्गल और बुध शाखाधिप कहे जाते हैं। आकाशचारी मङ्गल व सूर्य धातु रूप कहे जाते हैं। चन्द्रमा और शनैश्चर मूलप्रधान; शुक्र व बृहस्पति जीवरूप और बुध विमिश्ररूप माने जाते हैं।

ग्रहों के ताम्रादि वर्ण

सूर्य ताम्रवर्ण, चन्द्रमा श्वेतवर्ण, मङ्गल रक्तवर्ण, बुध हरित, बृहस्पति पीतवर्ण, शुक्र कर्बुरवर्ण और शनैश्चर कृष्ण वर्ण कहे जाते हैं।

ग्रहों के द्रव्य व अधिदेवता

ताम्र, मणि, काञ्चन, सीपी, रूपा, मोती और लोहा सूर्यादि ग्रहों के द्रव्य कहे जाते हैं। अर्थात् सूर्य का ताम्र, चन्द्रमा का मणि, मङ्गल का सुवर्ण, बुध का सीपी, बृहस्पति का रूपा, शुक्र का मोती और शनैश्चर का लोहा द्रव्य है।

एवं अग्नि, जल, स्वामिकार्त्तिकेय, विष्णु, इन्द्र, शची और ब्रह्मा सूर्यादि ग्रहों के अधिदेवता हैं।

ग्रहों के माणिक्यादि रत्न

सूर्य का माणिक्य, चन्द्रमा का अमल मोती, मङ्गल का मूँगा या मरकत, बुध का गारुत्मक, बृहस्पति का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनैश्चर का नीलम, राहु का गोमेद और केतु का वैडूर्य्य कहा जाता है।

ग्रहों के वस्त्र

सूर्य का मोटा कपड़ा, चन्द्रमा का नया, मङ्गल का सुन्दर, बुध का रेशमी, बृहस्पति का फटा, शुक्र का मजबूत और शनैश्चर का पुराना कपड़ा कहा गया है।

पूर्वादि दिशा स्वामी ज्ञान

पूर्व का सूर्य, आग्नेय का शुक्र, दक्षिण का मङ्गल, नैर्ऋत्य का राहु, पश्चिम का शनि, वायव्य का चन्द्रमा, उत्तर का बुध और ईशान का बृहस्पति स्वामी है।

शुक्र, मङ्गल, चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शनैश्चर ये दृगाणों से वसन्तादि ऋतुओं के अधिपति हैं, अर्थात् वसन्त का शुक्र, ग्रीष्म का सूर्य और मङ्गल, वर्षा का चन्द्रमा, शरत् का बुध, हेमन्त का बृहस्पति और शिशिर का अधिपति शनैश्चर कहा गया है।

ग्रहों के विप्र आदि संज्ञा

बृहस्पति और शुक्र ब्राह्मण कहे जाते हैं। सूर्य तथा मङ्गल क्षत्रिय हैं। चन्द्रमा वैश्य है। बुध शूद्रों का स्वामी है। शनैश्चर अन्त्यजों का अधिपति है। सूर्य, गुरु तथा चन्द्रमा सत्त्वगुण वाले कहे जाते हैं। शुक्र और बुध रजोगुणी तथा शनैश्चर और मङ्गल तमोगुणी हैं।

ग्रहों के पुरुषादि संज्ञा व तत्त्व

सूर्य, मङ्गल और बृहस्पति पुरुषसंज्ञक हैं। शुक्र और चन्द्रमा नारीसंज्ञक हैं। बुध तथा शनैश्चर प्रकृति पुरुष होते हुए भी नपुंसक कहे जाते हैं।

आकाश, पृथ्वी, तेज, पवन और जल के अधिपति क्रमशः बृहस्पति, बुध, मङ्गल, शनैश्चर व शुक्र हैं, अर्थात् आकाश के बृहस्पति पृथ्वी के बुध, तेज के मङ्गल, पवन के शनि और जल के अधिपति शुक्र हैं और ये आकाशादि पञ्चतत्त्व माने हैं।

ग्रहों के मज्जा आदि ज्ञान

मज्जा, स्नायु, वसा, अस्थि, शुक्र, रुधिर और त्वचा के स्वामी क्रम से मङ्गल, शनि, गुरु, सूर्य, शुक्र, चन्द्र और बुध कहे जाते हैं।

ग्रहों के लवणादि रस व अयनादि परिज्ञान

लवण, कटु, कषाय, स्वादु, तिक्त, अम्ल और मिश्र इन रसों के चन्द्रमा, सूर्य, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र और बुध अधिपति हैं।

अयन, दिन, पक्ष, ऋतु, अब्द (वर्ष), मास और क्षण इनके सूर्य, मङ्गल, शुक्र, बुध शनि, गुरु और चन्द्र स्वामी हैं।

उच्चादि परिज्ञान

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला और कुम्भ ये सूर्यादि ग्रहों के उच्च स्थान हैं और ठीक इन स्थानों से सातवाँ स्थान उनके नीचस्थान होते हैं; अर्थात् तुला, वृश्चिक, कर्क, मीन, मकर, कन्या और मेष ये सूर्यादि ग्रहों के नीच स्थान हैं।

१०-३-२८-१५-५-२७-२० उन राशियों के इन अंशों में ग्रह परमोच्च व परमनीच में होते हैं। जैसे—मेष राशि में सूर्य उच्च का और मेष से ठीक सातवाँ तुला राशि में नीच का होता है तथा इन दोनों राशियों के १० अंश का सूर्य क्रम से परमोच्च परमनीच में होता है।

ग्रहों के मूलत्रिकोण राशियाँ

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुम्भ ये सूर्यादि ग्रहों के मूलत्रिकोण होते हैं।

शुक्र, शनि, सूर्य और गुरु राशि के बीस अंश आदि में मूल त्रिकोण उसके बाद अपने घर को जाते हैं।

वृष के आदि से तीन अंश चन्द्र का उच्च होता है और उसके बाद शेषांश उसका मूल त्रिकोण होता है। मेष के आदि से बारह अंश मङ्गल का मूलत्रिकोण होता है, शेषांश स्वराशि होता है।

कन्या का आधा बुध का उच्च होता है। दश अंश मूल त्रिकोण होता है। पाँच अंश अपने राशिफल को देता है।

कुम्भ राहु का मूलत्रिकोण, मिथुन उच्च तथा कन्या अपना घर कहा जाता है।

ग्रहों का फल परिमाण

अपने उच्च में बैठा हुआ ग्रह पूर्णफल देता है। अपनी राशि में स्थित आधा फल देता है। अपने मित्र के घर में चौथाई फल देता है। शत्रु के घर में थोड़ा फल देता है। नीच व अस्तङ्गत हुआ ग्रह कुछ फल नहीं देता है। अपने मूलत्रिकाण में बैठा हुआ ग्रह चौथाई फल निश्चय देता है।

ग्रहों का विफल स्थान

सूर्य समेत चन्द्र, बुध लग्न से चौथे में, गुरु पाँचवें घर में, मङ्गल दूसरे में, शुक्र छठे में और शनि सातवें हो, तो विफल होते हैं।

ग्रहों का बालादि अवस्था

विषम राशि में ग्रहों की क्रम से बालादि अवस्थाएँ होती हैं। सम राशियों में वे अवस्थाएँ उलटे क्रम से हो जाती हैं। बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत ये अवस्थाएँ छः अंशों से विषम-सम राशियों में क्रम से होती हैं। इसलिये सूर्यादि ग्रह उक्त अवस्थाओं के पाककाल में बालादि अवस्थाओं के अनुरूप (समान) फल देते हैं।

सूर्य स्वरूप

सूर्य प्रतापशाली, चौकोर देह वाला, काला तथा लाल अङ्ग वाला, शहद के रंग के पिङ्गल नयनों वाला, पित्त स्वभावयुक्त, थोड़े बालों वाला और सतोगुण प्रधान होता है।

चन्द्र स्वरूप

चन्द्र सञ्चारशाली, कोमल वाग्विलासी, विवेकी, शोभन दृष्टि वाला, बड़े सुन्दर तथा पुष्ट अङ्ग वाला, सदा बुद्धिमान्, छोटे गोल आकार वाला, कफ व वात प्रकृति वाला होता है।

भौम स्वरूप

मङ्गल क्रूरदृष्टि वाला, तरुणमूर्तिधारी, उदारशील, पित्तप्रकृति वाला, महाचपल, क्षीण कटि वाला, लाल एवं गोरे अङ्गों वाला, कामी तथा प्रतापी और तमोगुण में रत होता है।

बुध स्वरूप

बुध दूर्वादल के समान शरीर वाला, साफ वाणी बोलने वाला, दुबले शरीर वाला, रजोगुण वालों का स्वामी, हँसने में चपल, हानि करने वाला, महाधनी, कफी, वादी, वैभव व प्रतापशाली और विद्वान् होता है।

गुरु स्वरूप

गुरु महोदर शरीर वाला, पीला, कफी, सर्वगुण युक्त, सकलशास्त्राधिकारी, पीली आँखों तथा बालों वाला, अत्यन्त बुद्धिमान, सतोगुणी, अल्पराजचिह्न वाला और शोभायुक्त है।

भृगु स्वरूप

शुक्र श्याम तथा घुँघराले केश वाला, श्यामतनुधारी, सौन्दर्यशाली एवं सुन्दर अङ्गों वाला, शोभन आँखों वाला, कामी, अतिवादी, कफी, रजोगुण की शोभा का निधान, सुख-बल और गुण की खान है।

शनि स्वरूप

शनि कर्कश रोमों तथा अङ्गों वाला, दुबला, काला, कफी, बादी, बड़े दाँतों वाला, सुन्दर पीले नयनों वाला, तमोगुणी और आलसी है।

ग्रह वध क्रम

सूर्य से शनि, शनि से मङ्गल, मङ्गल से गुरु, गुरु से चन्द्रमा, बुध से शुक्र, शुक्र से बुध और बुध से चन्द्र सदैव वध किया जाता है।

ग्रहों के मित्रादि ज्ञान

मङ्गल, चन्द्रमा और गुरु सूर्य के मित्र हैं। शुक्र तथा शनि शत्रु हैं।बुध सम है। सूर्य एवं बुध चन्द्र के मित्र हैं; गुरु, मङ्गल, शुक्र और शनि शत्रु हैं। सूर्य, चन्द्र एवं गुरु मङ्गल के मित्र हैं। बुध शत्रु है।

शुक्र और शनि सम हैं। सूर्य तथा शुक्र बुध के मित्र हैं। शनि, गुरु एवं मङ्गल सम हैं। चन्द्र वैरी है। सूर्य, मङ्गल और चन्द्र गुरु के मित्र हैं।

शुक्र और बुध शत्रु हैं और शनि सम (उदासीन) है। शनि तथा बुध शुक्र के मित्र हैं। चन्द्र तथा सूर्य शत्रु हैं।

गुरु और मङ्गल सम हैं। सूर्य, चन्द्र और मङ्गल शनि के शत्रु हैं। गुरु सम (उदासीन) हैं। शुक्र और बुध मित्र हैं।

तात्कालिक और नैसर्गिक मित्रता से अतिमित्र एवं अतिशत्रु पाँच प्रकार कहना चाहिये।

ग्रहों के स्थिरादि संज्ञा

सूर्य स्थिर, चन्द्र चर, मङ्गल उग्र, बुध मिश्र, गुरु मृदु, शुक्र लघु और शनि तीक्ष्णसंज्ञक हैं।

ग्रहों की दृष्टि

तीसरी एवं दसवीं राशि में समस्त ग्रहों की पाददृष्टि होती है। पाँचवें एवं नवें अर्धदृष्टि होती है। चौथे एवं आठवें पादोनदृष्टि कही जाती है और सातवें घर में सम्पूर्ण दृष्टि होती है।

पापदृष्टि बल के योग में शनि अतिबलशाली होता है। आधीदृष्टि में गुरु शुभदायक है। तीन चरण की दृष्टि से मङ्गल समर्थ होता है। सम्पूर्ण ग्रह सातवें घर में दृष्टिबल से सम्पन्न रहते हैं।

सूर्य एवं मङ्गल दोनों ऊर्ध्व दृष्टिवाले हैं। शुक्र एवं बुध कटाक्ष (नेत्रों की कोर से) दृष्टि रखते हैं। चन्द्र एवं गुरु दोनों सम दृष्टि वाले हैं। राहु एवं शनि की दृष्टि नीचे रहती है।

ग्रहों का कारक

आत्मा एवं पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और सम्पत्ति या शोभा को सूर्य से विचार करना चाहिए।

मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता और सम्पदा को चन्द्र से देखना चाहिए।

बल, रोग, गुण, भाई, भूमि, पुत्र और कुटुम्ब को मङ्गल से विचारना चाहिए। विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र और वाक्कर्म को बुध से विचारना योग्य है।

प्रज्ञा, धन, तनुपुष्टि, पुत्र और ज्ञान को गुरु से विचार किया जाता है। पत्नी, वाहन, आभूषण, कामकेलि, रोजगार और सौख्य को शुक्र से देखना योग्य है।

आयु, जीवन, मरणकारण, सम्पत्ति और विपत्ति का दाता शनि है। बाबा का राहु से और नाना का केतु से विचार करना चाहिये।

ग्रहों का स्थिरकारक

सूर्य तनु कारक, गुरु धनकारक, मङ्गल सहजकारक, सोम एवं बुध सुखकारक, गुरु पुत्रकारक, शनि व मङ्गल शत्रुकारक, शुक्र नारीकारक, शनि मृत्युकारक, सूर्य एवं गुरु धर्मकारक, गुरु, सूर्य, बुध एवं शनि राजकारक, गुरु लाभकारक और शनि व्ययकारक है। ये लग्न से स्थिरकारक होते हैं।

ग्रह अरिष्ट ज्ञान

शुक्र, बुध और बृहस्पति क्रम से सातवें, चौथे और पाँचवें स्थान में होकर प्रत्येक जातक में अरिष्टकारक होते हैं।

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है। चन्द्रमा २४ में, मङ्गल २८ में, बुध ३२ में, गुरु १६ में, शुक्र २५ में, शनि ३६ में, राहु ४२ में और केतु ४८ वर्ष में फल देता है।

जो ग्रह अपने घर एवं अपने उच्च में बैठा हो और जो ग्रह षड्वर्ग से शुद्ध हो, उसी के वर्ष में मनुष्यों को निश्चय ही सुख और भाग्योदय मिलता है।

ग्रहों से अरिष्ट नाश

बुध राहुदोष को विनाशता है। शनि दोनों के दोषों को हरता है। मङ्गल चारों के दोषों को दूर करता है। गुरु पाँचों के दोषों को विनाशता है। चन्द्र पूर्वोक्त छः ग्रहों के दोषों को हरता है। सूर्य सातों ग्रहों के दोषों को विनाशता है; परन्तु सूर्य उत्तरायण में विशेषतः सातों ग्रहों के दोषों को हरण करता है।

सूर्य कृत दोष

अग्निरोग, ज्वरवृद्धि, ज्वरदीपन, क्षय एवं अतीसार आदि रोगों से तथा राजा, देवता, ब्राह्मण, किंकरों द्वारा सूर्य सदा चित्त में दोष को करता है।

चन्द्र कृत दोष

पाण्डुदोष, जलदोष, कामला, पीनस आदि रोग एवं नारियों द्वारा उत्पन्न रोग कालिका, देवता और सुवासिनीगणों से चन्द्र मनुष्य को व्याकुल करता है।

मङ्गल कृत दोष

स्थूलता, बीजदोष, कफ, हथियार, अग्नि एवं गिलटियों से उपजे रोग, घाव

एवं दरिद्र से पैदा हुए रोग, वीरगण, शैवगण एवं भैरवादिगणों द्वारा मङ्गल भय उत्पन्न करता है।

बुध कृत दोष

गुदा, उदर, दृष्टि, वात, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी, आदि रोग तथा बुधादि विष्णु के प्रियदास प्राणियों से बुध अत्यन्त दुःख को करता है।

गुरु भृगु कृत दोष

आचार्य, देवता, गुरु और ब्राह्मणों द्वारा दिये गये शाप-दोषों से गुरु शोक और गुल्म रोग उत्पन्न करता है तथा नारियों के विकारों से उत्पन्न प्रमेहरोग एवं असुरादिकों व अपनी चाही अङ्गनाओं के दोषों से शुक्र भय उत्पन्न करता है।

शनि केतु कृत दोष

दारिद्र्यदोष, अपने कर्म, पिशाच, चोर और सन्धि रोगों से शनि क्लेश उत्पन्न करता है। खाज, मसूरिका, शत्रु, कृत्रिम कर्मरोग और आचारहीन छोटी जाति वालों द्वारा केतु कष्ट उत्पन्न करता है।

राहु कृत दोष

अपस्मार (मिरगी), मसूरिका, रज्जु, क्षुत् (छींक या क्षुधा), दृष्टि रोग, कीड़े, प्रेत, पिशाच, भूत, उद्बन्धन, अरुचि और कुष्ठ रोगों से राहु मनुष्यों को बड़ा भय करता है।

ग्रह भाव योग

जिससे समस्त जन्तुओं के शरीर, धन, भाई, माता, सन्तान, शत्रु, स्त्री इत्यादि पदार्थ के शुभाशुभ फल का ज्ञान करना सम्भव होता है। इसलिये अब आगे भाव और ग्रह से उत्पन्न फलों को विशेषरूप से वर्णन करते हैं।

लग्नस्थ सूर्य फल

जन्मकुण्डली में लग्न में सूर्य हो तो जातक थोड़े केशवाला, कार्य करने में आलसी, क्रोधी, उच्चाकृति, मानी, रुक्षदृष्टि, कठोर देह, शूर, क्षमाहीन, दया से रहित होता है। यदि लग्न में कर्क राशि हो तो फूली नेत्र वाला, मेष हो तो मन्द दृष्टि, सिंह लग्न हो तो रतौंधी वाला और यदि तुला लग्न हो तो दरिद्र और पुत्रहीन होता है।

द्वितीय भाव में स्थित सूर्य फल

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में सूर्य हो तो नौकर और पशुओं से युक्त, मुख का रोगी, ऐश्वर्य सुख से हीन, राजा या चोर से अपहृत धन वाला होता है।

तृतीय भाव में स्थित सूर्य फल

जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में रवि हो तो पराक्रमी, बली, भाईयों रहित, लोक में मा य, मनोहर और पण्डित तथा शत्रु को जीतने वाला होता है।

चतुर्थ भावस्थ सूर्य फल

यदि कुण्डली में चतुर्थभाव में सूर्य हो तो धन वाहन हीन, दुःखित हृदय, पैतृक घर, धन का नाश करने वाला और दृष्ट राजा का सेवा करने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मकुण्डली में जन्मलग्न से पञ्चम भाव में सूर्य हो तो सुख, पुत्र और मित्र से हीन, खेती करने वाला, पर्वतादि दुर्ग स्थान में रहने वाला, बुद्धिमान्, धनहीन और अल्पायु होता है।

षष्ठ भावस्थ सूर्य

जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में रवि हो तो अधिक कामी, प्रबल जठराग्नि वाला, बली, धनवान, राजा या न्यायधीश होता है।

सप्तम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में सप्तम भाव में रवि हो तो कान्तिहीन, लोक में अनादृत, रोगी, बन्धनभागी, कुमार्गगामी और स्त्री से शत्रुता करने वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में अष्टमभावगत सूर्य हो तो आँख का रोगी, धन और सुख से हीन, अल्पायु, अपने हित जनों के वियोग से दुखी रहता है।

नवम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में नवमाव में रवि हो तो धनवान, पुत्रवान्, देव और ब्राह्मण का भक्त, पिता और स्त्री से शत्रुता करने वाला तथा दुःखी है।

दशम भाव में स्थित सूर्य फल

यदि पत्रिका में दशम भाव में रवि हो तो बुद्धि, बल, वाहन और पुत्र से युक्त, कार्य को सम्पन्न करने वाला, अजेय और उत्तम पुरुष होता है।

एकादश भावस्थ सूर्य फल

जन्म पत्रिका में एकादश भाव में रवि हो तो धन संग्रह करनेवाला, बली, लोगों का द्वेषी नौकरहीन, स्वयं प्रेष्य, वचन पालनेवाला, हितजनों से हीन, कार्यसाधक होता है।

द्वादश भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में द्वादश भावस्थ सूर्य हो तो क्षीणदेह, काना, पतित, वन्ध्या स्त्री का पति, पिता का द्वेषी, बलहीन और नीच होता है।

लग्नस्थ चन्द्र फल

जन्मपत्री में यदि लग्न कर्क, वृष या मेष हो, उसमें चन्द्रमा हो अथवा पूर्ण चन्द्रमा किसी लग्न में हो तो जातक उदारता, रूप, गुण, धन, और भोग से प्रधान होता है।

शेष लग्न में चन्द्रमा हो तो नीच, बहिरा, गूँगा और विकल होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से अशुभ फल प्रदान करने वाला होता है।

द्वितीय भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्म पत्री में द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो अनुपम सुख, मित्र और धन से युक्त होता है।

यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो थोड़े बोलने वाला और बहुत बड़े धन का स्वामी होता है।

तृतीय भाव में स्थित चन्द्र फल

कुण्डली में तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक भाइयों का पालन करने वाला, हर्ष से युक्त, शूर, विद्या, वस्त्र, अन्न का संग्रह करने में तत्पर होता है।

चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल

जन्मपत्री में चतुर्थभावगत चन्द्रमा हो तो बन्धु, अन्न, वस्त्र, घर, वाहन से युक्त, नदी या समुद्र में व्यापार करने वाला, अति सुखी होता है।

पंचम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मपत्री में पञ्चमभाव में चन्द्र हो तो भीरु, विद्या, अन्न, वस्त्र का संग्रह करने वाला, बहुत पुत्र और सुशील मित्र से युक्त, तेजस्वी और बुद्धिमान् होता है।

षष्ठ भावस्थ चन्द्र

जन्मपत्री में छठे भावगत चन्द्र हो तो जातक पेट के रोग से पीड़ित और क्षीण चन्द्रमा हो तो अल्पायु होता है।

सप्तम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मपत्री में सप्तम स्थान में पूर्ण चन्द्रमा हो तो सौम्य, घर्षणयोग्य (दमनीय), सुखी, सुरूप और कामी होता है। क्षीण चन्द्र हो तो दीन और रोगों से पीड़ित शरीर वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो बुद्धिमान, तेजस्वी रोग से कृश शरीर होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो अल्पायु होता है।

नवम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में नवम भाव में चन्द्र हो तो देवता और पितर का भक्त, सुख, बुद्धि और पुत्र से युक्त, स्त्रियों का मन हरने वाला प्रिय कार्यों में उद्योगी होता है।

दशम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में दशम भाव में चन्द्रमा हो तो विषाद से युक्त, कार्यों में तत्पर होकर सम्पन्न करने वाला, धनी, पवित्र, बली, शूर और दानी होता है।

एकादश भावस्थ चन्द्र फल

जन्मकाल में एकादश भावगत चन्द्रमा हो तो धनी, अधिक पुत्रवाला, दीर्घायु, उत्तम मित्र और नौकर वाला, मनस्वी, तेजस्वी, शूर, कान्तिमान् होता है।

द्वादश भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो द्वेषी, नीच, क्षुद्र, आँख का रोगी, आलसी, अशान्त, दूसरे से उत्पन्न और लोक में सदादु:खी होता है।

लग्नस्थ मंगल फल

जन्म पत्रिका में मङ्गल लग्न में हो तो जातक क्रूर, साहसी, मूढ़, अल्पायु, अभिमानी, शूर, क्षतदेह, सुन्दररूप वाला और चञ्चल होता है।

द्वितीय भाव में स्थित मंगल फल

जन्मपत्री में द्वितीय भाव में मङ्गल हो तो निर्धन, कदन्नभोजी, विकृतमुखवाला, नीच लोगों का सङ्ग करने वाला और विद्या से हीन होता है।

तृतीय भाव में स्थित मंगल फल

जन्मपत्री में तृतीय भावगत मङ्गल हो तो शूर, अजेय, भ्रातृहीन, हृष्ट, सभी गुणों का निधान और सुप्रसिद्ध होता है।

चतुर्थ भावस्थ मंगल फल

जन्मकाल में चतुर्भाव में भौम हो तो गृह, अन्न, वस्त्र और बन्धु से हीन, वाहनरहित, दु:खी, दूसरे के घर में रहने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में पञ्चम भावगत भौम हो तो सुख धन और पुत्र से हीन, चञ्चलबुद्धि, चुगुलखोर, दुष्ट, अशान्त और नीच होता है।

षष्ठ भावस्थ मंगल फल

जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में मङ्गल हो तो अतिकामी, दीप्तजठराग्नि, सुन्दर और दीर्घदेह वाला बलवान्, बन्धुओं में श्रेष्ठ अर्थात् मुखिया होता है।

सप्तम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में सप्तम भावगत भौम हो तो स्त्री का नाशक रोगी, कुमार्गगामी, दु:खी, पापी, सन्तार युत, निर्धन, निरस (पतला) शरीर वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में अष्टमभाव में मङ्गल हो तो रोगी, अल्पायु, कुरूप, निन्द्यकर्म करने वाला और शोक से दुखी रहता है।

नवम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में नवमभाव में मङ्गल हो तो कार्यों में अक्षम, द्वेष्य, हिंसक, धर्महीन, पापी, राजा से सम्मान पाने वाला होता है।

दशम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकाल में दशम भाव में मङ्गल हो तो कार्य में दक्ष, शूर, अजेय, श्रेष्ठ पुरुष का सेवक, पुत्र सुख से युक्त और अधिक प्रतापी होता है।

एकादश भावस्थ मंगल फल

जन्मकुण्डली में एकादश भाव में मङ्गल हो तो गुणी, सुखी, शूर, धनवान, पुत्रवान् और शोकरहित होता है।

द्वादश भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में द्वादश भावगत भौम हो तो आँख से रोगी, पतित, स्त्रीनाशक चुगलखोर, क्रूर, लोक में अनादृत और जेल भोगने वाला होता है।

लग्नस्थ बुध फल

जन्मकुण्डली में लग्न में बुध हो तो जातक सुन्दर देह युक्त, सुबुद्धि, देश, कला, ज्ञान, काव्य और गणित को जानने वाला, चतुर, मधुर वचन बोलने वाला और दीर्घायु होता है।

द्वितीय भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में द्वितीय भावगत बुध हो तो बुद्धि से धनोपार्जन करनेवाला, अन्न पान का भोक्ता, प्रियभाषी, सुनीति प्रिय होता है।

तृतीय भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में तृतीय भावगत बुध हो तो परिश्रमी, इष्ट मित्रों से हीन, कार्य में निपुण, सहोदर युक्त, मायावी और चञ्चल होता है।

चतुर्थ भावस्थ बुध फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थभाव गत बुध हो तो धन जन और वाहन, सुवस्त्र से युक्त, श्रेष्ठ बन्धु वाला और विद्वान् होता है।

पंचम भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में पञ्चम भाव में बुध हो तो मन्त्रशास्त्री, मारण मोहन आदि क्रिया में कुशल, अधिक पुत्र, विद्या, सुख, प्रभुत्व और प्रसन्नता से युक्त होता है।

षष्ठ भावस्थ बुध फल

जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में बुध हो तो वाद विवाद और युद्ध में विजयी, रोग से युक्त आलसी, कोपहीन, निष्ठुरभाषी और पीड़ित होता है।

सप्तम भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में सप्तम स्थान में बुध हो तो जातक की स्त्री बुद्धिमती, सुन्दरी, अकुलीना, कलहकारिणी धनवती होती है। स्वयं भी महान् पुरुष होता है।

अष्टम भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में अष्ठम स्थान में बुध हो तो विख्यात यश और बलवाला, दीर्घायु, कुलपोषक, राजा के तुल्य अथवा न्यायाधीश होता है।

नवम भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में नवम भाव में बुध हो तो अतिधनी, विद्या से सम्पन्न, सदाचारी, वक्ता, कार्य में कुशल और धर्मात्मा होता है।

दशम भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में दशमभाव में बुध हो तो श्रेष्ठबुद्धि, सत्कर्मी, कार्य को सफल करनेवाला धैर्यशाली, बली, विविध आभूषणों के सुख का भोगी होता है।

एकादश भावस्थ बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में एकादश स्थान में बुध हो तो धनी, आज्ञाकारी नौकर वाला, पण्डित, सुखी भोगी, दीर्घायु और प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

द्वादश भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में द्वादशभाव में बुध हो तो वचन पालन करने वाला, आलसी, अपमानित, वक्ता, पण्डित, दीन और कठोर पुरुष होता है।

लग्नस्थ बृहस्पति फल

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में गुरु हो तो जातक सुन्दर देह वाला, दीर्घायु विचारकर कार्य करने वाला, पण्डित, धैर्यवान् और श्रेष्ठ होता है।

द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में गुरु हो तो धनी, भोजनार्थी, वक्ता, सुन्दर, सुरूप, सुवचन, सुन्दर वस्त्र वाला और त्यागी होता है।

तृतीय भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो लोक में अत्यधिक दुःखी, कृपण, सहोदरों में लघु, मन्दाग्नि, स्त्री से पराजित और पाप कर्म करने वाला होता है।

चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में गुरु हो तो परिजन, भवन, वस्त्रवाहन, सुख, सुमति, भोग, धन से युक्त, श्रेष्ठ, शत्रु को जीतने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में पञ्चमभाव में गुरु हो तो पुत्र और मित्रों से सम्पन्न, पण्डित, धीर, स्थिर धन से युक्त और सदा सुखी होता है।

षष्ठ भावस्थ बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में षष्ठ भावगत गुरु हो तो दुषित जठराग्नि और पुंस्त्ववाला, अपमानित, दुर्बल, आलसी, स्त्री द्वारा पराजित, शत्रुजेता और विख्यात होता है।

सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु हो तो सुन्दर भाग्यवान्, सुन्दर स्त्री का पति, पिता से गुण में श्रेष्ठ, वक्ता, कवि, गाँव में मुख्य और सुविख्यात पण्डित होता है।

अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में अष्टम भाव में गुरु हो तो अपमानित, दीर्घायु, नौकरी करनेवाला, दीन और मलिना स्त्री का पति होता है।

नवम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में नवम स्थान में गुरु हो तो देव पितर का भक्त, विद्वान्, सुन्दर, राजमन्त्री वा सेनापति और प्रधान होता है।

दशम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्म पत्रिका में दशम भाव में यदि गुरु हो तो जातक कार्य को सम्पन्न करने वाला, माननीय, सब उपाय और कुशलता से युक्त, सुख, धन, जन, वाहन और सुन्दर यश से युक्त होता है।

एकादश भावस्थ बृहस्पति फल

जन्म पत्रिका में एकादश भाव में गुरु हो तो अत्यधिक लाभ, अधिक वाहन, नौकर से युक्त, साधु, थोड़ी विद्या और अल्प पुत्र वाला होता है।

द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्म पत्रिका में द्वादश भाव में गुरु हो तो आलसी, लोगों का द्वेषी, वाग्विहीन, अथवा भाग्यहीन तथा सेवा कार्य में निरत होता है।

लग्नस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में लग्न में शुक्र हो तो सर्वाङ्गसुन्दर, सुखी, दीर्घायु, डरपोक स्त्रियों का प्रिय होता है।

द्वितीय भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में शुक्र हो तो बहुत अन्न, पान, ऐश्वर्य, द्रव्य और उत्तम विलास तथा सुन्दर वचन बोलने वाला और अति धनी होता है।

तृतीय भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मपत्री में तृतीय स्थान में शुक्र हो तो सुख धन से युक्त, स्त्री से पराजित, कृपण, अल्प उत्साह वाला, सौभाग्यवान् और वस्त्रों से युत होता है।

चतुर्थ भावस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो बन्धु मित्र सुख वाहन अन्न वस्त्र गृह से युक्त सुन्दर उदार पुरुष होता है।

पंचम भाव में स्थित शुक्र फल

जन्म पत्रिका में पञ्चम भाव में शुक्र हो तो सुखी, पुत्रवान्, मित्रयुत, विलासी, अतिधनी, सब वस्तु से परिपूर्ण, राजमन्त्री या न्यायाधीश होता है।

षष्ठ भावस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में षष्ठ भाव में शुक्र हो तो जातक स्त्री का द्वेषी, अधिक शत्रुवाला, ऐश्वर्य से हीन, अत्यन्त विह्वल और अधिक दुष्ट होता है।

सप्तम भाव में स्थित शुक्र फल

सप्तम भाव में शुक्र हो तो अत्यन्त रूपवती स्त्री के सुख और विभव से युक्त, अजातशत्रु और सौभाग्य सम्पन्न होता है।

अष्टम भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मकुण्डली में अष्टम स्थान में शुक्र हो तो दीर्घायु, अतुलसुख से युत, धनाढ्य, राजा के तुल्य प्रतिक्षण संतोष प्राप्त करने वाला होता है।

नवम भाव में स्थित शुक्र फल

यदि कुण्डली में नवम भाव में शुक्र हो तो पुष्ट, विशाल शरीर, धनवान, उदार, स्त्री सुख, मित्रों से युक्त, देव, अतिथि और गुरु की सेवा में तल्लीन होता है।

दशम भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मकुण्डली में दशम भाव में शुक्र हो तो उत्थान (पौरुष) और विवाद से सुख, रति, मान, धन और कीर्ति उपार्जित करने वाला तथा अत्यधिक बुद्धिमान और विख्यात पुरुष होता है।

एकादश भावस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में एकादश भाव में शुक्र हो तो जातक अनुकूल नौकर वाला, अधिक लाभ करने वाला तथा समस्त दुःखों से रहित व्यक्ति होता है।

द्वादश भाव में स्थित शुक्र फल

जन्म पत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र हो तो आलसी, सुखी, स्थूलदेह, नीच, शोधित (साफ) अन्न खाने वाला, शय्या के उपचार में चतुर, स्त्री से पराजित होता है।

लग्नस्थ शनि फल

जन्मकुण्डली में लग्न में स्वोच्च या स्वराशिस्थ शनि हो तो जातक राजा के तुल्य, देश या गाँव का अधिपति होता है, यदि अवशिष्ट राशियों में लग्नस्थ शनि लग्न में हो तो बाल्यावस्था में रोगाक्रान्त, दरिद्र, कार्यों के वश में दुषित तथा आलसी होता है।

द्वितीय भाव में स्थित शनि फल

द्वितीय भाव में शनि हो तो विकृत मुख वाला, धन का भोगी, जनहित, न्यायी, पश्चात् परदेश में जाकर धन वाहन आदि का भोग करने वाला होता है।

तृतीय भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में शनि हो तो संस्कार से युत शरीर वाला, नीच, आलसी परिवार वाला, शूर, दाता और विशाल बुद्धि वाला होता है।

चतुर्थ भावस्थ शनि फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में शनि हो तो दु:खी हृदय, बन्धु, वाहन, धन, बुद्धि और सुख से हीन, बाल्यावस्था में रोगी, बड़े बड़े नख और रोम धारण करने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में पञ्चम भाव में शनि हो तो सुख पुत्र मित्र बुद्धि हृदय से हीन, पागल और गरीब होता है।

षष्ठ भावस्थ शनि फल

जन्मपत्री में षष्ठ भाव में शनि हो तो कामी, सुन्दर, शूर, अधिक खानेवाला, कुटिलस्वभाव, बहुत शत्रुओं को जीतने वाला होता है।

सप्तम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में सप्तम भाव में शनि हो तो सदा रोगी, स्त्रीनाशक, धनहीन, खराब वेश–भूषा वाला, पापी और नीच काम को करने वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित शनि फल

जन्म पत्री में अष्टम भाव में शनि हो तो कुष्ठ या भगन्दर रोग से दु:खी, थोड़ी आयु वाला, किसी भी कार्य को नहीं करनेवाला होता है।

नवम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में नवम भाव में शनि हो तो धर्महीन, थोड़े धन वाला, सोदर और पुत्र से हीन, सुख रहित और दूसरों को दु:ख देनेवाला होता है।

दशम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में दशम भाव में शनि हो तो धनी, पण्डित, शूर, राजमन्त्री, या न्यायाधीश, समुदाय तथा नगर और ग्राम का प्रधान होता है।

एकादश भावस्थ शनि फल

जन्मकुण्डली में एकादाशभाव में शनि हो तो जातक दीर्घायु, स्थिर धनवाला, शिल्पज्ञ, नीरोग, तथा धन मनुष्य सम्पत्ति से युत होता है।

द्वादश भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में द्वादाश भाव में शनि हो तो अशान्त चित्त, पतित, बकवादी, कुटिल दृष्टि, निर्दय, निर्लज्ज, बहुत खर्चीला और पीड़ित होता है।

भावों का शुभाशुभत्व विचार

लग्नादि भावों में शुभग्रह हो तो उस भाव की वृद्धि करते हैं तथा पाप ग्रह हो तो उस भाव के फल का नाश करते हैं।

६,८,१२ भावों में शुभ–अशुभ फल विपरीत होते हैं।

अर्थात् त्रिक में स्थित शुभग्रह अशुभ फल और पाप ग्रह शुभ फल करता है।

शुभग्रह से दृष्ट योग बलवान् होता है तथा उच्चस्थ ग्रहों से दृष्टयोग का फल विपरीत होता है।

केन्द्रस्थ दो ग्रह योग फल

अब केन्द्र अर्थात् १-४-७-१० भावों में स्थित दो-दो ग्रहों के योग से जो फल होते हैं, उन फलों को अब आगे सविस्तारपूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं—

केन्द्र में स्थित सूर्य-चन्द्र योग फल

यदि जन्म समय लग्न में रवि चन्द्र हो तो जातक माता और पिता के दुख से पीड़ित, मान पुत्र और धन से हीन तथा दुःखी होता है।

यदि रवि चन्द्रमा दोनों चतुर्थ भाव में हो तो भाई पुत्र और सुख से रहित, दरिद्र, और महामूर्ख स्वभाव वाला होता है।

रवि और चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो मित्र पुत्र और स्त्री से पीड़ित और स्त्री द्वारा अपमानित दीन होता है।

रवि और चन्द्रमा दशम भाव में हो तो सुन्दर देह, सेनापति, राजोगुण, युक्त, निर्दय, कुटिल स्वभाव और शत्रुओं को जितने वाला होता है।

केन्द्रस्थ सूर्य भौम योग फल

रवि और मङ्गल लग्न में हो तो पित्तप्रकृति, रण में विजय प्राप्त करने वाला, क्रोधी, भग्न शरीर वाला, क्रूर, धूर्त और कठोर हृदय होता है।

रवि मङ्गल चतुर्थ भाव में हो तो बन्धुजन, धन और सुख से हीन, क्षुब्ध, सबसे द्वेष करने वाला होता है।

रवि सहित मङ्गल सप्तम स्थान में हो तो स्त्री के वियोग से दुखी, सर्वदा स्त्री के हेतु से अपमानित और परदेश में निवास करने वाला होता है।

सूर्य मङ्गल दशमभाव में हो तो कार्य में विफल, उद्विग्न, प्रसिद्ध राजा का सेवक और सदा अशान्त चित्त होता है।

केन्द्रस्थ सूर्य बुध योग फल

जन्मकाल में सूर्य और बुध दोनों लग्न में हो तो जातक विज्ञ, बहुत बोलने वाला, कठोर देही शूर प्रिय, बुद्धिमान् और दीर्घायु होता है।

सूर्य, बुध चतुर्थ स्थान में हो तो राजा के तुल्य, ख्यात, वचन पालने वाला, महाधनी, स्थूल देह, और टेढ़ी नाकवाला होता है।

सप्तम भाव में दोनों हो तो हिंसा और वचन कर्त्ता मृत्युकाल में सारगर्भिकत वाणी वाला तथा धन का लोभी नहीं होता है, और स्त्रीहीन और चोर होता है।

दोनों अर्थात् सूर्य, बुध यदि दशम (१०) भाव में हो तो समस्त संसार में विख्यात, घोड़े हाथी रखने वाला राजा होता है।

यदि ये दोनों अर्थात् सूर्य, बुध नीच स्थान में नहीं हो तभी यह फल समझना उचित होगा।

केन्द्रस्थ सूर्य गुरु योग फल

सूर्य और बृहस्पति दोनों लग्न में हो तो जातक गुणी, राजमन्त्री, सेनापति, सज्जन, विद्वान्, धनी, भोगी और विख्यात होता है।

सूर्य, गुरु चतुर्थ भाव में हो तो वेद, नीतिशास्त्र काव्य में निपुण, भव्य, परिजनों से युक्त, प्रियवक्ता, सदाचारी होता है।

दोनों सप्तम भाव में हो तो कामी, स्त्री का वश, पिता का द्वेषी, सुवर्णरत्नादियुक्त, सुन्दर शरीराला होता है। दशम भाव में हो तो यश, सुख, मान, ऐश्वर्य से युक्त, नीचकुलोत्पन्न भी राजा होता है।

सूर्य शुक्र योग फल

जन्मकाल में रवि शुक्र दोनों यदि लग्न में हो तो जातक कलहप्रिय, विनयहीन, दुराचारी, दुखी नीच, धन और स्त्री से रहित होता है।

यदि दोनों (रवि, शुक्र) चतुर्थ भाव में हो तो दूसरों की नौकरी करने वाला, शोक से युक्त, लोगों का द्वेषी और दरिद्र होता है।

यदि दोनों अर्थात् रवि, शुक्र सप्तम स्थान में हों तो स्त्री से पराजित, धनहीन, लम्बा देह, धन और पर्वत में रहने वाला होता है।

यदि दोनों रवि, शुक्र दशम स्थान में हो तो लोक व्यवहार का ज्ञाता, राजमन्त्री, शास्त्र और कला में निपुण, धन वाहन और सुख से युक्त होता है।

सूर्य शनि योग फल

जन्मकाल में लग्न में सूर्य और शनि दोनों हो तो जातक निन्द्यमाता का पुत्र, स्वयं दुराचारी, मन्दबुद्धि और पापी होता है।

यदि दोनों अर्थात् रवि, शनि चतुर्थ भाव में हो तो जातक नीच, दरिद्र और बन्धुओं से अपमानित होता है।

यदि सप्तम भाव में हो तो जातक आलसी, भाग्यहीन, स्त्री और धन से रहित, शिकार खेलने वाला एवं महामूर्ख होता है।

यदि दशम भाव में दोनों अर्थात् सूर्य, शनि हो तो विदेश में नौकरी करने वाला, कदाचित् किसी राजादि से धन प्राप्त भी हो तो चोरों द्वारा हरण कर लिया जाता है तथा अच्छे घोड़ों का धनी होता है।

चन्द्र भौम योग फल

यदि जन्मकाल में लग्नस्थ चन्द्र मंगल हो तो जातक खून, अग्नि, पित्त दोष या रोग से पीड़ित एवं उग्र स्वभाव वाला होता है।

यदि चन्द्र, मंगल का योग चतुर्थभाव में हो तो जातक कलह युक्त, दरिद्र, सुख पुत्र धन से रहित अशान्त होता है।

यदि सप्तम में चन्द्र, मंगल हो तो परधन का लोभी, बहुत बोलने वाला, असत्यवादी और ईर्ष्यालु होता है।

यदि दशमभाव में चन्द्र, मंगल हो तो जातक घोड़ा, हाथी, सेना सम्पत्ति से युक्त पराक्रमी होता है।

चन्द्र बुध योग फल

जन्मकाल में यदि चन्द्रमा और बुध दोनों लग्न में हो तो जातक सुखी, बुद्धिमान, बल, और भाग्य से युक्त, सुन्दर, वक्ता और अन्य कार्य में कुशल होता है।

दोनों अर्थात् चन्द्र, बुध यदि चतुर्थ भाव में हो तो बन्धु, मित्र, पुत्र, सुख, प्रताप, धन, सवारी और रत्न से युक्त सुन्दर स्वरूप वाला होता है।

सप्तम भाव में चन्द्र, बुध हो तो प्रतापी, राजा या राजा का प्रिय, विख्यात, सुन्दर कवि होता है।

दशम भाव में चन्द्र, बुध हो तो मानी, धनी, ख्यात, राजा का सचिव, या राजा का प्रिय, अवस्था के अन्त में दुःखी तथा बन्धुओं से रहित होता है।

चन्द्र गुरु योग फल

जन्मकाल में चन्द्रमा यदि गुरु के साथ लग्न में हो तो जातक विशालवक्षःस्थल वाला, बहुत पुत्र, मित्र, स्त्री, बन्धु से युक्त, सुन्दर देह वाला और राजा होता है।

यदि चन्द्र गुरु चतुर्थ भाव में हो तो बहुत शास्त्रों का ज्ञाता, राजमन्त्री या राजा के तुल्य, सुख प्राप्त करने वाला, बन्धु बान्धवों से युत और धनवान होता है।

दोनों अर्थात् चन्द्र गुरु सप्तम भाव में हों तो पण्डित, राजा, कला में कुशल, व्यापारी, या राजा का प्रिय, धनवान होता है।

यदि चन्द्र, गुरु दशम स्थान में हों तो विद्वान्, दाता, धनी, मानी, यशस्वी, सरल स्वभाव, दीर्घ बाहु और सर्वत्र पूज्य होता है।

चन्द्र शुक्र योग फल

यदि जन्मकाल में यदि चन्द्रमा शुक्र दोनों लग्न में हो तो वेश्या में रत सुन्दररूप, गुरुजनों का प्रिय, वस्त्र विभूषण से युक्त होता है।

दोनों चतुर्थ स्थान में हो तो स्त्री सुख से युत, नौका द्वारा धन प्राप्ति करने वाला, लोगों का प्रिय और भोगी होता है।

दोनों यदि सप्तम भाव में हो तो बहुत स्त्री, धन और पुत्र वाला, मेधावी, राजा के तुल्य क्रियावान् होता है।

दशम भाव में दोनों हो तो मान और धन से युक्त, राजा का मन्त्री, सुविख्यात, क्षमावान् और अधिक मनुष्यों से युत होता है।

चन्द्र शनि योग फल

जन्मकाल में लग्न में चन्द्रमा और शनि का योग हो तो जातक नौकरी करने वाला, खल, क्रूर, लोभी, नीच, आलसी और पापी होता है।

चतुर्थ भाव में हो तो जलोत्पन्न मुक्ता आदि तथा नौका या खनिज पदार्थों के व्यापार से अर्थलाभ करने वाला श्रेष्ठ और लोक में मान्य होता।

सप्तम स्थान में दोनों अर्थात् शनि, चन्द्र हो तो नगर या गाँव का मालिक, राजा का प्रिय, और स्त्रीहीन होता है।

दशम भाव में दोनों अर्थात् शनि, चन्द्र हो तो घोड़े आदि सेना द्वारा शत्रु को जीतने वाला, सुविख्यात भ्रष्टा का पुत्र, तथा राजा होता है।

चन्द्रमा शुभग्रह से युत शुभ फल देने वाला तथा शनि मंगल से युत होने पर अशुभ फल दाता और सेनानायक बनाने वाला होता है।

भौम बुध योग फल

जन्मकाल में मङ्गल और बुध दोनों लग्न में हो तो जातक हिंसक, अग्नि कार्य में निपुण, धातु क्रिया में कुशल, दूत और कारागार का स्वामी होता है।

दोनों चतुर्थ स्थान में हो तो बन्धुहीन, किन्तु मित्र, धन, अन्न, भोग, वाहनों से युक्त, अपने जन में अनादृत होता है।

दोनों सप्तम भाव में हो तो जातक की प्रथम स्त्री की मृत्यु हो जाती है, वह देश विदेश में भ्रमण कर नीचों के अधीन कार्य करने वाला और विवादी होता है।

दशम भाव में हो तो सेनापति, शूर, धूर्त, क्रूर, धनी और राजा का प्रिय और धैर्यवान् होता है।

भौम गुरु योग फल

जन्मकाल में मङ्गल गुरु के साथ लग्न में हो तो जातक गुणी, प्रधान सचिव, धर्मकृत्य में कीर्ति पाने वाला उत्साही पुरुष होता है।

यदि दोनों अर्थात् मंगल, गुरु चतुर्थ भाव में हो तो बन्धु मित्र से युत स्थिर चित्त धन और सुख से युक्त राजा का सेवक देवता और गुरुओं का भक्त होता है।

सप्तम भाव में मंगल, गुरु हो तो पर्वत वन जल आदि दुर्ग स्थान में घुमने वाला, अच्छे भाई-बन्धुओं से युत, शूर तथा स्त्री हीन होता है।

दशम स्थान में दोनों अर्थात् मंगल, गुरु हो तो कीर्तिमान् विज्ञजनों में युक्त, कार्य में कुशल और चतुर होता है।

भौम शुक्र योग फल

जन्मकाल में लग्न में मङ्गल और शुक्र दोनों हो तो वेश्यागामी, निन्द्यकला को करने वाला, स्त्री के कारण धन नष्ट करनेवाला तथा अल्पायु होता है।

दोनों अर्थात् मंगल, शुक्र यदि चतुर्थ भाव में हो तो बन्धु पुत्र से हीन, मानसिक पीड़ा और अनेक दुःख से दुःखी होता है।

दोनों अर्थात् मंगल, शुक्र सप्तम भाव में हो तो स्त्री में आसक्त, उससे कष्ट पाने वाला और आचारहीन होता है।

दशम भाव में मंगल, गुरु हो तो अस्त्रविद्या में कुशल, बुद्धिमान्, विद्या धन वस्त्रादि से युक्त, विख्यात राजा का मंत्री होता है।

भौम शनि योग फल

जन्मकाल में मङ्गल और शनि लग्न में हो तो जातक संग्राम में विजयी, माता का द्वेषी, अल्पायु और भाग्यहीन होता है।

दोनों अर्थात् मंगल, शनि चतुर्थ भाव में हो तो अन्न-पान सुख से हीन, बन्धु और मित्रों से भी रहित होता है।

सप्तम भाव में मंगल, शनि हो तो स्त्री पुत्र विहीन, गरीब, रोगी, व्यसनी, लोक में अनादृत और कृपण होता है।

दशम भाव में मंगल, शनि हो तो राजमन्त्री होता है, परञ्च अपराधी होकर राजा से दण्डित होता है तथा असत्य बोलने वाला भी होता है।

बुध गुरु योग फल

जन्मकाल में बुध और गुरु दोनों यदि लग्न में हो तो जातक सुरूप, सुशील, विद्वान्, राजमान्य, विषय (ग्राम समूह) का अधिप वाहनादि सुख का भोग कर्त्ता होता है।

चतुर्थ भाव में दोनों अर्थात् बुध, गुरु हो तो बन्धु मित्र स्त्री धन सौभाग्य सुख से युक्त, कार्य कुशल राजमन्त्री होता है।

सप्तम भाव में बुध, गुरु हो तो सुन्दरी पत्नी वाला, शत्रुहीन, परिजनों का प्रिय धन-बल से युक्त, पिता से अधिक यशस्वी होता है।

दशम भाव में बुध, गुरु हो तो राजा अथवा राजमन्त्री, मानी, धनी, विख्यात, वेदार्थ का ज्ञाता और नम्र होता है।

बुध शुक्र योग फल

जन्मकाल में बुध और शुक्र दोनों लग्न में हो तो सुरूप, पण्डित, सौभाग्यवान्, राजमान्य, देव और ब्राह्मण का भक्त होता है।

चतुर्थ भाव में बुध, शुक्र हो तो पुत्र मित्र और वन्धु से युत, भाग्यवान्, राजा या राजमन्त्री तथा कल्याण भागी होता है।

सप्तम भाव में बुध, शुक्र हो तो बहुत स्त्री, भोग, धन, प्रभुत्व से युक्त राजप्रिय और सुखी होता है।

दशम भाव में हो तो नीतिज्ञ, साधु राजा होता है, वह नीचजन को आश्रय नहीं देता है, तथा धन युक्त और कार्य करने में समर्थ्यवान् होता है।

बुध शनि योग फल

बुध शनि दोनों यदि लग्न में हो तो जातक मलिन देह, पापी, विद्या, धन वाहन से हीन, अल्पायु और भाग्यहीन होता है।

चतुर्थ भाव में हो तो अपने जन में अपमानित, अन्न पान बन्धु मित्र से हीन, मूढ़ और पापी होता है।

सप्तम में हो तो राजा का भृत्य, मूर्ख, परोपकारी, खल, मलिन, मिथ्याभाषी होता है।

दशम में हो तो शत्रु को जीतने वाला, परिजन मित्र वाहन धन से सम्पन्न, विप्र, गुरु और देवताओं का पूजक होता है।

गुरु शुक्र योग फल

गुरु और शुक्र दोनों लग्न में हो तो जातक ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर भी गुरु के उपदेश से न्यायी राजा अथवा राजमन्त्री होता है।

चतुर्थ भाव में हो तो शत्रुओं को जीतने वाला, परिजन मित्र वाहन धन से युक्त, विप्र गुरु और देव का भक्त होता है।

सप्तम में दोनों हो तो सुशीलास्त्री धन रत्न से युक्त, कन्या सन्तान वाला, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहन का भोगी होता है।

दशम में दोनों हो तो मान, प्रभुत्व, धन, नौकरों से युक्त और सुशील राजा होता है।

गुरु शनि योग फल

जन्मकाल में गुरु और शनि दोनों लग्न में हो तो जातक नशे में चूर, आलसी, निष्ठुर, विद्वान्, धनी, खल और अल्पसुखी होता है।

चतुर्थ भाव में गुरु, शनि हो तो राजमन्त्री, नीरोग, विजयी, बन्धु मित्र से युक्त, लोक प्रिय और सुखी होता है।

सातवें भाव में गुरु, शनि हो तो स्त्री के द्वेष से धन नष्टकर्त्ता, शूर, व्यसनी, शठ, कुरूप पिता से धन छीनने वाला मूर्ख होता है।

दशम भाव में गुरु, शनि हो तो राजप्रिय या राजा, थोड़ी सन्तान वाला, स्थिर, गोपालक और अनेक वाहनों को रखने वाला होता है।

शुक्र शनि योग फल

जन्मकाल में शुक्र शनि दोनों जन्म लग्न में हो तो वह मनुष्य स्त्री सुख में लीन, सुन्दर रूप, सुख धन भोग से युक्त, बहुत नौकरों से युक्त होकर अन्त में शोकसन्तप्त होता है।

चतुर्थ भाव में शुक्र, शनि हो तो मित्र से धन और बन्धु से आदर पाता है तथा राजा का विश्वास पात्र होता है।

सप्तम भाव शुक्र, शनि में हो तो स्त्री धन रत्न सुख, समस्त सम्पत्ति और विषयों का भागी होता है।

दशम भाव में हो शुक्र, शनि तो जातक समस्त द्वन्द (सुख, दुःख, राग द्वेष इत्यादि) से रहित विशेष कार्य करने वाला विख्यात राजमन्त्री होता है।

इस प्रकार यहाँ केन्द्रस्थ दो-दो ग्रहों का फल बतलाया गया है। इसे आधार बनाकर तीन, चार, पाँच, छः ग्रहों का केन्द्रस्थ ग्रहयोग फल अपनी बुद्धि से विचार करना चाहिए।

दो तीन आदि ग्रह योग

प्राचीनाचार्यों ने द्विग्रह योग के फल जो कहे हैं, उनको यहाँ अहङ्कार मुक्तभाव से विशेष रूप आगे कहने जा रहे हैं—

सूर्य चन्द्रमा योग फल

जन्माङ्ग में रवि और चन्द्रमा एक स्थान में हों तो जातक स्त्री का वश विनय रहित कूट (सुवर्णादि धातुओं को मिश्रणपरिवर्तन क्रिया) को जानने वाला, अधिक धनवान, [illegible]दिरादि बेचने में चतुर होता है।

सूर्य भौम योग फल

कुण्डली में सूर्य मङ्गल एक स्थान में हों तो तेजस्वी, साहसी, मूर्ख, बलवान, मिथ्या- भाषी, पापी, हिंसक और उग्रस्वभाव होता है।

सूर्य बुध योग फल

कुण्डली में रवि बुध का योग हो तो जातक सेवा कार्य में निपुण, चञ्चल धन

वाला, प्रियवक्ता, यशरूप धन वाला, श्रेष्ठ, राजा और सज्जनों का प्रिय, बल, रूप, धन और विद्या से युत होता है।

सूर्य गुरु योग फल

यदि कुण्डली में रवि गुरु का योग हो तो जातक धर्मात्मा, राजमन्त्री, बुद्धिमान् मित्रों के आश्रय से धनलाभ करने वाला, और वेद शास्त्रों का अध्यापक होता है।

सूर्य शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में रवि शुक्र का योग हो तो शस्त्र प्रहार विद्या और शक्ति से युक्त वृद्धावस्था में क्षीण दृष्टि, नृत्य नाट्यादि कला को जानने वाला, स्त्री के आश्रय से अधिक धन पाने वाला होता है।

सूर्य शनि योग फल

यदि कुण्डली में रवि, शनि का योग हो तो जातक धातु क्रिया में कुशल, धर्मात्मा, स्वकर्मनिष्ठ, स्त्री एवं पुत्रादि से रहित, अपने कुल के गुणों से प्रसिद्ध और हीनशील होता है।

चन्द्र भौम योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र मङ्गल का योग हो तो वह व्यक्ति शूर, रण में विजयी, योद्धा, रक्तविकार से पीड़ित, मिट्टी, चर्म और धातुओं के वस्तु बनाने वाला, कूट (धातु पर रंग चढ़ाने की क्रिया) को जानने वाला होता है।

चन्द्र बुध योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र बुध का योग हो तो जातक काव्य करने में निपुण, धनवान स्त्री का प्रिय, सुरुपवान, हँसमुख, धर्मात्मा और विशेष गुण वाला होता है।

चन्द्र गुरु योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र गुरु का योग हो तो पुरुष स्थिर मैत्री वाला, विनययुक्त, बन्धुओं का आदर करने वाला धनवान, सुशील और देव ब्राह्मणों का हित चिन्तक होता है।

चन्द्र शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र शुक्र का योग हो तो वह व्यक्ति माला सुगन्ध वस्त्रादि से युत कार्य प्रणाली को जानने वाला, अपने कुल का प्रिय, आलसी, क्रय विक्रय में कुशल होता है।

चन्द्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र शनि का योग हो तो जातक वृद्धा स्त्री में आसक्त,

हाथी एवं घोड़े आदि का सम्पालक, शीलहीन, दूसरे का अनुकरण करने वाला, निर्धन और विवादादि (झगड़ा) में हारने वाला होता है।

भौम बुध योग फल

यदि कुण्डली में मङ्गल बुध का योग हो तो स्त्रीजनों में तुच्छ (अपमानित), अल्प धन वाला, सोना और लोहा का कार्य करने वाला, कुलटा स्त्री और दुश्चरित्रा विधवा को रखने वाला और औषधि बनाने में निपुण होता है।

भौम गुरु योग फल

यदि जातक की कुण्डली में मङ्गल गुरु का योग हो तो वह पुरुष शिल्प, वेद, शास्त्रों का ज्ञाता, मेधावी, बोलने में चतुर, बुद्धिमान तथा शस्त्र चलाने वालों में प्रधान (श्रेष्ठ) होता है।

भौम शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में मङ्गल शुक्र का योग हो तो लोकमें पूज्य, समाज में मुख्य, गणितज्ञ, परस्त्री में आसक्त, धूर्त, जुआ, मिथ्या तथा शठता में रत और विद् (परस्त्रीरत) होता है।

भौम शनि योग फल

यदि जातक की कुण्डली में मङ्गल शनि का योग हो तो वह धातु क्रिया, इन्द्रजाल विद्या में कुशल, वञ्चक, चोर विद्या में निपुण, धर्महीन शस्त्र और विष से आहत और कलह प्रिय होता है।

बुध गुरु योग फल

कुण्डली में बुध गुरु का योग हो तो नृत्य कला को जानने वाला, पण्डित शान और वाद्य में निपुण, बुद्धिमान और सुखी होता है।

बुध शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में बुध शुक्र का योग हो तो अति धनवान, नीतिज्ञ, विविधशिल्प कला का ज्ञाता, वेद जानने वाला, प्रियवक्ता, शीतज्ञ, हास्य और सुगन्ध मालादि में रुचि रखने वाला होता है।

बुध शनि योग फल

यदि कुण्डली में बुध शनि का योग हो तो जातक ऋण से युत, घमण्डी, प्रपञ्ची, कवि, घूमने वाला; कार्य में चतुर और प्रियभाषी होता है।

गुरु शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में गुरु शुक्र का योग हो तो जातक विद्या, वाद से जिविका वाला सप्रमाण विशेष धर्म में रहने वाला, श्रेष्ठ स्त्री वाला तथा बुद्धिमान होता है।

गुरु शनि योग फल

यदि कुण्डली में गुरु शनि का योग हो तो धनवान, नगराध्यक्ष, यशस्वी, श्रेणी, सभा ग्राम और संस्था का प्रधान होता है।

शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में शुक्र शनि का योग हो तो लकड़ी चीरने में चतुर चौर कर्म, चित्ररचना, पत्थर आदि से शिल्प क्रिया को करने में निपुण, योद्धा, भ्रमणशील, और पशुओं को पालन करने वाला होता है।

इस प्रकार यहाँ दो ग्रहों के योग से फल का वर्णन किया गया है। इनमें ग्रह परस्पर वर्ग में हो तो अधमादि विकल्प से फल में न्यूनाधिकता भी होती है। आगे त्रिग्रहों के योग का फल कहते हैं।

सूर्य चन्द्र मंगल योग फल

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य, चन्द्र मङ्गल का योग हो तो जातक लज्जारहित, पापी, यन्त्र बनाने वाला, शत्रु को जीतने वाला, सब कार्यों में दक्ष होता है।

सूर्य चन्द्र बुध योग फल

यदि रवि चन्द्र बुध का योग हो अर्थात् एक राशि में तो जातक तेजस्वी, पूर्ण बुद्धिमान शस्त्रकला में निपुण, सभा व पान (मदिरादि) में लीन, राजा का कार्य करने वाला और धैर्यवान् होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु योग फल

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु एक राशि में हो तो जातक क्रोधी मायाचार में चतुर, सेवा कर्म में निपुण, विदेश गमन में लीन अर्थात् परदेश मे रहने वाला, अत्यन्त बुद्धिमान और चञ्चल होता है।

सूर्य चन्द्र शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र और शुक्र एक राशि में हों तो जातक दूसरे के द्रव्य हरण करने पर चतुर, परस्त्री आसक्त रहने वाला और शास्त्र में चतुर होता है।

सूर्य चन्द्र शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य, चन्द्रमा, शनि एक राशि में हों तो जातक काम शास्त्र में चतुर, मूर्ख पराधीन और दरिद्र होता है।

सूर्य मंगल बुध योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, मङ्गल और बुध ये तीनों ग्रह यदि एक ही राशि में बैठे हो तो जातक प्रसिद्ध, कुश्ती लड़ने वाला, साहसी, निठुर, निर्लज्ज और धन पुत्र स्त्री से रहित होता है।

सूर्य मंगल गुरु योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य मङ्गल गुरु की युति हो तो जातक बोलने में चतुर, बड़ा धनवान्, सलाहकार, सत्यवादी और स्वभाव से उदार होता है।

सूर्य भौम शुक्र योग फल

जिस जातक के जन्म काल में यदि सूर्य, मङ्गल, शुक्र एक राशि में हों तो वह जातक नेत्ररोगी, अच्छे कुल में उत्पन्न, भाग्यशाली, कठोर वचन बोलने वाला और सम्पतिशाली होता है।

सूर्य भौम शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, मङ्गल, शनि एक राशि में हों तो जातक अङ्गहीन, धनहीन, रोगी, स्वजन रहित, और अत्यन्त मूर्ख होता है।

सूर्य बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, गुरु की युति हो तो जातक नेत्र रोगी, सम्पत्ति-शाली, मूर्ख, शास्त्रादि शिल्पविद्या एवं काव्यादि कार्य करने में लीन और सुन्दर लेखक होता है।

सूर्य बुध शुक्र योग फल

जन्म पत्रिका में यदि सूर्य, बुध शुक्र एक राशि में हों तो जातक अत्यन्त दुखी, वाचाल, घुमने में प्रवृत्ति वाला, एवं स्त्री के लिए दुखी होता है।

सूर्य बुध शनि योग फल

जन्म काल में सूर्य, बुध, शनि युति हो तो जातक नपुंसक की तरह आचरण करने वाला, द्वेषी, सबसे पराजित, बन्धु बान्धवों से त्यागा हुआ होता है।

सूर्य गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, गुरु तथा शुक्र एक ही राशि में स्थित हों तो इस प्रकार का जातक कमजोर नेत्रों वाला, वीर, पण्डित, निर्धन, राजा का मन्त्री तथा दूसरे के कार्य में लीन रहने वाला होता है।

सूर्य गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य गुरु शनि एक राशि में हों तो जातक असमान शरीर वाला पूजनीय, अपने लोगों से अनाहत, सुन्दर स्त्री पुत्र तथा मित्र वाला राजा का प्रिय तथा निर्भय होता है।

सूर्य शुक्र शनि योग फल

जन्मकाल में यदि सूर्य, शुक्र तथा शनि एक राशि में स्थित हों तो वह जातक शत्रु के भय से दुखी, सम्मान, कला एवं काव्य से रहित, दूषित आचरण वाला और कोढ़ी होता है।

चन्द्र भौम बुध योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्रमा, भौम, बुध एक राशि में हों तो पाप करने वाला, दुष्ट आचरण में लीन, जीवन पर्यन्त मित्र व अपने बन्धुओं से रहित होता है।

चन्द्र भौम गुरु योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, भौम, गुरु एक राशि में हों तो जातक नम्र देह (पाठान्तर से घावों से युत) स्त्री लोलुप, चोर, सुन्दर, स्त्रियों का प्रिय व महाक्रोधी होता है।

चन्द्र भौम शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा, भौम एवं शुक्र एक राशि में हों तो जातक दु:शीला अर्थात् शील (नम्रता) रहित, पुत्र व पति, घूमने की रुचि वाला और ठण्ड से डरने वाला होता है।

चन्द्र भौम शनि योग फल

यदि जातक की कुण्डली में चन्द्र, भौम तथा शनि एक ही राशि में स्थित हों तो वह जातक बाल्यावस्था में मातृ सुख से रहित, क्षुद्र स्वभाव, विषम बुद्धि व लोक (संसार) द्वेषी होती है।

चन्द्र बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, गुरु एक राशि में हों तो जातक धनी, रोगी, वक्ता, तेजस्वी, विख्यात, विशाल कीर्तिवाला एवं अधिक भाई और पुत्रों से युक्त होता है।

चन्द्र बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, गुरु एक राशि में हों तो जातक विद्या से सुसंस्कृत बुद्धिमान होकर भी दुष्टाचरण करने वाला सौम्य स्वभाव वाला और धन का लोभी होता है।

चन्द्र बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, शनि एक राशि में हों तो जातक रोगी, विकल शरीर वाला, पण्डित, वक्ता, पूजनीय और राजा होता है।

चन्द्र गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, शनि एक राशि में हों तो जातक पतिव्रता स्त्री का पुत्र पण्डित, कलाओं को जानने वाला, बहुज्ञ, सज्जन, भाग्यशाली होता है।

चन्द्र गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, गुरु तथा शनि एक ही राशि में स्थित हों तो

जातक शास्त्र के तत्व का ज्ञाता, वृद्धा स्त्री का सङ्ग रखने वाला, गतरोग और किसी ग्राम का प्रधान होता है।

चन्द्र शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र शुक्र शनि एक राशि में हों तो जातक लेखक, कथा वाचक, पुरोहित, और ज्योतिषी पूर्व जन्म के पुण्य से होता है।

भौम बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि मङ्गल बुध, गुरु एक राशि में हों तो जातक अच्छा कवि, राजा, सज्जन स्त्री का स्वामी, दूसरों के उपकार करने में लीन एवं गान विद्या में चतुर होता है।

भौम बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि कुण्डली में मङ्गल, बुध, शुक्र एक राशि में हों तो जातक कुलहीन विकलाङ्ग, चञ्चल, दृष्ट, वाचाल और प्रतिदिन उत्साह युक्त होता है।

भौम बुध शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि मङ्गल, बुध, शनि एक राशि में हों तो जातक सेवक या दरिद्र, कृष्ण नेत्र प्रवासी, मुख का रोगी एवं हास्य प्रेमियों के साथ रमण करने वाला होता है।

भौम गुरु शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में यदि मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि एक राशि में हों तो जातक राजा का प्रिय पात्र सत्पुत्रों से युत, स्त्रियों से सदा बहुत सुख प्राप्त करने वाला एवं समस्त लोगों का सुख दाता है।

भौम गुरु शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि मङ्गल, गुरु, शनि एक राशि में हों तो जातक राजा से संमत, भग्न देह, दृष्ट आचरण करने वाला, मित्रों से निन्दनीय एवं घृणा से रहित होता है।

भौम शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, शुक्र, शनि एक राशि में हों तो जातक चरित्रहीन स्त्री का पुत्र और पति (अर्थात् चरित्रहीन स्त्री का पति भी), सुख--साधनों से रहित और परदेशवासी होता है।

बुध गुरु शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में यदि बुध, गुरु, शुक्र एक साथ हों तो जातक सुन्दर शरीर वाला, शत्रुहीन, राजा, भाग्यवान्, यशस्वी, और सत्यवक्ता होता है।

बुध गुरु शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि बुध, गुरु, शनि एक राशि में हों तो जातक धन ऐश्वर्य युक्त, पण्डित, बहुत सुखभोगी, अपने स्त्री से प्रेम करने वाला, धैर्ययुत और भाग्यवान् होता है।

बुध शुक्र शनि योग फल

जन्म कुण्डली में बुध, शुक्र, शनि एक साथ हों तो वाचाल, धूर्त, मिथ्यावादी, परस्त्रीगामी, कलाकार और स्वदेश प्रिय होता है।

गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि गुरु, शुक्र, शनि का योग हो तो नीच कुलोत्पन्न जातक भी यशस्वी राजा और सुशील होता है।

माता व पिता के सुख विचार

जन्म के समय चन्द्रमा पापग्रहों से युक्त हो तो जातक मातृसुख से हीन और सूर्य पापयुक्त हो तो जातक पितृसुख से हीन तथा दोनों शुभग्रह से युत हों तो माता और पिता का सुख समझना चाहिए।

मिश्र अर्थात् शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रह युक्त हों तो मिश्रफल कहना चाहिए।

शुभ ग्रहों के योग फल

जन्म के समय यदि परस्पर ३ ग्रहों की युति हो तो जातक धन, ऐश्वर्य, यश से युत राजा सदृश पृथ्वी के भूषण रूप अति श्रेष्ठ पुरुष का जन्म होता है।

पाप ग्रहों के योग फल

जन्म के समय यदि जन्म काल में तीन पाप ग्रहों की युति हो तो जातक भाग्यहीन दरिद्र, दुखी कुरूप और विनयहीन होता है।

अब आगे चार ग्रहों के योग का फल कहते हैं—

सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग फल

यदि जन्म के समय सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध एक साथ हों तो जातक लिपिकर्ता या लेखक, चोर, वाचाल, रोगी व चतुर मायावी होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु योग फल

यदि जातक के जन्म के समय सूर्य, चन्द्र, भौम एवं गुरु एक साथ हों तो वह जातक धनी, स्त्री से निन्दित, तेजस्वी, नितिज्ञ, शोक से रहित, कार्य करने में सक्षम व चतुर होता है।

सूर्य चन्द्र भौम शुक्र योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र एक साथ हों तो जातक श्रेष्ठ उचित वाणी व

व्यवहार वाला, (पाठान्तर से उग्र अर्थात् तीक्ष्ण, जठराग्नि वाला) सुखभोगी, चतुर, धन संग्रहकर्ता, विद्या पुत्र व स्त्री से युक्त होता है।

सूर्य चन्द्र भौम शनि योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि एक साथ हों तो जातक न्यूनाधिक शरीर वाला, वामन (लघु), धन हीन, भिक्षाशी और सर्व विदित मूर्ख होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग फल

यदि सूर्य, बुध, गुरु, चन्द्रमा एक साथ हों तो जातक सुवर्ण (सोना) का कार्य करने वाला (सुनार), बड़े नेत्र वाला कला का ज्ञाता, बड़ा धनवान, धैर्यधारी, (पाठान्तर से वीर) व रोगहीन, देहधारी, (पाठान्तर से गम्भीर) होता है।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक व्यग्र, सुन्दर भाग्य वाला, प्रवक्ता, छोटे कद वाला, पाठान्तर से नेत्र रोगी व पीत नेत्र वाला व राजा का प्यारा होता है।

सूर्य चन्द्र बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि एक साथ हों तो जातक माता पिता से हीन, धन सुख से रहित, घूमने वाला, भिक्षाशी व असत्य भाषी होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शुक्र एक साथ हों तो जातक जल हिरन व जङ्गल का स्वामी, सुख भागी (पाठान्तर से राजा से सम्मानित) व कुशल होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि एक साथ हों तो जातक लाल नेत्र वाला, क्रोध दृष्टि वाला, उग्र, अधिक पुत्र धन से युक्त और श्रेष्ठ स्त्रियों का प्रिय पात्र होता है।

सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि एक साथ हों तो जातक स्त्री के समान आचरण करने वाला अर्थात् जनखा, आगे चलने वाला, अत्यन्त दुर्बल देहधारी व सब जगह भयभीत होता है।

सूर्य भौम बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु एक साथ हों तो जातक वीर, सूत बनाने वाला वा चक्की चलाने वाला और (ग्रन्थान्तर से साइकिल वगैरह पर चलने वाला) स्त्री व धन से रहित, दुःखी अथवा घूमने वाला होता है।

सूर्य भौम बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक दूसरों की स्त्री में लीन, चोर, असमान शरीर धारी, दुर्जन व दुर्बल होता है।

सूर्य भौम बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, बुध, शनि एक राशि हों तो जातक युद्ध करने वाला पण्डित, उग्र, बुरे आचरण करने वाला प्रधान कवि, उत्तम सलाहकार अर्थात् मन्त्री अथवा राजा होता है।

सूर्य भौम गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र एक भाव में हों तो जातक सुन्दर भाग्यवाला, संसार में सम्मानित, धनी, राजा से सम्मत, संसार में विख्यात और नीति का ज्ञाता होता है।

सूर्य भौम गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, गुरु शनि एक घर में हों तो जातक पागल, जन समुदाय में सम्मानित, प्रयोजन सिद्ध कर्ता, बन्धु व मित्र से युत और राजा का प्रिय होता है।

सूर्य भौम शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, शुक्र, शनि एक राशि में हों तो जातक अशान्त चित्त असत्कार्यकर्त्ता, असमान दृष्टि वाला, बन्धुद्वेषी व सब से पराजित होता है।

सूर्य बुध गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एक साथ हों तो जातक धनी पूर्ण सुखी, मतलब सिद्ध करने वाला, बन्धुओं से युत व श्रेष्ठ पुरुष होता है।

सूर्य बुध गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, गुरु, शनि एक भाव में हों तो उत्पन्न जातक नपुंसक के समान आचरण करने वाला, अभिमानी, क्लेश प्रिय भाई से युक्त व उत्साह से हीन होता है।

सूर्य बुध शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, शुक्र, शनि एक भाव में हों तो जातक वाचाल, सुन्दर भाग्यवाला, पण्डित, सरल, सुखी, सत्त्वगुण व पवित्रता से युक्त, धीर व मित्रों की सहायता की सहायता करने वाला होता है।

सूर्य गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि कुण्डली में सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो

जातक लोभी कवि, अध्यक्ष, शिल्पकरों का स्वामी, नीच अर्थात् दुष्टों का मुखिया व राजाओं का प्रिय होता है।

चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि पत्रिका में चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक शास्त्रों में निपुण राजा, सुयोग्य महान् मन्त्री अथवा बड़ी बुद्धि वाला होता है।

चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि पत्रिका मे चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक कलहप्रिय, अधिक सोने वाला अर्थात् आलसी, दुष्ट, कुलटा का पति, सुन्दर, बन्धु का विरोधी और दु:खी होता है।

चन्द्र भौम बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि जन्मकुण्डली में चन्द्र, भौम, बुध, शनि एक साथ हों तो जातक वीर, माता पिता के सुख से रहित, नीच कुल में उत्पन्न, अधिक स्त्री व मित्र एवं पुत्र से युक्त अच्छे कार्य करने वाला होता है।

चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल

यदि चन्द्र, भौम, गुरु एवं शुक्र एक साथ हों तो जातक विकलाङ्ग सुन्दरी स्त्री वाला, सबको सहन करने वाला (पाठान्तर से कष्ट सहनकर्त्ता) अत्यन्त सम्मान से युक्त, पण्डित व अधिक मित्रों के सुख को भोगने वाला होता है।

चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल

चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शनि के योग से जातक बहिर, धनी, वीर, उन्माद रोगी, बोलने में चतुर, स्थिर स्वभाव, बुद्धिमान और उदार हृदय वाला होता है।

चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र, मङ्गल, शनि एक साथ हों तो वह पुरुष कुलटा का स्वामी प्रौढ़ सांप के समान नेत्र वाला तथा सर्वदा उद्वेगयुक्त होता है।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्म चक्र में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एक साथ में हों तो जातक विद्वान् माता-पिता से रहित सुरूप धनवान, सौभाग्यवान् तथा शत्रु रहित होता है।

चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शनि एक साथ हों तो जातक धर्मात्मा यशस्वी श्रेष्ठ, तेजस्वी, बन्धुओं का प्रिय, बुद्धिमान्, राजमन्त्री और श्रेष्ठ कवि होता है।

चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में चन्द्र, बुध, शनि एक राशि में हों तो परस्त्रीगामी, दु:शीला स्त्री का पति, विपत्ति से युक्त बन्धुवाला, पण्डित तथा संसार का द्वेषी होता है।

चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि के योग होने से जातक मातृविहीन, सौभाग्य-शाली, चर्मरोगी, दुःखी, भ्रमणशील, बहुत बोलने वाला और सत्य में रत होता है।

भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र का योग हो तो स्त्री से कलह करने वाला, धनी, लोकमान्य, सुशील एवं नीरोग शरीर वाला होता है।

भौम बुध गुरु शनि योग फल

यदि मङ्गल, बुध, गुरु, शनि का योग हो तो जातक पण्डित, वक्ता, धनहीन, सत्य और शौच से बोलने वाला, कष्ट सहनशील और बुद्धिमान होता है।

भौम बुध शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि का योग हो तो जातक योद्धा दूसरों से पोषित, कठिन शरीर वाला, युद्ध में स्वाभिमान, रखने वाला विख्यात और कुत्तों से पालने वाला होता है।

भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक तेजस्वी, धनवान, स्त्रैण, साहसी, चञ्चल और धूर्त होता है।

बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि बुध, गुरु, शुक्र, शनि का योग हो तो जातक (जन्म लेने वाला) मेधावी, शास्त्राभ्यासी, स्त्री में आसक्त और (आज्ञाकारी नौकरों वाला) होता है।

अब आगे पञ्चग्रहयोग का फल जैसा महर्षियों ने कहा है, वैसा ही कहते हैं—

सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध एवं गुरु एक भवन में हों तो जातक दुःखी, अधिक प्रपञ्ची व स्त्री के वियोग से तप्त देहधारी होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र एक भवन में हो तो जातक दूसरों के कार्य में लीन, बन्धु और मित्रों के बल से हीन अर्थात् बन्धु मित्रों से दुःखी एवं नपुंसकों से मित्रता करने वाला होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध शनि योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि एक भवन में हो तो जातक थोड़ी आयु वाला कारागार में वृद्ध, दीन, समस्त सुख से हीन एवं स्त्री पुत्र धन से रहित होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र एक भवन में हो तो जातक जन्म से अन्ध, अत्यन्त दुःखी, माता–पिता से सदा संत्यक्त अर्थात् माता पिता के सुख का अभाव तथा गान (संगीत) में अभिरुचि रखने वाला होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि एक भवन में हों तो जातक युद्ध में निपुण, सामर्थ्यवान्, दूसरों के धन का हरण करने वाला, अन्य लोगों को कष्टदायी अथवा चुगलखोर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है।

सूर्य चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र तथा शनि एक ही भवन में हों तो जातक सम्मान धन, वैभव से रहित, दुष्ट आचरण कर्ता व दूसरों के स्त्री में लीन होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एक भवन में हो तो जातक मशीनरी का ज्ञाता, अधिक धनी, राजा का मन्त्री, न्यायाधीश, विख्यात और अच्छे यशवाला होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल

जन्म पत्री में रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शनि एक साथ हों तो वह जातक डरपोक, शुभ चिन्तकों से रहित, उन्मादी, रोग युक्त, कपट में निपुण, उग्र और परान्नभोक्ता होता है।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि के योग से जातक लम्बा कद रोम युक्त शरीर वाला, मरने तक का उत्साह रखने वाला, सुख, धन एवं पुत्र रहित होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि के योग से वक्ता, इन्द्रजाल जानने वाला, चञ्चलचित्त स्त्री का प्रिय, बुद्धिमान, बहुत शत्रु वाला और निर्भय होता है।

सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र के योग से जातक कामी, बहुत घोड़ा रखने वाला, पुण्यवान्, सेनापति, शोकरहित राजा का प्रिय और सौभाग्यवान् होता है।

सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में रवि, मङ्गल, बुध, गुरु, शनि के एक राशि में होने से जातक सदा उद्विग्न, रोगी, घर-घर भीख माँगने वाला, पुराना मैला वस्त्र पहनने वाला होता है।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि के योग होने पर जातक मृत्यु, बन्धन और रोग से पीड़ित लोक में मान्य और रोग से व्यथित, विद्वान्, निर्धन और विकल शरीर वाला होता है।

सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में रवि, मङ्गल, बुध, शुक्र एवं शनि के योग से जातक रोग और शत्रु से पीड़ित, स्थानहीन, दुःख से युक्त, सदा क्षोभ रहित होकर भ्रमण करने वाला होता है।

चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक नपुंसक, नीच आचरण वाला, दुर्भाग्य युक्त, विकल और धनहीन होता है।

सूर्य भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में सूर्य, मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक जलयन्त्र, धातु, पारा आदि रसायन निर्माण क्रिया में निपुण और इन्हीं कार्यों को प्रसिद्ध कार्य मानने वाला होता है।

सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में रवि, बुध, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक बहुत शास्त्र जानने में निपुण, मित्र और गुरुजनों का प्रिय, धर्मात्मा और दयालु होता है।

चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र के योग से जातक सज्जन, नीरोगी शरीर, विद्या, धन और सुख से सम्पन्न, बन्धुओं का हित और बहुत मित्र वाला होता है।

चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शनि के योग से जातक आँख का रोगी, दरिद्र, परान्नभोगी, दीन और अपने बन्धु वर्गों को लज्जित करने वाला होता है।

चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि एक भाव में हों तो जातक अधिक शत्रु व मित्रों से युक्त, परोपकारी, विपरीत स्वभाव वाला एवं अधिक अहंकारी होता है।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक राज्य सचिव या राजा के समान, समुदाय का स्वामी एवं सर्वमान्य होता है।

भौम बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक ही भवन में हों तो जातक सुन्दर मन चित्त वाला, उन्मादी, राजा का प्रिय पात्र, शोक से रहित, निद्रालु एवं निर्धन होता है।

अब आगे छः ग्रहों के योग का फल प्रस्तुत किया जा रहा है—

एक राशि में सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र एक स्थान में हों तो जातक विद्या वित्त धर्म में लीन कृश, देहधारी अधिक भाषी (बहुभाषी) एवं विशिष्ट बुद्धिमान् होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि एक स्थान में हों तो जातक दानी, परोपकारी, अस्थिर स्वभाव वाला, संत एवं गुणी, निर्जन स्थान में रमण करने वाला होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि एक स्थान में हों तो जातक चोर, परस्त्रीगामी, कोढ़ी, अपने मनुष्यों से निरादर पाने वाला, मूर्ख, स्थान से च्युत एवं पुत्रहीन होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि एक स्थान में हों तो जातक दुष्ट, दूसरों के कार्य में लीन वा करने वाला, क्षय रोगी (टी.वी. का रोगी), श्वास व खाँसी से पीड़ित देहधारी और भाई बन्धुओं में निन्दित होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक राजा का मन्त्री, सौभाग्यवान्, क्षमा से युक्त, शोक से पीड़ित एवं स्त्री और धन से रहित होता है।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक तीर्थ में सदा रमण करने वाला, धन व पुत्र से हीन, वन या पर्वत का सेवन करने वाला होता है।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक सदा पवित्र, प्रतापी, अधिक स्त्रियों में लीन, राजा का प्यारा, राज्य मन्त्री, धन, पुत्र व सौभाग्य से युत होता है।

सृष्टि के समय योग

जिस समय चन्द्रमा सहित कर्कलग्न में बृहस्पति की दृष्टि से युत और शेष सब ग्रह अपने अपने गृह में थे, तो ब्रह्मा ने इस भूमि की रचना की।

अत: इस प्रकार का योग जिस पुरुष के जन्म समय में होता है तो वह अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करता हुआ त्रैलोक्य का पालन करता है।

स्थावर जङ्गम की अभिव्यक्ति

समय, निमित्त, आकृति और देश भेद से होराशास्त्र स्थावर (वृक्षादि) और जङ्गम (मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतङ्गादि) का जन्म ज्ञान जिस प्रकार अभिव्यक्त करता है, उस शास्त्र को आगे कहते हैं।

मनुष्येतर जन्म ज्ञान

जातक की कुण्डली में सब पापग्रह बलवान् और सब क्रूरग्रह निर्बल हो तथा वियोनि संज्ञक (जलचर चतुष्पद कीट राशि) लग्न हो, बुध शनि केन्द्र में हों या लग्न को देखते हों तो वियोनि (मनुष्येतर) का जन्म समझना चाहिये। आधान या जन्म समय चन्द्रमा या लग्न में जिस राशि के द्वादशांश हो तत्सदृश अर्थात् उस राशि के समान जन्तु का जन्म समझना चाहिए।

वर्णाकृति भेद ज्ञान का विचार

ग्रहों के योग या दृष्टि द्वारा प्राणियों के वर्ण आकार आदि के भेद मुनियों ने जो वर्णन किये हैं, उनके सारांश को यहाँ भी कहते हैं।

पशु शरीर में राशि विभाग का ज्ञान

चतुष्पद पशुओं के मुख में मेष, गले में वृष, दोनों कन्धा सहित पैर में मिथुन और मीन, पीठ के दोनों भाग में कर्क और कुम्भ, सिंह और मकर अगले पैरों में, कन्या और धनु पिछले पैरों में, तुला, वृश्चिक गुद और लिङ्ग में स्थित समझना चाहिए।

इनमें मिथुन से तुला पर्यन्त दहिने भाग में और वृश्चिक से मीन पर्यन्त वामभाग में राशियों को जानना चाहिए।

वियोनि का वर्ण व चिन्ह ज्ञान

लग्न में मेषादि राशि या उसके नवांश में जो बली हो उसके वर्ण के समान ही वियोनि का वर्ण (आकृति) कहना उचित होगा।

यदि लग्न में ग्रह हो तो बली ग्रह के समान वर्ण या व्रणादि कहना चाहिये।

ग्रह यदि अपने गृह या नवांश में हो तो स्पष्ट वर्ण, यदि अन्य राशि नवांश में हो तो रुक्ष (ग्रह और परराशि मिश्रित) वर्ण समझना चाहिए।

लग्न से सप्तम भाव में ग्रह हो या ग्रह की दृष्टि हो तो उस ग्रह के वर्ण-सदृश उस पशु के पृष्ठ पर चिह्न जानना चाहिए।

जितने ग्रह हों उतने वर्ण के चिह्न समझना चाहिए। जो ग्रह सबसे बलवान् है उसी का वर्ण प्रधान रूप से होता है।

ग्रहों के वर्णों का ज्ञान

वियोनि कुण्डली में लग्न में बलवान् बृहस्पति हो तो पीला, चन्द्रमा हो तो श्वेत, शुक्र हो तो चित्र (अनेक वर्ण), रवि या मङ्गल हो तो लाल वर्ण होता है।

शनि हो तो काला और बुध हो तो शबल (दूर्वा श्याम) वर्ण होता है।

यदि ग्रह अपने गृह और अन्य नवांश में अथवा अपने नवांश या अन्य राशि में रह कर लग्न को देखे तो सोने के सामान वर्ण समझना चाहिए।

प्रकारान्तर से वर्ण का ज्ञान

जन्मलग्नस्थ ग्रह यदि परिघ, परिवेष (मण्डल), मेघ, वृक्ष, मृग, वृष, दण्ड (यष्टी), सर्प, इन्द्र धनुष या धूलि आदि जिस वर्ण से आवृत (आच्छादित) हो उसी प्रकार का वर्ण कहना चाहिये।

अन्यथा ग्रह का जैसा स्वाभाविक वर्ण कहा गया है उसी प्रकार का वर्ण जातक का होता है।

पक्षी जन्म ज्ञान

पक्षी द्रेष्काण या चर नवांश, या बुध का नवमांश लग्न में हो वह किसी बली ग्रह से युत हो और उस पर शनि या चन्द्रमा की दृष्टि या योग हो तो क्रम से स्थल या जल के पक्षी का जन्म कहना चाहिए।

अथवा जलचर राशि लग्न हो तथा बली ग्रह से युत दृष्ट हो तो जल का, स्थलराशि लग्न हो और बली ग्रह से युत या दृष्ट हो तो स्थल का पक्षी और उसी ग्रह के सदृश वर्ण कहना चाहिए।

वृक्ष जन्म योग

यदि वियोनि जन्म का लग्न हो, सूर्य गुरु अथवा चन्द्रमा बलहीन हों तथा शेष ग्रह भी पूर्ण बली न हों तो वृक्षादि का जन्म कहना चाहिए।

यदि लग्न में स्थल राशि का नवमांश हो तो वृक्ष का जन्म बताना चाहिए। यदि जलचर राशि का नवांश हो तो जलीय वृक्ष का जन्म कहना चाहिए।

लग्नांश पति से वृक्षों से भेद का ज्ञान

वियोनि लग्न नवांशपति सूर्य हो तो सागरवान् (सँखुआ आदि) वृक्ष, चन्द्रमा हो तो चिकना और दूध वाला, गुरु हो तो फल वाला (आम, केला आदि) का वृक्ष का जन्म समझना चाहिए।

मङ्गल हो तो कडुआ और काँटे वाला, शनि हो तो दुर्भग (फरहद आदि निष्प्रयोजननीय), शुक्र हो तो पुष्प वाला और चिकना तथा यदि बुध हो तो फलहीन वृक्ष समझना चाहिए।

वृक्ष के शुभाशुभ फल का ज्ञान

उक्त लग्नांशपति पापग्रह हो तथा शुभ ग्रह की राशि में हो उत्तम स्थान, खराब वृक्ष, तथा अंशपति शुभ हो और पाप राशि में हो तो खराब भूमि में उत्तम वृक्ष कहना चाहिए।

इसी से सिद्ध है कि शुभग्रह शुभराशि में हो तो सुभूमि में सुवृक्ष और पापग्रह पापराशि में हो तो कुभूमि कुवृक्ष का जन्म कहना चाहिए।

मिश्र से मिश्र (अनेक प्रकार के) वृक्ष समझना चाहिए।

उनमें जो स्थल राशिपति हो उससे स्थलीय वृक्ष, जो जलराशिपति हो उससे जलीय वृक्ष का जन्म समझना चाहिए।

वृक्षों की संख्या का ज्ञान

वियोनि कुण्डली में उक्त अंशपति लग्न राशि से आगे जितनी राशि में हो उतने वृक्ष समझना चाहिए।

अपने नवमांश (जिसमें ग्रह हो उस) से लग्न नवमांश की जितनी संख्या हो उतने वृक्ष की संख्या समझना चाहिए।

वियोनि जन्म ज्ञान

वियोनि कुण्डली में शुभग्रह निर्बल होकर अपने नवांश में बैठे हो, तथा पापग्रह बली होकर अपने राशि या पाप के नवांश में बैठे हों तो वियोनि जन्म कहना चाहिए।

लग्नांश ग्रह यदि निर्बल ग्रह की राशि में हो या अस्त हो तो युद्ध में पराजित, भेदित हो, पाप से युत या दृष्ट हो तो उस समय उत्पन्न वियोनि का शीघ्र ही नाश होता है।

वियोनि ज्ञान में विशेष कथन

उद्भिज्ज, जरायुज, स्वेदज और अण्डज इन चारो प्रकार के जन्तुओं के जन्म ग्रहों के योगादि लक्षणों से पृथक् पृथक् वर्णन करता हूँ।

चतुष्पद जन्म ज्ञान

वियोनि कुण्डली में दुर्बल राशि पें दुर्बल ग्रह हों सूर्य चतुष्पद राशि में हो तथा मेष लग्न हो तो सामान्यतया चार पैर वाले प्राणी का का जन्म होता है।

इस प्रकार पूर्व मैंने संक्षेप में सामान्य वियोनि-जन्म कहा है।

अब कौतुक-जनक (आश्चर्यजनक) विशेषरूप से वियोनि जन्म ज्ञान का वर्णन करते हैं।

विशेष रीति से वियोनि जन्म ज्ञान

इस ग्रन्थ में पूर्व प्रत्येक राशि में जो जो द्वादशांश कहे गये हैं, वे सबल रवि, चन्द्र और लग्न में हों तो वियोनिसंज्ञक द्वादशांश में वियोनि का जन्म होता है।

जैसे मेष राशि में चन्द्रमा मेष के द्वादशांश में हो तो बकरा, मेढ़ा आदि का जन्म, वृष के द्वादशांश में गाय, भैंस आदि का, मिथुन के अंश मनुष्यरूप (वानर आदि) का, कर्क में, केकड़ा, कछुआ आदि का, सिंह के अंश में सिंह, बाघ आदि का, कन्या के अंश में मनुष्यों का, तुला के अंश में मनुष्य की आकृति वाले का, वृश्चिक के अंश में बिच्छू, साँप आदि का, धनु के अंश में घोड़े, गधे आदि का, मकर के अंश (पूर्वार्ध) में हरिन आदि, उत्तरार्ध में मगर आदि का, कुम्भ के अंश में मनुष्य का, मीन के द्वादशांश में मछली आदि जलजन्तुओं का जन्म कहना चाहिए।

जिस प्रकार मेष के द्वादशांश में नाना प्रकार के जन्तुओं का जन्म कहा गया है; इसी प्रकार शेष राशि के द्वादशांशों में भी कहना चाहिये।

जन्तुओं की आकृति व यमलादि का ज्ञान

लग्न के द्वादश भाग में प्रथम भाग में जो राशि वही दादशांश वियोनि कुण्डली में होता है तो उसी की आकृति वाले प्राणियों का जन्म समझना चाहिए। प्रथम के आधार पर ही आगे के द्वादशांशवश वर्ण आकृति आदि कहना चाहिए।

जैसे पूर्व मनुष्यों में लग्नगत पुरुष ग्रह के नवांश और द्विस्वभाव राशि से यमलादि जन्म कहा गया है उसी प्रकार प्रथम द्वादशांश में पुरुष ग्रह स्त्री ग्रह के अंश को द्विस्वभावादि देखकर एक वा अनेक का जन्म कहना चाहिये।

एक से अधिक वियोनि जन्म ज्ञान

जैसे श्वान (कुत्ता) आदि जन्तुओं का बहुत सन्तान होती है, अतः उसके प्रसव में लग्न में जितनी द्वादशांश संख्या हो उतनी सन्तति पुरुष, या स्त्री की संख्या समझनी चाहिये।

यदि लग्न में बृहस्पति, शनि या चन्द्र हो तो कछुए आदि जन्तु की द्वादशांश संख्या तुल्य सन्तति कहना चाहिये।

शुक्र, मंगल, बुध या चन्द्रमा अथवा शनि बलयुक्त हों तो पूर्ववत् (मनुष्य जातकोक्तवत्) अपने अपने अंश सदृश सत्त्व (प्राणियों) के देह (शरीर) को बनाते हैं।

लोक विपरीत प्रसव ज्ञान

प्रसव काल में ग्रह अपने नवांश से दूसरे ग्रह के नवांश में चला जाय तो संसार के विरुद्ध उत्पन्न होने वाले प्राणी घी आकृति (स्वरूप) निश्चय ही होती है।

वृश्चिक लग्नस्थ द्विपद वा नवम नवांश फल

वियोनि कुण्डली में वृश्चिक लग्न में द्विपद नवमांश हो तो बिल में रहने वाले सर्प, गोह, शाही, चूहा, कीड़ा, न्योला, बिच्छू, गोजर, विना विष के सर्प आदि घोर जन्तुओं का जन्म कहना चाहिए।

धनु लग्न धनु नवांश या धनु द्वादशांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली में धनु लग्न या नवमांश या द्वादशांश धनु का हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो घोड़े, खच्चर, गाए, भैंस, ऊँट का जन्म कहना तथा गुरु की राशि या अंश सदृश उस जन्तु के वर्ण आदि पूर्ववत् समझना चाहिए।

मकर लग्नस्थ मकर नवांश या मकर द्वादशांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली के मकर लग्न में यदि मकर का नवांश या द्वादशांश हो तो जङ्गली जन्तु का जन्म जैसे हाथी, गैंड़ा, सूकर, भालू, बाघ, गीदड़ आदि मांसभक्षी का जन्म समझना चाहिए।

मीन लग्नस्थ मीन नवांश या मीन द्वादशांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली के मीन लग्न में मीन के नवमांश या द्वादशांश हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो अगाध जल में रहने वाले मछली आदि जीव का जन्म समझना चाहिए।

मेष या वृष लग्नस्थ मेष या वृष नवांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली के मेष लग्न में मेष का अंश हो उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो मेढ़ा, बकड़ा आदि, तथा वृषलग्न में वृषांश हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो गाय, भैंस आदि जन्तु का जन्म कहना चाहिए।

पूर्वोक्त जो जो राशियाँ अपने अपने अंश सहित लग्न में हों और अपने अपने स्वामी से दृष्ट हों तो उन-उन राशियों के राशीश के सदृश जन्तु का जन्म निश्चित रूप से कहना चाहिए।

पूर्वोक्त ग्राम्य राशि लग्न हो उसमें यदि सिंह, वृश्चिक, मकर का नवमांश हो तो गांव में पालित जंगली प्राणियों का जन्म कहना चाहिए।

एवं ग्राम्य राशि (मिथुन आदि) लग्न में जैसे स्थल या जल राशि के नवांश हो, उसी प्रकार स्थलचर या जलचर जन्तुओं का जन्म कहना चाहिए।

तुला लग्न में तुला के द्रेष्काण शुक्र से दृष्ट हो तो तोता, मैना, कोयल, चकोर, प्रभावशाली अर्थात् कान्तिमान पक्षी का जन्म कहना चाहिए।

वियोनि जन्म कुण्डली में सिंह लग्न में सिंह के द्वादशांश हो उस पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मुर्गा, मयूर, तित्तिर, कबूतर, चातक आदि का जन्म कहना चाहिए।

एवं वियोनि जन्म कुण्डली में स्थिर राशि लग्न हो उसमें स्थिर राशि का द्वादशांश शनि से दृष्ट हो तो स्थिर मठ, मन्दिर, मकान आदि की उत्पत्ति अर्थात् प्रारम्भ करना चाहिये। उसके रङ्ग रूप-ग्रहों के रूप रंग अनुसार पूर्ववत् समझना चाहिये। जैसे सूतिका के घर का ज्ञान कहा गया है।

यहाँ समस्त जीवों के कारणभूत आधान या निषेक या गर्भाधान विषय को रावण द्वारा इस प्रकार कहा गया है—

गर्भाधानयोग्य रजोदर्शन

स्त्री की जन्म राशि से चन्द्रमा जब अनुपचय राशि में अर्थात् राशि से १/२/४/५/७/८/९/१२ इन स्थानों में हो और गोचर में स्थित मङ्गल की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टि हो तो प्रति मास स्त्री को मासिक धर्म होता है। ऐसा बहुत आचार्यों का कथन है तथा सर्वार्थचिन्तामणि आदि ग्रन्थ से भी इस तथ्य की पुष्टि की गई है।

रजो दर्शन में कारण

स्त्रियों को प्रत्येक मास में योनि से तीन दिन तक रक्त स्राव होता है। उसी को रजोदर्शन कहते हैं। उस रजो दर्शन का कारण मङ्गल और चन्द्रमा हैं। क्योंकि जलमय चन्द्रमा और अग्निमय मङ्गल के शास्त्रकारों ने माना है। इसलिए जल से रुधिर और अग्नि से पित्त की उत्पत्ति होती है। जब पित्त के द्वारा रुधिर (खून) में हलचल होती है तो स्त्रियों को मासिक धर्म होता है।

गर्भाधान में अक्षम रजोदर्शन

इस प्रकार जो प्रत्येक मास स्त्रियों को मासिक धर्म होता है; उस ही विद्वानों ने गर्भ का कारण स्वीकार किया है।

यदि स्त्री की शशि से ३/६/१०/११ वें चन्द्रमा हो तो वह मासिक धर्म निष्फल होता है अर्थात् गर्भधारण की क्षमता उस रजोदर्शन में नहीं होती है।

स्त्री पुरुष संयोग कथन

पुरुष की राशि से उपचय (३/६/१०/११) राशि में चन्द्रमा हो और उस पर गुरु की या अपने मित्र ग्रह की विशेष कर शुक्र की दृष्टि रहने पर यदि स्त्री पुरुष संयोग होता है तो गर्भ धारण होगा।

तीन दिन तक रजोदर्शन गर्भ धारण करने में समर्थ नहीं होता है तथा धर्मशास्त्र में त्याज्य भी है।

इसलिये ५वें दिन से १६वें दिन तक ही निषेक का समय माना गया है। इसी से पुरुष स्त्री की राशि से चन्द्रमा को पूर्वोक्त रीति से जानकर उक्त काल में निषेक करने पर सन्तान अवश्य होती है।

अन्य पुरुष संयोग कथन

यदि उपचय राशि में चन्द्रमा रजोदर्शन के समय मङ्गल से दृष्ट हो तो धूर्त पुरुष से स्त्री का संयोग, सूर्य से दृष्ट हो तो राजपुरुष से तथा शनि से दृष्ट हो तो नौकर से स्त्री का संयोग होता है।

इस प्रकार एक एक पाप ग्रह से दृष्ट हो और अन्य (शुभग्रह) से अदृष्ट होने पर पूर्वोक्त फल समझना चाहिए।

यदि भौमादि सब पापग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो वह स्त्री घर का परित्याग करके वेश्या हो जाती है।

संभोग प्रकार का विचार

गर्भाधान कालिक लग्न से अथवा प्रश्नकालिक लग्न से सप्तमभाव स्थित द्विपदादि अर्थात् द्विपद राशि अथवा चतुष्पद राशि जिस रीति से संभोग करता है अभिप्राय यह है कि यदि सप्तम में द्विपद राशि हो तो द्विपद की तरह चतुष्पद हो तो चतुष्पद की तरह स्त्री पुरुष के संभोग को कहना चाहिए।

यदि सप्तमभाव पर पाप ग्रह की दृष्टि या उससे युति हो तो क्रोध व लड़ाई के साथ, यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट सप्तमभाव हो तो कामशास्त्र की रीति से शान्ति पूर्वक हास-विलासादि से युत, यदि शुभ पाप दोनों की दृष्टि या युति हो तो शुक्र (वीर्य) शोणित (रज) संयुक्त गर्भावास (बच्चेदानी) में कर्मानुकूल विषय वृत्ति पतित होती है।

गर्भ सम्भव योग

गर्भाधान के समय यदि रवि, शुक्र समराश्यंश में बली होकर पुरुष के उपचय राशि में हो, अथवा मङ्गल, चन्द्रमा बली होकर स्त्री के उपचय राशि में हो तो गर्भ सम्भव कहना चाहिए।

यदि शुक्र, रवि, मङ्गल चन्द्र अपने नवांश में होकर उपचय स्थान में हो या गुरु (१/५/९) भाव में बली होकर हो तो भी गर्भ सम्भव कहना चाहिए।

गर्भस्थिति का स्वरूप

गर्भाधान समय में स्त्री पुरुष का जिस प्रकार का मनोभाव, जिस प्रकार की

अभिलाषा, कफ पित्तादि जिस प्रकार के दोष से युत हो उसी प्रकार के गुण दोष से युक्त गर्भ में पलने वाला बालक होता है।

गर्भ में पुत्रादि का ज्ञान

लग्न, चन्द्र, गुरु, रवि ये विषमराशि और विषम नवांश में बली होकर हो तो पुरुष का जन्म, यदि समराशि, सम नवांश में हो तो स्त्री (कन्या) का जन्म समझना चाहिए।

यदि बलवान् गुरु, रवि विषम राशि में हो तो पुरुष का, यदि शुक्र, चन्द्र, मङ्गल समराशि में हो तो कन्या जन्म कहना चाहिए।

पुत्र जन्म योग

लग्न को छोड़कर अन्य विषम स्थान में शनि हो तो पुत्र जन्मकारक होता है। इस प्रकार आधानकाल में ग्रह के बलानुसार पुत्र या कन्या का जन्म कहना चाहिए।

नपुंसक जन्म योग कथन

प्रश्न कालिक या गर्भाधान कालिक कुण्डली में यदि बलवान् विषम राशि में सूर्य चन्द्रमा परस्पर दृष्ट हों अर्थात् सूर्य चन्द्र को देखता हो और चन्द्र सूर्य को देखता हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए यह प्रथम योग है।

यदि विषम राशिगत बली शनि और बुध परस्पर दृष्ट हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह द्वितीय योग है।

यदि विषम राशिगत मंगल समराशि में सूर्य को देखता हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह तृतीय योग है।

यदि समराशिगत मंगल विषमराशिस्थ लग्न और चन्द्र हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह चतुर्थ योग है।

यदि विषम राशिस्थ बुध और समराशिस्थ चन्द्रमा को मंगल देखता हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह पंचम योग है।

यदि विषम राशि में या विषम राशि के नवांश में लग्न चन्द्र का और बुध हों तो और उन पर शुक्र शनि की दृष्टि हो तो भी नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह छठा योग है।

यमल योग विचार

लग्न और चन्द्रमा समराशि में हो उस पर बली ग्रह की दृष्टि हो तो गर्भ में मिथुन (यमल) समझना चाहिए।

चन्द्रमा, शुक्र समराशि में हो और गुरु, शुक्र, बुध, लग्न ये विषम राशि में बली या द्विस्वभाव में हो तो भी यमल स्त्री पुरुष समझना चाहिए।

यदि रवि, गुरु मिथुन या धनु में बुध से दृष्ट हो तो पुरुष का, तथा शुक्र, चन्द्र, मङ्गल यदि कन्या या मीन में हो तो दो कन्या का जन्म कहना चाहिए।

लग्नेश भातृ स्थान में हो या उच्च स्थान में हो तो यमल योग अर्थात् दो सन्तान की उत्पत्ति होती है।

गर्भ में तीन बालकों का योग

आधान काल में या जन्म काल में यदि द्विस्वभाव राशि के नवमांश में ग्रह या लग्न हो और मिथुन राशि के नवांश में स्थित बुध लग्न और ग्रहों को देखता हो तो गर्भ में एक कन्या और दो पुत्र कहना चाहिए।

यदि कन्या राशि के नवांश में स्थित बुध पूर्वोक्त स्थिति में विद्यमान ग्रह और लग्न को देखें तो गर्भ में २ कन्या १ पुत्र कहना चाहिए।

यदि मिथुन या धनु राशि के नवांश में ग्रह और लग्न हों तथा मिथुन राशि के नवांश में स्थित बुध लग्न और ग्रहों को देखता हो तो गर्भ में तीन बालक (पुरुष) कहना चाहिए।

यदि कन्या या मीन राशि के नवांश में लग्न व ग्रह हों और कन्या राशि के नवांश में स्थित बुध देखता हो तो गर्भ में ३ कन्याओं को समझना चाहिए। अर्थात् तीन कन्याओं का जन्म होता है।

प्रत्येक मास में गर्भ की स्थिति विचार

गर्भाधान से ७ मास में क्रम से १ कलल (शुक्र शोणित मिश्रण) २ पिण्ड, ३ शाखा (अवयव), ४ अस्थि, ५ त्वचा, ६ रोम और, ७ चेतन्य होते हैं।

अष्टम मास में प्यास, भूख, ९वें में उद्वेग और १०वें मास में पूर्ण पके फल के समान बाहर निकल आता है।

गर्भ के दस मासों का स्वामी

इन १० मासों के स्वामी क्रम से १ शुक्र, २ मङ्गल, ३ गुरु, ४ रवि, ५ चन्द्र, ६ शनि, ७ बुध, ८ लग्नेश, ९ चन्द्र, १० सूर्य होते हैं। इन मासों के शुभाशुभत्व से गर्भ के शुभाशुभत्व समझना चाहिए।

गर्भपात योग

यदि गर्भाधान समय में जो ग्रह दिव्यान्तरिक्षादि उत्पात से हत या पाप ग्रह से पराजित हो तो उस ग्रह के मास में गर्भपतन होता है अथवा लग्न राशि गर्भपतन का कारण होता है।

अथवा आधान कालिक लग्न में शनि मङ्गल हो अथवा शनि मङ्गल की राशि (१०/११/१/८) में चन्द्रमा हो अथवा शनि मङ्गल से दृष्ट चन्द्रमा हो तो गर्भ का पतन होता है।

गर्भपुष्टि ज्ञान

आधान काल में या प्रश्नकाल में होरा "होरेतिलग्नं" अर्थात् लग्न में शुभ ग्रह हो या चन्द्र शुभग्रह से युत हो अथवा लग्न या चन्द्र से ९,५,७,२,१०,४ भावों में शुभग्रह हो अथवा ३,११ भाव में पापग्रह हों अथवा लग्न या चन्द्र पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो प्रसव काल तक गर्भ सुखी अर्थात् सुरक्षित रहता है।

गर्भ सहित गर्भवती मरण विचार

प्रश्नकाल या आधान काल में सूर्य या चन्द्रमा यदि दो पाप ग्रह के मध्य में हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो गर्भ सहित स्त्री का मरण होता है।

लग्न और सप्तम में पाप ग्रह हो उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो अथवा लग्न में शनि तथा क्षीण चन्द्र हो उन पर मङ्गल की दृष्टि हो तो गर्भवती का मरण होता है।

रवि या क्षीण चन्द्रमा द्वादश भाव में और मङ्गल चतुर्थ भाव में हो अथवा दो पाप ग्रहों के बीच शुक्र हो तो इन योगो में भी गर्भवती का मरण होता है।

चन्द्रमा से या लग्न से चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तो गर्भ नष्ट हो तो माता के साथ ही गर्भ नष्ट होता है।

चतुर्थ भाव में मङ्गल १२ में रवि और चन्द्रमा क्षीण हो अथवा मङ्गल लग्न में हो और १२, २ में पाप ग्रह हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तब भी मरण होता है।

सप्तम में रवि लग्न में मङ्गल हो तो शस्त्र से सगर्भ स्त्री का मरण होता है।

गर्भ वृद्धि योग

गर्भाधानकालिक लग्न पर बलवान बुध, गुरु, शुक्र और रवि की दृष्टि हो तो गर्भ पुष्ट होता है अर्थात् गर्भ का पतन नहीं होता।

एवं प्रत्येक मास में मासेश्वर के बल के अनुसार मासेश्वर के स्वभाव और गुणों से युक्त होता है।

तीसरे मास में गर्भिणी स्त्री को दोहद (अनेक प्रकार के वस्तु खाने पीने की इच्छा) होती है। वह मास स्वामी (मासेश) के स्वभाव और लग्न, योगादि से भी समझना चाहिए।

गर्भ समय से प्रसव मास का ज्ञान

यदि आधान काल में चरराशि में सूर्य हो तो १० मास में, स्थिर राशि में हो तो ११वें मास में और द्विस्वभाव में हो तो १२वें मास में प्रसव होता है।

मतान्तर से कहते हैं कि चर राशि का चन्द्र हो तो १०वें में; स्थिर का हो तो ११वें में; द्विस्वभाव का हो तो १२वें मास में प्रसव होता है।

सर्वसम्मत से जन्म राशि ज्ञान

गर्भाधान काल में जिस राशि के द्वादशांश में चन्द्रमा हो उससे उतने संख्यक राशि में चन्द्रमा के जाने पर संभव (१० आदि) मास में प्रसव कहना चाहिए।

प्रसव काल का ज्ञान

गर्भाधान कालिक दिनसंज्ञक या रात्रिसंज्ञक लग्न हो तो राशि के जितने अंश उदित हुए हों उतना ही दिन या रात्रि व्यतीत होने पर प्रसव कहना चाहिए।

जैसे ३० अंश में दिनमान, या रात्रिमान हो, तो लग्न के गतांश में क्या? इस प्रकार त्रैराशिक से दिन या रात्रि गत इष्टघटी का ज्ञान होता है। बृहद् पाराशरादि होराशास्त्र के प्रतिष्ठित ग्रन्थों में भी इस विषय को प्रतिपादित किया गया है।

प्रसवकालिक लग्नादि का ज्ञान

पूर्व कथन से दिन रात्रि ज्ञान करके जन्म के समय में होरादि षड्वर्ग में स्थित लग्न का ज्ञान युक्ति से कहना चाहिये।

इस प्रकार उदय (लग्न) समुदाय (षड्वर्गादि) से दिन (वासर) पक्ष मुहूर्त मास संज्ञक राशि में प्रसव होता है।

इस प्रकार आधान समय में प्रथम प्रसव समय का निश्चय करके ज्योतिषी को जातकोक्त फलादेश का विचार करना चाहिए।

नेत्रहीन योग

यदि आधान में सिंह लग्न रवि और चन्द्रमा हो उन पर शनि मङ्गल की दृष्टि हो तो गर्भस्थ शिशु जन्म काल से ही अन्धा होता है।

उन्हीं (रवि, चन्द्र) को यदि मङ्गल और बुध देखते हों तो नेत्र में फूला होता है।

मूक योग

पाप ग्रह राशि सन्धि में हो, वृषस्थ (उच्चस्थ) चन्द्रमा पर मङ्गल शनि और रवि की दृष्टि हो तो अधिक दिन के बाद बोलने की शक्ति होती है। अर्थात् वह बालक कुछ दिनों के बाद बोलता है।

जड एवं सदन्त योग

यदि समस्त पाप ग्रह राशि सन्धि में हो व चन्द्रमा शुभ ग्रहों की दृष्टि से हीन हो तो जातक जड़ (मूर्ख) होता है।

यदि शनि, मङ्गल बुध के नवमांश में हो तो गर्भस्थ बालक सदन्त (दाँत के सहित) जन्म लेता है।

अधिकाङ्ग योग

लग्न से ९/५ में बुध हो और शेष सब ग्रह निर्बल हो तो २ मुख, ४ हाथ, ४ पैर वाला जातक होता है।

वामन एवं कुब्ज योग

मकर के अन्तिम नवांश में लग्न हो और उस पर रवि, चन्द्र, शनि की दृष्टि हो तो गर्भस्थ बालक वामन (बौना) होता है।

यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा हो उसे मङ्गल और शनि देखते हो तो गर्भस्थ बालक कुबड़ा होता है।

पङ्गु योग

मीन लग्न हो उस पर मङ्गल, शनि और चन्द्र की दृष्टि हो तो गर्भस्थ बालक पङ्गु होता है। ऊपर कहे हुए योगों में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यत्न करते रहने से दोष की निवृत्ति समझना चाहिये।

बिना शिर, पैर, हाथ वे जन्म योग

आधान काल में पंचम भावस्थ द्रेष्काण मंगल से युत हो और शनि, चन्द्र, सूर्य से दृष्ट हो तो गर्भ में स्थित बालक को हाथ से रहित कहना चाहिए।

यदि नवम भावस्थ द्रेष्काण मंगल से युत या उक्त ग्रहों से दृष्ट हो तो बिना पैर का अर्थात् पङ्गु का जन्म होगा।

यदि लग्नस्थ द्रेष्काण मंगल से युत या उक्त ग्रहों से दृष्ट हो तो बिना मस्तक का गर्भस्थ बालक को कहना चाहिए।

इस आधानाध्याय में जो योग कहे गये हैं उनमें जो युक्त हो वे जन्म लग्न से भी समझना चाहिये तथा जो आधान में नहीं कहे गये हैं तथा आगे जन्म या सूतिका में कहे गये हैं उनको भी आधान लग्न से विचार करना उचित ही जानना चाहिए।

लग्न काल के निर्णयार्थ आधान काल कहने के पश्चात् जन्म या सूतिका का प्रतिपादन करते हैं—

लग्नादि से जन्मयोग का ज्ञान

जन्मकाल के समय लग्न में शीर्षोदय राशि हो तो मस्तक से, पृष्ठोदय राशि हो तो पैर और उभयोदय राशि हो तो हाथ से प्रसव (जन्म) होता है।

लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सुख पूर्वक, अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कष्ट के साथ जन्म समझना चाहिए।

प्रसव स्थान का विचार

लग्न में जो नवमांश हो उस राशि के सदृश स्थान में प्रसव होता है अर्थात् बालक का जन्म होता है।

यदि द्विस्वभाव नवांश हो तो मार्ग में तथा स्थिरनवांश हो तो अपने स्थान में अर्थात् सिद्ध हुआ कि चर नवांश हो तो परदेश में जन्म समझना चाहिए।

लग्न में अपना नवांश हो तो अपने घर में अन्य नवांश हो तो अन्यत्र जन्म समझना चाहिए। पितृसंज्ञक आदि ग्रह के बल से वन में जन्म होता है।

अर्थात् पितृ संज्ञक सूर्य शनि ग्रह बली हो तो पिता के घर में, मातृसंज्ञक ग्रह बली हो तो माता के घर में जन्म कहना चाहिए।

सभी शुभ ग्रह नीच राशि में हो तो प्राकार अर्थात् घर के बाहर चहारदीवारी, वृक्ष के नीचे नदी तट में जन्म कहना चाहिये।

यदि सभी ग्रह एक स्थान में होकर यदि लग्न और चन्द्रमा को न देखे तो महावन (निर्जन स्थान) में जन्म होता है।

जल चर राशि लग्न हो उसको जलचर राशिस्थ पूर्ण चन्द्र देखता हो और चतुर्थ लग्न या दशमभाव में हो तो जल में प्रसव होता है!

लग्न में शुभग्रह हो और पूर्ण चन्द्र स्वराशि या जलचर राशि में हो अथवा शुभ ग्रह चतुर्थ भाव में हो या लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो तो जल मे प्रसव समझना चाहिए।

वृश्चिक या कर्क लग्न में शनि हो उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो अवट (गड्ढे) में प्रसव होता है।

ऐसा यवन और मणित्थ आचार्यों की सम्मति है।

जलचर राशि लग्नगत शनि को बुध देखता हो तो क्रीडास्थान में, रवि देखता हो तो देवालय में, चन्द्रमा देखता हो तो ऊपर भूमि में प्रसव होता है।

वन चर राशि लग्न हो तो पर्वत, वन, दुर्ग, स्थान में जन्म कहना चाहिए।

एवं द्विपद राशि लग्न में शनि को मङ्गल देखता हो तो शिल्पशाला में, रवि देखता हो तो गोशाला में, राजभवन या देवालय में जन्म हो।

और शुक्र चन्द्रमा देखते हों तो रम्यस्थान में और गुरु देखता हो तो अग्निहोत्र स्थान में जन्म होता है।

सूतिकागृह विचार

जन्मकाल में यदि कर्कराशि गत गुरु दशम भाव में हो तो २, ३ या ४ मंजिल के मकान में जन्म होता है।

शुभग्रह यदि शनि के नवांश में ४, १० वें भाव में हो तो असाल (वरामदा रहित) घर में प्रसव कहना चाहिए।

सूतिका गृह में शयन स्थान ज्ञान

यदि जातक के जन्मकाल में मेष, वृष लग्न हो तो घर के पूर्वभाग में, मिथुन लग्न में अग्निकोण में कर्क, सिंह, लग्न में दक्षिण में, कन्या लग्न में नैर्ऋत्य कोण

में, तुला वृश्चिक में, पश्चिम और धनु में वायव्य कोण में, मकर कुम्भ में उत्तर, मीन में ईशानकोण में सूतिका का शयन स्थान होता है।

सूतिका गृह के स्वरूप ज्ञान

जन्म काल में यदि शुक्र बली हो तो नवीन और चित्रयुत गृह में, गुरु बली हो तो दृढ (मजबूत), मङ्गल बली हो तो जला हुआ, रवि बली हो तो अधिक कष्ट से युक्त, चन्द्र बलवान् हो तो नवीन गृह में और शनि बलवान् हो तो प्राचीन सूतिका गृह में जन्म होता है।

सूतिका की शय्या का विचार

जिस प्रकार गृह में मेषादि राशि की स्थिति कही गई है उसी प्रकार शय्या (खटिया) में भी समझना।

जिस स्थान में जो ग्रह हो उस स्थान में उस ग्रह के वस्त्र से निर्मित शय्या पर गलीचा, उल्लोंच आदि आस्तरण कहना चाहिए।

सिरहाने से पौथान पर्यन्त न्यारा करना तथा ग्रह के सदृशचिन्ह का विचार करना। जहाँ द्विस्वभाव राशि हो वहाँ खटिया में न तत्व (नीचे को दबा हुआ) समझना चाहिए।

खटिये के लग्न से ३, ६, ९, १२ भावों को चारों पाँव और शेष राशि शय्या के अन्य अङ्ग समझना चाहिए।

सूतिका का भूमि शयन एवं उपसूतिका ज्ञान

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा अपने नीच में होकर चतुर्थ या लग्न में हो तो भूमि में सूतिका का निवास समझना चाहिए।

चन्द्रमा से लग्न तक जितने ग्रह हो उतनी उपसूतिका सहायक संख्या होती है।

लग्न से आगे सप्तम भाव पर्यन्त जितने ग्रह हो उतनी उप-सूतिका भीतर और सप्तम से आगे लग्न पर्यन्त ग्रह हो उतनी बाहर में उपसूतिकाएँ जानना चाहिए।

उनमें भी जितने शुभ ग्रह हो उतनी सुलक्षणा, सुरूपा, सौभाग्यवती भूषणयुक्ता स्त्री, तथा जितने पाप ग्रह हो उतनी कुरुपा, दुर्भगा और मलिना स्त्री समझना चाहिए।

मिश्र ग्रह बलवान् हो तो मध्यम रूप गुण वाली समझना चाहिए।

इस प्रकार का विचार ग्रह बल के अनुसार करना चाहिए।

दीपक की वर्त्ति व तेल का ज्ञान

पूर्वोक्त विधि से सूतिका गृह में १२ विभागस्थ राशियों में जिस भाग में सूर्य हो उस स्थान पर दीप समझना चाहिए।

यदि चर राशि हो तो दीप को चल तथा स्थिर राशि हो तो स्थिर जानना चाहिए।

लग्न के जितने अंश उदित हो चुके हों उतने ही भाग वत्ती का भी जला हुआ कहना चाहिए।

चन्द्रमा जिस प्रकार पूर्ण या क्षीण हो उसी प्रकार दीप तेल भी पूर्ण या न्यून जानना चाहिए।

अधिक दीप का ज्ञान

यदि जन्म काल में बलवान् सूर्य भौम से दृष्ट हो तो प्रसव काल में अधिक दीप समझना चाहिए।

तथा अन्य ग्रह निर्बल हों तो प्रसव में तृण जलाकर प्रकाश होता है।

प्रसव के समय अन्धकार विचार

यदि जन्म काल में चन्द्रमा शनि के नवांश में या जलचर राशि के नवांश में हो या शनि से युत् चतुर्थ भाव में अथवा शनि से दृष्ट चन्द्र हो तो अन्धकार में जन्म होता है। इसमें सन्देह नहीं।

पिता की अनुपस्थिति में जन्म योग

यदि चन्द्रमा लग्न को नहीं देखता हो तो पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

यदि १० वें भाव से आगे होकर सूर्य चर राशि में हो तो परदेशस्थ पिता के परोक्ष में जन्म समझना चाहिए।

दिन में रवि और रात्रि में शनि यदि मङ्गल से दृष्ट हो तो पिता के परोक्ष में जन्म होता है।

यदि उक्त रवि या शनिश्चर राशि में मङ्गल युत दृष्ट हो तो पिता को परदेश में मृत समझना चाहिये।

सूर्य से ५, ९, ७ भाव पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो पिता को जेल में समझना चाहिए।

यहाँ भी चर राशि हो तो परदेश में, स्थिर हो तो स्वदेश में, द्विस्वभाव हो तो मार्ग में समझना चाहिए।

अन्य ग्रन्थों में जैसे लघु जातक एवं लग्न जातक में भी ऐसा ही कहा गया है।

अर्थात् लग्न को चन्द्रमा नहीं देखता हो तो पिता के परोक्ष में बालक का जन्म कहना चाहिए।

और सूर्य मध्यभ्रष्ट अर्थात् नवें आठवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान में चरराशि (मेष कर्क तुला और मकर) का हो तो उत्पन्न शिशु का पिता विदेश में समझना चाहिए।

कष्ट में प्रसव एवं माता के सुख का विचार

जन्मकाल के समय यदि ७, ९, ५ भावों में पाप ग्रह हो तो कष्ट युक्त प्रसव और यदि १०, ४ भाव में शुभ ग्रह हों तो सुख से प्रसव और अधिक सम्पत्ति प्राप्त होती है।

परजात जन्म योग

यदि लग्न और चन्द्रमा को गुरु नहीं देखता हो अथवा चन्द्र सहित सूर्य को या पाप युक्त रवि और चन्द्रमा को गुरु नहीं देखता हो तो परजात अर्थात् दूसरे से उत्पन्न नवजात को समझना चाहिए।

यदि गुरु, चन्द्र, रवि तीनों नीच राशि में हो तथा शनि लग्न में हो और लग्न, चन्द्रमा, शुक्र, इन पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हों तो भी परजात (अन्य से उत्पन्न) नवजात को समझना चाहिए।

प्रसव समय में मातृकष्ट का विचार

जन्मकाल के समय चन्द्र सहित पापग्रह चौथे, दशवें भाव में हो तो जातक की माता को क्लेश होता है। चन्द्रमा से सप्तम स्थान में पापग्रहों पर मङ्गल की दृष्टि हो तो मरण होता है।

चन्द्रमा से दशम स्थान में पापयुत रवि हो तो माता का मरण होता है तथा शुक्र से ५वें और ९वें स्थान में शनि सहित रवि हो उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो भी माता का मरण समझना चाहिए।

रात्रि में जन्म हो चन्द्रमा से ५/९ स्थान में शनि यदि पापग्रह से दृष्ट हो अथवा दिन में जन्म हो शुक्र से ५/९ स्थान में मङ्गल, पाप से दृष्ट हो तो माता का मरण होता है।

सर्पवेष्टित जन्म योग

लग्न में मङ्गल या शनि का द्रेष्काण हो उसमें पाप ग्रह व चन्द्रमा हो और २, ११ में शुभ ग्रह हो तो सर्प से वेष्टित बालक का जन्म होता है।

माता पिता का सुख योग

यदि जन्म के समय पञ्चम भाव में परिपूर्ण चन्द्रमा गुरु या शुक्र से युत हो और बुध से दृष्ट हो तो माता के लिए अत्यन्त शुभफल देता है।

इसी प्रकार सूर्य अपनी राशि में या स्वोच्च राशि में शुक्र गुरु से युत पंचम भाव में बुध से दृष्ट हो तो पिता को सुख देने वाला होता है।

आयु ज्ञान के अभाव में कुण्डली फल निष्फल होता है। इसलिए आयु ज्ञान के लिए सर्वप्रथम बालारिष्ट को कहते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहों के बल का ज्ञान

यदि जातक का जन्म शुक्लपक्ष और दिन में हो तो विषम राशि में पुरुष ग्रह बलवान् होते हैं। इसी प्रकार कृष्णपक्ष रात्रि में जन्म होने पर सम राशि में स्त्री ग्रह बली होते हैं।

तीन प्रकार के अरिष्ट

नियत, अनियत और योगज तीन प्रकार के अरिष्ट शास्त्रकारों ने बतलाया है, उनमें सर्वप्रथम योगज अरिष्ट को कहा जा रहा है। शेष दोनों (नियत और अनियत) को आगे कहेंगे।

तृतीय वर्ष में अरिष्ट योग

जन्मकालावधि में यदि मंगल की राशि (मेष वृश्चिक) में अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक की मृत्यु तृतीय वर्ष में होती है।

द्वितीय वर्ष में अरिष्ट योग

शनि यदि वक्री होकर मङ्गल की राशि में स्थित हो तथा चन्द्र ८, ६ या केन्द्र में स्थित हो उस पर बलवान मङ्गल की दृष्टि हो तो उत्पन्न जातक मात्र दो वर्ष तक जीवित रहता है।

नवम वर्ष के बाद अरिष्ट योग

यदि जन्म समय में सूर्य चन्द्रमा के साथ शनि हो तो नवम वर्ष के अनन्तर जातक की मृत्यु होती है। यह वाक्य ब्रह्मशौण्ड का है।

एक मास में अरिष्ट योग

यदि जन्म काल में मङ्गल, रवि, शनि मङ्गल की राशि अर्थात् १, ८ में हो तो जातक यमराज से रक्षित होने पर भी १ मास में अवश्य मर जाता है।

एक वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्मकाल में शुक्र की राशि २, ७ में अष्टमस्थ अर्थात् अष्टम भाव में २,७ राशियाँ हों और एक भी पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक १ वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। चाहे उसने अमृत का पान भी किया हो तो भी मृत्यु को प्राप्त होता है।

छठवें वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म के काल में शुक्र, सिंह या कर्क राशि में स्थित हो कर बारहवें, षष्ठ या अष्टम भाव में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो छठे वर्ष में मरण होता है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

चौथे वर्ष में अरिष्ट योग

यदि लग्न से ६, ८, १२ भाव में कर्क राशिस्थ बुध, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो ४ वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाती है।

दो मास में अरिष्ट योग

केतु का उदय जिस नक्षत्र में हुआ हो, यदि उसी नक्षत्र में किसी का जन्म हो तो जातक २ माह में मरण होता है।

शीघ्र अरिष्ट योग

यदि मङ्गल की राशि १, ८ या शनि की राशि १०, ११ में दशमस्थ सूर्य बली पापग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मरण होता है, इसमें संदेह नहीं।

जन्माधिपति के द्वारा शारीरिक पीड़ा का ज्ञान

यदि राशीश पापग्रह हो, या पापग्रह से दृष्ट या युत हो तो शरीर कष्ट देता है। यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो अधिक पीड़ा नहीं देता।

सात वर्ष में अरिष्ट का ज्ञान

यदि लग्न में निगड, सर्प, पक्षी, पाशधर संज्ञक द्रेष्काण पापग्रह से युत हो तो जातक का निधन हो जात है। यदि द्रेष्काणेश की दृष्टि न हो तो सप्तम वर्ष में जातक का निधन हो जाता है।

दश या सोलह वर्ष में अरिष्ट का विचार

यदि जन्म काल में राहु १, ४, ७, १० भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो कुछ आचार्यों के मत से १० वर्ष में और कुछ आचार्यों के मत से १६ वर्ष में मरण होता है।

शीघ्र मरण विचार

यदि सूर्योदय काल में जन्म हो और पापग्रह ५, ९, १, ४, ७, १० में हो तथा शुभग्रह ६, ८, १२ भाव में हो तो जातक का शीघ्र मरण होता है।

स्वल्पकाल में मरण योग

यदि नवांश पति राशिपति, लग्नपति ये तीनों अस्त हों तो जातक की अल्पकाल में मृत्यु हो जाता है।

एक, चार, आठ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि चन्द्रमा लग्न से छठे या आठवें भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो शीघ्र ही १ वर्ष के मध्य में मृत्यु हो जाता है।

यदि शुभग्रह से दृष्ट चन्द्र हो तो अष्टम वर्ष में निधन हो जाता है।

यदि शुभ पाप दोनों से दृष्ट हो तो ४ वर्ष में मरण होता है। ग्रहों की अल्पाधिक दृष्टिवशात् अनुपात द्वारा मरण काल का निश्चय करना चाहिए।

एक, छः, आठ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि शुभ ग्रह षष्टाष्टम भाव में वक्रगति वाले पाप ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो १ मास में निधन होता है।

यदि १२, २, ८, ६वें भाव में पाप ग्रह शुभ ग्रह से न देखे जाते हों तो ६ या ८ मास में मरण हो जाता है।

नवम वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म काल में चन्द्रमा, मङ्गल या सूर्य से युत या शुभग्रह से न देखे जाते हो या मिथुन अथवा कन्या राशि में स्थित हो तो जातक का नवम वर्ष में मरण होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

चतुर्थ मास में अरिष्ट का विचार

यदि लग्नेश अष्टम में समस्त पापग्रहों से दृष्ट हो तो ४ मास में निधन करता है। ऐसा मुनिजनों का कथन है।

माता के साथ अरिष्ट का विचार

यदि जन्म काल के समय चन्द्रग्रहण हो और चन्द्रमा पापग्रह के साथ लग्न में या मङ्गल, अष्टम भवन में हो तो माता के सहित जातक का मरण होता है।

यदि सूर्य ग्रहण काल में जन्म हो या पापग्रह से युत सूर्य लग्न में हो और अष्टम भवन में भौम हो तो भी माता के सहित जातक का निधन शस्त्र से अर्थात् आपरेशनादि से होता है।

शीघ्र निधन अरिष्ट योग

यदि क्षीण चन्द्रमा जातक के लग्न में विराजमान हो, एवं पापग्रह १, ४, ७, ८, १० में शुभ ग्रह से न देखे जाते हों तो शीघ्र ही मृत्यु होती है। ऐसा सत्याचार्य का मत है।

शीघ्र अरिष्ट योग

यदि जन्मकाल में सप्तम भाव में सूर्य या लग्न में शनि और मङ्गल हो तो शीघ्र ही निधन होता है।

अथवा अष्टम भाव में शनि या मङ्गल हो और लग्न में सूर्य हो तो शीघ्र मरण या चन्द्र मङ्गल या शनि से युत एवं पापग्रह दृष्ट हो तो शीघ्र निधन होता है।

यदि लग्न, अष्टम, सप्तम भवन में कोई पाप ग्रह हो तथा क्षीण चन्द्रमा द्वादशस्थ हो तो और केन्द्र में कोई भी शुभ ग्रह न हो तो भी शीघ्र ही मृत्यु होती है।

शीघ्र अरिष्ट का ज्ञान

यदि जन्म समय में १, १२, ९, ८ में चन्द्र, सूर्य, शनि, मङ्गल, क्रमेण युत हो या गुरु से अदृष्ट हो अर्थात् गुरु न देखता हो तो जातक का शीघ्र मरण होता है।

यदि लग्न में चन्द्रमा या सूर्य हो और बलवान् पापग्रह पञ्चम, नवम, अष्टम भवन में शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति से रहित हो तो जातक का शीघ्र मरण होता है।

नवम वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म समय में शुक्र, सूर्य, शनि से युत हो तथा गुरु से दृष्ट हो तो जातक का नवें वर्ष में मरण होता है।

मातृ अरिष्ट योग

यदि जातक की पत्री में किसी भी भाव में चन्द्रमा, मङ्गल, सूर्य, शनि इन तीनों से दृष्ट हो तो माता का शीघ्र निधन होता है।

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो माता का निधन नहीं होता है।

पितृ अरिष्ट योग

जिस जातक का दिन में जन्म हो और सूर्य, मङ्गल, शनि ग्रह से देखे जाते हों, अथवा पाप ग्रह युत हो तो निश्चय पिता का मरण होता है।

यदि जन्म के समय में सूर्य, मङ्गल और शनि युत हो तथा बुध, गुरु, शुक्र से युत न हो तो जातक के पिता या पितामह का मरण होता है।

पिता के अरिष्ट का योग

यदि जातक का जन्म दिन में हो और सूर्य दो पापग्रहों के बीच में हो, अथवा सूर्य पापग्रह से युक्त हो तो अवश्य पिता का मरण होता है।

यदि जन्म काल में सूर्य की राशि से अष्टम राशि में शनि और मङ्गल शुभग्रह से न देखे जाते हो तो पिता का शीघ्र मरण होता है।

यदि जन्मपत्रिका में चरराशि में सूर्य, पापग्रह से युत हो तो अल्पायु में पिता की मृत्यु विष, शस्त्र या जल से (पानी में डूबने से) होती है।

माता के साथ निधन योग

यदि चन्द्रमा से अष्टम राशि में या नवम में या सप्तम में समस्त पाप ग्रह हो या एक भी हो तो माता सहित जातक का मरण होता है।

जन्म के समय पिता का स्थान

यदि जातक का जन्म दिन में हो और चरराशि में सूर्य, मङ्गल से दृष्ट हो तो जन्म के समय पिता को परदेश कहना चाहिए।

यदि जातक का जन्म रात्रि में हो और चरराशिगत शनि को सूर्य देखता हो तो इस योग में भी जातक का पिता परदेश में रहता है ऐसा फलादेश करना चाहिए।

अर्थात् जन्म लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो पिता का परोक्ष में बालक का जन्म कहना चाहिए और सूर्य मध्यमभ्रष्ट अर्थात् नवें ग्यारहवें और बारहवें स्थान में चरराशि का हो तो उत्पन्न जातक का पिता विदेश में समझना चाहिए।

पिता का निधन योग

यदि जातक का जन्म रात्रि में हो और चरराशि में शनि, मङ्गल से युत हो तो पिता का मरण परदेश में होता है। इसमें संदेह नहीं।

यदि जन्माङ्ग में जिस किसी भी राशि में सूर्य, शनि व मङ्गल से युत हो तो जन्म से पूर्व ही पिता का निधन कहना चाहिए।

माता के साथ निधन योग

यदि जन्मकाल में पापग्रह प्रथम, अष्टम, सप्तम, षष्ठ, द्वादश भवन में हो तो नि:संदेह माता के साथ जातक का निधन होता है।

माता एवं जातक में एक के निधन का ज्ञान

यदि जन्म पत्रिका में ६, ८, भवन में सब पापग्रह हो तो माता जीवित रहती है और बालक का निधन हो जाता है।

यदि लग्न अष्टम, सप्तम में पापग्रह हो तो बालक जीवित रहता है और उसकी माता का निधन हो जाता है।

नेत्र हानि योग

मङ्गल या शनि १२वें भाव में हों तो नेत्र नाशक होते हैं, शनि दक्षिण नेत्र को और मङ्गल वामनेत्र को नष्ट करता है।

रवि और चन्द्रमा दोनों साथ ही १२वें भाव में बैठे हों अथवा ६, ८ में पापग्रह हो तो जातक नेत्रहीन होता है।

अथवा इन दोनों में एक भी द्वादश भाव में हो तो नेत्र नाशक होता है, उनमें रवि दक्षिण नेत्र और चन्द्रमा वाम नेत्र को नष्ट करता है।

यदि राहु लग्न में हो और सप्तम स्थान में सूर्य हो तो जातक नेत्रहीन होता है।

पुनः नेत्र हानि योग

यदि द्वितीय भाव में चन्द्र या बारहवें में सूर्य हो तथा अष्टम या षष्ठ भाव में पापग्रह हों तो जातक नेत्रहीन होता है।

यदि षष्ठ भाव में चन्द्र या अष्टम भाव में सूर्य, शनि द्वादश में या मङ्गल द्वितीय भवन में हो तो इस योग में भी जातक नेत्रहीन होता है।

यदि चन्द्रमा मङ्गल या शनि से युत होकर षष्ठ भाव मेंया अष्टम भाव में हों तो पित्त या कफ के विकार से जातक का नेत्र नष्ट हो जाता है।

यदि अष्टम में स्थिति हो तो दक्षिण नेत्र षष्ठ में स्थित चन्द्रमा हो तो वाम नेत्र नष्ट होता है।

यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो जन्म समय में नहीं; कालान्तर में नेत्र हीनता होती है।

शनि के साथ चन्द्रमा यदि ८, १२ में पापग्रह से दृष्ट हो तो वात विकार से नेत्र नष्ट होता है।

उनमें अष्टमस्थ दाहिने और द्वादशस्थ वाम नेत्र का नाश करता है।

यदि शुभग्रहों से दृष्ट हो तो तत्काल नहीं कालान्तर में नेत्र नष्ट होता है।

एवं चन्द्रमा यदि शनि, सूर्य से युत हो तो नाना प्रकार के रोग से नेत्र में विकार उत्पन्न करता है।

नेत्रहीन योग का वर्णन जातकालङ्कार तथा जातक पारिजात में भी दिया गया है। छात्रों को ध्यान से पढ़कर चिन्तन करना चाहिए।

कर्ण रोग का ज्ञान

जन्मकुण्डली में पापाक्रान्त चन्द्रमा यदि ११, ३-१ में हो तो जातक को कर्ण रोग होता है। यदि पापग्रह की दृष्टि भी हो तो जन्म के समय में ही कर्ण रोग होता है।

यदि नवम और पञ्चम भाव दोनों में पापग्रह हों तो और पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो जन्म समय में ही कर्ण रोग होता है।

नवम में पापग्रह हो तो दाहिने कान में और पञ्चम में हो तो वाम कर्ण में रोग होता है।

यदि ९, ५ में शुभ ग्रह की राशि या शुभ ग्रह से दृष्ट भी हो तो शुभ फल कहना चाहिए।

बृहज्जातक में नवम में वाम कर्ण में और पञ्चम में दक्षिण कर्ण में रोग माना गया है।

अत: 'सुतभे दक्षिणकर्णं, वामं नवमे ग्रहो हन्यात' इस प्रकार निर्विरोध पाठ होना उचित है। इसका अर्थ है कि पञ्चम में ग्रह हो तो दाहिने और नवम में हो तो वाम कान में रोगादि कहना चाहिए।

चन्द्र राशि से कर्ण रोग का ज्ञान

यदि जन्म के अतिरिक्त जो व्यक्ति जिस राशि के चन्द्रमा में रोग प्राप्त करता है उसे ही उस रोग का लग्न समझ कर रोग का विचार करना चाहिए और जन्म कालिक चन्द्रमा से भी विचार करना चाहिए।

इस प्रकार योग कारक ग्रहों से दक्षिण वाम भाग में शुभग्रह चिन्ह करते हैं। यदि वे पापग्रह से दृष्ट हो तो शरीर के उस अङ्ग को विरुद्ध करते हैं।

इन तीनों अर्थात् जन्म, लग्न, जन्मराशि रोगोत्पति काल को ज्ञान कर के शुभाशुभ फल कहना चाहिए।

तीन दिन जीवन योग

जिस जातक की पत्री में मीन राशि के सूर्य और चन्द्रमा तृतीय भाव में हो

तो जन्म से ही व्याधि प्राप्त करके ३ दिन में उसका जीवन सामप्त हो जाता है अर्थात् ३ दिन में उस जातक की मृत्यु हो जाती है।

एक दिन का जीवन योग

यदि चन्द्रमा दशम स्थान में हो और चन्द्रमा से तृतीय नक्षत्र में सूर्य पापग्रहों से युत हो या अकेला ही हो तो जातक का जीवन १ दिन का होता है अर्थात् १ दिन के बाद मृत्यु हो जाती है।

सात दिन का जीवन योग

जिस जातक के चन्द्रमा से सप्तम भाव में मङ्गल, सूर्य दोनों हो तो वह जातक सात दिन तक जीवित रहता है।

रोगारम्भ से अरिष्ट का विचार

यदि जन्म के समय ४, ८ भाव में पापग्रह हों और वे पापग्रह १२, २ में हो तो उस समय में यदि जातक रोगी होता है तो वह १० दिन जीवित रहता है।

यदि रोगारम्भ के समय पञ्चम सूर्य और नवम चन्द्रमा ही हो तो १२ दिन तक जीवित रहता है।

पुनः रोगारम्भ से अरिष्ट

रोगारम्भ काल में यदि त्रिकोण के चन्द्रमा हो अर्थात् ९, ५ में चन्द्र हो, और ४, ८ में सूर्य विद्यमान हो तो वह जातक दुर्व्याधि से युक्त होकर ३ दिन में निधन को प्राप्त हो जाता है।

यदि लग्न से चतुर्थ भवन में चन्द्रमा हो तथा षष्ठ भाव में सूर्य हो तो वह जातक १८ दिन रोग से युक्त होकर निधन को प्राप्त करता है।

यदि चन्द्रमा से ९, ५ में सूर्य हो तो वह जातक रोगारम्भ से २० दिन जीवित रहता है। अर्थात् २० दिन के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है।

यदि रोग कालिक लग्न से अष्टम भाव में सूर्य, शनि और मङ्गल से दृष्ट हो तो उस व्यक्ति का जीवन न होकर मरण होता है।

पुनः जन्माङ्ग से अरिष्ट योग

यदि १, ४, ७, १० में मङ्गल हो, और गुरु केन्द्र में न हो तो मरे हुए बालक का जन्म होता है। यदि जन्म काल सूर्य लग्न में हो तथा गुरु केन्द्र से अन्य स्थान में हो तो जन्म के साथ मरण होता है।

अथवा अष्टम में कोई पापग्रह हो और गुरु केन्द्र से भिन्न स्थान में हो तो भी जन्म के साथ ही मरण होता है।

यदि लग्न या केन्द्र में चन्द्रमा हो और अष्टम में कोई पापग्रह हो तो जन्म के साथ मरण होता है।

यदि जन्म कालीन लग्नस्थ द्रेष्काण से सप्तम राशि में पापग्रह हो और लग्न में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मरण होता है।

एक मास वा सात दिन का आयु योग

जिस जातक के जन्म काल के समय अष्टम भाव में अधिक ग्रह हो तो उसकी आयु एक मास या सात दिन की होती है।

मृत जातक योग

यदि लग्न में शनि हो या अष्टम में भौम हो और गुरु केन्द्र (१/४/७/१०) से अन्य भाव में हो तो मृत बालक का जन्म होता है।

त्रिकोण गत पापग्रह से अरिष्ट योग

जन्म के समय लग्न में जो द्रेष्काण वर्तमान हो अर्थात् जिस राशि का द्रेष्काण हो यदि वह राशि त्रिकोण (५/९) में पाप ग्रह से युक्त हो तो आगे कथित ग्रह अपने समान फल देता है।

यथा—यदि शनि हो तो व्याधि, भौम हो तो मरण, सूर्य हो तो रोग से शरीर में कष्ट होकर मरण होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

यदि जन्म काल में भौम हो और शुक्र केन्द्र में हो तो पुन: भौम लग्नगत राशि में आता है। तब बालक (जातक) का मरण होता है।

शीघ्र निधन योग

यदि जन्म समय गुरु त्रिकोण में हो और लग्न स्वामी लग्न में हो तथा गुरु या जन्म लग्न से केन्द्र में भौम हो तो शीघ्र मरण होता है।

१०८ वर्ष की आयु का योग

यदि जन्म के समय अष्टमभाव या लग्न में कोई भी पापग्रह न हो तथा किसी भी केन्द्र राशि (१/४/७/१०) में गुरु हो तो जातक १०८ वर्ष जीता है।

यदि केन्द्र त्रिकोण अथवा अष्टम भाव पापग्रह से रहित हो तथा गुरु, शुक्र केन्द्र में हो तो जातक १०८ वर्ष जीता है।

१२० वर्ष की आयु का योग

यदि लग्न में शुक्र हो और किसी भी केन्द्र में गुरु हो तथा अष्टम भाव में पापग्रह न हों तो १२० वर्ष जातक जीता है।

यदि कर्क लग्न में गुरु शुक्र हो या गुरु चन्द्रमा से युत कर्क लग्न में हो तथा अष्टम में पापग्रह न हों तो भी उपयुक्त फल होता है।

देवतुल्य आयु योग

यदि केन्द्र, त्रिकोण व अष्टम भाव में पापग्रह न हो तो जातक की देवतुल्य आयु नि:संदेह कहनी चाहिये।

गतायु योग

यदि ८/७/१२/१/९/५ इन भावों में क्षीण चन्द्रमा बली पापग्रह से युत हो तथा शुभग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक की आयु समाप्त कहना चाहिये अर्थात् जीवन नहींहोता है।

अनुक्तकाल योगों में निधन समय का विचार

जिन योगो में मरण का समय नहीं लिखा है उनमें योग करने वाले ग्रहों में से जो बली ग्रह हो उसकी राशि में जब चन्द्रमा का संचार हो तब अरिष्ट कहना चाहिए।

अथवा चन्द्रमा पुनः अपनी राशि में या लग्न में आये और पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का मरण होता है। यह विचार एक वर्ष के भीतर होता है।

पाँचवें वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म के समय में सूर्य चन्द्र भौम, गुरु एक राशि में हो या भौम, गुरु, शनि, चन्द्र एक राशि में हो अथवा सूर्य शनि भौम चन्द्रमा एक राशि में हों तो पाँच वर्ष में जातक का मरण होता है।

ग्यारहवें वर्ष में अरिष्ट योग

यदि सूर्य से युत बुध (पाठान्तर से सूर्य चन्द्र से युत बुध) पापग्रहों से दृष्ट हो तो देवता से रक्षित भी जातक का ११वें वर्ष में मरण होता है।

सात वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जातक की कुण्डली में लग्न में सूर्य, शनि या भौम हो तथा सप्तम भाव में शुक्र की राशि (२/७) में क्षीण चन्द्रमा गुरु से अदृष्ट हो तो सात वर्ष में जातक का मरण कहना चाहिए।

चतुर्थ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि क्षीण चन्द्रमा केन्द्र में सूर्य से युत हो तथा भौम या शनि से दृष्ट अथवा युत हो तो ४ वर्ष में जातक का मरण होता है। यहाँ (इस योग में) गणित करने की आवश्यकता नहीं होती है।

तीन वर्ष में अरिष्ट योग

यदि कुण्डली में लग्नेश से अष्टम स्थान में अत्यन्त कृश (क्षीण) चन्द्रमा हो और समस्त पाप ग्रहों से दृष्ट और शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो तो तीन वर्ष में जातक का मरण होता है।

नौ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि पापग्रह लग्नेश होकर चन्द्रमा के नवमांश में चन्द्रराशि से बारहवें स्थान में हो व पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ९ वर्ष में मरण होता है।

पाँच वर्ष में अरिष्ट योग

यदि पाप ग्रह लग्नेश होकर चन्द्रमा के नवमांश में चन्द्र राशि से बारहवें स्थान में हो या पापग्रहों से दृष्ट राशि से बारहवें स्थान में हो अथवा पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ५ वर्ष में मरण होता है।

बारह वर्ष में अरिष्ट योग

यदि राहु सप्तम भाव में सूर्य व चन्द्रमा से दृष्ट हो एवं शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो १२ वर्ष में जातक का मरण होता है।

सात वर्ष में अरिष्ट योग

यदि कुम्भ वा सिंह वृश्चिक लग्न में राहु पापग्रहों से दृष्ट हो तो निश्चित ही ७ वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाती है।

दुर्मुहूर्त में अरिष्ट योग

यदि जातक के जन्म के समय से में प्रथम केतु का उदय हो, पीछे उल्कादि व वायु का निर्घात (आँधी) हो एवं रौद्र व सार्प मुहूर्त में जन्म हो तो भी जातक का मरण होता है।

अल्प समय में अरिष्ट योग

यदि क्षीण चन्द्रमा पापग्रहों से युत हो और राहु से दृष्ट हो तो बिना कारण अल्प समय में जातक का निधन होता है।

प्रत्येक राशि में चन्द्रकृत अरिष्ट योग

यदि जन्म कालीन चन्द्रमा कुम्भराशि के २१वें अंश में हो, या सिंह के ५वें अंश में हो या वृष के नवें अंश में हो तो मरण करता है।

वृश्चिक राशि के २३वें अंश में, मेष के अष्टम अंश में, कर्क राशि के २२वें अंश में चन्द्रमा हो तो निधन कारक होता है।

कन्या राशि के प्रथमांश में, धनु के १८ वें अंश में चन्द्रमा हो तो मरण कारक योग होता है।

कथित अंशों में निधन समय का विचार

जन्मकालीन समय में चन्द्रमा जिस राशि में जितने अंशों में मरण कारक कहा गया है उतने ही वर्षों में यमराज द्वारा रक्षित होने पर भी उस जातक का निधन होता है।

यहाँ जिन अरिष्टों का वर्णन किया गया है। उन अरिष्टों में सब का निधन नहीं होता, किन्तु अरिष्ट भङ्ग योग होने पर इन योगों में भी जातक का जीवन होता है।

प्रत्येक राशि में जिन जिन अंशो में चन्द्रकृत अरिष्ट कहा है; वहाँ अनुपात द्वारा समय का ज्ञान करके ही अरिष्ट कहना चाहिये ।

क्योंकि चन्द्रमा अंश कलादि से युत होता है। यथा—मेष के अष्टम अंश में चन्द्रमा अरिष्टकारक होता है।

कुण्डली में यदि ०/७/१०/२ चन्द्रमा है तो मेष के अष्टम अंश में होने से अष्टम वर्ष में अरिष्ट कारक हुआ।

अष्टम वर्ष में कब मरण होगा यह अनुपात द्वारा जानकर फलादेश कहना चाहिये।

गुरुवश निधन वर्ष का विचार

इस प्रकार प्रयत्न से जातक के राशि स्थान अथवा केन्द्र स्थान का विचार करके अरिष्ट कहना चाहिये।

गुरु जातक का जीवन है इसलिये बृहस्पति की स्थितिवश मृत्यु का विचार करना चाहिये।

यथा—यदि गुरु ३। ४। ५। ७। ९। १०। ११। १ भाव में हो तो क्रम से ५। १०। ४६ २१। १०० (अन्यत्र से ३०) ४०। ६०। ३० (अन्यत्र से ५०) वर्ष तक जातक का जीवन होता है।

राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान् योग

यदि जन्म समय में ३ या ४ ग्रह यदि हो तो अपने उच्च या मूल त्रिकोण में बली हो तो राजवंश में उत्पन्न मनुष्य अवश्य राजा होता है।

तथा ५ या ६ ग्रह यदि उच्च अथवा मूल त्रिकोण में हो तो दरिद्र कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

यदि २, या एक ग्रह उच्चस्थ हो तो धनवान होता है, परन्तु राजा नहीं होता है।

क्रूरकर्मा व सत्कृत राजयोग

यदि केवल पापग्रह उच्च में हो तो क्रूरकर्मा राजा होता है, ऐसा यवनाचार्य का मत है।

परञ्च पापग्रहों से राजयोग में उत्पन्न पुरुष राजा नहीं होता, किन्तु राजा द्वारा सत्कृत होता है, अर्थात् मन्त्री आदि होता है।

नीचकुल में उत्पन्न होने वाले राजयोग

जिन योगों में दरिद्र कुलोत्पन्न भी राजा होता है। उन राजयोगों को शास्त्रव के अनुसार यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

नीच कुलोत्पन्न राजयोगों के बत्तीस प्रकार

यदि जन्म कुण्डली में रवि, मंगल, शनि और गुरु इनमें चारों अथवा ३ यदि उच्च में हो और उन्हीं में से कोई एक लग्न में हो तो १६ प्रकार के योग होते हैं इनमें

नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है यदि भौमादि दो में से उच्च में हो और एक लग्न में हो तथा चन्द्रमा अपने गृह (कर्क) में हो तब भी सोलह प्रकार के राजयोग होते है, ऐसा प्राचीन महर्षियों ने कहा है।

अधमवंशोत्पन्न का राजयोग

लग्न अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तम नवमांश में हो तो तथा चन्द्र छोड़ कर अन्य ४, ५ या ६ ग्रहों से दृष्ट हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

अखिलभूमण्डल पालक योग

जन्म कुण्डली में जन्म समय मेष लग्न में चन्द्र, मङ्गल, गुरु हो तो जातक आसमुद्र पृथ्वी का पालक और समस्त शत्रु दल का संहारक राजा होता है।

विज्ञान कुशल राजयोग

एकादश भाव में चन्द्रमा, शुक्र, गुरु हो, मङ्गल मेष में शनि मकर में, कन्या में बुध यदि लग्न में हो तो निश्चय जातक विज्ञानी राजा होता है।

सद्भूपाल राजयोग

पूर्ण चन्द्रमा यदि कर्क लग्न में तथा बुध सप्तम भाव में छठे में सूर्य, चौथे में शुक्र, दसवें में गुरु और ३ में शनि मंगल हो तो राजा होता है।

यदि कुण्डली में परिपूर्ण चन्द्रमा कर्क लग्न में हो तथा सप्तम भाव में बुध, छठवे भाव में सूर्य, चौथे में शुक्र, दशम में गुरु, शनि व भौम तृतीय भाव में हो तो जातक चन्द्रमा की किरणों के समान शुभ्र चामर तथा राजलक्ष्मी से युक्त सज्जन (श्रेष्ठ) राजा होता है।

अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग

वृष लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो, कुम्भ में शनि, सिंह में सूर्य, और वृश्चिक में गुरु हो तो अधिक सम्पत्ति और वाहन युक्त राजा होता है।

इन्द्र तुल्य राजयोग

यदि कुण्डली में मकर लग्न में शनि, चन्द्रमा मीन राशि में तथा कन्या राशि को छोड़कर बुध के घर में अर्थात् मिथुन में भौम, कन्या में बुध, धनु राशि में गुरु हो तो जातक इन्द्र के समान महिमा पाने वाला होता है।

शत्रु से अजेय राजयोग

यदि कुण्डली में मकर लग्न में मंगल और सप्तम भाव में पूर्ण चन्द्रमा हो तो शत्रुओं से अजेय तथा वेदार्थ का ज्ञाता होता है।

शत्रु को पराजित कर्त्ता राजयोग

यदि अपने उच्च में स्थित सूर्य चन्द्रमा के साथ लग्न में हो तो जातक परमसुन्दर राजा होता है।

जिसके स्मरण से शत्रुओं की स्त्री की शोकाग्नि नयन जल से सिक्त होने पर भी सर्वदा हृदय में प्रज्वलित ही होती है। अर्थात् वह जातक शत्रु को जीतने वाला होता है।

स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग

जन्म कुण्डली में यदि पूर्ण बली बृहस्पति कर्क लग्न में हो, सूर्य दशम भाव (मेष) में हो और वृष में चन्द्र, बुध तथा शुक्र ग्रह हों तो वह जातक अपने भुजबल से पृथ्वीपति होता है।

अधिराजयोग

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा से षष्ठ, सप्तम, अष्ठम स्थानों में सब शुभ ग्रह उदित हो और उनपर पापग्रह की दृष्टि नहीं हो तो अधियोग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला आसमुद्र पृथ्वी के पालन करने वाला राजा होता है, सवंदा अपने पराक्रम से युक्त रोगहीन, शत्रु के भय से रहित, धीर, सौभाग्यवान् और सुखी होता है।

अपारकीर्तियुत राजयोग

जन्म पत्रिका में मेष लग्न में सूर्य, धनु में गुरु तुला में शनि और चन्द्र दोनों हो तो अति कीर्तिमान राजा होता है।

प्रसन्न राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि वर्गोत्तम नवांश में तीन या चार शुभग्रह केन्द्र में हों, यदि पापग्रह युत नहीं हो तथा अस्त या क्षीण नहीं हो तो राजा होता है।

इन्द्रतुल्य बलशाली राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि जन्मराशीश चन्द्रमा से उपचप (३, ६, १०, ११) में हो और शुभ राशि या शुभ नवांश में केन्द्रगत शुभग्रह हो तथा पापग्रह सब निर्बल हो तो परम प्रतापी इन्द्र के समान बलशाली राजा होता है।

अखण्ड भूपतियोग

पत्रिका में यदि चन्द्रमापरमोच्च में हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो और सब पापग्रह आपोक्लिम स्थान में हो तो जातक राजा होता है।

यशस्वी व समस्त शत्रुहन्ता राजयोग

जन्म पत्रिका में वृष लग्न में गुरु और चन्द्रमा हो, बली लग्नेश त्रिकोण में हो उस पर बलवान् रवि, शनि, मङ्गल की दृष्टि नहीं हो तो जातक शत्रु रहित यशस्वी राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

जन्म पत्रिका में जन्म समय में सब ग्रह अपनी राशि में मित्र के नवांश या मित्र की राशि में अपने नवांश में हो तो जातक सार्वभौम राजा होता है।

देव-दानवों से वन्दित राजा

पत्रिका में सब ग्रह अपने अपने परमोच्च में हो और बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक समस्त सुरासुर से वन्दित त्रिलोकाधिप होता है।

शत्रुरहित राजयोग

पत्रिका में जिस जातक उत्तर (चतुर्थ भाव) में वसिष्ठ (सप्तर्षि गत नक्षत्र), पूर्व (प्रथम लग्न) में बृहस्पति पश्चिम (सप्तम भाव) में शुक, दक्षिण (दशम भाव) में अगस्त्य नक्षत्र हो तो वह शत्रुहीन पृथ्वीपति होता है।

सार्वभौम राजयोग

पत्रिका में यदि पूर्ण चन्द्रमा पर सब ग्रहों की दृष्टि हो तो वह जातक दीर्घजीवी होता है। इस योग में केमद्रुम या अन्य अशुभ फल न होकर जातक दीर्घजीवी राजा होता है।

सगरादि तुल्य राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि निर्मल किरण युत सबल होकर अपने नवांशगत ६ ग्रह उच्च में हो तो जातक सगर, वेन, ययाति के समान चक्रवर्ती राजा होता है।

तपस्वी राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि सब शुभग्रह परिपूर्ण किरण तथा शुभ राशि और शुभ नवांश में होकर लग्न में हो और पापग्रह अस्त (सूर्य से लुप्त किरण) होकर उनके साथ नहीं हो तो जातक राजा होकर वन, पर्वत में जाकर तपस्या करने वाला होता है।

बृहस्पति की बुद्धितुल्य राजयोग

जन्म कुण्डली में सब शुभ ग्रह शुभराशिगत पणफर स्थान में हो और पापग्रह द्विस्वभाव राशि में हो तो जातक शत्रुजेता और बृहस्पति तुल्य बुद्धिमान होता है।

दुर्वार शत्रुमारक राजयोग

जन्म कुण्डली में लग्नेश यदि लग्न में हो अथवा मित्र की राशि में मित्र से दृष्ट हो तो जातक राजा होता है। यदि शुभ राशि लग्न हो तो निष्कण्टक राज भोग करता है।

यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में पूर्ण चन्द्रमा अपने उच्च में हो और सब ग्रहों से दृष्ट हो तो हाथी, घोड़े और पदाति अनेकों सैन्य से युक्त परम यशस्वी राजा का जन्म होता है। जो समस्त पृथ्वी के भार से खिन्न शेष फणिराज के समान प्रजा का पालन करता है। अर्थात् चक्रवर्ती राजा होता है।

अधिक हाथी रखने वाला राजा

जन्म पत्रिका में अति स्वच्छ बिम्ब चन्द्रमार यदिसूर्य के नवमांश में हो और

सब शुभ ग्रह केन्द्र में हो उनको पापग्रहों का योगन नहीं हो तो बहुत हाथी (उपलक्षण से उत्तम उत्तम सवारी) रखने वाला राजा होता है।

स्वकीर्ति से दिशाओं का शुभ्रकर्त्ता राजयोग

यदि चन्द्र, बुध, मंगल ये नीच भिन्न स्थान में अपने अपने नवमांश में हों और १२, ३ भाव में हों तथा अस्त नहीं हो तथा चन्द्रमा सहित गुरु पञ्चम भाव में हो तो संसार में विख्यात कीर्ति राजा होता है।

शत्रुजेता राजयोग

जन्म पत्रिका में नीच और शत्रु के वर्ग से भिन्न स्थान में कोई भी ३ ग्रह अपने नवमांश में पूर्ण बली हो उन पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा पूर्ण निर्मल बिम्ब हो तो जातक शत्रु को जीतने वाला राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

कुण्डली में यदि वर्गोत्तम या स्व नवमांश स्थित चन्द्रमा को बलवान् ग्रह देखता हो तथा लग्न में कोई पापग्रह नहीं हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला चक्रवर्ती राजा होता है।

अधिक हाथी वाला राजयोग

कुण्डली में चन्द्रमा यदि जलचर राशि नवमांश में हो तथा शुभग्रह अपने वर्ग में होकर लग्न में हो तथाकेन्द्र में पापग्रह नहीं हो तो जातक बहुत हाथी आदि सवारी रखने वाला राजा होता है।

अपूर्व यशस्वी राजयोग

पत्रिका में यदिपूर्ण चन्द्र मा वर्गोत्तम नवमांश में हो तो जातक परम यशस्वी राजा होता है। जिसके हाथी, घोड़े के खुर के आघात के धूलियों से आच्छादित सूर्य भी प्रात: काल के चन्द्रमा सदृश (निष्प्रभ) हो जाते हैं।

जन्म समय में सब ग्रह योगकारक हो तो जातक चक्रवर्ती होता है। एक, या दो ग्रह योग कारक हो तो मण्डल (प्रान्त या जिला) का अधिपति होता है।

निषाद कुलोत्पन्न राजयोग

अपने उच्च, त्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर कोई भी ग्रह चन्द्रमा को देखता है तो नीच कुलोत्पन्न भी जातक राजा होता है।

महाराज योग

यदि चन्द्रमा अपनी राशि या द्रेष्काण में हो तो जातक राजा होता है। यदि इसी योग में शुभ ग्रह पूर्ण बली हो तो महाराजा होता है।

ग्रामीण राजयोग

जन्म कुण्डली में लग्न में शनि और सप्तम भाव में नवोदित बृहस्पति हो, उन पर शुक्र की दृष्टि हो तो गाँव में जन्म लेने वाला भी राजा (मुखिया) होता है।

अधिक यशस्वी राजयोग

जन्म कुण्डली में शुक्र बुध मंगल तीनों लग्न में और चन्द्रमा से युत गुरु सप्तम भाव में हों उस पर शनि की दृष्टि हो तो महायशस्वी राजा होता है।

नीच कुलोत्पन्न राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि पूर्ण बली बृहस्पति मंगल के नवमांश में हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तथा मेष स्थित सूर्य दशम भाव में हो तो नीच कुलोत्पन्न जातक भी राजा होता है।

जन्म कुण्डली में यदि शुक्र, चन्द्र, सूर्य ये तृतीय भाव में हो मंगल सप्तम में, गुरु नवम में और लग्न में वर्गोत्तम नवमांश हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

देवतुल्य राजयोग

कुण्डली में यदि जन्म समय में देदीप्यमान किरण बृहस्पति, बुध, शुक्र, या चन्द्रमा ये सब या एक भी बली होकर नवम भाव में हो और अपने मित्र से दृष्ट हो तो जातक देव तुल्य राजा होता है।

नीच कुलोत्पन्न राजयोग

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में चन्द्रमा और बृहस्पति हो उन पर पञ्चमेश की दृष्टि हो और मीन में शुक्र हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

लक्ष्मीयुत राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा तृतीय या दशम भाव में हो और गुरु अपने उच्च में हो तो लक्ष्मी युक्त समस्त पृथिवी का राजा होता है।

प्रसिद्ध राजयोग

यदि कुण्डली में अपने उच्च का गुरु किसी केन्द्र में हो और शुक्र दशम भाव में हो तो जातक समस्त पृथिवी का सुप्रसिद्ध राजा होता है।

ब्राह्मणकुलोत्पन्न का राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में पूर्ण चन्द्रमा कर्क में हो तथा बली बुध, गुरु, शुक्र, ये अपने नवमांश में होकर चतुर्थ भाव में हो उन पर सूर्य की दृष्टि हो तो द्विज कुलोत्पन्न मनुष्य राजा होता है।

गौपालक राजयोग

जन्म कुण्डली में अपने मूलत्रिकोणस्थिति सूर्य दशम भाव में हो, शुक्र, गुरु, चन्द्र ये अपने- अपने राशि स्थित होकर ३, ६, ११ वें स्थान में हो तो गायों का पालन करने वाला अर्थात् ग्वाला भी राजा होता है।

सकलनृप पालक राजयोग

पत्रिका में अपने मित्र के नवमांशगत शुभग्रह सप्तमभाव में अपने मित्र से दृष्ट हो और मंगल अपने उच्च में हो तो समस्त भूमि का पालक राजा होता है।

यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में अपने नवमांश में बली होकर नवम भाव में हो, लग्न में शुभ वर्ग या शुभ ग्रह हो उस पर बुध की दृष्टि हो तो परम कीर्तिमान राजा होता है।

कुत्सित राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि मंगल अपने उच्च में हो उस पर रवि चन्द्र और गुरु की दृष्टि हो तो नीच कुलोत्पन्न भी समस्त पृथिवी का रक्षक राजा होता है।

नीचकुलोत्पन्न राजयोग

उक्त राजयोगों में अभिजित् (नक्षत्र या मुहूर्त) में जन्म हो तो नीच कुलोत्पन्न भी परमबलशाली राजा होता है, इसमें सन्देह नहीं।

शत्रुजेता राजयोग

जन्म पत्रिका में कृत्तिका नक्षत्रस्थित चन्द्रमा यदि लग्न में हो तथा गण्डान्त, भद्रा, परिघ या व्यतिपात योग हो तो जातक शत्रुओं को नाश करने वाला होता है।

निराकुल राजयोग

जन्म पत्रिका में लग्न में बुध, सप्तम बृहस्पति कर्कराशिस्थ चन्द्रमा चतुर्थ भाव में और शुक्र दशमभाव में हो तो जातक शासक होता है।

चक्र व समुद्र राजयोग

यदि जन्म पत्रिका में एक राशि अन्तर करके ६ राशि में सब ग्रह हों तो चक्र योग होता है इसमें जन्म लेने वाला राजा होता है।

यदि इसी योग में एक शुभ ग्रह लग्न में हो तो सम्पूर्ण भूमण्डल का राजा होता है।

उक्त योग में ही यदि दो ग्रह लग्न में हो तो समुद्र योग होता है, इसमें जातक राजा होता है।

यदि सब शुभग्रह केन्द्र में हो तो भी जातक राजा होता है।

अधिक सम्पत्तिवान् राजयोग

यदि सब ग्रह ५, ४, ३, १ भाव में हो तो धन पुत्र बन्धु और वाहनों से तथा बहुत नौकरों से युक्त राजा होता है ऐसा यवनादि आचार्यों का मत है।

नगर नामक राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि १०, ७, ४, १ इन सब ग्रह हों तो नगर नामक योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पृथ्वीपति होता है।

प्रशान्त राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि सब ग्रह चतुर्थ, लग्न और सप्तम भाव में तथा मंगल,

रवि एवं शनि ये तृतीय, षष्ठ और एकादश भाव में हों तो जातक न्यायप्रिय राजा होता है। यह राजयोग यवनाचार्यों ने कहा है।

कलश संज्ञित राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि सब शुभ ग्रह ११, ९ भाव में हो तथा सभी पापग्रह दशमभाव में हों तो कलश नामक राजयोग कहा गया है।

पूर्ण कुम्भ नामक राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि ३, ५, ११, भाव में ३ ग्रह, षष्ठाभाव में २ ग्रह और शेष २ ग्रह सप्तम भाव में हो तो यह कुम्भ नामक राज योग होता है।

इस प्रकार जन्म कुण्डली में ऊपर प्रायः नीच कुलोत्पन्न जातक के लिए भी अनेक प्रकार के राजयोग कहे हैं, इसके आगे केवल राजवंशियों के राजा होने वाला योग मुनियों द्वारा कहा गया है।

सर्ववन्दित राजयोग

जन्म कुण्डली में सिंह लग्न में सूर्य, मेष में चन्द्रमा, कुम्भ में शनि, मकर में मंगल हो तो जातक सबका वन्दनीय होता है।

स्थिर लक्ष्मीवान् राजयोग

जन्म कुण्डली में एक बलवान् शुभग्रह लग्न में और अन्य शुभग्रह ९, १, २ भाव में तथा शेष ग्रह ३, ११, ६, १० भाव में हो तो जातक स्थिर लक्ष्मी वाला राजा होता है।

जिसकी विजय यात्रा में हाथियों का समूह अपने मद जल वृष्टि से लोक में मेघ का भ्रम उत्पन्न कर देता है।

अति लक्ष्मीवान् राजयोग

जन्म काल में स्वराशिस्थ बृहस्पति चतुर्थ भाव में और पूर्ण चन्द्रमा नवें भाव में तथा शेष ग्रह १, ३ भाव में हो तो जातक बुद्धिमान्, सब सम्पत्ति और वाहनों से युक्त राजा होता है।

चन्द्रांशतुल्य यशस्वी राजयोग

जन्म काल में अपने उच्च में स्थित चन्द्रमा यदि लग्न में हो, धन भाव में बृहस्पति हो, तुला में शुक्र, कन्या में बुध, मेष में मंगल तथा सिंह में सूर्य हो तो जातक अति यशस्वी राजा होता है।

स्वगुण प्रख्यात राजयोग

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा और रवि दशम भाव में, लग्न में शनि, चतुर्थ में गुरु, शुक्र, बुध, मंगल, ये एकादश भाव में हो तो गुणों से सुप्रसिद्ध राजा होता है।

यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में लग्न में मंगल दशम में शनि और रवि, ७ में गुरु, ९ में शुक्र, ११ वें में बुध और चतुर्थ भाव में चन्द्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला यशस्वी राजा होता है।

पराक्रम धन वाहन से युक्त राजयोग

पत्रिका में यदि पूर्ण चन्द्रमा लग्न से भिन्न केन्द्र में हो तो जातक धन, वाहन और पराक्रम से युक्त राजा होता है।

सर्पराज के तुल्य प्रतापी राजयोग

जन्म समय में यदि शुक्र को बृहस्पति देखता हो तो जातक बहुत वाहनों से युक्त प्रतापी राजा होता है।

राजराजेश्वर राजयोग

यदि जातक के जन्मपत्रिका में जन्म समय में बुध को गुरु देखता हो तो वह जातक राजाओं से वन्दनीय होता है।

शत्रुजित राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि लग्नेश स्वोच्चगत होकर चन्द्रमा को देखता हो तो धन, वाहनों अर्थात् हाथी घोड़ा से युत से शत्रुओं को जितने वाला राजा होता है।

लक्ष्मीपति राजयोग

जन्म कुण्डली में अपने अधिमित्र के नवमांशस्थ चन्द्रमा को यदि शुक्र देखता है तो सदा धन–धान्यसम्पन्न लक्ष्मी का पति राजा का जन्म होता है।

ब्राह्मणकुलोत्पन्न राजयोग

पत्रिका में जन्मराशि का स्वामी बली होकर केन्द्र में हो तो ब्राह्मण कुलोत्पन्न भी राजा होता है। फिर राजकुलोत्पन्न की तो बात ही क्या?।

अंग देशाधिप राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य अपने अधिमित्र की राशि में हो, उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक अङ्ग देश का राजा धन, धर्म से युक्त होता है।

मगधाधिप राजयोग

जन्म पत्रिका में चन्द्रमा के साथ बुध अपने उच्च में हो तो जातक मगध देश का राजा होता है। जिसके हाथियों के मदगन्ध से सब दिशा सुगन्धित होती है।

शत्रुदमन राजयोग

जन्म पत्रिका में एक भी पूर्णिमा का चन्द्रमा यदि प्रधान (उच्च) बल से युक्त हो तो शत्रु को जीतने वाला राजा होता है।

गोप कुलोत्पन्न राजयोग

जन्म पत्रिका में एक भी लग्नेश पूर्ण बली होकर केन्द्र में हो तो गोपकुलोत्पन्न भी राजा होता है। राजवंशियों की फिर क्या बात है?।

समस्त भूमण्डल का स्वामी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि चन्द्रमा से दशवें भाव में कर्क का बृहस्पति हो तो जातक समस्त पृथ्वी का स्वामी होता है।

कश्मीरमण्डलीय राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि चन्द्रमा के साथ बृहस्पति कर्क राशि में हो तो जातक कश्मीर देश का राजा होता है।

तीन ओर समुद्र से वेष्टित भूमि का राजयोग

रवि से द्वितीयस्थान में यदि बुध, गुरु, शुक्र हो उन पर पापग्रह की दृष्टि या योग नहीं हो तथा अस्त नहीं हो तो जातक ३ दिशाओं से आवृत्त समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का स्वामी होता है।

प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजयोग

स्वच्छकिरण पूर्णिमा का चन्द्रमा यदि राशीश और बली शुभग्रह से दृष्ट हो तो अति सुन्दर स्वरूप, प्रख्यात यश वाला राजा होता है।

शत्रुजित राजयोग

गुरु और शुक्र दोनों यदि धन स्थान में हो तो शत्रुजेता राजा होता है।

द्वीपाधिप राजयोग

जन्म पत्रिका में कर्कलग्न में गुरु और चन्द्रमा हो मीन में शुक्र, तुला में शनि, मेष का सूर्य और मङ्गल अपने वर्ग में हो तो जातक राजा होता है।

त्रिभुवनाधिप राजयोग

जन्म पत्रिका में सब पाप ग्रह अपने नीच या शत्रुराशि में होकर ३, ६ स्थान में हो और बली शुभ ग्रह परमोच्च में होकर केन्द्र में हो, कर्कस्थ चन्द्रमा दशमभाव में हो और रात्रि में जन्म हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

शत्रुजित राजयोग

जन्म पत्रिका में मेष लग्न में रवि, चन्द्र, मंगल हो, वृष में शुक्र शनि, बुध हों; धनुराशिस्थ स्वनवांश में गुरु हो अथवा केवल रवि पूर्ण बली होकर अपने परमोच्च में हो तो शत्रु को जीतने वाला और विद्वान् राजा होता है।

विमल कीर्तिमान् राजयोग

जन्म पत्रिका में शुक्र बुध गुरु पञ्चम भाव में, षष्ठ भाव में सूर्य, अपने उच्च में मंगल, नवमभाव में शनि हो तो धर्मात्मा, यशस्वी और प्रतापी राजा होता है।

प्रसिद्ध यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में गुरु से दृष्ट रवि, चन्द्रमा से दृष्ट शुक्र, मंगल से दृष्ट शनि, यदि चरराशि लग्न में हो तो शत्रुजेता यशस्वी राजा होता है।

स्वभुज विजयी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि जातक के जन्मपत्रिका में कन्या लग्न में बुध हो, मीन लग्न में बलवान् बृहस्पति हो, मेष लग्न में मंगल हो, शनि षष्ठ भाव में और शुक्र चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो वह जातक अपने बाहुबल से सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला राजा होता है।

अस्थिर स्वभावी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि बली मंगल मकर लग्न में हो, नवम में शनि, सप्तम भाव में चन्द्रमा सहित सूर्य हो तो जातक अति चञ्चल स्वभाव का राजा होता है।

अजेय राजयोग

जन्म पत्रिका में मकर लग्न में शनि, सप्तम भाव में चन्द्र और बृहस्पति हो, कन्या में बुध यदिशुक्र से दृष्ट हो तो जातक दुर्धर्ष (अजेय) राजा होता है।

द्विज देवभक्त राजयोग

यदि कुण्डली में मित्र से दृष्ट गुरु धनु में हो, लग्न में शुक्र, कर्क में चन्द्रमा हो तो जातक तालाब, देवमन्दिर बनाने वाला ब्राह्मणों का परम भक्त राजा होता है।

सर्ववन्दित राजयोग

जन्म पत्रिका में एक भी स्वच्छरश्मि शुभग्रह उच्च में होकर केन्द्र में हो अथवा केवल पूर्ण बली सूर्य केन्द्र में हो उस पर पञ्चम भावस्थ गुरु की दृष्टि हो तो जातक वन्दनीय भूपति होता है।

स्वबाहुबल से शत्रु को जीतने वाले राजा का राजयोग

जन्म कुण्डली में मंगल शनि रवि षष्ठ या तृतीय भाव में हो, सिंह का गुरु एकादश भाव में हो उन पर शुभग्रह की दृष्टि हो और रवि चन्द्र की दृष्टि नहीं हो तो शत्रु पक्ष को पराजित करने वाला राजा होता है।

कीर्तिमान् राजयोग

जन्म पत्रिका में चन्द्र बुध मंगल ये अपने नवमांशस्थ होकर १२, ३ भाव में हो और नीच राशि में वा अस्त नहीं हों, गुरु और चन्द्र पञ्चम भाव में हो तो परम यशस्वी राजा होता है।

पुष्कल नामक राजयोग एवं फल

जन्म पत्रिका में पूर्ण बली जन्मराशिपति और लग्नेश अधिमित्र की राशि में स्थित केन्द्र में होकर लग्न को देखता हो तो पुष्कलयोग होता है। पुष्कलयोग में जन्म लेने वाला शत्रुजेता यशस्वी राजा होता है।

शतयोजन भूमि का स्वामी

रेवती, पू. फा. उ. फा. मूल या पुष्य में स्थित सूर्य लग्न में हो तो जातक सौ योजन भूमि अथवा देश का राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

यदि कुण्डली में लग्न के नवमांश का स्वामी अपने उच्च में होकर केन्द्र में हो तो जातक राजा होता है। जन्म राशीश या जन्म लग्नेश यदि केन्द्र में हो तो जातक धन सम्पन्न होता है।

वर्धितश्री राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा के साथ शनि केन्द्र में हो तो जातक परजात होकर भी धन वाहनों से परिपूर्ण राजा होता है।

शत्रुजेता राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र बृहस्पति बुध ये द्वितीय भाव में, चन्द्र रवि मंगल ये सप्तम भाव में हो तो जातक शत्रुहन्ता राजा होता है।

विश्व का कल्याण करने वाला राजा

यदि कुण्डली में कुम्भ के अष्टम अंश पर त्रिकोण (५, ९) में चन्द्रमा हो तो समस्त प्रजा का हित साधक राजा होता है।

वीर राजयोग

जन्म पत्रिका में किसी राशि के १५वें अंश पर एक राशि के ५ वर्ग में चन्द्रमा हो तो अपने भुजबल से पृथ्वी को जीतने वाला वीर राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

यदि कुण्डली में उक्त राजयोगों में यदि पूर्णचन्द्रमा पुष्य वर्गोत्तम नवांश, कृत्तिका या अश्विनी में हो वा त्रिपुष्करयोग हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

अतुल्य बलवान् राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में पूर्ण रश्मि चन्द्रमा दशम भाव में, बली शुक्र नवम में, शेष ग्रह एकादश भाव में हो तो सर्वश्रेष्ठ पराक्रमी राजा होता है।

अहंकारी राजयोग

जन्म पत्रिका में सब ग्रह यदि चन्द्रमा से उपचय (३, ६, १०, ११) में हो तो मानी समस्त भूमण्डल का राजा होता है।

कुबेर के समान धनी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि मंगल से गुरु, चन्द्र, सूर्य क्रम से ५, ९, ३ स्थान में हो तो धन में कुबेर तुल्य धन से सम्पन्न राजा होता है।

त्रिसमुद्रपारग राजयोग

पत्री में बुध से यदि तृतीय भाव में सूर्य, चतुर्थ में शुक्र तथा अन्य ग्रह पञ्चम भाव में हो और कोई भी नीच शत्रु राशि में नहीं हो तो तीन समुद्र पर्यन्त पृथ्वीपति होता है।

सिंहासनाधिशायी राजयोग

जन्म कुण्डली में शनि से यदि शुक्र और बुध केन्द्र में हो, शेष ग्रह उच्चस्थ हों तो सिंहासन पर सोने वाला राजा होता है।

अपने बाहुबल से पृथ्वी को जीतने वाला राजा

जन्म पत्रिका में पूर्ण रश्मि लग्नेश से यदि पापग्रह एकादश स्थान में और शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो अपने भुजबल से पृथ्वी के जीतने वाला पृथ्वी का राजा होता है।

समस्त नृपों से वन्दित राजा

जन्म पत्रिका में जन्म राशिपति से ११, ३, ६ में सब पापग्रह हो उन पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो सर्वश्रेष्ठ वन्दनीय राजा होता है।

सुनफादि योग में भी राजयोग का विचार

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से अगले पिछले तथा दोनों केन्द्र में सूर्य से भिन्न ग्रह हों तो क्रम से सुनफा, अनफा, दुरधरा योग होते हैं। इन योगों में राजकुल में जन्म लेने वाला अवश्य राजा होता है।

अतुल कीर्तिमान् राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि चन्द्र और बृहस्पति केन्द्र में शुक्र से देखे जाते हो और कोई ग्रह नीच में नहीं हो तो कीर्तिमान राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

यदि जन्म पत्रिका में बली शुक्र अपने नवमांश में होकर लग्न में हो उन पर बुध शनि की दृष्टि हो तो तथा गुरु ५वें हो तो अपने बाहुबल से शत्रुओं को मारने वाला हाथियों से युक्त सार्वभौम राजा होता है।

जातक भङ्ग योग

चाण्डाल सदृशी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि गुरु, केतु अथवा राहु के साथ पापग्रह से देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य निश्चकर चाण्डाल सदृश होता है।

कुण्डली में यदि गुरु अपनी नीचराशि अथवा नीचराशि के नवांशगत हो, तो इस योग में मनुष्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर भी चाण्डाल सदृश हो जाता है।

ब्राह्मण सदृशी योग

जिस-किसी की कुण्डली में केतु, राहु और शनि से युक्त गुरु यदि शुक्र

अथवा बुध से देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त कर शूद्र कुल में उत्पन्न होकर भी ब्राह्मण सदृश होता है।

भिक्षाटन-धनरहित-नित्य लुब्ध योग

जिस-किसी की कुण्डली में मेष राशिस्थ चन्द्र यदि शनि से देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य भिक्षाटन करने वाला होता है।

यदि वह चन्द्र मंगल से देखा जाता हो तो इस योग में मनुष्य धनहीन होता है।

लग्न और चन्द्र यदि शनि से देखा जाता हो, तो इस योग में मनुष्य सदा लुब्ध अर्थात् धन की अपेक्षा वाला होता है।

दास और भिक्षाटन योग

जिस-किसी की कुण्डली में उपरोक्त योग तभी होता है, जब उस पर शुभग्रहों की दृष्टि नहीं होता, केवल पापग्रह की दृष्टि होती है।

कुण्डली में तात्कालिक लग्न का स्वामी मंगल केन्द्र में और शनि यदि लग्न में हो तथा उसको शुभग्रह नहीं देखता हो, तो इस प्रकार के योग में उत्पन्न मनुष्य दूसरे का दास हुआ करता है तथा भिक्षाटन कर जीवन रक्षा कर पाता है।

श्वास क्षयप्लीहगुल्मविद्रधि रोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में पापग्रहों के मध्य में चन्द्र स्थित हो और शनि सप्तमभाव में हो, तो इस योग में मनुष्य श्वास रोग, क्षयरोग, प्लीहा रोग, गुल्म रोग और विद्रधि रोग आदि से पीड़ित होता है।

अङ्ग वैकल्य व तनु शोषण योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य से वेशिस्थान अर्थात् द्वितीय भाव में शनि और दशम भाव में चन्द्र तथा सप्तम भाव में मंगल स्थित हो, तो इस योग में मनुष्य का कोई अङ्ग विकल होता है।

कुण्डली में यदि चन्द्र और सूर्य नवांश चक्र में परस्पर एक-दूसरे की राशि में स्थित हो, तो इस योग के रहने पर मनुष्य का शरीर क्लेश युक्त होता है।

सूखा रोग-अंधापन-विक्षिप्तता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य और चन्द्र सिंह राशि या कर्क राशि में एक साथ हों, तो इस ग्रह स्थिति में मनुष्य को सूखारोग से शरीर पीड़ित होता है।

कुण्डली में यदि सूर्य अष्टम भाव में, चन्द्र षष्ठभाव में, मंगल द्वितीय भाव में और शनि द्वादश भाव में क्रम से स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति के रहने पर मनुष्य उनमें से बलवान् ग्रह के धातु कोप से नेत्रों से हीन होता है।

कुण्डली में यदि लग्नभाव में गुरु और सप्तम भाव में मंगल स्थित हो, तो मनुष्य, इस योग के रहने पर उन्माद (विक्षिप्तता) से ग्रस्त होता है।

उन्माद व स्मृति भ्रंश योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शनि लग्न में, मंगल सप्तमभाव में अथवा त्रिकोण भाव में शनि और मंगल स्थित हों , तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य उन्माद रोग से ग्रस्त, बुद्धि-स्मृति भ्रंश से युक्त होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि लग्न में शनि, व्ययभाव में सूर्य अथवा त्रिकोण भाव में चन्द्र और मंगल स्थित हो, तो इसे आगे में कहा गया है।

पुनः उन्माद बुद्धि योग

पूर्वोक्तानुसार इस योग में उत्पन्न मनुष्य उन्मादी बुद्धि अथवा जड़ बुद्धि (बेवकूफ) वाला अथवा चञ्चल बुद्धि वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में लग्नभाव अथवा त्रिकोण भाव में सूर्य और चन्द्र अथवा शनि और गुरु केन्द्रभाव में हो तथा जन्म के समय शनिवार अथवा मंगलवार हो, तो मनुष्य उन्माद बुद्धि से युक्त होता है।

अथवा कुण्डली में केन्द्र भाव में बुध और चन्द्र शुभनवांश में न होकर पापनवांश में हो, तो इस योग में भी उत्पन्न मनुष्य बुद्धि भ्रम से युक्त होता है।

अन्य वसु (धन) स्त्री भोग करने वाला योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शनि, चन्द्र और सूर्य केन्द्र भाव में स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति में उत्पन्न मनुष्य मूर्ख और दूसरे के धन का भोग करने वाला होता है।

कुण्डली में भाग्येश (नवमेश) द्वादश स्थान में और व्ययेश द्वितीय (धन) स्थान में और तृतीय स्थान में पापग्रह स्थित हों, तो इस प्रकार 'केमद्रुम योग' में उत्पन्न मनुष्य कुभोजन (अखाद्य) करने वाला, दुष्कर्मरत और परायी स्त्री में गमन करने वाला होता है।

कुलनाशक-अल्पायु-भिक्षुक योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि लग्नेश, अपनी नीच राशि में अथवा नीच राशि के नवांश में तथा पापग्रह षष्ठ और अष्टम भाव में एवं मान्दि (गुलिक) लग्न में स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य अपने कुल का नाशक होता है।

यदि उपरोक्त ग्रहों पर शुभग्रह की दृष्टि का भी अभाव हो, तो मनुष्य अल्पायु होता है।

यदि सभी ग्रह अपनी-अपनी नीच राशि या शत्रु राशि में होकर दशमभाव को छोड़कर अन्य भावों में स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति में मनुष्य निश्चयकर भिक्षुक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

भिक्षाशनी-दुःखित देहभोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि द्वादशभाव में लग्नेश और दशमभाव में चन्द्रमा, मंगल और अन्य पापग्रहों के साथ स्थित हो, तो इस ग्रह योग में उत्पन्न मनुष्य अभिशप्त व परदेश में रहने वाला, भिक्षा से जीवन-यापन करने वाला और पीड़ित शरीर वाला होता है।

अपस्मार (मृगी) रोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि षष्ठभाव अथवा अष्टमभाव शनि और मंगल से युक्त हो, तो इस योग में मनुष्य अपस्मार (मृगी) रोग से युक्त होता है।

कुण्डली में यदि षष्ठभाव, द्वादशभाव और अष्टम भाव, इन भावों में पापग्रह स्थित हों अथवा गुरु केन्द्रभाव में परिधि संज्ञक अप्रकाशक ग्रह से युक्त होकर स्थित हो, तो भी इस योग के रहने पर मनुष्य अपस्मार (मृगी) रोग का शिकार होता है।

'गदा' नामक योग अपस्मार रोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सभी पापग्रह अष्टमभाव में और चन्द्र व शुक्र केन्द्र भाव में स्थित हों, तो इस प्रकार के 'गदा' नामक ग्रहयोगों में उत्पन्न मनुष्य अपस्मार (मृगी) रोग से सन्तप्त होता है।

यहाँ 'गदाख्य योग' को आश्रय योग कथित गदायोग नहीं समझना चाहिए।

चाण्डाल योग-कुलाचार-सत्कर्महीन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि बुध, चन्द्र और शुक्र एक साथ केन्द्रभाव में और लग्नभाव में राहु की स्थिति हो, तो यह चाण्डाल योग होता है। इस प्रकार के ग्रहयोगों में उत्पन्न मनुष्य अपने कुल के आचार-विचार या मर्यादा से रहित और असत् या बुरा कर्म करने वाला होता है।

वाग्दोष-परिभ्रंश योग

जिस-किसी की कुण्डली में दशमभाव अथवा द्वितीय भाव में यदि पापग्रह स्थित हो और वह शुभग्रह की युति और दृष्टि से रहित तथा गुरु बलहीन और नीचादि में स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य की वाणी दोषयुक्त और वह धर्मादि से हीन होता है।

कुलघ्न आदि योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि नवमेश पापग्रह के साथ अन्त्य (व्यय) भाव में तथा लग्नेश सूर्य के साथ स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य कुलघ्न अर्थात् कुल का नाशक होता है।

इस प्रकार उपरोक्त योग में शुभग्रह की दृष्टि अथवा युति का भी यदि अभाव हो, तो इस स्थिति में मनुष्य अपने पुत्र, स्त्री, धन आदि का भी नाश करने वाला होता है।

कुलध्वंस-विदार योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि केन्द्र भाव में शुभ और पाप अर्थात् मित्र ग्रहों की स्थिति-प्रभाव हो तथा चन्द्र लग्नेश से भी दृष्ट हो और वह शनि के नवांशगत अथवा शनि से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य अपने कुल का नाश करने वाला और भार्याहीन जीवन जीने वाला होता है।

गृह से बहिष्कृत-स्त्री-पुत्रहीन-मूर्ख योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि केन्द्रभाव में शनि और लग्न भाव में चन्द्र, तथा व्ययभाव में गुरु की स्थिति हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य भीख माँगने वाला, घर से बहिष्कृत और स्त्री-पुत्र के साथ गुणों से हीन अथवा होता है।

अति हीन वृत्ति योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा से पञ्चम स्थान अथवा द्वितीय स्थान में लग्नेश स्थित हो अथवा अष्टम भाव में पापग्रह और दशमभाव में चन्द्र स्थित हो, तो इस ग्रह योग में मनुष्य अतिनीच-हीन अथवा निन्द्य वृत्ति से जीवन यापन करने वाला होता है।

जन्मभूमि भ्रष्ट-भाग्यहीन योग

जिस-किसी की कुण्डली में लग्नेश स्थित स्थान से अष्टमस्थान, द्वादश स्थान और षष्ठ स्थान; इन स्थानों में पापग्रह स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति से युक्त मनुष्य अपने जन्मस्थान से बहिष्कृत जीवन जीने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि गुरु अपनी नीच राशि अथवा शत्रुराशि के नवांश में और शनि गुरु के नवांश में स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति में मनुष्य निश्चयकर स्त्री-पुत्रहीन और अति दुःखी तथा रोग से ग्रस्त भाग्यहीन होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी उच्चराशि में होकर भी अपनी नीच राशि के नवांश में सूर्य स्थित हो, तो इस ग्रह स्थिति में उत्पन्न मनुष्य राजपुत्र होकर भी नीचता को प्राप्त होता है। इस योग में यदि वह सूर्य यदि पापग्रह से दृष्ट लग्न में स्थित हो, तो उपरोक्त फल अर्थात् मनुष्य राजपुत्र अर्थात् राजुकमार होकर भी निश्चय ही नीच जैसा व्यव्रहार कर्म वाला होता है।

राज योग भङ्गार्थ योग

जिस-किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अपनी नीचराशि तुला के दस (१०) अंश में स्थित हो, तो इस स्थिति के प्राप्त रहने पर मनुष्य सहस्त्र या हजार राजयोगों के रहने पर भी हीनता को प्राप्त हो जाता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शुक्र भी नीच राशिगत हो, तो मनुष्य के

राजयोग का विनाश हो जाता है तथा जन्म के समय उल्का, पात आदि अप्रकाश ग्रह लग्न में स्थित होकर राजयोग को नष्ट करते हैं।

परप्रैष्य (दूत) योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शुक्र अपनी नीच राशि अथवा शनि के नवांश का होकर व्ययभाव में स्थित हो और सूर्य व चन्द्र सप्तम भाव में शनि से देखा जाता भी हो, तो इस ग्रह स्थिति को प्राप्त रहते उत्पन्न मनुष्य निश्चय ही दूसरे की आज्ञा पालन करने वाला 'दूत' होता है।

फटे-चिथड़े वस्त्र और बन्धन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्षीण अवस्था में हो, शुक्र सप्तमभाव में और शनि लग्न भाव में स्थित हो, तो इस ग्रहस्थित को प्राप्त रहते उत्पन्न मनुष्य भ्रष्टावस्था अर्थात् फटे-पुराने चीथड़ा वस्त्र पहनने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि लग्न में शनि और दशमभाव में चन्द्रमा हो तथा शुक्र से देखा जाता हो,तो मनुष्य, इस योग में बन्धन भोगने वाला अर्थात् कैदखाना (जेल, कारागार) की यात्रा करने वाला होता है।

मन्द-अक्षि रोगी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि व्ययभाव में चन्द्र अथवा सूर्य हो अथवा शनि त्रिकोण भाव में और सूर्य सप्तमभाव अथवा अष्टमभाव में हो, तो मनुष्य इन ग्रहयोगों में उत्पन्न होकर मन्दाक्षि रोगी अर्थात् मन्द दृष्टि युक्त रोग वाला होता है।

कुण्डली में यदि ये सभी ग्रह अपनी नीचराशि या शत्रुराशि के नवांश में हों, तो भी नेत्र रोग, मन्ददृष्टि रोग वाला मनुष्य होता है।

अन्धा योग

जिस-किसी की कुण्डली में पञ्चमभाव और चतुर्थ भाव में पापग्रह स्थित हों, विशेष रूप से चन्द्र अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो, तो इस योग की प्राप्ति से मनुष्य अन्धा होता है। यदि ये ग्रह पापग्रहों द्वारा देखा भी जाता हो, तो अन्ध और यदि शुभग्रहों से देखा जाता हो,तो किसी भी प्रकार की दृष्टि दोष नहीं होता है।

विकलाङ्गता-जाति भ्रष्टता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र दशम भाव में और सप्तमभाव में बुध तथा द्वितीय भाव में शनि स्थित हो, तो मनुष्य विकलाङ्ग होता है।

कुण्डली में उपरोक्त ग्रह अपनी नीच या शत्रु राशि के नवांश गत हों तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य निश्चय कर अपनी जाति से भी भ्रष्ट-पतित होता है।

कुष्ठ रोगी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा धनु राशि में होकर उसके मध्य नवांश (सिंह) में स्थित हो अथवा चन्द्र अन्य किसी भी राशि में होकर मकर, कर्क या वृष राशि के नवांश में स्थित हो और शनि और मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो इन योगों में मनुष्य निश्चय कर कुष्ठ रोगी होता है। लेकिन चन्द्र यदि शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट भी हो, तो मनुष्य उक्त योगों में कुष्ठ रोगी नहीं होता है।

गुल्म और कण्ठ रोगी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र कर्क, कुम्भ, वृश्चिक आदि राशि में से किसी के नवांश में मान्दि के साथ स्थित हो, तो मनुष्य इस योग में गुल्म (वायु-गोला) रोग का शिकार होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र चतुर्थ भावस्थ होकर कर्क राशि या कुम्भ राशि या वृश्चिक राशि के नवांश में पापग्रह से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोगों में उत्पन्न मनुष्य दाँत और कण्ठ का रोगी होता है।

उन्माद (बाबलापन) क्रोधी-कलहप्रिय योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि व्ययभाव में चन्द्र राहु सहित पापग्रह के साथ तथा शुभग्रह अष्टमभाव में स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग की स्थिति प्राप्त रहने पर उत्पन्न मनुष्य सदा कलह करने वाला, क्रोधी और बावलापन से युक्त होता है।

हृदयशूल-भाग्यहीनता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र पापग्रह से युक्त अथवा उसके विपरीत शुभग्रह से युक्त वृष या कर्क राशि में स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य नित्य हृदय-शूल (दर्द) से युक्त होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि उन्मण्डल में अर्थात् लग्न अथवा सप्तमभाव में चन्द्र और मंगल पापग्रह से युक्त तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो इस योग में भी मनुष्य नित्य हृदयशूल से ग्रस्त होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सप्तम भाव में चन्द्र और मंगल स्थित हो, तो मनुष्य नित्य हृदयशूल से पीड़ित रहता है।

जिस-किसी की कुण्डली में केन्द्रभाव में स्थित शनि, जिससे लग्नभावस्थ गुरु अथवा चन्द्र अथवा सूर्य देखा जाता हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग की प्राप्ति की स्थिति में उत्पन्न मनुष्य निश्चयकर भाग्हीन होता है तथा उसके द्वारा स्वोपार्तित धन का भी चोर होता है , ऐसा ज्योतिषजन कहते हैं।

ज्ञान धनादि हीन-परान्नभुक्-रुग्णदेह-कलहप्रिय योग

जिस-किसी की कुण्डली में व्ययभाव में नवमेश और केन्द्र भाव में पापग्रह

स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य निश्चयकर ज्ञान, धन, बुद्धि आदि से रहित होता है। यदि वे शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो मनुष्य दूसरों के अन्न को खाने वाला, रोगी शरीर वाला और कलह करने वाला होता है।

संस्कारहानि योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि गुरु केन्द्र में स्थित हो, तो इस योग के रहने पर यह मानना चाहिए कि मनुष्य के पिता ने उसके जन्म के समय जातकादि संस्कार नहीं किया है अथवा केन्द्र भावस्थ गुरु यदि शुभग्रह की दृष्टि अथवा युति से रहित हो, तो इस योग के रहने पर यह जानना चाहिए कि मनुष्य ने पिता के मरने के समय, उसके ऊर्ध्व कर्मादि संस्कार नहीं किया है।

वाहन से भयप्रद योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि मंगल के साथ चन्द्र केन्द्रभाव में अथवा अष्टम भाव में स्थित हो अथवा चतुर्थ भाव में क्षीण चन्द्र तथा अष्टम भाव में कोई भी ग्रह स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोगों के रहने पर उत्पन्न मनुष्य को वाहन आदि से भय होता है, ऐसा ज्योतिषजन कहते हैं।

शारीरिक उष्णता और जल में पिता मृत्यु योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चतुर्थ भावस्थ सूर्य पापग्रहों से युक्त और देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य का शरीर प्रायः गरम अनुभव होता रहता है तथा वह स्वस्थ और सुखी होता है, ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषजन कहते हैं।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य स्थित स्थान से नवमभाव मे चन्द्र स्थित हो, तो इस प्रकार इस ग्रहयोग में मनुष्य के पिता की मृत्यु जल में कहना चाहिए।

पिता की जल में मृत्यु योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि मीन राशि में सूर्य और चन्द्र स्थित होकर पापग्रह से देखा जाता हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य के पिता की मृत्यु जल में जाननी चाहिए।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि मंगल और राहु से युक्त शनि अथवा चतुर्थ भाव में स्थित शनि हो, तो भी इन दोनों योगों में मनुष्य के उत्पन्न होने से उसे जल का भय कहना चाहिए।

द्विज (ब्राह्मणादि) प्रहर्ता-कर्ण रहित-शिशुघ्न योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच (कन्या) राशि में होकर शुक्र भाग्य (धर्म, नवम) भाव में पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य द्विज जाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) को मारने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच राशि में स्थित शुक्र राहु के साथ स्थित हो तो इस स्थिति में मनुष्य कर्ण (कान) से रहित होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शुक्र दशम भाव में स्थित होकर मंगल से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य निश्चय कर शिशुओं को मारने वाला होता है।

शिशुघ्न और गोमृग जाति हन्ता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच राशि में स्थित गुरु अथवा सूर्य केन्द्रभाव में होकर पापग्रहों से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य शिशु को मारने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि केन्द्रभाव में पापग्रह से युक्त और शुभग्रह से दृष्ट अथवा अष्टमभाव में शुक्र स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रह योग के रहते उत्पन्न मनुष्य गाय, मृग, आदि को मारने वाला होता है।

नित्य पक्षिहन्ता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि दशमभाव में स्थित चन्द्र और बुध पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा नीच राशि के नवांशों में शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोगों में मनुष्य निश्चय कर नित्य (सदा) ही पक्षियों का शिकार करने वाला होता है।

गलान्तमृत्यु और वामनयनहीन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच (मकर) राशि का गुरु अष्टम स्थान में स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य का गला दबाकर या घोंट कर मरण होता है, ऐसा ज्योतिषजन कहते हैं।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा, शुक्र के साथ व्ययभाव अथवा सप्तम भाव में स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रह स्थिति के रहते उत्पन्न मनुष्य अपने वाम नेत्र से रहित होता है।

शिथिली भय-कृकलास भय योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अष्टम अथवा त्रिकोण भाव में सूर्य स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य के घर में शिथिली (कुचलैड़, एक प्रकार का जहरीला कीट) का भय रहता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अष्टम अथवा त्रिकोण भाव में शनि अथवा केतु अथवा शनि के साथ केतु स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रह योग में मनुष्य के घर में कृकलास (छिपकली) का भय कहना चाहिए।

कौल्यादि पातित्य-कूर्म भय-दंशभय-स्त्रियों के निद्रा से भय योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थान अष्टम या त्रिकोण भाव में राहु स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य के घर में कुत्ता, सुअर आदि से अपवित्रता का होना, श्रेष्ठ ज्योतिषजन कहते हैं।

यदि उन (अष्टम भाव अथवा त्रिकोण) भावों में से किसी में मंगल हो, तो घर में कछुए का भय, बुध हो तो दंश (काटने वाले कीटों) का भय, शुक्र हो, तो घर में स्त्रियों के शयनादि से उत्पन्न अव्यवस्था से भय और यदि उन स्थानों (अष्टम या त्रिकोण) भावों में से किसी में शनि हो, तो मनुष्य के घर में अन्य लोगों के शयन आदि करने से उत्पन्न अव्यवस्था से भय कहना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त स्थितियों में ग्रहों के बलाबल को विचार कर अपने बुद्धि और अनुभव के अनुसार कम या अधिक भय, अपवित्रता आदि के विषय में ज्योतिषजनों को कहना चाहिए।

स्त्री गमन योग

जिस-किसी की कुण्डली में लग्न से सप्तम भाव में यदि सूर्य स्थित हो, तो मनुष्य बन्ध्या स्त्री का गमन करने वाला होता है। सप्तम भाव में यदि चन्द्र या चन्द्र की राशि हो, तो समान स्त्री से सम्भोग कहना चाहिए। मंगल वहाँ हो, तो रजस्वला स्त्री और बन्ध्या स्त्री दोनों में सम्भोग करने वाला मनुष्य होता है।

वहाँ बुध के होने पर मनुष्य वेश्या, हीन जातियों की स्त्री या वणिक् स्त्री आदि से सम्भोग करने वाला हो। यदि वहाँ गुरु हो, तो ब्राह्मणी स्त्री से; शुक्र के होने से गर्भवती स्त्री से, शनि और केतु आदि के होने से रजस्वला या जाति हीन स्त्री से गमन कहना चाहिए। यदि उस सप्तमभाव में राहु हो, तो गर्भिणी स्त्री से सम्भोग और चन्द्र के होने पर काली और कुबरी स्त्री से सम्भोग कहना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त फल ज्योतिषों को ग्रहों की नीचादि स्थिति और बलाबल का विचार कर कहना चाहिए। इस तरह का फल प्रायः नीचादि में स्थित या बलहीन ग्रह के रहने पर ही घटित होते देखा गया है।

सम्भोग और सम्भोग स्थान योग

जिस-किसी की कुण्डली में उपरोक्त प्रकार जो स्त्रियों में गमन करना कहा गया है, उसी प्रकार चतुर्थभाव में स्थित ग्रह से भी कहना चाहिए। लेकिन चतुर्थभावस्थ ग्रह के अनुसार मनुष्य के द्वारा गमन करने का स्थान विशेष रूप से कहना चाहिए।

इस प्रकार सूर्य आदि ग्रह जिस-किसी की कुण्डली में यदि चतुर्थभाव में हो,

तो उस स्थित ग्रह के अग्रकथितानुसार संगम या गमन या सम्भोग का स्थान या घर कहना चाहिए। यथा चतुर्थ भाव में सूर्य हो, तो वन में, चन्द्र से घर में, मंगल से एकान्त प्रान्त स्थित घर में, बुध से विहार स्थान में, गुरु से देवालय, मन्दिर आदि और जलाशय योग्य भूमि में, शुक्र से विष्णु या शिव स्थान में और शनि से दुर्ग या जीती गई जलप्राय भूमि में मनुष्य द्वारा सम्भोग कहना उचित है।

पशुसङ्ग या समान सम्भोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि प्रथमभाव, चतुर्थभाव, सप्तमभाव और दशमभाव, इन चारों केन्द्र संज्ञक भावों में पापग्रह स्थित हों तो मनुष्य पशुओं के साथ मैथुन करने वाला होता है। यदि तीन उक्त भावों में पापग्रहों की स्थिति हो, तो मनुष्य पशु की तरह से सम्भोग करने वाला होता है।

स्त्रियों के स्तन आदि स्वरूप योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सप्तम भाव में मंगल हो, तो स्त्री कृश (दुबली) स्तन वाली सम्भोगार्थ प्राप्त होती है। यदि सप्तमभाव में शनि, राहु या केतु हो, तो लम्बे स्तनों वाली स्त्री सम्भोगार्थ प्राप्त रहती है। यदि सप्तम भाव में सूर्य हो, तो कड़े या कठोर या ऊँचे स्तनों वाली स्त्री सम्भोगार्थ प्रस्तुत रहती है। यदि चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र में से कोई ग्रह सप्तम भाव में हो, तो मनुष्य से सम्भोगार्थ कोमलाङ्गी उत्तम या सुन्दर दर्शनीय स्तनादि अङ्गों वाली स्त्री होती है।

ग्रह स्थिति योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र क्षीण अर्थात् अमावस्या के पास का हो, तो घर पुराना व जीर्ण और चन्द्र यदि बलयुक्त अर्थात् पूर्णिमा के समीप का हो, तो घर दृढ़ और नवीन कहना चाहिए। यदि शनि राहु या केतु दुःस्थानों (६-८-१२) में हो, तो उस घर में गर्मी अधिक अनुभव होती है आदि नियमपूर्वक कहना चाहिए।

द्विज-देवतार्थ धन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि द्वितीयेश और एकादशेश ये दोनों ही लग्नेश के मित्र हों, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य के धन निश्चय पूर्वक देवता, ब्राह्मण के उपयोग में व्यय होता है, ऐसा कहना चाहिए।

विंशोत्तरी महादशा जन्मनक्षत्र से दशेश ज्ञान प्रकार

जन्म नक्षत्र की संख्या में से २ घटाकर शेष में ९ से भाग दें, एकादि शेष से सूर्यादि दशेश जानना चाहिए। यथा १ शेष से सूर्य, २ शेष से चन्द्र, ३शेष से मंगल, ४ शेष से राहु, ५ शेष से गुरु, ६ शेष से शनि, ७ शेष से बुध, ८ शेष से केतु ९ या ० शेष से शुक्र की दशा समझनी चाहिए।

विंशोत्तरी दशा ज्ञानार्थ महादशान्तर्दशा चक्र

सूर्य महादशा वर्ष ६
कृत्तिका उत्तरा फा. उत्तराषा. भरणी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
रवि	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
भौम	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०

चन्द्र महादशा वर्ष १०
रोहिणी हस्त श्रवण
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
चन्द्र	०	१०	०
भौम	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
रवि	०	६	०

भौम महादशा वर्ष ७
मृगशिर चित्रा धनिष्ठा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चन्द्र	०	७	०

राहु महादशा वर्ष १८
आर्द्रा स्वाती शततारका
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
रवि	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
भौम	१	०	१८

गुरु महादशा वर्ष १६
पनुर्वसु विशाखा पूर्वाभाद्रपदा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
भौम	०	११	६
राहु	२	४	२४

शनि महादशा वर्ष १९
उत्तराभाद्रपदा पुष्य अनुराधा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
रवि	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
भौम	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२

बुध महादशा वर्ष १७
आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	१०	६
चन्द्र	१	५	०
भौम	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	९

केतु महादशा वर्ष ७
मघा मूल अश्वनी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७

शुक्र महादशा वर्ष २०
पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा भरणी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	३	४	०
सूर्य	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
भौम	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०

ग्रहदशा वर्ष और भुक्त भोग्य वर्ष ज्ञान प्रकार

विंशोत्तरी दशा क्रम में सूर्य की दशा वर्ष ६, चन्द्र की १० मंगल की ७, राहु १८, गुरु १६, शनि की १९, बुध की १७, केतु की ७ और शुक्र की २० वर्ष की होती है।

अब जन्म नक्षत्र वश भयात व भभोग की गणना कर भयात में जन्म नक्षत्र वश ज्ञात दशेश ग्रह की दशा वर्ष से गुणा कर भभोग से भाग देने पर जो लब्धि होती है, उसे दशा वर्ष और शेष में १२ से गुणा कर भभोग से भाग देने पर लब्धि मास; इसी तरह पूर्वोक्तानुसार वर्ष, मास, दिन, घटि और पल प्राप्त वर्षादि को दशा वर्ष से घटाने पर भोग्य वर्षादि हो जाता है।

विंशोत्तरी दशा क्रम जानने का प्रकार

विंशोत्तरी दशा क्रम में कृत्तिकादि भरणी पर्यन्त २७ नक्षत्र (अभिजित् को छोड़कर) तीन आवृत्तियों में क्रम से सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र आदि ९ ग्रहों के कहे गए हैं। दशा अथवा अन्तर्दशा और उसके स्वामियों का नाम और वर्षादि संख्या का क्रम पूर्वोक्तानुसार जानना चाहिए।

पुनः अन्तर्दशा ज्ञान प्रकार

अपनी प्राप्त दशा वर्ष को ३ से गुणा कर प्राप्त फल में जिस ग्रह की अन्तर्दशा लानी हो, उसकी दशा वर्ष से पुनः गुणा करके ३० से भाग देने से अन्तर्दशा वर्ष, मास, दिन आदि में प्राप्त होता है।

सूर्यान्तर्दशा फल

देशान्तरवास, बन्धु वियोग, दुःख, मनोद्वेग, रोग, भय, चोर पीड़ा, सञ्चित धन का नाश होना आदि सूर्य दशा का फल कहा गया है।

चन्द्रान्तर्दशाफल

चन्द्र की अन्तर्दशा के समय सुवर्ण आदि ऐश्वर्य, अश्व, गज, पालकी आदि श्रेष्ठ वाहन का लाभ, शत्रु पराजय, बल में वृद्धि, नाना प्रकार के सुरस अन्न, दान, शयन, उत्तम आसन और भोजन की प्राप्ति होती है।

भौमान्तर्दशा फल

राजा और चोर के कारण भय, अग्नि कृत् पीड़ा, सर्वाङ्ग रोग, सदा दुःखी, नाना प्रकार की चिन्ता, ज्वर, कष्ट आदि भौम की दशा में सम्भव होते हैं।

राह्वन्तर्दशा फल

राहु की अन्तर्दशा के समय मनुष्य बुद्धिहीन, दीन, चिन्तायुक्त, सर्वांग-पीड़ित, भयभीत, दुःखी, बन्धन, कष्ट और दरिद्रता के कारण क्लेश में रहता है।

गुर्वन्तर्दशा फल

राज्याधिकार, उत्कृष्ट चित्तवृत्ति, धर्म में निष्ठा, आरोग्यता, निश्चय ही धन धान्य वृद्धि आदि गुरु की अन्तर्दशा में सम्भव होता है।

शन्यन्तर्दशा फल

मिथ्यापवाद, हिंसक वृत्ति, बन्धन, द्रव्य नाश, मित्रों व बान्धवों से कलह करने की प्रवृत्ति, कार्य हानि आदि शनि अन्तर्दशा के समय सम्भव होता है।

बुधान्तर्दशा फल

अति सुन्दर स्त्रियों का भोग, सब प्रकार के भोग विलास, स्वर्ण-रत्न आदि की प्राप्ति, धनार्जन, ईश्वर स्मरण इत्यादि बुध की दशा के समय सम्भव होते हैं।

केत्वन्तर्दशा फल

स्त्री वियोग से शरीर क्लान्त, धन नाश, कष्ट, रोग, बन्धु कलह और देशान्तर गमन आदि केतु दशा में सम्भव होता है।

शुक्रान्तर्दशा फल

बाग-बगीचा आदि स्थान की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ व पुष्ट, श्वेत छत्र की प्राप्ति, धन-धान्य वृद्धि, आयु वृद्धि, पुत्र-पौत्र की प्राप्ति आदि शुक्र दशा के समय सम्भव होते हैं।

योगिनी दशा के स्वामी कथन

योगिनी दशा क्रम में मंगला, पिङ्गला आदि दशा के स्वामी क्रम से चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र और राहु-केतु सङ्कटा दशा के अर्थात् राहु पूर्वार्द्ध का स्वामी और केतु परार्द्ध का स्वामी जानना चाहिए।

जन्मनक्षत्र वश योगिनी दशा ज्ञान

जन्म नक्षत्र में ३ को मिला करके ८ का भाग देने से शेषांक मङ्गलादिक दशा क्रम से जाननी चाहिए। विशेष कोष्ठक से स्पष्ट हो जाएगा।

योगिनी दशा के नाम

मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, सङ्कटा, ये आठ योगिनी दशा के नाम कहे गए हैं।

योगिनी दशा वर्ष

मंगलादि योगिनी दशाओं के वर्ष क्रम से १, २, ३, ४, ५, ६, ७ और ८ कहे गए हैं, उनमें अन्तर्दशा लाने की विधि यह है कि प्रथम दशा वर्ष १ अर्थात् ३६० दिन में ३६ से भाग देने पर लब्धि अन्तर्दशा निकल आती है। आगे भी इसी तरह निकालना चाहिए।

अन्तर्दशा लाने में विशेष

प्राप्त दशा में जिस दशा का अन्तर्दशा लाना हो, उसके वर्ष संख्या से प्राप्त दशा को गुणा कर, उसमें ३६ से भाग देने पर अन्तर्दशा आ जाती है। अधोलिखित चक्र से अन्तर्दशा स्पष्ट हो जाएगा।

योगिनी दशान्तर्दशा चक्र

मङ्गला दशा वर्ष १ दिन ३६०		पिङ्गला दशा वर्ष २ दिन ७२०		धान्या दशा वर्ष३ दिन १०८०		भ्रामरी दशा वर्ष ४ दिन १४४०		भद्रिका दशा वर्ष ५ दिन १८००		उल्का दशा वर्ष ६ दिन २१६०		सिद्धा दशा वर्ष ७ दिन २५२०		सङ्कटा दशा वर्ष ८ दिन २८८०	
आ. चि श्र.		पुन. स्वा. ध.		पु. वि. शत.		अ.श्ले. अ.पूर्वाभा.		ध.म. ज्ये.उभा.		कृ. पूफा. मू.रे.		रो.उफा. पूषा.		मृ.ह. उषा.	
मङ्गला	१०	पि०	४०	धा०	९०	भ्रा०	१६०	भ०	२५०	उ०	३६०	सि०	४९०	सं०	६४०
पिङ्गला	२०	धा०	६०	भ्रा०	१२०	भ०	२००	उ०	३००	सि०	४२०	सं०	५६०	मं०	८०
धान्या	३०	भ्रा०	८०	भ०	१५०	उ०	२४०	सि०	३५०	सं०	४८०	मं०	७०	पिं०	१६०
भ्रामरी	४०	भ०	१००	उ०	१८०	सि०	२८०	सं०	४००	म०	६०	पिं०	१४०	धा०	२४०
भद्रिका	५०	उ०	१२०	सि०	२१०	सं०	३२०	म०	५०	पिं०	१२०	धा०	२१०	भ्रा०	३२०
उल्का	६०	सि०	१४०	सं०	२४०	मं०	४०	पिं०	१००	धा०	१८०	भ्रा०	२८०	भ०	४००
सिद्धा	७०	सं०	१६०	मं०	३०	पिं०	८०	धा०	१५०	भ्रा०	२४०	भ०	३५०	उ०	४८०
सङ्कटा	८०	मं०	२०	पिं०	६०	धा०	१२०	भ्रा०	२००	भ०	३००	उ०	४२०	सि०	५६०
योग	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

योगिनी दशा फल

मंगला दशा में शत्रु के उपद्रव का नाश, हाथी-घोड़ा-स्वर्ण-रत्न आदि का लाभ, स्त्री-पुत्र-गृहादि का लाभ और मंगलादि कार्य का होना सम्भव होता है।

पिङ्गला दशा का प्रारम्भ सुख से होता है, तदनन्तर दुःख, शोक, कुल रोग की वृद्धि, चित्त में व्याकुलता और बन्धुओं में वैरभाव होता है।

धान्या दशा में धन वृद्धि, धान्य वृद्धि, राजपूजित, युद्ध में सदा विजय, धैर्य्य प्राप्ति, स्त्री-पुत्र का सुख प्राप्ति, चित्र वस्त्र लाभ आदि सम्भव होता है।

भ्रामरी दशा में विदेश भ्रमण, युद्ध में हानि, स्त्री को पीड़ा, सुख हीन होना, ऋण बोझ का भारी होना, रोग वृद्धि होना, स्वजनों का प्रकोप होना, देश-देश भटकते फिरना आदि सम्भव होता है।

भद्रिका दशा में धन की प्राप्ति, आनन्द में वृद्धि, गुण का प्रकाशन, उत्तम वस्त्र प्राप्ति, राजमान्य, भूषण प्राप्ति, स्त्री भोग आदि का सुख, कल्याण मार्ग का प्रशस्त होना आदि सम्भव है।

उल्का दशा में भ्रमण, रोग, दुःख, ज्वरकोप, धनवियोग, देशवियोग, स्त्री वियोग, गोत्र कलह, बन्धु व मित्र से वैर, नाना प्रकार के अनर्थ आदि सम्भव होते है।

सिद्धा दशा में राज्याभिमान, मित्र-बन्धु का सुख, धान्य लाभ, गुणों की सिद्धि, कीर्ति प्राप्ति, राज्यादि प्राप्ति, पुत्रादि सुख, सर्वकार्य सिद्धि आदि सम्भव होता है।

सङ्कटा की दशा में जनों में कलह, ज्वर पीड़ा, स्त्री आदि कष्ट, पशुओं का नाश, गृह अल्पवास, प्रवास की अभिलाषा, राजपक्ष से सङ्कट आदि होते हैं।

पुनः मंगलादिदशा फल

१. मङ्गलादशा में शुभ कार्य, आनन्द, यश और द्रव्य की प्राप्ति होती है।
२. पिङ्गला में शरीर पीड़ा, मन में दुःख, भ्रमित होना आदि सम्भव है।
३. धान्या में धन प्राप्ति, मित्र-बन्धु मिलन, आरोग्यता, सुन्दरता आदि होते हैं।
४. भ्रामरी में स्थान नाश, दिक् भ्रमण होते हैं।
५. भद्रिका में सुख, सम्पत्ति, विलास, यश आदि मिलते हैं।
६. उल्का में राज से भय, धन-नाश, रोग ग्रस्तता, पीड़ा आदि होते हैं।
७. सिद्धा में कार्य सिद्धि, सुख प्राप्ति आदि सम्भव होता है।
८. सङ्कटा में व्याधि, मरण, क्लेश आदि मिलते हैं।

वर्ष दशा क्रम प्रकार

वर्ष दशा का क्रमारम्भ जन्म राशि से माना जाता है। इस तरह जिस मास में जन्म राशि का सूर्य हो, उस राशि से द्वादश (१२) मास में वर्ष दशा का क्रम पूरा होता है। यहीं से सूर्यादि नवग्रहों की दशा का क्रम अधोलिखित काल क्रम से भुक्त होता है।

२० दिन सूर्य की दशा जन्म राशि वाले स्थान से होती है, इसका फल भ्रमण है। ५० दिन चन्द्र की दशा, जो तीसरे स्थान के १० दिन रवि भोगते हैं, इसका फल नाना प्रकार के उत्तम भोग की प्राप्ति है।

२८ दिन मंगल की दशा, जो चौथे स्थान के ८ दिन रवि भोगते हैं, इसका फल रोग व सन्ताप है। ५६ दिन बुध की दशा, जो छठें स्थान के ४ दिन रवि भोगते हैं, इसका फल सुखकारक है।

३६ दिन शनि की दशा, जो सप्तम स्थान के रवि १० दिन भोगते हैं, इसका फल पीड़ादायक है। ५८ दिन गुरु की दशा, जो नवमस्थ सूर्य ८ दिन में भोगते हैं। इसका फल धन प्राप्ति है।

४२ दिन राहु की दशा, जो दशम स्थान को २७ दिन भोगते हैं, इसका फल नाना प्रकार का सोच के उत्पन्न होने हैं। ७० दिन शुक्र की दशा, जो द्वादश स्थान को रवि सम्पूर्ण भोगते हैं, इसका फल सर्व सुखकारक है।

ग्रहों की नित्यानित्य दशाओं का प्रकार

गत तिथि, वार, नक्षत्र तथा नामाक्षर, इन सबके योगफल में ९ का भाग देना चाहिए। शेष १ से सूर्य की दशा, २ से चन्द्र की दशा, ३ से मंगल की दशा, ४ से राहु की दशा, ५ से गुरु की दशा, ६ से शनि की, ७ से बुध की, ८ से केतु की, ९ या ० से शुक्र की दशा जाननी चाहिए। इस प्रकार नित्य दशाक्रम जानना चाहिए और फल वर्ष दशा क्रम के समान समझें।

नित्यदशाज्ञानार्थ अन्य प्रकार

जन्मकालिक नक्षत्र की संख्या को ४ से गुणा करके गुणन फल में गत तिथि और वार की संख्या मिला करके ९ का भाग देने पर शेष १ से एक दिन की रवि की दशा जाननी चाहिए। जिसका फल है, शोक सन्ताप देने वाला। २ शेष से चन्द्र की दशा, फल कल्याण व लाभकारक। शेष ३ से मंगल की दशा मृत्यु कारक, शेष ४ से बुध की दशा, बुद्धि वृद्धिकारक। शेष ५ से गुरु की दशा धन देने वाली, शेष ६ से शुक्र की दशा सुख कारक, शेष ७ से शनि की दशा पीड़ा कारक, शेष ८ से राहु की दशा घातक, शेष शून्य से केतु की दशा मृत्यु देने वाली जाननी चाहिए।

पञ्चमहापुरुष-भूत विचार

पञ्चमहापुरुष लक्षण कथन

अब यहाँ पञ्चमहापुरुष लक्षणों को पहले कहा जा रहा है। भौमादि ग्रह बली होकर स्वोच्च या स्वराशि का केन्द्र में स्थित हों, तो क्रमशः रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शश नामक पंचमहापुरुष योग पूर्वाचार्यों ने बतलाया है।

रूचक लक्षण

रुचक योगोत्पन्न जातक का मुख लम्बा, अति उत्साही, निर्मलकान्ति, बलवान्, सुन्दर भ्रू युक्त, कृष्ण केश, सुरुचिवाला, युद्धप्रिय, रक्तश्यामवर्ण, शत्रुहन्ता, विवेकी, चोरों का स्वामी, क्रूर, राजा,मन्त्रज्ञ, दुर्बल जङ्घा, ब्राह्मण भक्त, हाथ में वीणा-वज्र-धनुष-पाश-वृषभ और चक्र रेखा से युक्त तथा अभिचार (मारणमोहन) कर्म में निपुण होता है। सौ अङ्गुल लम्बा, मुख व मध्य (कटिभाग) में तुल्य तथा वजन में एकहजार तुल्य होता है। विन्ध्य और सह्याचल पर्वतीय प्रदेश का शासक होता है। अन्त में ७० वर्ष की आयु में शस्त्र या अग्नि के द्वारा स्वर्ग जाता है।

भद्र लक्षण

भद्रयोग में उत्पन्न पुरुष सिंह सदृश, उच्च वक्षःस्थल युक्त, हाथी सदृश धीर गति, लम्बी भुजावाला, पण्डित, चतुरस्र, योगक्रिया का ज्ञाता, सत्त्वगुणी, सुन्दर पैर व दाढ़ी-मूँछ, भोगी, शङ्ख-चक्र-गदा-शूल-हाथी-ध्वजा-हल रेखाओं से चिह्नित हाथ-

पैरवाला, सुन्दर नासिकायुक्त, शास्त्रज्ञ, काले बालों से शोभित, सब कार्यों में स्वतन्त्र तथा अपने परिवार का पालक होता है।

मित्र लोग भी उसका धनभोग करते हैं। वह तौल में पूर्णभारयुक्त होता है। स्त्री-पुत्रादि से संयुक्त, सकुशलराजा, वह मध्यदेश का रक्षक होकर सौ वर्ष तक जीवन जीता है।

हंस लक्षण

हंस योग में उत्पन्न पुरुष-हंस समान ध्वनि, सुमुख और उन्नत नासिका युक्त, कफप्रकृति, पिङ्गल नेत्र, रक्तनख, तीक्ष्णबुद्धि, पुष्ट कपोल, गोलमस्तक, सुन्दर पैर युक्त, उसके हाथ व पैर में मत्स्य-अङ्कुश-धनुष-शङ्ख-कमल-खाट सदृश रेखाचिह्न होते हैं। वह कामुक होता है, उसे स्त्री भोग से तृप्ति नहीं होती। उसके कद की लम्बाई ९६ अङ्गुल, वह जलक्रीड़ा प्रेमी, सुखी, गङ्गा-यमुना के मध्यवर्ती देश का पालक होकर सर्व सुख भोगते हुए सौ वर्ष जीता है।

मालव्य लक्षण

मालव्य योग में उत्पन्न पुरुष पतली कमर वाला, चन्द्र के समान कान्ति, सुगन्ध युक्त शरीर वाला, हल्का रक्तवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर व स्वच्छ दाँत, हाथी के जैसा गम्भीर स्वर, घुटने तक लम्बी बाहु, उसके मुख की लम्बाई १३ अंगुल और चौड़ाई १० अंगुल होती है। वह ७० वर्ष तक सिन्धु और मालवक्षेत्र का सुखपूर्वक पालन करने के बाद सुरलोक को जाता है।

शश लक्षण

शश योग में उत्पन्न पुरुष छोटे दाँत और छोटे मुख वाला, शरीर मध्यम, पतली कमर, सुन्दर जाँघ, बुद्धिमान्, वन और पर्वत आदि में विहार करने वाला, शत्रु के भेद का ज्ञाता, सेनानायक, ऊँचे दाँतों से युक्त, चञ्चल, धातुज्ञाता, स्त्री प्रेमी, परधन पाने वाला होता है। हाथ पैर में माला-वीणा-मृदङ्ग और शस्त्र चिह्न से युक्त वह सत्तर वर्ष तक सुखपूर्वक राज्य करते हुए अन्त में सुरधाम को जाता है।

पञ्चमहाभूत का प्रयोजन

अब पाँच प्रकार के महापुरुष योग कहने के अनन्तर अब आकाशादि पञ्चमहाभूत को प्रस्तुत करने की चेष्टा करते हैं। जिसके द्वारा अज्ञात जन्म लग्न वालों के लिए ग्रहों की वर्तमान दशा का ज्ञान किया जाता है।

अग्नि, भूमि, आकाश, जल और वायु के स्वामी क्रमशः भौमादि पाँचों ग्रह होते हैं। ग्रहों के बलानुसार ही उस ग्रहसम्बन्धी पञ्चमहाभूत का फल जानना चाहिये।

जातक प्रकृति

जिसके जन्मसमय में भौम बलवान हो वह अग्निप्रकृति का, बुध बलवान हो तो भूमि प्रकृति का, गुरु बली हो तो आकाश प्रकृति का, शुक्र बली हो तो जल प्रकृति का और शनि बलवान हो तो वातप्रकृति का होता है। यदि अधिक ग्रह बलवान रहें तो मिश्रित प्रकृति का होता है।

पंचभूत स्वभाव लक्षण

सूर्य बली हो तो अग्निस्वभाव और चन्द्र बली हो तो जलस्वभाव होता है। सभीग्रह अपनी-अपनी दशा में अपने महाभूत सम्बन्धि छाया (स्वभाव) का बोध कराते हैं।

अग्निस्वभाव का मनुष्य क्षुधार्त, चञ्चल, वीर, दुर्बल, विद्वान्, अधिक भोजन करने वाला, तीक्ष्ण, गौरवर्ण और स्वाभिमानी होता है।

भूमिस्वभाव का मनुष्य कपूर व कमल के समान गन्ध वाला, भोगी, स्थिरसुख से युक्त, बलयुक्त, क्षमाशील और सिंह की तरह गम्भीर स्वर वाला होता है।

आकाशतत्त्व स्वभाव का मनुष्य शब्दार्थ का ज्ञानी, नीतिनिपुण, प्रतिभायुक्त, ज्ञानी, खुले मुख और लम्बा कद वाला होता है।

जलतत्त्व स्वभाव का मनुष्य कान्तियुक्त, भारवाही, मधुरभाषी, राजा, बहु मित्र वर्ग युक्त और विद्वान् होता है।

वायुतत्त्व स्वभाव का पुरुष दानी, क्रोधी, गौरवर्ण, भ्रमणप्रिय, राजा, शत्रुजेता और दुर्बल शरीर वाला होता है।

पंचतत्त्वों की छाया

अग्नितत्त्व स्वभाव पुरुष का शरीर सुवर्णकान्ति का, शुभ्रदृष्टि, सब कार्य सिद्धि, शत्रुविजय और धनलाभ करने वाला होता है।

भूमितत्त्व स्वभाव का पुरुष (बुध की प्रबलता) सुन्दर सुगन्धि युक्त शरीर वाला तथा नख-केश-दन्त सब स्वच्छ, एवं धर्म-धन-सुख से युक्त होता है।

आकाश तत्त्व स्वभाव का पुरुष (बृहस्पति प्राबल्य) रहे तो बोलने में चतुर तथा गीत-वाद्यादि के श्रवण से सुख प्राप्त करने वाला होता है।

जलतत्त्व स्वभाव का पुरुष (शुक्र या चन्द्र की प्रबलता) शरीर से कोमल तथा स्वस्थ और विविध सुस्वाद भोजन से सुखी होता है।

वायुतत्त्व स्वभाव का पुरुष (शनि की प्राबलता) रहे तो मलिन शरीर, मूढ, दरिद्र, वातरोगी और शोक-सन्ताप से युक्त होता है।

इस प्रकार पञ्चतत्त्वों के जो फल होते हैं वे भौमादि ग्रहों के बली रहने पर ही पूर्णरूप से होते हैं, बलहीन रहें तो फलों में बलानुसार अल्पता समझना चाहिए।

ग्रह यदि नीच में, शत्रु या दुष्टराशि में रहे तो विपरीत फल समझें। ग्रह यदि बलहीन रहे तो उसका फल स्वप्न अथवा मन में प्राप्त होता है।

जिसका जन्मकाल अज्ञात हो उसका वर्तमान लक्षण से वर्तमान ग्रह की दशा समझें और दुष्टफल शान्त्यर्थ शान्तिग्रह की आराधना करें और करावें।

प्रयोजन

जिस समय जिस ग्रहतत्त्व का उदय हो, तदनुकूल कार्य से लाभ, अन्यथा हानि होती है। इसीलिए मुनियों ने ग्रहों के तत्त्वादिफल कहे हैं।

तत्त्व के उदय (ग्रह की दशा) अनुसार कार्य करें। अशुभ ग्रहों के लक्षण (अशुभ फल) में उनकी शान्ति करावें।

जैसे—अग्नितत्त्व (भौम की दशा) में जो फल कहे गये हैं वह लक्षित हो तो समझें कि इस समय भौम का समय है। तत्तद फलों की प्राप्ति से ग्रह की प्रसन्नता और फलहानि से क्रूरता समझकर उनकी शान्ति और तदनुकूल कार्य करना चाहिए।

जिस ग्रह की दशा में धन या सुखादि जो फल उक्त हैं—वह ग्रह यदि जन्मसमय या दशासमय में बलवान रहे तो जाग्रत् में प्रत्यक्ष फल, यदि निर्बल रहे तो स्वप्न में अथवा मानसिक चिन्ता में वह फल प्राप्त होता है।

सत्त्वादिगुणफल

अब सत्त्व, रज और तम; इन तीनों गुणों के अनुसार फल को बतलाते हैं—

जब सत्त्वगुण ग्रह की प्रबलता रहे उससमय उत्पन्न हुआ जातक सत्त्वगुणी और विद्वान होता है।

रजोगुण ग्रह के समय में रजोगुणी व बुद्धिमान् तथा तमोगुण ग्रह के समय में तमोगुणी व मूर्ख होता है।

गुण-साम्य हो अर्थात् तीनों गुणवाले ग्रहों का गुण रहे उससमय में उत्पन्न जातक मिश्रगुणी व मध्यम बुद्धि का होता है।

गुण के प्रकार

उत्तम-मध्यम-अधम और उदासीन चार प्रकार के गुण होते हैं। अतः चार तरह के प्राणी होते हैं। इनके गुणों को यहाँ प्रकट करने जा रहे हैं, जिसे प्राचीन (नारदादि) मुनियों ने कहा है।

उत्तम-मध्यम-अधम के लक्षण

सत्वगुण में इन्द्रिय और मन का संयमी, तपस्या, शौच, क्षमा, सरलता, सत्यवादिता, अलोभी व तपस्वी ये स्वभाव होते हैं।

रजोगुण में शूर, प्रतापी, धीर, चतुर, युद्ध में पीछे न हटने वाला तथा सज्जनों का रक्षक ये स्वभाव होते हैं।

तमोगुण में लोभी, मिथ्याभाषण, मूर्ख-आलसी और सेवाकार्य में पटु ये स्वभाव होते हैं।

उदासीन के लक्षण

गुणसाम्य में कृषिकार्य-वाणिज्य-पशुओं की सेवा में पटु तथा सत्य या असत्य भाषण करना ये स्वभाव होते हैं।

इस प्रकार लक्षणों देखकर ही उत्तम-मध्यम-अधम और उदासीन प्रवृत्ति के अनुसार समझना चाहिए तथा तदनुसार उसी कार्य में संलग्न करना चाहिये।

त्रिगुणों में से दो गुण प्रबल रहें तो उसकी प्रबलता अन्यथा (बल दो से अधिक नहीं रहे तो) गुणसाम्य होता है।

गुण प्रयोजन

स्वामी-सेवक एवं स्त्री पुरुष में यदि समान गुण (स्वभाव स्वरूप आदि) हों तो प्रेम-स्नेह होता है।

पूर्वोक्त चार प्रकार के मनुष्यों में यदि अधम-उदासीन, उदासीन-मध्यम और मध्यम-उत्तम का सम्बन्ध रहे तब भी परस्पर प्रेम एवं स्नेह होता है।

मेलापन विचार

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि यदि वर से कन्या और स्वामी से सेवक गुणों में कम रहें तो परस्पर प्रेम व स्नेह होता है। अन्यथा वर से कन्या और स्वामी से सेवक गुणों में अधिक रहें तो प्रेम व सौहार्द्र की हानि होती है।

गुणों से जातक भेद विचार—माता-पिता-जन्मसमय और सङ्गति (संसर्ग) ये उत्तम मध्यम आदि चार गुणों के कारण होते हैं, इनमें उत्तरोत्तर कारण बलवान् होता है।

अतः इससे यह सिद्ध होता है कि पिता के गुण बल १ माता में २, जन्मसमय में ३ और संसर्ग में ४ गुण बल होते हैं।

जन्मसमय में जिस गुण की प्राबलता रहती है, वही गुण जातक में होता है, अतः जन्म का समय परीक्षण करके ही फलादेश करना चाहिये।

त्रैलोक्य का ईश्वर अविनाशी-व्यापक-भगवान्स्वरूप काल ही समस्त चराच का उत्पादक, पालक और संहारक होता है।

कालस्वरूप भगवान् की त्रिगुणात्मिका शक्ति ही प्रकृति होती है। उ त्रिगुणात्मक शक्ति से विभाजित अव्यक्तकाल भी व्यक्त रूप में होते हैं।

भगवान् काल के गुणों के अनुसार क्रमशः उत्तम-मध्यम-उदासीन औ अधम ये चार अङ्ग होते हैं।

काल स्वरूप भगवान् के उत्तम अङ्ग से उत्तम जन्तु (चर वा अचर), मध्य से मध्यम, उदासीन से उदासीन और अधमाङ्ग से अधम की सृष्टि होती है।

उत्तम अङ्ग कालभगवान् का शिर, मध्यम हाथ व वक्ष, उदासीन दोनों जङ्घ और अधम अङ्ग दोनों पैर होते हैं।

इस प्रकार गुणभेदानुसार काल के भेद और चर-अचर में जातिगत भेद होता है

॥ इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत काल (ज्योतिष)शास्त्र चतुर्थ परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ॥४॥

॥ शुभमिति ॥

□□□

246

प्रवेश

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

[पञ्चम परिच्छेद]

सदाशिव उपासना ५२५-५६८

शिव और ॐकार ५२५

ॐ मंत्र का उपदेश ५२५

विषय	पृष्ठांक
ॐकार मंत्र जप का काल	५२६
लिङ्ग पूजन की विशेषता वर्णन	५२७
शिवलिङ्ग पूजन विधान	५२८
शिप प्राप्ति के उपाय	५२९
शिव की वैदिक पूजन विधि	५३२
पार्थिव पूजन पद्धति:	५३५
शिवलिंग का अभिषिञ्चन मन्त्र	५४१
शिवताण्डवस्तोत्रम्	५४२
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	५४३
शिवषडक्षरस्तोत्रम्	५४३
ॐकार का स्वरूप निरूपण	५४४
पञ्चकलात्मक ॐकार	५४५
पतितोद्धारक ॐकार	५४६
शिवभक्ति महिमा	५४७
नाम मन्त्र का उपेदश	५४८
शिवलिङ्ग पूजार्थ विधान	५४९
योग भेद वर्णन	५५४
योग मार्ग के विघ्नों का वर्णन	५५७
योगी के ऐश्वर्यों का वर्णन	५५८
योग योग्य स्थान आदि वर्णन	५५९
योग प्रयोग कथन	५६०
नैमित्तिक कर्म पालन	५६१
काम्य कर्म का फल	५६३
ध्यान की महिमा	५६५

पञ्चम परिच्छेद

रावणमेघनाद सम्वादात्मक

सदाशिव उपासना

शिव और ॐकार

मेघनाद के जिज्ञासावश रावण ने शिव उपासना की जिन पद्धतियों को बतलाया उन्हें उसी प्रकार यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

शिवजी ने कहा—इसकी सर्वप्रथम उत्पत्ति मेरे मुख से हुई, यह मेरा ही स्वरूप है। यह वाचक है और मैं वाच्य हूँ, यह मन्त्र मेरी मात्रा है। इसका प्रतिदिन स्मरण करना मेरे ही स्मरण करने के समान है। उत्तर की ओर वाले मुख से आकार, पश्चिम की ओर वाले मुख से इकार, दक्षिण की ओर वाले मुख से मकार, पूर्व की ओर मुख वाले विन्दु और मध्य के मुख से नाद उत्पन्न हुआ।

इस प्रकार यह ओंकार पाँच प्रकार से प्रकट हुआ। ये सब एकत्रित होकर ॐ इस आकार से परिवर्तित हो गया। यह सब नामरूपात्मक वेदस्वरूप दोनों कुल (स्त्री-पुरुष भेद) से शिव-शक्ति का बोधक है। इसी से पंचाक्षरात्मक ॐकार की उत्पत्ति हुई है, जो सम्पूर्ण संसार का बोध कराने वाला है। अकार से नकार, उकार से मकार, मकार से 'शि', विन्दु से 'वा', नाद से 'य' प्रकट हुआ है।

इसी पंचाक्षर से पाँच भेद वाली मातृकाएँ (स्वर) प्रकट हुई। उसी से शिरोमन्त्र तथा चार मुखों से त्रिपदा, गायत्री प्रकट हुई। उससे सभी वेद प्रकट हुए, तदनन्तर करोड़ों मन्त्र प्रकट हुए। उस मन्त्र से सिद्धि होती है, परन्तु पंचाक्षर मन्त्र से सब प्रकार की सिद्धियाँ होती है। इस मूल से भुक्ति तथा मुक्ति दोनों की सिद्ध हो जाती है। सभी प्रकार के मंत्रराज साक्षात् सुखभोगों को देने वाले होते हैं।

ॐ मंत्र का उपदेश

नन्दीकेश्वर ने कहा—तब उन दोनों के गुरु भगवान् शिवजी ने मन्त्र को गुप्त रखने के लिये एक वस्त्र को उनके सिर पर डालकर और उनके सिर पर अपना करकमल रखकर, पार्वती के साथ उत्तर की ओर मुख कर उन्हें उत्तम मन्त्र का उपदेश दिया। यन्त्र और तन्त्र की विधि के अनुसार तीन बार उस मन्त्र का उच्चारण करके उन्होंने उस परम मन्त्र को ग्रहण किया।

तदनन्तर उन दोनों शिष्यों ने दक्षिणा के निमित्त शिवजी के चरणों में आत्मसमर्पण कर दिया। और हाथ जोड़कर उन दोनों (ब्रह्मा और विष्णु) ने उनके सामने देवों के देव संसार के गुरु महादेव से ये वचन कहे।

ब्रह्मा और विष्णु ने कहा—हे निराकार रूप वाले और निराकार होने पर भी परम तेजस्वी आप के लिये नमस्कार है। समस्त संसार के स्वामी तथा सगुण रूप को धारण करने वाले आप के लिये नमस्कार है। ॐकार वाच्य तथा ओंकारात्मक लिङ्ग वाले आपके लिये नमस्कार है। सृष्टि के सर्वप्रथम कर्ता एवं पाँच मुख वाले आपको नमस्कार है।

पंच ब्रह्मस्वरूप, पंचकृत्य, आत्मास्वरूप, ब्रह्म, अनन्त गुण वाले तथा अनन्त शक्तियों से सम्पन्न आपके लिये नमस्कार है। सगुण तथा निर्गुण रूपों को धारण करने वाले शिव नामक परम गुरु के लिये नमस्कार है। इस प्रकार उक्त पदों द्वारा परम गुरु की स्तुति करके ब्रह्मा और विष्णु ने उन्हें प्रणाम किया।

शिवजी ने कहा—हे पुत्रों ! मैंने तुम्हारे उपकार के लिये सभी तत्त्वों का तुम दोनों को उपदेश दिया। और उनका मार्गदर्शन भी कराया। अत: तुम अलौकिक प्रणव (ॐ) मन्त्र का जप करो, यह साक्षात् मेरा स्वरूप कहा गया।

ॐकार मंत्र जप का काल

इस मन्त्र का जप करने से ज्ञान और भाग्य सुस्थिर होता है और भी कामनाएँ चिर स्थिर हो जाती हैं। अत: इसका जप आर्द्रा नक्षत्र से युक्त चतुर्दशी के दिन करना चाहिए। इससे उस जप का फल अक्षय हो जाता है। आर्द्रा में जब सूर्य हो उस समय इस मन्त्र का जप करने से एक करोड़ गुना फल होता है।

मृगशिरा तथा पुनर्वसु नक्षत्र आदि का भाग भी सदैव आर्द्रा नक्षत्र के समान ही पूजा, होम, तर्पण आदि में समझना चाहिए। प्रात:काल तथा प्रात:काल की सन्धि में इसके दर्शन का महाफल है। अर्धरात्रि में रहने वाली चतुर्दशी का ग्रहण करना चाहिए।

कुछ आचार्य प्रदोष-व्यापिनी चतुर्दशी का ग्रहण करते हैं और कोई आचार्य पर-तिथि से युक्त चतुर्दशी का ग्रहण करते हैं तथा बेर पूजन मेरे पूजन के समान ही है, किन्तु पूजन करने वालों के लिये बेर का पूजन से भी लिङ्ग का पूजन उत्तम है, विशेषकर मोक्षार्थी को लिङ्ग पूजन ही करना चाहिए।

लिङ्ग की पूजा ॐकार मन्त्र से और बेर की पूजा पंचाक्षर मन्त्र (नम: शिवाय) से करनी चाहिए। पूजोपयोगी द्रव्यों से उसकी प्रतिष्ठा स्वयं या पुरोहित आदि से करानी चाहिए। विविध उपचारों से उस लिङ्ग की पूजा करने से भक्त को मेरा पद सुलभ हो जाता है। इस प्रकार ब्रह्मा और विष्णु को उपदेश देकर शिवजी वही अन्तर्धान हो गये।

लिङ्ग पूजन की विशेषता वर्णन

ऋषियों ने कहा—लिङ्ग की प्रतिष्ठा किस प्रकार करनी चाहिए, उस लिङ्ग का क्या लक्षण है और उसका किस देश-काल में कैसे पूजा करनी चाहिए?

रावण ने कहा—मैं तुम्हारे लिये उसके विधान को कहता हूँ, तुम सावधान होकर सुनो, ग्रह-नक्षत्र आदि से अनुकूल शुभ समय में पुण्यदायक किसी तीर्थ के तट पर अपनी इच्छा के अनुसार मृत्तिकामय, पाषाणमय अथवा धातुमय लिङ्ग की ऐसे स्थान पर स्थापना करें, जहाँ उसका प्रतिदिन पूजन हो सके।

कल्प लक्षण (शिव-पूजाविधान) से युक्त होकर लिङ्ग की पूजा करने से उसका पूर्ण फल प्राप्त होता है, क्योंकि सभी लक्षणों से युक्त की गयी पूजा का फल तत्काल मिलता है।

चर लिङ्ग को आकार में छोटा और स्थिर लिङ्ग को आकार में बड़ा बनवाना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के लिङ्ग श्रेष्ठ होते हैं। ये सभी लक्षणों तथा सिंहासनों से युक्त हो, इस प्रकार शिवलिङ्ग की स्थापना करें।

चरलिङ्ग की स्थापना करने के लिय मंडलाकार अथवा त्रिकोणाकार पीठ को बनवाकर खट्वांग (डंडे पर पहनाये हुये शिर:कपाल स्वरूप ध्वजा) के समान बीच में सूक्ष्म लिङ्ग की पीठ (चौकी) महाफल को देने वाली होती है।

पहले मिट्टी, पत्थर तथा लोहा आदि धातु का शिवलिङ्ग बनवाये, जिस वस्तु का लिङ्ग हो उसी की पीठ (चौकी) बनवानी चाहिये। यह स्थावर लिङ्ग के निर्माण की विशेषता है। केवल बाण-लिङ्ग को छोड़कर शेष सभी लिङ्गों का निर्माण पीठ के साथ ही कराना चाहिए।

लिङ्ग की ऊचाँई उसके रचयिता से बारह अंगुल होना उत्तम कहा जाता है। यदि बारह अंगुल से कम ऊँचाई होती है, तो उसका फल भी कम होता है, बारह अंगुल से अधिक हो जाने से कोई दोष नहीं होता। कर्ता की अंगुली से एक अंगुल कम (ग्यारह अंगुल) हो, तो कोई हानि नहीं होती। यही विधान चर लिङ्ग का भी है।

सबसे पहले शिल्प विद्या में निपुण कारीगरों से देवगणों सहित विमान का निर्माण करना चाहिए। उसके भीतरी भाग में जो सुदृढ़ तथा दर्पण जैसा साफ-सुथरा हो, उसे नवरत्नों से अलंकृत करे, पूर्व और पश्चिम दिशा की ओर दो दरवाजे बनवायें।

नीलम, वैदूर्य (लहसुनियाँ), श्याम तथा मरकत मणि, मुक्ता, प्रवाल, गोमेद, हीरा ये नवरत्न हैं। जहाँ लिङ्ग की स्थापना करनी हो उसके बीच में इन रत्नों को रखें।

फिर 'सद्योजातं' आदि वैदिक मन्त्रों से लिङ्ग के पाँचों स्थानों (चारों ओर तथा बीच) में क्रमशः पूजन करके अग्नि में अनेक प्रकार से घी की आहुति देकर पुनः सगुण स्वरूप मेरी, गुरु तथा आचार्य की द्रव्य आदि से पूजा करके और भोजन आदि से बन्धु-बान्धवों का सम्मान करके याचकों के लिये जड़ (मकान, बगीचा आदि) और अजड़ (गाय, घोड़ा आदि) का दान देना चाहिये।

तदनन्तर प्रयत्न पूर्वक स्थावर, जंगम आदि सभी जीवों को सन्तुष्ट करके सुवर्ण तथा नवरत्नों से भरे हुए उस गर्त में 'सद्योजातं' इत्यादि वेद-मन्त्रों का उच्चारण करके परम शुभकारक महादेव का ध्यान करके और महामन्त्र ॐकार तथा नाद की घोषणा कर उसमें लिङ्ग को रखकर उसे उसके आसन के साथ मिला दें।

उसके बाद लिङ्ग के साथ उस पीठ को जोड़ने वाले द्रव्य से दृढ़ता पूर्वक जोड़ दें। इसी प्रकार बेर लिङ्ग की भी वहाँ स्थापना करनी चाहिये। पंचाक्षर मन्त्र से उत्सव के लिये उस बेर को बाहर रखें। बेर को गुरुओं तथा महात्माओं से ग्रहण करना चाहिए।

इस प्रकार लिङ्ग अथवा बेर की पूजा शिवजी के पद को देने वाली है; फिर भी स्थावर एवं जंगम भेद से ये दो प्रकार के कहे गये हैं।

तरु, गुल्म आदि के लिङ्ग को स्थावर कहते हैं। कृमि, कीट आदि को जंगम लिङ्ग कहते हैं। स्थावर की सेवा पानी से सींचना आदि है और उसका तर्पण अन्न आदि से तृप्त करना है। उस सुख की प्राप्ति इस शिव पूजा से होती है, ऐसा विद्वानों को समझना चाहिए।

सभी पीठ प्रकृतिमय होते हैं और सभी लिङ्ग ज्ञान स्वरूप होते हैं, जिस प्रकार शिवजी सदैव पार्वती को अपनी गोद में लेकर स्थिर रहते हैं, उसी प्रकार यह लिङ्ग सदैव पीठ को धारण किये धारण रहता है।

इस प्रकार लिङ्ग की विधिवत् स्थापना करके विविध प्रकार के उपचारों से उसकी यथाशक्ति नित्य पूजा करें और उसके ऊपर ध्वजा आदि उपहारों को भी समर्पित करें। साक्षात् शिवजी के पद को देने वाली लिङ्ग की इस प्रकार स्थापना करें, अथवा शिवलिङ्ग की स्थापना कर उसकी षोडश उपचारों से यथाविधि पूजा करें। इससे शिवपद की प्राप्ति हो जाती है।

शिवलिङ्ग पूजन विधान

पूजा का क्रम इस प्रकार है—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आवाहन सम्बन्धी आचमन, स्नान, अभ्यंग (उद्वर्तन), वस्त्र, गन्ध, धूप, दीप आदि को अर्पित करें।

निराजन, ताम्बूल, नमस्कार, विसर्जन अथवा अर्घ्य आदि को समर्पित करके नैवेद्य समर्पण करने तक यथाविधि कर्म करें। तदनन्तर अभिषेक, नैवेद्य, नमस्कार और तर्पण इन्हें यथाशक्ति प्रतिदिन करें; ये शिवपद को प्रदान करते हैं।

मनुष्य द्वारा स्थापित, कृषियों द्वारा स्थापित, स्वयं प्रकट हुए अथवा नये स्थापित लिङ्गों को यथोचित्त उपचारों द्वारा यथायोग्य पूजा-सामग्री समर्पित करने से भी कुछ ना कुछ फल की प्राप्ति होती ही है।

प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करने से भी शिवपद की प्राप्ति होती है। प्रतिदिन नियम से शिव-दर्शन करने मात्र से भी शिव पद की प्राप्ति होती है।

पीसी हुई मिट्टी में मिलाये गये गाय के गोबर से, कनेर के फूल से, अनेक प्रकार के फलों से, गुड़ से, मकवन से, भस्म से, विविध अन्नों से अपनी इच्छा के अनुसार यत्नपूर्वक लिङ्ग का निर्माण करके अन्त में उसकी पूजा करें।

कुछ विद्वान अंगूठे में ही शिव जी की पूजा करते हैं, क्योंकि लिङ्ग पूजा जहाँ भी करें इसका कोई निषेध नहीं है।

शिव प्राप्ति के उपाय

भगवान् शिव अपने भक्त के प्रयत्न के अनुसार सर्वत्र फल देते हैं, अथवा लिङ्ग का दान या उसका मूल्य श्रद्धा पूर्वक शिवभक्त को देने से शिवपद की प्राप्ति हो जाती है।

अथवा प्रतिदिन दस हजार ॐकार का जाप करें। अथवा दोनों सन्ध्या कालों में एक-एक हजार ॐकार का जप करने से शिव पद की प्राप्ति होती है। जप के समय मकारान्त 'ओम्' मन को शुद्ध करता है। समाधिकाल में मानसिक जप तथा सभी समय उपांशु (जो दूसरे को सुनायी न पड़े) जप करना चाहिये।

विन्दु नाद युक्त प्रणव (ॐ) मन्त्र सभी जपों में समान होता है। अथवा श्रद्धा-भक्ति से प्रतिदिन दस हजार पंचाक्षर मन्त्र (नमः शिवाय) का जप करें। अथवा दोनों सन्ध्या कालों में एक-एक हजार पंचाक्षर मन्त्र का जप करें। इससे शिव पद की प्राप्ति हो जाती है।

ब्राह्मणों को पंचाक्षर मन्त्र के आदि में ॐ लगाना चाहिए। और फल प्राप्ति के लिये इस मन्त्र को विधिपूर्वक गुरु से ग्रहण करना चाहिए। गुरु को घटनास्थल तथा मातृकान्यास करने वाला, मन्त्र दीक्षा को जानने वाला, सत्यवक्ता एवं आत्मज्ञानी होना चाहिए।

ब्राह्मणों को जप करते समय नमः शब्द पहले लगाना चाहिये और दूसरे अधिकार प्राप्त वर्णों को नमः अन्त में लगाना चाहिए। यथा—ॐ नमः शिवाय और ॐ नमः शिवाय।

कुछ विद्वान् स्त्रियों को भी नमः का प्रयोग अन्त में करना चाहिए; ऐसा कहते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि ब्राह्मणों की स्त्रियाँ भी नमः शब्द का प्रयोग पहले ही करें।

इस प्रकार पाँच करोड़ जप करके मनुष्य सदाशिव के समान हो जाता है। एक, दो, तीन, चार करोड़ जप करके भक्त ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के पद को प्राप्त हो जाता है अथवा एक-एक अक्षर का अलग अलग एक-एक लाख जप करें।

अथवा मन्त्र के जितने अक्षर हों उतने लाख जप करने से भक्त को शिवपद की प्राप्ति होती है। अथवा हजार दिन में दस लाख करे। प्रतिदिन मन्त्र का जप करके ब्राह्मण-भोजन कराने से इष्टकाल की सिद्धि होती है। प्रतिदिन प्रातःकाल ही एक हजार आठ गायत्री का जप करे।

ब्राह्मण को चाहिए कि वह शिव पद को प्रदान करने वाले वेद मन्त्रों को तथा सूक्तों का प्रतिदिन नियमपूर्वक जप करें। एक दशार्णमन्त्र को सौ से अधिक जितना हो सके उतना जप करें, सौ से कम ना जपे; भले ही वह हजार तथा दस हजार हो, किन्तु सौ से कम ना हो।

वेद का पारायण करने से भी शिव पद की प्राप्ति होती है, अन्य अनेक मन्त्रों को उनकी अक्षर-संख्या के अनुसार उतने लाख बार जपे। एकाक्षर मन्त्रों का एक करोड़ जप करें, उसके बाद भक्तिपूर्वक होकर एक हजार परम मन्त्र ॐकार का जप करें।

इस प्रकार यथाशक्ति जप करने से क्रमशः शिवपद की प्राप्ति होती है, अपने मन को प्रिय लगने वाले एक मन्त्र का जप मरण-पर्यन्त करते रहना चाहिये। ॐकार मन्त्र का एक हजार जप करने से शिवजी की आज्ञा से सभी प्रकार के मनोरथ की प्राप्ति हो जाती है।

फूल लगाना, बगीचा लगाना, उनके मन्दिर को साफ करना आदि कार्य शिवजी के लिये अथवा शिवजी के उपयोग के लिये करने वाला व्यक्ति शिवपद को प्राप्त करता है। प्रतिदिन भक्तिपूर्वक शिवालय में निवास करें। शिवभक्ति जड़ तथा चेतन सभी को सुख भोग तथा मुक्ति प्रदान करती है।

इसलिये शिव क्षेत्र में मृत्यु-पर्यन्त निवास करना चाहिए। मनुष्य द्वारा स्थापित शिव लिङ्ग के चारों ओर सौ हाथ तक का क्षेत्र पूर्णदायक होता है। ऋषियों द्वारा स्थापित शिवलिङ्ग के चारों ओर हजार हाथ तक का क्षेत्र पूर्णतादायक होता है।

देवताओं द्वारा स्थापित लिङ्ग के चारों ओर हजार अरत्नि (बद्धमुष्टि हाथ) स्थान पवित्र होता है। जिस भूमि पर शिवलिङ्ग की स्वयं उत्पत्ति हुई हो वहाँ हजार

धनुष (चार हजार हाथ) तक का स्थान पवित्र होता है। इस प्रकार के पूर्णक्षेत्रों में स्थित बावड़ी, कुआँ, पुष्कर (सरोवर) आदि जलाशयों को शिवगङ्गा समझना चाहिए। ऐसा शिवजी का वचन होता है।

उस क्षेत्र में स्नान, दान तथा जप करने से पावन को शिवलोक की प्रप्ति होती है। मनुष्य को शिव-क्षेत्र में ही मृत्यु पर्यन्त निवास करना चाहिए। मरने के बाद क्षेत्र पिण्डदाह, दशाह, सपिण्डीकरण श्राद्ध, द्वादशा, मासिक कर्म, सांवत्सरिक कर्म (वार्षिक श्राद्ध) जो कुछ शिव क्षेत्र में किया जाता है। उससे वह मानव सभी पापों से मुक्त होकर शीघ्र ही शिव पद को प्राप्त कर लेता है।

अथवा सात या पाँच रात्रि, तीन रात्रि, एक रात्रि शिव क्षेत्र में निवास करने से शिवपद की प्राप्ति होती है। ब्राह्मण आदि वर्ण अपने कर्तव्य एवं आचरण के अनुसार फल को प्राप्त करते हैं। वर्णोद्धार तथा भक्ति से उस फल की वृद्धि होती है।

अत: मानव जो भी अपनी इच्छा से कार्य करता है, उसका शीघ्र ही फल प्राप्त कर लेता है। यदि मानव निष्काम भावना से शिवभक्ति करता है, तो वह साक्षात् शिवपद को प्राप्त कर लेता है।

प्रात:, मध्याह्न, सांयकाल जो भक्त प्रतिदिन शिव की आराधना करता है उसमें प्रात:काल की उपासना नित्य विधि का अंग है। मध्याह्न काल की उपासना कामनाओं की सिद्धि के लिये होती है। और सन्ध्याकाल की उपासना शक्तिदायिनी होती है।

इसी प्रकार रात्रि की पूजा का भी होता है। रात के दोपहर बीत जाने पर निषिद्ध काल (आधी रात) होती है, उस समय की शिवपूजा विशेष फल को देने वाली होती है।

इस प्रकार शिव पूजा करने वाला पुरुष विशेष फल का भागी होता है, विशेषकर के कलियुग में फलसिद्धि कर्म से होती है। उपर वर्णन किये गये किसी भी अधिकार भेद से उपासना करता हुआ सदाचारी तथा पापभीरु पुरुष जैसा कहा है, उस प्रकार के फल को प्राप्त कर लेता है।

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी ! अब आप हमसे भूलोक के पुण्य क्षेत्रों का वर्णन कीजिये, जिनका आश्रय लेकर सभी स्त्री तथा पुरुष शिवपद को प्राप्त कर सके। हे सूत! आप उत्तम योगियों में श्रेष्ठ हैं, शिवक्षेत्रों तथा शैवागमों (शिव प्रतिपादक शास्त्रों) के ज्ञाता हैं।

सूतजी ने कहा—आप श्रद्धा से सभी शिव क्षेत्रों तथा शैवागमों के सम्बन्ध में सुनिये, जिसका वर्णन हम आगे के उचित स्थलों पर करेंगे।

शिव की वैदिक पूजन विधि

सूतजी ने आगे कहा—अब हम वेद के ज्ञाता शिव भक्तों की पार्थिव पूजा का वर्णन करते हैं जो वैदिक मार्ग से ही मुक्ति तथा भुक्ति को प्रदान करती है।

पूर्वोक्त सूत्र द्वारा कही गयी विधि से स्नान करके पहले विधिपूर्वक सन्ध्या वन्दन तथा ब्रह्म यज्ञ करके उसके बाद देव, ऋषि, एवं पितरों का तपर्ण करें।

भलीभाँति अपने नित्य कर्म को समाप्त करके वह भक्त शिवजी का स्मरण कर भस्म एवं रुद्राक्ष को धारण कर सम्पूर्ण फल की सिद्धि के लिये वेद में कही गयी विधि द्वारा परम भक्ति युक्त होकर सर्वश्रेष्ठ पार्थिव लिङ्ग की पूजा करें।

नदी या तालाब के तट पर पर्वत में, वन में, शिव मन्दिर में अथवा किसी भी पवित्र स्थान पर पार्थिव लिङ्ग की पूजा की जाती है। हे ब्राह्मणों ! शुद्ध स्थान से यत्नपूर्वक मिट्टी को लाकर सावधान होकर पार्थिव लिङ्ग की रचना करें।

ब्राह्मणों के लिये सफेद मिट्टी, क्षत्रियों के लिये लाल मिट्टी, वैश्यों के लिये पीली मिट्टी शूद्रों के लिये काली मिट्टी या जो मिल जाये यत्न से उस-उस वर्ण की मिट्टी को लेकर लिङ्ग का निर्माण करे। फिर उसे अत्यन्त पवित्र स्थान में रखें। जल से उसे शुद्ध करके धीरे-धीरे उसकी पिण्डी बनायें। तदनन्तर वेद विधि से उससे पार्थिव लिङ्ग बनायें।

उसके बाद भक्तिपूर्वक भक्ति तथा मुक्ति प्राप्त करने के लिये उस लिङ्ग की स्थापना करें। उसके पूजा की विधि को मैं कहता हूँ—आप लोग विधिवत् सुनों! उसमें 'नमः शिवाय' इस मन्त्र से पूजा के द्रव्यों का प्रोक्षण करें और 'भूरसि' इस मन्त्र से क्षेत्र की सिद्ध करें।

'आपोऽस्मान्' इस मन्त्र से जल को शुद्ध करें। 'नमस्ते रुद्र' इस मन्त्र से फाटिका बन्द करें। 'नमः शम्भवाय' इस मन्त्र से क्षेत्र शुद्धि करें। 'नमः शिवाय' मन्त्र से पंचामृत का भी प्रोक्षण करें। 'नमो नीलग्रीवाय' मन्त्र से भक्तिमान पुरुष शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा करें। भक्तिपूर्वक 'एतत्ते रुद्राय' इस वैदिक मन्त्र को पढ़कर शिवजी को रमणीय आसन अर्पण करें।

'मानो महान्त' इस मन्त्र से उस लिङ्ग पर शिव का आवाहन करें। 'यातेरुद्र' इस मन्त्र से शिवलिङ्ग को आसन पर रखें। 'यामिषुम्' इस मन्त्र से शिवजी का न्यास करे, फिर 'अध्यवोचत्' इस मन्त्र से भक्तिपूर्वक अधिवासन करे। 'असौ जीव' इस मन्त्र से देवता का न्यास करे और 'असौ योवसर्पति' इस मन्त्र से उपसर्पण करे। 'नमोऽस्तु नीलग्रीवाय' इस मन्त्र से पाद्य जल चढ़ायें।

रुद्रगायत्री से अर्घ्य दें और 'त्र्यम्बकम्' इस मन्त्र से आचमन करायें।

'पयःपृथिव्याम्' इस मन्त्र से शिवजी को दूध से स्नान कराये तथा 'दधिक्राव्ण' इससे दधिस्नान कराये। 'घृतंयाव' इस मन्त्र से घृतस्नान और 'मधुव्वाता', 'मधुनक्तम्', 'मधुमान्न' इन तीन मन्त्रों से मधु और खाँड से स्नान कराये, यह सब मिलाकर पञ्चामृत होता है।

अथवा पाद्यमन्त्रों तथा पंचामृत से स्नान कराये। 'मानस्तोके' इस मन्त्र से भक्तिपूर्वक कटिबन्धन करे। 'नमो धृष्णवे' इस मन्त्र से उत्तरीय वस्त्र को धारण कराये। 'यातेहेति' इन चार मन्त्रों से भक्तिपूर्वक शिवजी के लिये शिवभक्त वस्त्र समर्पण करे।

'नमःश्वभ्यः' इस ऋचा से भक्त भक्तिपूर्व गंध चढ़ाये और 'नमस्तक्षभ्यः' इस मन्त्र से अक्षत चढ़ाये। 'नमः पार्याय' इस मन्त्र से फूल चढ़ाये। 'नमः पर्णाय' इस मन्त्र से बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये।

'नमः कपर्दिने' इस मन्त्र से धूप देना चाहिये। 'नम आशवे' इस मन्त्र से दीप अर्पण करे।

'नमो ज्येष्ठाय' मन्त्र से उत्तम नैवेद्य का अर्पण करे। 'त्र्यम्बकम्' इस मन्त्र से पुनः आचमन कराये। 'इमा रुद्राय' इस मन्त्र से शिवजी को फल चढ़ाये।

'नमो व्रज्याय' इस मन्त्र से सभी पदार्थ शिव को अर्पित कर दे। 'मनो महान्त' तथा 'मानस्तोके' इन दो मन्त्रों से रुद्रदेवों की अक्षत चढ़ाकर पूजा करे। 'हिरण्यगर्भ' इस ऋचा से दक्षिणा चढ़ाये।

'देवस्यत्वा' इस मन्त्र से पण्डित अभिषेक करे। दीपमन्त्र द्वारा शिव का नीराजन करे। 'इमा रुद्राय' आदि तीन ऋचाओं से शिवजी को पुष्पांजलि समर्पित करे। 'मानो महान्त' मन्त्र से विद्वान् प्रदक्षिणा करे।

'मानस्तोके' इस मन्त्र से साष्टाङ्ग प्रणाम करे। 'एष ते' इस मन्त्र से शिवमुद्रा का प्रदर्शन करे। 'यतो यतः' मन्त्र से अभयमुद्रा और 'त्र्यम्बकम्' मन्त्र से ज्ञानमुद्रा का प्रदर्शन करे।

'नमःसेनान्ये' इस मन्त्र से महामुद्रा का प्रदर्शन करे। 'नमो गोभ्यः' मन्त्र से 'धेनुमुद्रा' को दिखलाये। शिवभक्त को चाहिये कि वह पाँच मुद्राओं का प्रदर्शन कर शिवमन्त्र का जप करे और वेदविद् शतरुद्रिय मन्त्र का जप करे।

उसके बाद वेदविद् पंचांग का पाठ करे, तदनन्तर 'देवागातु' मन्त्र से शिवजी का विसर्जन मरे। इस प्रकार विस्तार से शिवपूजा की वैदिक विधि कह दी गयी है।

अब उसी विधि को संक्षेप में सुनो—'सद्योजातम्' इस मन्त्र से मिट्टी का ग्रहण करें, 'वामदेवाय' इस शिवमन्त्र से उसमें जल डाले। 'अघोर' इस मन्त्र से पार्थिवलिङ्ग का निर्माण करे।

'तत्पुरुषाय' मन्त्र से विधिपूर्वक आवाहन करे। 'ईशानः सर्वविद्यानाम्' मन्त्र से वेदी में शिवलिङ्ग को स्थापित करें और सभी विधि को विद्वान् संक्षेप से करे।

पंचाक्षर मन्त्र से अथवा गुरु द्वारा प्राप्त मन्त्र से विद्वान् षोडशोपचार से विधिवत् पूजन करे। संसारस्वरूप तथा संसार के नाशक महादेव का हम ध्यान करते हैं। उग्र स्वरूप तथा उग्र स्वभाव वालों के नाशक चन्द्रशेखर शिव के लिये नमस्कार है।

सुधी पुरुष इस मन्त्र से भी भक्तिपूर्वक शिव का पूजन करे। भक्ति से तथा भ्रम को छोड़कर जो भक्त शिवजी की पूजा करता है, उसे शिवजी फल को देते हैं। इस प्रकार आदरपूर्वक वैदिक विधि से पूजा का वर्णन कर दिया है।

हे ब्राह्मणों! अब साधारण रूप से दूसरी विधि का भी वर्णन किया जा रहा है। शिवनामों के द्वारा पार्थिवलिङ्ग की जो समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली पूजा कही गयी है।

हे मुनिवरो! उसे आप लोग मुझसे सुनिये। हर, महेश्वर, शंभु, शूलपाणि, पिनाकधृक्, शिव, पशुपति तथा महादेव इस क्रम से मिट्टी का संग्रह कर तदंतर उसमें जल मिलाये, फिर उससे पार्थिवलिङ्ग तैयार कर प्रतिष्ठा, आहवान, स्नान, पूजा, क्षमा, प्रार्थना तथा विसर्जन करें। ॐकार पूर्वक चतुर्थ्यन्त शिवजी के नामों द्वारा क्रम से भक्तिपूर्वक पूजन की सभी क्रियाओं को करना चाहिए।

भलीभाँति षडङ्ग विधि से स्नान करके तब षडक्षर मन्त्र से शिवजी का ध्यान करे। कैलाश रूपी सिंहासन के ऊपर विराजमान भक्तों द्वारा आनन्द पूर्वक पूजे जाते हुये, भक्तों के अनन्त दुःखों को दूर करने के लिये दावानल के समान, पार्वती द्वारा आलिङ्गन किये गये विश्वभूषण शिवजी का मैं ध्यान करता हूँ।

मैं उस महेश का प्रतिदिन ध्यान करता हूँ जो चाँदी के पर्वत के सदृश सुन्दर, चन्द्रमा को मुकुट के रूप में धारण किये हुये, रत्नों के समान उज्ज्वल शरीर वाले, परशु (फरसा) मृग, वरदान तथा अभय को हाथ में लिये, प्रसन्न मुख वाले पद्मासन पर बैठे हुए, चारों ओर देवगणों से सेवित, व्याघ्र चर्म को धारण किये, संसार के आदि देव, संसार के उत्पत्ति कारण, संसार के समस्त भयों का विनाश करने वाले, पाँच मुखों तथा तीन नेत्र वाले हैं।

इस प्रकार ध्यान करके उत्तम पार्थिव लिङ्ग का पूजन कर, गुरु द्वारा प्राप्त पंचाक्षर मन्त्र का यथाविधि जप करना चाहिए। अनेक प्रकार की स्तुतियों से देवेश को प्रणाम करता हुआ उनकी स्तुति करे। हे ब्राह्मणों ! अनेक प्रकार से शतरुद्री का पाठ करे। तदंतर हाथ में अक्षत एवं फूल लेकर भक्तिपूर्वक इन मन्त्रों से शिवजी की प्रार्थना करे।

हे शिवजी! मैं आपका हूँ, आपका गुणगान ही मेरे जीवन का आधार है, मेरा मन सदा आप पर लगा रहता है। हे कृपानिधे! हे भूतनाथ! ऐसा जानकर मुझ पर प्रसन्न हो। ज्ञान से अथवा अज्ञान से जो मैंने जप, पूजा आदि की है, हे शंकर! वह सब आपकी कृपा से सफल हो। मैं आज महापापी हूँ और आप सबकों पवित्र करने वालों में महान् हैं।

हे गौरीश! ऐसा जानकर जैसा आप चाहे वैसा करे। वेदों, पुराणों, सिद्धान्तों तथा अनेक ऋषियों ने भी ठीक से नहीं जाना। हे सदाशिव! महादेव! मैं आपको कैसे जान सकता हूँ।

हे महेश्वर! जैसे तैसे सब प्रकार से मैं आपका हूँ। हे महेश्वर! आप मेरी रक्षा कीजिये। इस प्रकार शिवजी के ऊपर अक्षत और फूलों को चढ़ा करके मुनिवर! विधिपूर्वक शिवजी को साष्टांग प्रणाम करे।

पार्थिव पूजन पद्धतिः

प्रातःकाल अर्थात् ब्राह्ममुहूर्त अर्थात् **उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका। अधमा अरुणोपेता प्राप्ता सन्धिप्रकीर्तिता।।** में शौच, मुखमार्जनादि से निवृत्त होकर स्वच्छ जल से नहाकर पवित्र वस्त्र को धारण करें तथा प्रातः सन्ध्योपासनादि के पश्चात् उत्तर दिशा में निम्नलिखित श्लोक के द्वारा पृथ्वी की पाद वन्दना कर उपर्युक्त कार्य के लिये अतीव शुद्ध मृत्तिका को ग्रहण करे।

ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके त्वां प्रगृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

मृदाहरणमन्त्रः—**ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः।।**

हे पृथ्वी! वराह, कृष्ण, शतबाहु आदि अवतरणों के द्वारा तुम उद्धारित की गई, इसलिए धन, पुत्रादि की कामना से मैं तुम्हारे रज को ग्रहण करता हूँ।

'ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः' इस मन्त्र को मन में पढ़ते हुए मिट्टी लाकर पवित्र स्थान में रखे तथा नीचे लिखे मन्त्र के द्वारा उसमें से कुछ मिट्टी चारों तरफ छिड़क दे तथा उत्तराभिमुख अपना आसन बिछावे।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

हे पृथ्वी! समस्त जीव तुम्हारे द्वारा ही धारण किये गये हैं और महाविष्णु ने तुमको कूर्म वराहादिरूपों से धारण किया है। तस्मात् हे देवि ! मेरे आसन की संशुद्धि करो। बाद हाथ में तिल्ली (काल) और जीव लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ता हुआ अपनी रक्षा के लिए अपने चारों ओर फेंक दे।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

भगवान् शंकर की आज्ञा से पृथ्वी पर रहने वाले सभी अनिष्टकारी जीव यहाँ से दूर हट जायँ। इसके बाद स्वस्थ चित्त से नीचे लिखे मन्त्र से मृत्तिका विचूर्ण करे।

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः।

मैं यह जानता हूँ कि आप क्षण में ही उत्पन्न (प्रकट) हो सकते हो। इसलिये सद्योजात हर क्षण पैदा होनेवाल आपको नमस्कार है। हे भवोद्भव, आपको अनेकानेक नमस्कार है।

'ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः' इस मन्त्र से मृत्तिका को चूर्ण कर अधोलिखित मन्त्र द्वारा उसे भींगोये।

ॐ वामदेवाय नमः ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठायः रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमः बलविकरणाय नमः बलाय नमः बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।

अखिल विश्व में सबसे बड़े तथा श्रेष्ठ होने के कारण वामदेव तथा ब्रह्माण्ड में रुद्ररूप (भयंकर) आप ही का है। आप ही काल के भी काल महाकाल तथा सभी प्रकार की कला तथा बल का विकरण करने वाले हैं, इसलिये आपको ही हे रुद्र ! सदा नमस्कार है। अत्रत् का सम्पूर्ण बल आप ही में अवस्थित है या संसार की सभी शक्तियों का प्रमथन आप ही के द्वारा हुआ करता है एवं समस्त प्राणियों के दमन (नवाने) तथा मनोन्मन (मानसिक विकास) की शक्ति आप ही के द्वारा प्राप्त हुआ करती है, अर्थात् प्राणी के उत्थान-अधःपतन का होना आप ही की कृपा पर अवलम्बित है। इसलिये हे सर्वशक्तिमान् शिव ! आपको सर्वदा नमस्कार है।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। इति संयोजनम्।

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् इति पिण्डीकरणम्।

उग्र (भयंकर), उग्रतर तथा उग्रतम आदि विश्व के सभी के सभी रूप आपके रुद्ररूप से उत्पन्न हुए हैं, इसलिये सबके आदि कारण आपके रुद्ररूप को मेरा अनेकों बार नमस्कार है इस मन्त्र से मृत्तिका को साने।

उसी एकमात्र पुरुष को सब कुछ जानकर देवों के देव महादेव में अपनी बुद्धि अवस्थित कर केवल भगवान् रुद्र को ही मैं प्रेरित करता हूँ। इस मन्त्र से मृत्तिका को पिण्डीकरण (गोला) करे। अब नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सुन्दर, शिवलिंग का निर्माण करे।

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

विश्व के सभी विद्याओं के स्वामी तथा चराचर सभी जीवों के एक मात्र अधीश्वर तथा ब्रह्मादि देवताओं के प्रभु तथा उनके एकमात्र आराध्य दैवत् पूर्ण ब्रह्म रूप आप ही हैं, इसलिए सदा (सर्वदा) मेरा (शिव) कल्याण करते रहें। शिवलिंग बनाकर बायें हाथ, वेदी, ताँबे के बर्तन अथवा बिल्व पत्र पर ही अक्षत पुष्पयुक्त शिवलिंग की स्थापना इस मन्त्र से करें—

ॐ हौं हीं जूं सः शूलपाणये नमः। इति स्थापनम्।

लिंग की स्थापना करने के पश्चात् अधोलिखित संकल्प करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुरित्यादि देशकालादिकं स्मृत्वा, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं शुभपुण्यफलप्राप्तिकामनया पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टशान्त्यर्थं तथा च सदाशिवप्रीत्यर्थे पार्थिवपूजनमहं करिष्ये।

ॐ हौं हीं जूं सः पिनाकपाणये नमः।

इसके बाद '**ॐ हौं हीं जूं सः पिनाकपाणये नमः**' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अधोलिखित श्लोकों द्वारा आवाहन (स्थापन) करे।

कैलासशिखराद्रम्यात्सामागच्छ मम प्रभो। पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्तफलदो भव।। देवदेवं महादेवं सर्वलोकहितेरतम्। यथोक्तरूपणिं देवं शम्भुमावाहयाम्यहम्। सदाशिवेह स्थितो भव।

हे प्रभो ! अति रमणीक कैलास शिखर से शीघ्र यहाँ पधार कर मेरे द्वारा किये हुए जप तथा पूजा को स्वीकार करके अभीष्ट फलों की संसिद्धि के लिए वर देने का अनुग्रह करो। हे देवों के देव महादेव ! सम्पूर्ण जीव मात्र के कल्याण में सदैव तल्लीन रहने वाले भगवान् शंकर के तथाकथित स्वरूप का मैं हृदय से आवाहन करता हूँ इसलिए यहाँ पधार कर यहीं निवास कीजिए।

आवाहन करने के पश्चात् प्राणप्रतिष्ठापन के लिए हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र से विनियोग करे।

प्राणप्रतिष्ठा-मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुः सामच्छन्दांसि

प्राणाख्यदेवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं पार्थिवलिङ्गप्राणप्रतिष्ठापनार्थे जपे विनियोगः।

प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र के ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ये तीन ऋषि तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद ये तीन ही छन्द हैं, उसका ॐ बीज, ह्रीं शक्ति एवं क्रौं कीलक है, ऐसे महामन्त्र को पार्थिव लिंग के प्राणप्रतिष्ठापन के लिए विनियोजित करता हूँ।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः शिवस्य प्राणाः शिवस्य जीवाः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, शिव इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण।

अब हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र को कहते हुए पार्थिव लिंग के पर छिड़कता रहे। **'ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः।'**

इन ग्यारह बीज मन्त्रों की शक्ति से शिव का जीव, शिव का प्राण तथा शिव की समस्त ज्ञान-इन्द्रियाँ व कर्मेन्द्रियाँ इस पार्थिव लिंग में प्रविष्ट होकर सुखपूर्वक चिरकाल तक अधिष्ठित (अधिवासित) रहें। हे शिव ! यहाँ आकर तथा इस लिंग में निवास कर मेरी पूजा ग्रहण करो। फिर हाथ में पुष्प लेकर इस मन्त्र से प्राण संस्थापन करे।

अस्मिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजां करोम्यहम्।
तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् संस्थितिं कुरु।।

हे जगत् के स्वामी सदाशिव, जब तक मैं आपका पूजन करता हूँ, तब तक अतीव प्रेम से इस पार्थिव लिंग में ही आप निवास करो। इसके बाद हाथ में अक्षत, फूल ग्रहण कर एकाग्र चित्त से भगवान् रुद्र का इस तरह ध्यान करे।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पो-ज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिवसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

चाँदी के पहाड़ की कान्ति के सदृश सुन्दर देह धारण करने के साथ ही जिसने अपने मस्तक पर अतिरम्य चन्द्रखण्ड को भी धारण किये हैं एवं जिसका समस्त शरीर रत्नादिकों की कान्ति से प्रज्वलित हो रहे हैं तथा जिसने फरसा, मृग, वरद व अभय सुन्दर मुद्रा से पद्मासीन होकर चतुर्दिक देववृन्दों द्वारा प्रशंसित हो रहे हैं ऐसे विश्व के आदि कारण तथा समस्त भयों से दूर करने वाले, तीन नेत्रधारी, पाँच मुख वाले सदाशिवा अकाण्ड ब्रह्माण्ड द्वारा अहर्निश वन्द्य हो रहे हैं ऐसे

माहेश्वर रूप का शुद्ध हृदय से मैं ध्यान करता हूँ। तत्पश्चात् पार्थिवलिंग का पूजन अधोलिखित मन्त्रों से करे।

ॐ शिवाय नमः, इति पाद्यं समर्पयामि।

इस मन्त्र से पादप्रक्षालनार्थ जल समर्पित करता हूँ।

ॐ महेश्वराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

इस मन्त्र से अर्घ्य समर्पित करता हूँ।

ॐ शम्भवेः नमः, अर्घ्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

इस मन्त्र से अर्घ्योपरान्त आचमन के लिए जल समर्पित करता हूँ।

अब आगे लिखे मन्त्र के द्वारा पञ्चामृत स्नान करावे।

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

मेरे द्वारा पञ्चामृत (दूध, दही, घी, मधु, शर्करा) स्नान के निमित्त लाया गया है, हे हर ! इसे ग्रहण करें।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। इति शुद्धोदकस्नानम्।

शम्भु तथा मयोभव ऐसे अमोघ कल्याणकारी शिवपदों में मेरा नमस्कार है। तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा वस्त्र, यज्ञोपवीतादि को समर्पित करे।

१-ॐ ज्येष्ठाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।
२-ॐ श्रेष्ठाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
३-ॐ कपर्दिने नमः, पुनराचमनीयम्।
४-ॐ कालाय नमः, गन्धं समर्पयामि।
५-ॐ कलविकरणाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
६-ॐ बलविकरणाय नमः, विल्वपत्र-धत्तूरादि-पुष्पाणि समर्पयामि।
७-ॐ बलाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।
८-ॐ बलप्रमथनाय नमः, दीपं दर्शयामि।
९-ॐ नीलकण्ठाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।
१०-ॐ भवाय नमः, ऋतुकालोद्भूतफलानि समर्पयामि।
११-ॐ मनोन्मनाय नमः, आचमनं समर्पयामि।
१२-ॐ शम्भवे नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।
१३-ॐ त्रिलोकेशाय नमः, अभिषेकं समर्पयामि।
१४-ॐ शितिकठाय नमः, नीराजनं समर्पयामि।

१५-ॐ शिवप्रियाय नमः, षाड्गुण्यार्थे द्रव्य-दक्षिणा समर्पयामि।

१६-ॐ शम्भवे नमः, अन्ते नमस्करोमि।

पूजन करने के पश्चात् पुष्पाञ्जलि समर्पण करे।

हर विश्वाऽखिलाधार निराधार निराश्रय।
पुष्पाञ्जलिमिमां शम्भो गृहाण वरदो भव।।
ॐ पार्थिवेश्वराय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

अखिल विश्व के आधार आप ही हैं, किन्तु स्वयं बिना किसी आधार तथा आश्रय के सर्वत्र व्याप्त हो इसलिये हे हर ! पुष्पांजलि ग्रहण कर वरदान दीजिये। **'ॐ पार्थिवेश्वराय नमः'** इस मन्त्र से पुष्पांजलि पार्थिवलिंग के ऊपर चढ़ावे।

प्रार्थना

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं देहि महेश्वर।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहित मे।।

हे माहेश्वर ! रूप, विजय, सौभाग्य, पुत्र, पौत्र, धन, धान्यादि सभी इच्छाओं को सफलीभूत करते रहो ऐसी प्रार्थना शम्भु शिव से हाथ जोड़कर विनय भाव से करने के पश्चात् यथाशक्ति अधोलिखित मूल मन्त्र का जप करे।

ॐ नमः शिवाय। अथवा **ॐ हौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः, प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा। इदं मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतं सहस्त्रमधिकं जपेत्।**

उपरोक्त किसी एक महामन्त्र को कम-से-कम १०८ बार जप कर दे।

गुह्यातिगुह्यगोप्यत्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।

आप गुप्त से गुप्त परम गोपनीय हैं। मेरे द्वारा किये जप को अंगीकृत करें। हे महेश्वर ! आपकी कृपा से मेरे सभी अभीष्ट सिद्ध हो जायें।

अथ शिवलिङ्गस्याष्टदिक् आवरणपूजाप्रकारः-

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः, पूर्वस्याम्।
ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, ईशान्याम्।
ॐ रुद्राय तेजोमूर्तये नमः, उत्तरस्याम्।
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः, पश्चिमायाम्।
ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः, नैऋत्याम्।
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः, दक्षिणस्याम्।
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः, आग्नेय्याम्।
ॐ नमः ओङ्काररूपाय वेदरूपाय ते नमः।।

अलिङ्गलिङ्गरूपाय विश्वरूपाय ते नमः।
नमो मोक्षपदे नित्यं तुभ्यं नादात्मने तथा।
नमः शब्दस्वरूपाय रूपातीताय ते नमः।।
त्वं त्राता सर्वलोकानां त्वमेव जगेतां पिता।
त्वं भ्राता त्वं सुहन्मित्रं त्वं प्रियः प्रियरूपधृक्।।
त्वं गुरुस्त्वं गतिः साक्षात् त्वं देवं च पितामहः।
नमस्ते भगवन् रुद्र भास्करामिततेजसे।।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर शिवाऽव्यय।
अनेन पूजनेन त्वं वाञ्छितार्थप्रदो भव।।
दण्डवत्प्रणतो भूत्वा स्तुत्वा चैव विशेषतः।
एकाग्रः प्रणतो भूत्वा मन्त्रमेतदुदीरयेत्।।
अङ्गहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर।
पूजितोऽसि महादेव तत्क्षमस्वाऽम्बिकापते।।
अन्यथासक्तचित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो।
मनोवाक्कायदुष्टेन पूजितोऽसि त्रिलोचन।।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव दासे कृत्वा दयां मयि।
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायण ।।

इति प्रार्थनां कृत्वा रुद्रीभिः ऋग्यजुःसामाऽथर्वभिश्च स्तोत्रैः स्तुत्वा यथाशक्ति-पञ्चाक्षरमन्त्रस्य जपं कुर्यात्।

शिवलिंग का अभिषिञ्चन मन्त्र

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसामभिषिञ्चामि।

उपरोक्त मन्त्र द्वारा शिवलिंग को अभिसिक्त करें। तदुपरान्त तिलक धारण कर अधोलिखित मन्त्र से शिवलिंग की परिक्रमा करें।

वृषश्चण्डं वृषश्चैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम्।
चण्डश्च सोमसूत्रश्च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम्।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

इन श्लोकों के द्वारा क्षमा-याचना करे।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजनं नैव जानामि तत्क्षमस्व सदा हर।।

बिना मन्त्र, बिना क्रिया व बिना भक्तिभाव के हे महेश्वर ! जो कुछ पूजा मैंने आपकी की है उसे दया कर हे मेरे देव ! पूर्ण संगता प्रदान करो।

इसके साथ ही आवाहन, पूजन, विसर्जन आदि मैं कुछ भी नहीं जानता इसलिये हे हर ! उसे कृपा कर क्षमा करें। इसके उपरान्त हाथ में फूल लेकर शिवलिंग का इन श्लोकों से विसर्जन करे।

उग्रो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।
ईशानः सर्वविद्यानामोङ्कारो भुवनेश्वर।
कैलासं गच्छ देवेश पुनरागमनाय च।।
अनेन पार्थिववेश्वरपूजनेन श्रीसदाशिवो देवता प्रसन्नोऽस्तु।

शिवताण्डवस्तोत्रम्

।।श्रीगणेशाय नमः।।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिच्चिदम्बरेमनो विनोदमेतु वस्तुनि।।
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि।।
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणीविधूसरांघ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः।।
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसम्पदे शिरो जटालमस्तु नः।।
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल द्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम।।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।।
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा विडम्बिकण्ठकन्धरा रुचिप्रबन्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।

अगर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमंतकान्तकं भजे।।
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमस्फुर द्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः।।
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठ रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामही महेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे।।
कदा निलिंपनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वस न्विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनाललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।।
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम्।।
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।।

।।इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

।।श्रीगणेशाय नमः।।

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मंदाकिनीसलिलचंदनचर्चिताय नंदीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकंठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।
वासिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनींद्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।।इति शिवपंचाक्षरस्तोत्रं।।

शिवषडक्षरस्तोत्रम्

।।श्रीगेणशाय नमः।।

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।

नमंति ऋषयो देवा नमंत्यप्सरसां गणाः।
नरा नमंति देवेशं नकाराय नमो नमः।।
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।।
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।।इति शिवषडक्षरस्तोत्रं।।

ॐकार का स्वरूप निरूपण

एक बार कैलास पर स्थित शिवजी ने मात पार्वती के प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार देते हैं—हे देवी! जो तुम मुझसे पूछ रही हो, उसे मैं कहता हूँ। उसके सुनने मात्र से जीव साक्षात् शिव हो जाता है। प्रणव के अर्थ का वास्तविक ज्ञान ही मेरा ज्ञान है। वही मन्त्र सभी विद्याओं का बीज (मूल कारण) है। वह वट बीज की भाँति अतिसूक्ष्म है और महत्त्वपूर्ण अर्थ वाला है। वही वेदों का आदि है। वही वेदों का सार है तथा वही विशेषकर मेरा स्वरूप है।

मैं तीनों गुणों से परे रहने वाला सर्वज्ञ, सर्वकृत प्रभु हूँ। सर्वत्र गमन करने वाला होने पर भी ॐ इस एक अक्षर वाले मन्त्र में स्थित शिव हूँ। यह जो कुछ वस्तु है, वह सब गुण मेरे और प्रधान के संयोग से समष्टि (संक्षेप), व्यष्टि (विराट्) रूप से प्रणव का अर्थ ही है। इसलिये वह एक अक्षर ब्रह्म ही सभी अर्थों का साधक है।

इसलिये शिवजी ॐ से ही सम्पूर्ण संसार की रचना करते हैं। शिव या प्रणव, या शिव एक ही हैं; क्योंकि वाच्य और वाचक में कुछ भेद नहीं होता है। इसलिये मुझे ब्रह्मर्षि एकाक्षर देव कहते हैं, क्योंकि विद्वान् वाच्य-वाचक में एकता स्वीकार करते हैं। इसलिये प्रणव को ही सबका कारण जानों। मुमुक्षु (मोक्ष को चाहने वाले योगी) मुझे निर्विकारी, निर्गुण, परमेश्वर समझते हैं।

हे देवेशी! सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ इस प्रणव को काशी में प्राणियों को मुक्ति देने

के लिये सुनता हूँ। हे अम्बिका! अब मैं पहले प्रणवोद्धार का वर्णन करता हूँ। जिसको जानने से परम सिद्धि प्राप्त होती है।

पहले अकार के आश्रित निवृत कला का उद्धार करे। उकार में इन्धन कला का, मकार में काल कला का, नाद में दण्ड और बिन्दु में ईश्वर कला का उद्धार करे।

इस प्रकार पाँच वर्ण रूप प्रणव का उद्धार होता है। यह तीन मात्रा तथा बिन्दु नादात्मा जपने वाले को मुक्ति प्रदान करता है। ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त सभी प्राणियों का यह प्राण है। अतएव इसे प्रणव कहते हैं। इसका आदिवर्ण अकार है, उकार, अन्त में मकार तथा नाद है। इसके संयोग से ॐ बनता है।

हे मुनिवर! यह जल की भाँति दक्षिण-उत्तर में स्थित है। मध्य में मकार है,. इस प्रकार ॐकार की स्थिति है। अकार, उकार, मकार—एक क्रम से तीन मात्रा है। उसके बाद आधी मात्रा और है।

हे महेशानी! यह आधी मात्रा बिन्दु नाद स्वरूप वाली है। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसे ज्ञानी लोग जानते हैं। हे प्रिया! 'ईशानः सर्वविद्यानाम्' इस प्रकार वेद ने कहा है। ये वेद मुझसे उत्पन्न होते हैं, यह 'वेदों ने सत्य कहा है।

इसलिये मैं वेदों का आदि हूँ और प्रणव मेरा वाचक है। मेरा वाचक होने के कारण यह प्रणव भी वेदों का आदि कहा गया है। अकार इसका महान् बीज है। इसी के रजोगुण से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति होती है।

उकार इसकी प्रकृति (योनि) है। सत्वगुण वाले हरि (विष्णु) पालयिता है। मकार पुरुष बीज है, तमोगुण युक्त हर (शिवजी) इसके संहारक हैं। इस प्रकार बिन्दु साक्षात् महेश्वर देव हैं, जो तीरोभाव के कर्ता कहे गये हैं। नाद सदाशिव कहे गये हैं, जो सब पर दया करते हैं। नादरूप पर से भी परशिव का ध्यान मस्तिष्क में करना चाहिए।

वे ही सर्वज्ञ, सर्वकर्ता, सर्वेश, निर्मल, अव्यय (अविनाशी), अनिदृश्य, परब्रह्म तथा सत्-असत् से परे हैं। अकार आदि सभी स्वरों तथा व्यञ्जनों में क्रम से उत्तरोत्तर अधिक व्याप्त है। ऊपर से निचला वर्ण अधिक व्याप्य है। ऐसा सर्वत्र विचार करे।

पञ्चकलात्मक ॐकार

अकारादि पाँच वर्णों में सद्यस् से ईशान पर्यन्त जो पाँच ब्रह्म हैं, वे क्रम से मेरी ही मूर्तियाँ हैं। सद्यस् से उत्पन्न अकार रूप शिव में आठ कलायें हैं। उकार में वामदेव रूप से तेरह कलायें कही गयी हैं।

अघोर रूपीणि आठ कलायें मकार में स्थित हैं। बिन्दु में पुरुषों के देखने

योग्य चार कलायें हैं। नाद में ईशान रूप पाँच कलायें हैं। इन छः पदार्थों की एकता के अनुसन्धान से प्रणव की पंचात्मकता कही गयी है।

मन्त्र, यन्त्र, देवता, प्रपञ्च, गुरु, शिष्य—इन छः पदार्थों के अर्थों को हे प्रिया! तुम सुनो! पहले कहा गया है कि प्रणव मन्त्र पाँच वर्णों का समूह है, वही यन्त्र रूप धारण करता है।

अब उसके मण्डल का क्रम कहते हैं। यन्त्र देवता रूप हैं, देवता विश्व रूप हैं, गुरु विश्व रूप हैं और शिष्य गुरु का ही शरीर है। यह सब ॐकार रूप ही है और सब ब्रह्मा ही हैं, वेद ऐसा कहता है।

वाच्य-वाचक सम्बन्ध से यही अर्थ निकलता है। आधार, मणिपूर, हृदय, विशुद्धि चक्र, आज्ञाचक्र, शक्ति, शान्ति इस क्रम से ये स्थान कहे हैं।

हे देवेशी! शान्ति से अतीत को ही परमात्मा कहते हैं। इसका अधिकारी वही है, जिसे दृढ वैराग्य हो। हे देवि! मैं ही इसका विषय हूँ, उपासक जीव-ब्रह्म की एक भावना करे। इसका विषय तो कह दिया है, अब इसका सम्बन्ध सुनो।

जीवात्मा और प्रणव को मेरे (परमब्रह्म के) साथ एकता होती है। वाच्य-वाचक (जीव-ब्रह्म) की एकता का बोधक प्रणव है, यही सम्बन्ध है।

पतितोद्धारक ॐकार

रावण ने कहा—ब्राह्मण वध करने वाला, मद्य पीने वाला, चोरी करने वाला, गुरु स्त्री के साथ गमन करने वाला, माता, पिता, वीर अथवा भ्रूण को मारने वाला, विना मन्त्र के भक्ति से परम कारण शिव की पूजा करके उक्त सभी पापों से बारह वर्षों में क्रमशः मुक्त हो जाता है।

इसलिये सब प्रयत्नों से पतित भी भक्ति से शिवपूजन करे। भक्त ही मुक्त होता है, दूसरा नहीं। भले ही वह जितेन्द्रिय, भिक्षाहारी क्यों न हो। महापाप करने पर भी भक्ति से पंचाक्षर मन्त्र द्वारा यदि वह देवेश की पूजा करता है, तो पाप से मुक्त हो जाता है।

हवा तथा पानी का सेवन कर जो व्रत से शरीर को कृष कर देते हैं, वे इन व्रतों से शिवलोक नहीं पहुँचते। भक्तिपूर्वक पंचाक्षर मन्त्र से जो एक बार भी शिवपूजन करता है, वह भी शिवमन्त्र के प्रभाव से शिव स्थान को जाता है।

इसलिये सभी तप, यज्ञ, सर्वस्वदक्षिणा—ये शिवमूर्ति पूजन की करोड़वें अंश के बराबर भी नहीं है। बद्ध हो या मुक्त हो, पंचाक्षर मंत्र से पूजा करने वाला भक्त मुक्त हो जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

अरुद्र या सरुद्र सूक्त से जो शिवपूजन करता है वह मनुष्य मूर्ख हो या पतित हो, एक ही बार में मुक्त हो जाता है।

शिवभक्ति महिमा

षड्अक्षर मन्त्र से या सूक्त मन्त्र से जो भक्त क्रोध को जीतकर शिवपूजन करता है उसने यदि गुरु मन्त्र नहीं लिया है, तो भी वह गुरु मन्त्र लिये के समान है। हलाँकि इनमें गुरु मन्त्र प्राप्त व्यक्ति ही श्रेष्ठ है। वह ब्रह्माङ्ग के अथवा हंस के साथ मुक्त हो जाता है।

इसलिये प्रतिदिन भक्तिपूर्वक शिव का पूजन सूक्त मन्त्र से एक समय, दो समय या तीन समय अथवा प्रतिदिन करे। जो महादेव का पूजन करते हैं, उन्हें महेश्वर समझना चाहिए।

आत्म सहायक ज्ञान से जिन्होंने भगवान् शिव की पूजा नहीं की वह इस दु:ख सागर संसार में घूमते रहते हैं। जो दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर शिव की पूजा नहीं करता, वह मोक्ष का अधिकारी नहीं होता।

अत: उसका जन्म व्यर्थ है। दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर जो शिवपूजन करते हैं, उन्हीं का जन्म सफल है। वे नरोत्तम कृतार्थ हैं, जो शिवभक्ति के लिये तत्पर हैं और सदाशिव को प्रणाम करते हैं।

जो सदा शिव स्मरण करते हैं, वे दु:ख के भागी नहीं होते। उनके मनोहर भवन होते हैं तथा उनकी उत्तम आभूषणों वाली स्त्रियाँ होती हैं। शिव पूजन के फल से तृप्ति पर्यन्त धन मिलता है।

जो स्वर्ग के भोगों और वहाँ का राज्य चाहते हैं, वे सदा शिव के चरण कमल की भक्ति चाहते हैं। सौभाग्य, मनोहर रूप, सत्व, त्याग, दयालु स्वभाव, शूरता, संसार में प्रसिद्धि शिव पूजक को मिलती है।

अत: सब कुछ छोड़कर शिव में मन लगाये, जो अपना भला चाहे, वह नित्य शिव पूजन करे। यौवन तथा जीवन शीघ्र चला जाता है। शीघ्र रोग आता है। अत: शिव का पूजन करें। जब तक बुढ़ापा तथा मृत्यु नहीं आती, जब तक इन्द्रियों में विकलता नहीं आती, तब तक शिव पूजन करे।

तीनों लोकों में शिव पूजन से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। ऐसा जानकर प्रयत्न से सदा शिव की पूजा करनी चाहिए। द्वारयाग, बगीचा लगाना, बच्चों को भोजन कराना, घर में पूजन करने पर प्रतिदिन उत्सव करे।

हविष्य का निवेदन करने के बाद स्वयं या सेवक महल में रहने वाले परिजनों को प्रसाद बाँटे और बाजों के साथ शिव मन्दिर में जाय। जल, फूल, धूप, दीप चढ़ायें। महापीठ में उत्तर मुख करके बलिदान करे।

जो अन्न आदि शिव को अर्पित किया है उसका शेष अंश शिव के गढ़ चण्ड को अर्पित करें। विधिवत् हवन करके पूजा को समाप्त करे। इस प्रयोग को करके यथा सम्भव मंत्र का जप करे।

शिव शासन के अनुसार प्रतिदिन उत्सव करे। लाल कमल से शोभित बड़े धातुपात्र में दिव्य पशुपत अस्त्र को मिलाकर उसमें आवाहन करके उसकी पूजा करे। फिर उस पात्र को सुशोभित कर ब्राह्मण के सिर पर रखकर चमकती हुई लाठी धारण करने वाले, अस्त्रन्यासयुक्त शरीर से भवन के परिजनों के सामने मंगल ध्वनि तथा नाच गाना, दीप जलाना, ध्वजा फहराना आदि करें।

धैर्यपूर्वक तीन प्रदक्षिणा करे। महापीठ के चारों ओर तीन प्रदक्षिणा करके फिर यजमान हाथ जोड़कर द्वार पर स्थित होकर पूर्वोक्त आठ फूलों को भीतर ले जाकर अस्त्र का विसर्जन करे। पहले कहे गये क्रम से प्रदक्षिणा आदि करके आठ फूलों को लेकर पूजा को समाप्त करे।

नाम मन्त्र का उपेदश

रावण ने कहा—अब मैं नाममन्त्र, शिवसाधक मन्त्र तथा संस्कार मन्त्र के माहात्म्य को कहता हूँ, जैसा मैंने पहले कहा था मण्डल में महादेव जी की पूजा कर, कलश स्थापना कर और हवन कर पगड़ी रहित शिष्य को वहाँ मण्डल में बैठाये।

पहले की भाँति सब विधान करके सौ आहुति देकर पूर्णाहुति होम करके कलश जल से मूल मन्त्र द्वारा उत्तम गुरु शिष्य का अभिषेक करके पहले की भाँति अग्नि प्रज्वलित कर, अभिषेक करके उसे उत्तम मन्त्र की दीक्षा दे।

उसमें विद्या की उपदेश पर्यन्त सब विस्तार से करके उस उपयुक्त जल से शिष्य के हाथ में शिव सम्बन्धी विद्या को समर्पित करे और उससे कहे—तुम्हारे इस लोक तथा परलोक में यह विद्या सभी प्रकार की सिद्धियों को देगी और यही शिवजी की कृपा से महामन्त्र होगा।

यह कहकर महादेव की पूजा करके गुरु शिव से आज्ञा पाकर साधन तथा शिवयोग का उपदेश साधक को करे। गुरु के इस सन्देश को सुनकर मन्त्र साधक विनियोग के साथ मन्त्र साधन करे। मूल मन्त्र के इस साधन को सामने करने के कारण इस विनियोग कर्म को पुरश्चरण कहते हैं।

मोक्ष की इच्छा करने वाले को अधिक मन्त्र साधन करना चाहिए। यदि करे तो उसे इस लोक तथा परलोक में सुख मिलता है।

अच्छे दिन, शुभ देश, दोषरहित कला में दाँतों, नाखूनों को साफ कर, स्नान करके प्रातःकृत्स करके गन्ध, माला, आभूषण आदि से अपने को अलंकृत

करके, सफेद पगड़ी, दुपट्टा को धारण कर, मन्दिर में, घर में या और किसी मनोहर स्थान में सुखपूर्वक आसन लगाकर शिवशास्त्र में कथित मार्ग में अपने शरीर को शिवमय करके नकुलीश्वर देव-देवेश की पूजा कर उन्हें खीर चढ़ाकर आराधना को समाप्त कर, महादेव जी को प्रणाम कर, उनसे आज्ञा पाकर करोड़ बार, उसके आधी, फिर उसके आधी बार शिव का बीस लाख या दस लाख जप करे।

फिर हिंसा रहित, क्षमायुक्त, शान्त तथा सदा दानी हो, खीर या नमक रहित अल्प भोजन करे। खीर के न मिलने पर फल मूल का भोजन करे। शिवजी ने इन पदार्थों को उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कहा है। चरु, सत्तु या यावक का भोजन करे।

शाक, दूध, दही, घी, मूल, फल, जल इन भक्ष्य भोज्यों को मन्त्र से अभिमंत्रित करके इस साधन में विशेष करके मौन होकर भोजन करे आठ सौ मन्त्र पढ़कर नदी या नद पवित्र जल से व्रती स्नान या प्रोक्षण करे।

प्रतिदिन तर्पण करे। शिवाग्नि में सात, पाँच, तीन बार घी की आहुति देकर हवन करे।

इस प्रकार जो शैवसाधक भक्ति से शिव की पूजा करता है, उसे इस लोक, परलोक में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। अथवा प्रतिदिन एकाग्र मन से मन्त्र जपे। हजार मन्त्र पढ़े बिना भोजन नहीं करे। तभी मन्त्र की सिद्धि होती है। उसके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं, कोई अशुभ नहीं।

इस लोक में विद्या, लक्ष्मी, सुख पाकर वह मुक्ति भी पाता है। नित्य, नैमित्तिक साधन तथा विनियोग में जल, मन्त्र तथा भस्म स्नान करे और मन्त्र का जप करे। पवित्र होकर शिखा बाँधकर हाथ में पवित्री लेकर त्रिपुण्ड्र लगाकर तथा रुद्राक्ष धारण कर पंचाक्षरी विद्या का जप करे।

शिवलिङ्ग पूजार्थ विधान

रावण ने कहा—शिवशास्त्र में शिवजी ने विद्या से जो पूजा विधान कहा था, उसकी संक्षिप्त मैं व्याख्या करता हूँ। अग्नि कार्य के अन्त तक किये जाने वाले कार्य को अभ्यन्तर अंग कहते हैं। उसे करके वहिर्याग करे या न करे।

उसमें द्रव्यों को मन से विचार कर शुद्ध कर विधिपूर्वक गणेश का ध्यान कर उनका पूजन करे। दक्षिण में नन्दीश उत्तर में सुयश की आराधना कर विद्वान् मन से आसन की कल्पना करे, आराधना आदि से युक्त होकर सिंहयोग, पद्मासन तथा निर्मल आदि आसन में बैठे, जो तीनों तत्त्वों से विराजमान् हो उसके ऊपर साम्बशिव का ध्यान करे।

जो सभी अवयवों से सुन्दर, सबके मन को हरने वाले तथा सभी लक्षणों

से युक्त हैं। सबसे श्रेष्ठ, सभी आभूषणों से सुशोभित, लाल मुख, हाथ, पैर वाले, कुन्द चन्द्र के सदृश मन्द हास्य युक्त सुख वाले, शुद्ध स्फटिक के समान वर्ण वाले, खिले कमल के सदृश नेत्रों वाले, चार भुजाओं, उदार अंगों से विभूषित, सुन्दर चन्द्र कला को धारण करने वाले, वरदायक अभय हाथ वाले, भृगटंक को धारण करने वाले, साँपों की माला तथा कंकण को धारण करने वाले, नीलकण्ठ को शिव को सभी उपमाओं से रहित, सेवक कुटुम्ब सहित, जिनके वाम भाग में महेश्वरी हैं, उनका ध्यान करे।

खिले हुये कमल के समान कान्ति युक्त, बड़े चौड़े नेत्रों वाली, पूर्ण चन्द्र के सदृश जिनके मुख की कान्ति है, काले घुँघराले बालों वाली, नीलकमल दल के समान वर्ण वाली, अर्धचन्द्र जिनके मुकुट में हैं, गोल, घने, ऊँचे स्निग्ध तथा पुष्ट स्तनों वाली, कृषोदरी, विपुल नितम्बा, पीले तथा सूक्ष्म वस्त्र को धारण की हुयी, सभी आभूषणों से भूषित, मस्तक के तिलक से उज्ज्वल, जूड़े में लगाये हुये फूलों से सुशोभित, समस्त गुणों से युक्त, लज्जा से कुछ झुके हुये मुख वाली, स्वर्ण कमल को हाथ में धारण की हुयी, दूसरे हाथ दण्ड की भाँति रखकर महासन में बैठी हुयी संसार बन्धन को काटने वाली साक्षात् सच्चिदानन्द वाली को शतशत नमन है।

इस प्रकार शुभ आसन पर बैठे हुये शिव-शिवा का ध्यान करे और सभी उपचारों से भक्ति के साथ उन्हें भाव पुष्प अर्पित करे अथवा विभु की दूसरी मूर्त्ति बनाकर सदा शिव नामक माहेश्वरी मूर्ति की कल्पना करे अथवा षड्विंशक नामक या श्रीकण्ठ नामक मूर्त्ति की कल्पना करे।

अपने शरीर में मन्त्र न्यास आदि रूप मूर्तिमान् शिव को जो सत् असत् से परे हैं उन्हें बाहरी क्रम से ध्यान कर बुद्धिपूर्वक उनकी पूजा करे।

फिर समिधा तथा घी आदि से नाभि में होम करे। दोनों भौं के बीच में शुद्ध दीप की लौ के सदृश शिव का ध्यान करे।

इस प्रकार अपने शरीर में स्वतन्त्र रूप में, ध्यानमय योग में, उनका ध्यान करें। हवन पर्यन्त सर्वत्र समान ही विधि है। इस चिन्तामय आराधन क्रम को समाप्त कर लिङ्ग में, स्थण्डिल में अथवा अग्नि में देव की पूजा करे।

रावण ने कहा—शुद्धि के लिये पूजा स्थान का मूल मन्त्र से प्रोक्षण करे तथा उसमें गन्ध, चन्दन, पुष्प और जल डाले। अस्त्र से विघ्नों को हटाकर, कवच से ढककर फिर उस अस्त्र को दिशाओं में रखकर पूजा स्थान की कल्पना करे।

प्रोक्षण आदि से उस भूमि को शुद्ध कर वहाँ कुश बिछा दे। सभी पात्रों को

शुद्ध कर द्रव्यों को भी शुद्ध करे। प्रोक्षणी, अर्घ्यपात्र, पाद्यपात्र तथा आचमनी—इन चार पात्रों को धोकर, पोछकर, देखकर उनमें शुद्ध जल डाले।

जो प्राप्त हो वे सभी पवित्र द्रव्य उनमें डाले। रत्न, चाँदी, सोना, गन्ध, पुष्प, अक्षत, फल, पंचपल्लव, कुश तथा अनेक बार पूर्ण द्रव्य को डाले। स्नान तथा पीने के जल में विशेषकर सुगन्धित द्रव्य डाले। और शीतल, मनोहर फूल आदि भी डाले।

पाद्य जल में खस, चन्दन डाले। जायफल, कंकोल, कपूर, केवड़ा, तमाल इन्हें चूर्ण कर आचमन के योग्य जल में डाले। इलायची, कपूर तथा चन्दन सभी जलपात्रों में डाले। कुश के अग्र भाग, अक्षत, जौ, धान, तिल, घी, सरसों, फूल, भस्म—इन्हें अर्घ्यपात्र में डाले।

कुश, फूल, जौ, धान, केवड़ा, तमाल—इन्हें तथा भस्म को प्रोक्षणी पात्र में डाले। सर्वत्र मन्त्र न्यास कर बाहर से वर्म, कवच से लपेट कर फिर अस्त्र से सुरक्षित कर धेनु मुद्रा का प्रदर्शन करे।

सभी पूजा द्रव्यों का प्रोक्षणी पात्र के जल से प्रोक्षण कर के फिर मूल मन्त्र से उनका विधिवत् शोधन करे। पात्रों के न मिलने पर सभी कर्मों में एक प्रोक्षणी से उत्तम साधक सामान्य अर्घ्य दे। फिर विनायक देव को भक्ष्य भोज्य आदि द्वारा क्रम से पूजा विधि के अनुसार द्वार के दक्षिण में पूजे। फिर अन्तःपुर के स्वामी सुवर्णपर्वत की भाँति समस्त आभूषणों से युक्त नन्दीश्वर की भली-भाँति पूजा करे।

जो बालचन्द्र को मुकुट में धारण किये हैं। सौम्य, त्रिनेत्र, चतुर्भुज, दीप्त त्रिशूल, मृगीटंक तथा तेजस्वी नेत्रों वाले प्रभु हैं। चन्द्र मण्डल के समान मुख, हरिवस्त्र, उत्तर द्वार के समीप मरुत की कन्या सुयशा, जो पार्वती जी के पाद युगल को दबाने में लगी हैं, की पूजा करके परमेष्ठी के भवन में प्रवेश करे।

उक्त द्रव्यों से लिङ्ग पूजा करके निर्माल्य को हटाकर फूल को धोकर उसकी शुद्धि के लिये सिर पर रखे। हाथ में फूल लेकर शिष्य की शुद्धि के लिये यथाशक्ति मन्त्र का जप करे। ईशान में चण्ड देव की आराधना कर निर्माल्य से हिला दे। फिर आराधना आदि क्रम से वहाँ आसन रखे।

आधार शक्ति, कल्याणी तथा श्यामा का भूमि में ध्यान करे। उसके आगे फन उठाये हुये पाँच फणों युक्त सफेद वर्ण के कुण्डलाकार बैठे अनन्त को, जो मानों आकाश को चाट रहा हो उसके ऊपर भद्रासन, सिंह के सदृश चार पैरों वाले धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य तथा पद इनको आग्नेय आदि कोणों में सफेद, लाल, पीला, श्याम—इन वर्णों से और अधर्म आदि पूर्व से उत्तर तक क्रम से इनके शरीरावयवों से राजावर्तमणि के रूप में ध्यान करे।

इनके ऊपर आच्छादन के रूप में निर्मल पद्मासन की भावना करे। उस कमल के आठ पत्र अणिमा आदि आठ गुणों वाले हैं। वाम आदि शक्तियाँ उसके केशर हैं। रुद्र वाम आदि शक्तियों से युक्त हैं। वे मनोन्मनी आदि शक्तियाँ ही बीज कही गयी है। ऊपर कर्णिका वैराग्य है, शिवात्मक ज्ञान ही उसकी नाल है।

शिव धर्मात्म रूपी उसका कन्ध है। कर्णिका के अन्त में तीन मण्डल है और उनके ऊपर तत्त्व आदि तीन आसन हैं। सब आसनों के ऊपर एक सुखद विचित्र आसन बिछा हुआ है। वहाँ एक शुद्ध विद्या के दिव्य आसन की कल्पना करे। आवाहन, स्थापन, चित्तवृत्ति का विरोध, निरीक्षण कर फिर अलग-अलग मुद्राओं द्वारा नमस्कार करे।

पाद्य, आचमन, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, धूप आदि ताम्बूल अर्पित कर शिव शिवा को शयन कराये। अथवा मूर्त्ति एवं आसन की कल्पना करके मूल मन्त्र, ब्रह्ममन्त्र तथा वेद मन्त्र से पूर्ण कर परम कारण शिव जी का देवी के साथ आवाहन करे।

जो शुद्ध स्फटिक के सदृश निश्चल तथा अक्षर देव हैं। जो सब लोकों के कारण हैं, सर्व लोकमय हैं, बाहर-भीतर व्याप्त होकर जो छोटे से छोटे और बड़े से भी बड़े हैं, जो अव्यय, ईश्वर बिना प्रयत्न के ही भक्तों को दर्शन देते हैं और जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, रुद्र आदि देवता भी नहीं देख सकते। जो वेदसार हैं, विद्वानों ने जिन्हें वे अगोचर हैं--ऐसा सुना है, जो आदि, मध्य,अन्त रहित हैं और भवबन्धन रूप रोग की जो परम औषध हैं, जिन्हें शिवतत्त्व कहते हैं। जो संसार का कल्याण करने के लिये स्थिर हैं, ऐसे शिवलिङ्ग का पूजन पंचोपचार की भाँति भक्ति से करे।

परमात्मा महेश शिव की लिङ्गमूर्त्ति को स्नान कराते समय मांगलिक जय शब्द का उच्चारण करे। पंचगव्य भी दूध, दही, मधु तथा चीनी आदि फल, फलों के सार, तिल, सरसों तथा सत्तूओं से जौ आदि बीजों से, उड़द के चूर्ण से उबटन लगाकर, गरम जल से स्नान कराये।

लेप तथा गन्ध द्रव्यों को छुड़ाने के लिये बिल्व पत्र आदि से रगड़े। फिर चक्रवती उपचार पूर्वक जल से स्नान कराये। सुगन्धि युक्त आँवलों तथा हल्दी से पोतकर जल से लिङ्ग बेर को शुद्ध करे। सुगन्धित जल से, कुश तथा फूल मिश्रित जल से, सोना तथा रत्नयुक्त जल से तथा मन्त्रपूत जल से क्रमशः स्नान कराये।

उक्त द्रव्यों के न होने पर जो उपलब्ध हो अथवा मन्त्रपूत जल से श्रद्धापूर्वक शिव को स्नान कराये। कलश से, शंख से, वर्धनी से, हाथ से, कुश तथा पुष्प से मन्त्रपूर्वक शिव को स्नान कराये। पवमान, रुद्र, नीलरुद्र त्वरित मन्त्र लिङ्गसूक्त आदि

सूक्तों से, अथर्वशीर्ष, ऋग्वेद, सामवेद के मन्त्रों से, पंचब्रह्म मन्त्र से तथा ओंकार से देव देवेश शिव को स्नान कराये।

शिव शिवा के स्नान में कोई विशेष भेद नहीं है, क्योंकि वे दोनों समान हैं। पहले महादेव को स्नान कराये, बाद में महादेवी को; यह देवदेव की आज्ञा है। अर्धनारीश्वर दोनों ही पूज्य हैं उनके पूजन में आगे पीछे का विचार नहीं है।

अन्यत्र कहीं-कहीं शिव शिवा के पूजा का विचार है। लिङ्ग का अभिषेक करके पवित्र सुगन्धित वस्त्र से उसे पोछे। फिर वस्त्र तथा यज्ञोपवीत चढ़ायें। पाद्य, आचमन, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, भूषण, धूप-दीप, नैवेद्य मुख शुद्ध करने के लिये जल दे। फिर आचमनी, मुखवास, ताम्बूल, सभी रत्नों से जटित शुभ्रमुकुट पवित्र भूषण, अनेक प्रकार की मालायें, अंजन, चामर, छत्र, ताड़ का पंखा, दर्पण इन्हें अर्पित कर सभी मंगल वाद्यों को बजाते हुये नीराजन करे।

गीत-नृत्य, जय जयकार के साथ सोने, चाँदी, ताँबे अथवा मिट्टी के शुभ पात्र में कमल पुष्प, बीज, दही, अक्षत आदि से त्रिशूल, शंख, दो कमल, नन्द्यावर्त, करीष, श्रीवत्स, स्वस्तिक, आदर्श, वज्र, अग्नि से चिह्नित आठ दीपक चारों ओर, एक दीपक बीच में रखे।

उनमें वाम आदि नौ शक्तियों का ध्यान कर उनकी पूजा करे। कवच से ढककर, अस्त्रमन्त्र से चारों ओर रक्षा कर धेनुमुद्रा दीखाकर दोनों हाथों से पात्र को उठायें। अथवा उस पात्र में क्रमशः पाँच दीपों को रखे। विदिशाओं में भी एक-एक दीप रखे, एक दीप बीच में रखे तब उस पात्र को उठाकर मूल मन्त्र का ध्यान करते हुये तीन बार लिङ्ग के ऊपर घूमाये।

सुगन्धित भस्म युक्त अर्घ्यजल शिवजी के सिर पर छोड़ दे। फिर पुष्पाञ्जलि समर्पित कर उपहार दे। आचमनी से पीने योग्य जल दे। फिर पंचसुगन्धित से युक्त ताम्बूल अर्पित करे। प्रोक्षणी पदार्थों का प्रोक्षण करके नाच गाना आदि करें।

लिङ्ग में शिव-शिवा का ध्यान कर यथाशक्ति शिव का जप करे। प्रदक्षिणा, प्रणाम, स्तुति करके विनय के साथ अपने कार्यों तथा अपने को उन पर न्यौछावर करे। अर्घ्य, पुष्पांजलि देकर धेनु मुद्रा का प्रदर्शन कर अन्त में देव का हृदय में ध्यान करता हुआ क्षमा प्रार्थना करके उनका विसर्जन करे।

अतिसंकट की स्थिति में अर्घ्य, पाद्य से लेकर मुख वास समर्पण करे अथवा भक्तिपूर्वक केवल पुष्प चढ़ायें। इतना ही परम धर्म है, भाव से ही पुण्य मिलता है। प्राण रहते हुये शिव पूजन किये हुए भोजन न करे यदि कोई पापी भोजन कर लेता है, तो उसके पाप का कोई निराकरण नहीं है।

यदि भूल से खा लेता है, तो प्रयत्न से उसे उगल दे। स्नान करके शिव-शिवा का दूना पूजन कर ब्रह्मचर्य के साथ दस हजार शिव का जप करे। दूसरे दिन यथाशक्ति सुवर्ण आदि शिव को या शिवभक्त को देकर फिर महापूजा करके पवित्र हो जाता है।

योग भेद वर्णन

मेघनाद ने कहा—ज्ञान, क्रिया तथा पूजा में संग्रह ग्रन्थों से सार लेकर जो आपने कहा, सम्मत है, मैंने उसे सुना। अब मैं परम दुर्लभ योग को साधिकार, अंगों सहित, सविधि तथा सप्रयोजन सुनना चाहता हूँ।

यदि विधिपूर्वक किये योगाभ्यास से मृत्यु होती है और उसे शीघ्र सिद्ध किया जा सकता है जिससे आत्मघाती नहीं हो सकता। वह, उसके कारण और तत्काल के कर्त्तव्य, उसके भेदों तर-तम क्रम को आप ठीक-ठीक कहिये।

रावण ने कहा—सभी प्रश्नों के अर्थ को जानने वाले हे मेघनाद तुमने ठीक समय पर पूछा। उसे क्रमशः मैं सब कहता हूँ। तुम ध्यान से सुनो! मानसिक वृत्तियों को निश्चल मन से लगाना रूपवृत्ति है, वह संक्षेप में योग है।

वह पाँच प्रकार का होता है—मन्त्रयोग, स्पर्शयोग, अभावयोग तथा सबसे बड़ा महायोग माना गया है। मन्त्र के अभ्यास से मन्त्र के वाच्यार्थ गोचर होकर जो मन्त्र से वृत्ति स्थिर हो जाती है, उसी का नाम मन्त्रयोग है।

प्राणायाम युक्त वही मनोवृत्ति स्पर्श योग कही जाती है। वही मन्त्र स्पर्श से मुक्त प्राणायाम भाव भावयोग कहा जाता है।

जिस योग से सम्पूर्ण संसार तिरोहित हुआ सा प्रतीत होता है, वह अभावयोग कहा जाता है। क्योंकि इसमें विद्यमान वस्तुओं का भी भान नहीं होता है।

शिव का स्वभाव ऐसा है कि उसमें उपाधि रहित एक का चिन्तन किया जाता है, अतएव इसे महायोग कहते हैं।

अब योगाधिकार के योग्य पुरुष का परिचय—देखने योग्य प्रजा, पशु आदि सम्पत्ति की प्राप्ति वेदोक्त ज्योतिष्टोम आदि स्वर्ग विषयों से जिसका मन विरक्त है, योग में उसी का अधिकार है, दूसरे का नहीं। विषयद्वय दोष युक्त ईश्वर के गुणों को देख लेने मात्र से मन विरक्त हो जाता है।

अष्टाङ्ग योग हो या षडङ्ग योग हो सभी योग संक्षेप से यम-नियम आदि हैं। उनमें स्वस्वस्तिक आसन आदि प्राणायम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि—ये संक्षेप से योग के आठ अंग विद्वानों ने कहे हैं।

आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि—संक्षेप से ये षडङ्ग

हैं। शिवशास्त्र में इनके पृथक लक्षण कामिका आदि और शिवागमों ने कहे हैं। योगशास्त्रों में तथा कुछ पुराणों में भी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन्हें पंचावयवयोग के अनुसार सज्जनों ने यम कहा है।

शौच, तुष्टि, तप, प्रणिधि (गुरु सेवा)—ये नियम के पाँच भेद हैं। स्वस्तिक, पद्म, अधर्मेन्दु, विरासन, योगासन, प्रसाधित, पर्य, यथेष्ट—ये आठ आसन हैं।

अपने शरीर से निकली हुई प्राण वस्तु को रोकना प्राणायाम है। वह रेचक, पूरक, कुम्भक भेद से तीन प्रकार का होता है।

नासिका के एक छिद्र को अंगुली से बन्द करके दूसरे छिद्र से उदर स्थित वायु को बाहर निकालना रेचक है। बाहरी वायु से शरीर को मसक की भाँति दूसरे नासापुट से भरने का नाम पूरक है।

फिर उस वायु को न छोड़ना, न लेना, कुम्भ के समान अचल रहने का नाम कुम्भक है। योगसाधन इन रेचक आदि तीन विधियों को करने में शीघ्रता तथा विलम्ब न करे, अपितु इनका क्रमशः अभ्यास करे। रेचक आदि में नाड़ी शोधनपूर्वक अभ्यास करने में अपनी इच्छा ही अन्तिम अवधि है, ऐसा योगानुशासन में कहा है।

पहले छोटी मात्रा, फिर बड़ी मात्रा इस क्रम से प्राणायाम करे। यह छोटी बड़ी मात्रा गुड़ विभाग के अनुसार चार प्रकार की होती है।

प्राणायाम चार प्रकार का होता है। छोटा बारह मात्रा का, मध्यम दो उद्घात वाला—चौबीस मात्रा का होता है। उत्तम प्राणायाम तीन उद्घात छब्बीस मात्रा का होता है।

पसीना, कम्प, आदि जनक प्राणायाम उससे श्रेष्ठ होता है। आनन्द की उत्पत्ति, रोमांच, आँखों से आँसू गिरना, जल्प, भ्रमण—ये लक्षण योगी को प्रतीत होते हैं।

न शीघ्र, न विलम्ब से जानु के चारों ओर घुमाकर जितनी देर में चुटकी बजाया जाय उसे मात्रा कहते हैं। मात्राक्रम से उद्घात क्रम जानना चाहिए।

नाडीशोधन करके ही प्राणायाम करे। प्राणायाम अगर्भ तथा सगर्भ भेद से दो प्रकार का होता है।

जप ध्यान बिना अगर्भ और जप ध्यान से युक्त सगर्भ है। अगर्भ से सगर्भ प्राणायाम सौ गुना अधिक महत्त्व का है। इसलिये योगी सगर्भ प्राणायाम ही करते हैं। प्राण वायु पर विजय पाने से ही शेष सभी वायु जीते जाते हैं।

शरीर के पाँच वायु ये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय—जीवनयापन में सहायक होने से इन्हें प्राण कहते हैं।

जो खाये हुये आहार आदि को नीचे की ओर ले जाता है, उसे अपान कहते हैं।

शरीर के सभी अंगों में व्याप्त होने और उन्हें बढ़ाने के कारण से व्यान कहते हैं।

मर्मों को उद्विग्न करने के कारण उसे उदान कहते हैं।

सम्पूर्ण अंगों को समान रखने के कारण उसे समान कहते हैं।

उद्गार (डकार) में नाग, कूर्म आँखों को खोलने तथा बन्द करने में कृकल, छींकने तथा जँभाई लेने में देवदत्त और जो मरे प्राणि को भी नहीं छोड़ता, वह सर्वव्यापी धनञ्जय है।

क्रम से अभ्यास किया हुआ यह प्रमाण युक्त प्राणायाम है। यह प्राणायाम सम्पूर्ण दोषों को भस्म करके कर्त्ता के शरीर की रक्षा करता है।

प्राण वायु को भलीभाँति जीत लेने पर उसके चिह्नों को देखे। इससे मल, मूत्र, कफ कम हो जाता है, बहुत खाने की शक्ति आती है, देर में श्वास आता है, शरीर में हल्कापन, शीघ्रगामिता, उत्सव, स्वर में मधुरता, सब रोगों का नाश, बल, तेज, सुरूपता, धैर्य, बुद्धि, जवानी, स्थिरता, प्रसन्नता, तपस्विता, पापक्षय, यज्ञ, दान, व्रत आदि ये गुण प्राणायाम के सोलहवीं कला के बाराबर नहीं है।

अपने क्रम से विषयों में फैली हुयी मन सहित इन्द्रियों को जो बलपूर्वक रोकता है, उसे प्रत्याहार कहते हैं।

स्वर्ग तथा नरक का कारण क्रमशः निगृहीत इन्द्रियाँ तथा अनिगृहीत इन्द्रियाँ होती हैं। इसलिये सुख का इच्छुक बुद्धिमान् पुरुष ज्ञान वैराग्य में स्थिर हो इन्द्रिय रूपी घोड़ों को शीघ्र नियंत्रित कर अपने से अपना उद्धार करे।

संक्षेप में चित्त को स्थिर करने का नाम धारणा है। शिव ही एक उत्तम स्थान है। औरों में तीनों दोष होते हैं। उचित काल को निश्चित करके उसमें मन लगाकर उसे शिवरूप लक्ष्य से अलग न होने दे।

मन की प्रथम स्थिरता धारणा से ही होती है। इसलिये मन को धारणा के अभ्यास से स्थिर करे।

'ध्यै चिन्तायाम्' धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाने से ध्यान शब्द बनता है। अतः इसमें बार-बार शिव का ध्यान होना चाहिए। एकाकार चित्तवृत्ति से ध्यान करना चाहिए। ध्येय में विश्वासपूर्वक मन लगाना ही ध्यान है।

केवल एक पर ही विश्वास करना ध्यान है। परमशिव ही ध्यान करने के योग्य हैं। सबको छोड़कर एक शिव ही कल्याणकारक हैं, अथर्ववेद में यही कहा गया

है, और शिवा का ध्यान करे। ये शिव-शिवा सभी प्राणियों में व्याप्त हैं। इन दोनों को स्मृति तथा शास्त्रों ने सवर्ग, सर्वदा, उदीयमान, सर्वज्ञ कहा है।

अतः अनेक रूपों से इनका सदा ध्यान करना चाहिए। ध्यान के दो प्रयोजन कहे गये हैं। मुक्ति पर विश्वास करना तथा अणिमादि सिद्धियों पर विश्वास करना।

ध्याता, ध्यान, ध्येय तथा ध्यान का प्रयोजन—इन चारों को समझ कर योग को जानने वाला योग प्रारम्भ करे।

ज्ञान वैराग्य से युक्त, श्रद्धालु, क्षमावान्, ममतारहित, सदा उत्साही पुरुष को ध्याता कहा गया है। जप से थक जाये तो फिर ध्यान करे। ध्यान से थक जाये तो फिर जप करे।

योग मार्ग के विघ्नों का वर्णन

रावण ने कहा—आलस्य, घोर व्याधियाँ, सावधानी, स्थान का संदेह, चित्त की स्थिरता, श्रद्धा तथा ब्रह्म का दिखलायी देना, दुःख, दुर्बुद्धि, विषय भोग के प्रति चंचलता—ये दस योगमार्ग में प्रवृत्त पुरुषों के मार्ग में विघ्न आते हैं।

आलस्य और शिथिलता ये योगियों के देह तथा मन के द्वेष हैं। धातुओं की विषमता से तथा कर्मों के दोषों से व्याधियाँ होती है।

योग साधना के अभाव का नाम प्रमाद है।

यह सत्य है या वह, इस प्रकार के विपरीत ज्ञान का नाम संशय है।

मन की अस्थिरता को ही अनवस्थिति कहते हैं।

योग मार्ग में इसी भाव सहित वृत्ति को अश्रद्धा कहते हैं।

विपरीत बुद्धि को भ्रान्ति कहते हैं।

पुरुषों के मानसिक दुःख को आध्यात्मिक दुःख कहते हैं।

पूर्वजन्म के किये हुये कर्मों से उत्पन्न शारीरिक दुःख को आधिभौतिक कहते हैं।

शस्त्र-आघात, विष भक्षण से उत्पन्न दुःख को आदिदैविक दुःख कहते हैं।

इच्छा के पूर्ण न होने से उत्पन्न दुःख को दौर्मनस्यक कहते हैं।

विविध विषयों में चपलता का नाम विभ्रम है।

इन विघ्नों के शान्त होने पर योग में तत्पर योगी को जो लक्षण दिखलायी देते हैं, वे दिव्य सिद्धि के सूचक होते हैं।

प्रतिभा, श्रवण, दर्शन, वार्ता, आस्वाद, वेदना—ये छः लक्षण योग के अधिक होने पर सिद्धि सूचक होते हैं।

सूक्ष्म, व्यवधान युक्त, अतीत, सुदूर तथा जो वस्तु अभी प्राप्त नहीं है, उसको भी ठीक-ठीक जान लेना यही प्रतिभा है।

बिना प्रयत्न के सभी प्रकार के शब्दों का सुनायी पड़ना, सभी प्राणियों की भाषाओं का ज्ञान वार्ता है।

दिव्य वस्तुओं का बिना प्रयत्न के दर्शन होना ही दर्शन है। दिव्य रसों के आस्वाद करने की शक्ति को ही आस्वाद कहते हैं।

स्पर्श ज्ञान को वेदना कहते हैं। समस्त ब्रह्माण्ड व्यापी दिव्य गन्धों के ज्ञान को वेदना कहते हैं। योगी में ये योगरत्न रहते हैं। ये उन्हें दूसरे को देते भी हैं।

योगी के ऐश्वर्यों का वर्णन

इनके मुख से स्वच्छन्द मधुर वाणी निकलती है। इन्हें प्रणाम कर देवांगनाये दिव्य औषधियाँ तथा रसायन देती हैं। ये इन्हें सिद्ध हो जाती है।

योगसिद्धि का थोड़ा सा ज्ञान हो जाने पर मनुष्य मोक्ष मार्ग में प्रवृत्त हो जाता है, जैसा मैंने इसे देखा है, वैसे ही मोक्ष भी हो जायेगा।

प्रसूता, स्थूलता, बचपन, बुढ़ापा, जवानी, अनेक जातियों का स्वरूप तथा चार प्रकार से देह धारण करना, पृथ्वी अंश के बिना प्रतिदिन मनमोहक गन्ध का संग्रह करना—ये आठ पिशाच सम्बन्धी पार्थिवपद के गुण कहे गये हैं।

जल में निवास, भूमि से निकलना, बिना कष्ट के समुद्र को पी जाने में समर्थ, वह इस भूमि में जहाँ चाहे पानी में दिखलाई दे।

बिना घड़े आदि पात्र का जल संग्रह तथा धारण करना और नीरस वस्तु को भी वह योगी खाना चाहता है, तो वह तत्क्षण सरस हो जाती है।

वह जल, तेज, वायु का रूप धारण कर सकता है। वह पार्थिव शरीर को छिद्र रहित धारण कर सकता है। यह सोलह आश्चर्यकारक गुण जलीय ऐश्वर्य के हैं।

शरीर से अग्नि को प्रकट करना और दाह का भय न होना। यदि वह चाहे तो विना यत्न के सम्पूर्ण शरीर को जला सकता है। अग्नि को पानी में या हाथ में रखना, सृष्टि को भस्म करके पूर्ववत् कर देना, मुख में अन्न आदि को पका देना, तेज और वायु से शरीर-निर्माण शक्ति जलीय ऐश्वर्य से युक्त होना, ये चौबीस प्रकार का तेज कहा जाता है।

मन के समान वेग का हाथ, क्षण भर में दूसरे के हाथ में प्रवेश कर जाना, बिना प्रयत्न के पर्वत आदि महाभार को धारण कर लेना, भारी का हल्का होना, हाथ से वायु को पकड़ना, अंगुलि के अगले भाग को रखते ही पृथ्वी को कँपा देना, एक वायु से ही शरीर को धारण करना, भोग तथा तेज से युक्त होना, वायु के बत्तीस ऐश्वर्य विद्वान् जानते हैं।

आकाश के ऐश्वर्य—छाया की हीनता, असमाप्ति, इन्द्रियों को न दिखलाई

देना, इच्छानुसार आकाश में विचरण करना, इन्द्रियों को अर्थों का परस्पर समन्वय, आकाश को लाँघना, उसका अपने शरीर में समावेश, आकाश को पिण्ड जैसा बना लेना, शरीर को लुप्त कर देना—ये महान् चालीस गुण वायु के हैं।

इन्द्र का ऐश्वर्य ही आकाश का ऐश्वर्य है। यथा काम प्राप्ति और यथा काम सिद्धि सभी को पराजित करना, सभी गुप्त पदार्थों को देखना कर्म के अनुसार निर्माण, वश में करना सुरूपता, एक ही स्थान में रहकर सम्पूर्ण संसार का दर्शन होना, इन्द्र के समान ऐश्वर्यों की प्राप्ति—ये चन्द्रमा के ऐश्वर्य हैं, जो मानस गुणों से भी अधिक है।

संसार में रहने वाला सभी प्राणियों को काटना, मारना, पीटना, बाँधना, छोड़ना, पकड़ना और उन पर प्रसन्न होना, मृत्यु तथा काल पर विजय पाना—ये अभिमान युक्त ऐश्वर्य प्रजापति के गुण हैं। ये चन्द्रमा के भागों से छप्पन गुण अधिक है।

इस शक्ति को प्राप्त कर लेने से योगी पुरुष संकल्प मात्र से सिद्धि, पालन, संहार कर सकता है।

सभी प्राणियों के मन में अपना अधिकार कर लेना और सबसे अलग रहकर वह संसार की रचना कर सकता है। भला, बुरा करने में समर्थ, प्रजापत्य ऐश्वर्य से संयुक्त चौंसठ गुणों वाला ब्रह्मा का ऐश्वर्य कहा जाता है।

इस बुद्धि से किये गये ऐश्वर्य को प्राकृत ऐश्वर्य कहते हैं। उसे वैष्णव तत्त्व कहा गया है। उसी से ये भुवन स्थित है। ब्रह्मा भी उस पद का पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकते, औरों की क्या शक्ति है।

उनका पुरुषार्थ सगुण है, उसके आगे ऐश्वर्य सम्पन्न गणेश का पद है, उस पद का कुछ ज्ञान विष्णु को है, औरों को नहीं।

परम ऐश्वर्य की सिद्धि नहीं होती है, इसलिये देवता, असुर, मनुष्यों के गुणों को तृणवत् छोड़ देता है, उसे उत्तम योग सिद्धि मिलती है अथवा संसार के अनुग्रह की इच्छा हो तो वह मुनि की भाँति विचरण करे, तब वह सभी भोगों को भोग कर मुक्ति को प्राप्त करेगा।

योग योग्य स्थान आदि वर्णन

अब मैं योग के प्रयोग को कहता हूँ, तुम सावधान होकर सुनो—

शुभ समय में उत्तम स्थान क्षेत्र आदि पर, एकान्त वन में, शान्त एवं बाधारहित, लिपी हुयी भूमि में धूप आदि से सुवासित फूल आदि को बिखेर कर वितान आदि से सुशोभित योगी पुरुष कुश, फूल, समाधि, जल, फल, फूल युक्त, अग्नि, जल तथा सूखे पत्तों के समूह में, डास, मच्छर, साँप, श्वापद, दुष्ट मृग, दुर्जन

आदि जहाँ न हो और जहाँ किसी प्रकार का भय न हो, श्मशान, चैत्य, वल्मीक, पुराना घर, चौराहा, नदी तथा नद के तट पर, समुद्र तट पर, गली के समीप, पुराने बगीचे, गोशाला आदि में, अशुभ या निन्दित स्थान में, अजीर्ण होने पर, खट्टे डकार आने पर, मल तथा मूत्र से मलिन, उल्टी या अतिसार, अधिक खा लेने पर, थकान में, अधिक चिन्तित स्थिति में, न भूख, प्यास में, अपने गुरु की सेवा में लगा हुआ भी योग न करे।

ठीक आहार-विहार में तथा अपने कर्म में लगा हुआ ठीक समय पर सोने तथा जगने वाला, सभी प्रकार के परिश्रमों से मुक्त, मृदु, रमणीय, ऊँचा, बराबर तथा पवित्र आसन हो, पद्म तथा स्वस्तिक आसनों का प्रयोग करे।

योग प्रयोग कथन

अपने गुरु पर्यन्त प्रणाम करने योग्य को क्रम से प्रणाम करे। सीधी गर्दन, सिर, छाती करके बैठे और आँखें अधिक बन्द न करे।

सिर कुछ झुका रहे, दाँतों को दाँतों से न कटकटाये, दाँतों के आगे जीभ को रखकर उसे स्थिर रखे। एड़ियों से अण्डकोषों तथा लिङ्ग की रक्षा करे। जाँघों के ऊपर सावधानी से तिरछी भुजा को रखकर दाहिने हाथ के पिछले भाग को बायें हाथ के ऊपर रखे।

धीरे-धीरे पीठ को उठाकर और आगे से छाती को तान कर दिशाओं की ओर न देख अपनी नासिका के अग्र भाग को देखे।

प्राणवायु के संचार को रोक कर पत्थर की भाँति स्थिर होकर अपने मन में पार्वती के साथ शिव का ध्यान करे और उन्हें हृदय कमल के बीच में मूलाधार में, नासिका के अग्र भाग में, नाभि में, कण्ठ में अथवा तालु के छिद्रों में बैठाकर ध्यान यज्ञ से पूजे।

अथवा दोनों भौंहों के बीच में, ललाट में, मूर्धा में उनके दिव्य आसन की यथोचित्त कल्पना करके वहाँ आवरण युक्त अथवा आवरण रहित द्विदल, षोडशार, द्वादशार, दशार, षडस्त्र या चतुरस्त्र में शिव का स्मरण करे।

भौंहों के बीच में दो पत्र वाला कमल के समान उज्ज्वल कमल बनाये। भौंहों के बीच में स्थित कमल के उत्तर तथा दक्षिण बिजली के समान वर्ण वाले पत्तों के अन्त में षोडशार के पत्तों में सोलह स्वरों को स्थापित करे और कमल कन्द की जड़ से पूर्व आदि क्रम से क से ट तक वर्णों को स्थापित करे।

सूर्यवर्ण कमल के चारों ओर उन वर्णों का हृदय में ध्यान करे। उन अक्षरों को कमल पत्र समझें। नाभि के ऊपर की ओर गाय के दूध के समान ड से फ तक

इन्हें क्रम से रखे, नीचे की ओर ये कमल के छः पत्ते हैं। धुआँ रहित अंगार के वर्ण वाले ब से ल तक वर्ण उसमें हैं। मूलाधार कमल सुवर्ण के सामन कांतियुक्त है।

उसमें व से स तक वर्ण पर्णमय है। इन कमलों में जहाँ मन रम जाये, वहीं धैर्यपूर्वक शिव-शिवा का चिन्तन करे।

अंगुष्ठ मात्र निर्मल, चारों ओर से प्रकाशमान दीपक की लौ के सदृश शुद्ध, अपनी शक्ति से सुशोभित चन्द्र रेखा के समान आकार वाले अथवा तारा के सदृश, मिवार, शूक अथवा कमलनाल के रेशा जैसे कदम्ब के फल जैसा, ओस के बूँद जैसा अथवा पृथिवी तत्त्व जैसा ध्यान करने वाला उसे समझता है।

अतः उन तत्त्वों के स्वामियों के स्थूल मूर्तियों का चिन्तन करे। ब्रह्मा, भव से लेकर सदाशिव पर्यन्त शिवजी की आठ मूर्तियाँ हैं। शिवजी की स्थूल मूर्तियों का निर्देश शिवपुराण में है।

मुनिवरों ने उन्हें घोर, मिश्र तथा प्रशान्त संज्ञायें दी हैं। फल की अभिलाषा से युक्त (अथवा-रहित) पुरुषों को इनका ध्यान करना चाहिए—ऐसा चिन्तन कुशल पुरुषों ने कहा है।

घोरसंज्ञक मूर्तियों का चिन्तन करने से पापों का नाश होता है। मिश्रसंज्ञक मूर्तियों का ध्यान करने से देर में और सौम्य (प्रशान्त) मूर्तियों का ध्यान करने से न शीघ्र और न देर में सौम्य का ध्यान करने से विशेष करके शान्ति, प्रज्ञा तथा मुक्ति मिलती है तथा सभी सिद्धियाँ इसके चिन्तन से प्राप्त हो जाती है, इसमें संदेह नहीं है।

नैमित्तिक कर्म पालन

रावण ने कहा—अब मैं शिवाश्रम का सेवन करने वालों के लिये शिवशास्त्र के अनुसार नैमित्तिक विधि को क्रम से कहता हूँ। सभी महीनों के दोनों पक्षों में अष्टमी, चतुर्दशी तथा पर्व दिन में शुभ अयन में, समान रात-दिन वाले मास में विशेषकर प्रणव में यथाशक्ति विशेष पूजा करनी चाहिए।

प्रत्येक मास में यथोचित ब्रह्मकूर्च (पंचगव्य) को बनाकर व्रती पुरुष उससे शिव जी को स्नान कराये, शेष पंचगव्य को पी ले। ब्रह्महत्या आदि महान् दोषों की निवृत्ति पंचगव्य को पीने से हो जाती है, कुछ शेष नहीं रहते।

पौष मास के पुष्य नक्षत्र में शिवजी का निराजन करे। माघ महीने में मघा नक्षत्र के दिन घी और कम्बल का दान करे। फाल्गुन में उत्तराफाल्गुनी युक्त पूर्णमासी को महोत्सव करे।

चैत्र में चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा को यथाविधि दोलोत्सव करे। वैशाख में

विशाखा युक्त पूर्णिमा को फूलों का शिव मन्दिर बनाये। ज्येष्ठ में मूल नक्षत्र के दिन शीतल जल युक्त घड़ा का दान करे।

आषाढ़ मास के उत्तराषाढा नक्षत्र में पवित्रारोपण करे। श्रावण में पूर्वोक्त और मण्डलों की स्थापना करे। श्रवण नक्षत्र में, उसके बाद भाद्रपद मास की पूर्णिमा को प्रोक्षण कर पूर्वाषाढा नक्षत्र के दिन जल की क्रीड़ा करे।

अश्विनी पूर्णिमा के दिन खीर तथा नये चावलों का भात दे, शतभिषा नक्षत्र में खीर से हवन करे। कार्त्तिक पूर्णिमा के दिन कृत्तिका नक्षत्र में हजार दीप जलाये। मार्गशीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र के दिन घी से शिव जी को स्नान कराये।

इन समयों में उक्त कर्मों को करने में असमर्थता हो तो उत्सव ही करे। सभा, महापूजा या अधिक पूजन करे। प्रशस्त कर्मों में कल्याण की पुनरावृत्ति होने पर, मन से दुखी होने पर, दुराचार में, दुस्वप्न में, दुष्ट दर्शन में, उत्पात दर्शन में, अन्य अशुभ में, प्रबल रोग में होने पर स्नान, पूजा, जप, ध्यान, होम आदि क्रियायें करे।

कारण के अनुरूप उक्त कर्मों को पूरश्चरणपूर्वक शिवाग्नि का पुनः स्थापना करे। जो इस प्रकार प्रतिदिन शिवधर्म में तत्पर रहता है, उसे शिवजी एक जन्म में ही मुक्ति दे देते हैं।

जो नित्य नैमित्तिक कर्मों को इस प्रकार करता है, वह श्रीकण्ठ नाथ के दिव्य आदि स्थान को जाता है। वह मनुष्य वहाँ सौ करोड़ कल्पों तक महाभोगों को भोग कर कालान्तर में वहाँ से छुटकर उमा, कार्त्तिकेय के लोकों को पाकर, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र के लोकों में विशेष रूप से चिरकाल तक रहकर तथा वहाँ के सुख भोगों को भोगकर ऊपर के लोकों में गया हुआ वह उन पाँच स्थानों से छूटकर श्रीकण्ठ देव से ज्ञान पाकर उसके कारण शिवपुर को जाता है।

पूर्वोक्त अनुष्ठानों को आधा ही करने से या दो बार में—ऐसा करने से बाद में ज्ञान पाकर शिव सायुज्य को प्राप्त होता है। जो पुरुष आधे से भी आधा करता है वह मरने के बाद ब्रह्माण्ड अथवा ऊपर के अव्यक्त भुवनों को पारकर गिरिजापति के पौरुष रुद्र स्थान को प्राप्त होकर अनेक हजार युगों तक अनेक प्रकार के भोगों को भोगकर पुण्यों के क्षीण होने पर भूलोक में उच्च कुल में पैदा होता है।

पूर्व संस्कारों के कारण वहाँ भी तेजस्वी होता है। वह सामान्य प्राणियों के धर्मों को छोड़कर शिवधर्म में तत्पर होता है। उस धर्म की श्रेष्ठता से वह शिव का ध्यान कर शिवपुर को जाता है। फिर अनेक भोगों को भोगकर विद्येश्वरपद को पा जाता है।

वहाँ क्रमशः विद्येश्वरों के अनेक भोगों को भोगकर ब्रह्माण्ड के भीतर बाहर

एक बार वह फिर लौटता है। फिर वह उत्तम भक्ति को पाकर उसी से शिवज्ञान को पाकर शिव साधर्म्य को प्राप्त कर लेता है।

जिससे वह फिर संसार में नहीं आता; और जो विषयासक्त की भाँति शिवभक्त है, वह शिव धर्म को करे या न करे वह मुमुक्षु एक, दो, तीन बार जन्म लेकर मुक्त हो जाता है।

वह शिवधर्म का अधिकारी चक्र की भाँति अनेक योनियों में घूमता नहीं। इसलिये किसी भी प्रकार शिव की शरण में जाना चाहिए। यदि कल्याण के लिये उद्यम करना हो तो शिवधर्म में बुद्धि लगाये।

हम किसी को किसी बन्धन में नहीं डालते। इसमें कोई बन्धन या हठ नहीं है, क्योंकि यह हमारे स्वभाव विरुद्ध है। दूसरे को अपने पूर्ण संस्कारों की महानता से अच्छा लगता हो वही करें।

संसार का कारण जिनकों उस स्थान पर खड़ा करने में समर्थ नहीं है यह प्रकृति के अनुकूल है। इस प्रकार भली-भाँति विचार करे। यदि अपना भला चाहते हैं तो शिवधर्म पर अपना अधिकार करे।

काम्य कर्म का फल

मेघनाद ने कहा—हे पिजाश्री ! मैंने आपके मुख से वेदों के समान प्रामाणिक वचन सुने। जो शिवभक्तों के लिये आपने नित्य नैमित्तिक विधि कही है।

अब मैं शिवधर्माकारियों का जो काम्य कर्म है, उसे सुनना चाहता हूँ, आप उसे कहे।

रावण ने कहा—इस लोक का और कुछ उस लोक का फल है। यह यहाँ और वहाँ का कर्म पाँच प्रकार का है। कुछ लौकिक कर्म हैं और कुछ तपोमय कर्म हैं, कुछ जप ध्यानमय कर्म है तथा कुछ सर्वमय हैं।

होम, दान, अर्चन क्रम से क्रियामय कर्म भी हैं। ये कर्म शक्तिमानों के ही सफल होते हैं, दूसरे के नही। अत: आज्ञापालक ब्राह्मण काम्य कर्मों को सदा करता रहे। अब मैं दोनों लोकों में फलप्रद काम्य कर्मों को कहता हूँ। शिव या महेश्वर भक्तों को भीतर बाहर के क्रम से इन कर्मों को करना चाहिए। क्योंकि शिवमहेश्वर में कोई भेद नहीं है।

इसलिये शिव या महेश्वर के भक्तों में कोई भेद नहीं है। शिव के आश्रम में रहने वाले ज्ञानयज्ञ रत मनुष्य कर्मयज्ञ के करने वाले पृथ्वी में माहेश्वर कहे जाते है। इसलिये शैव भीतरी और माहेश्वर बाहरी कर्म करते हैं।

आगे कहे जाने वाले कर्म के प्रयोग में कोई भेद नहीं है। गन्ध, वर्ण, रस

आदि से भूमि की यथा विधि परीक्षा कर ले। मन के अनुसार सुन्दर, वीतान, तान कर, दर्पण के समान समतल भूमि को लीपकर शास्त्रीय दृष्टि से पूर्व की ओर एक या दो हाथ का मण्डल बनाये, उस पर सुन्दर कमल लिखे, जो अष्टदल तथा कर्णिका युक्त हो, उसे रत्न, स्वर्ण आदि के चूर्ण से सजाये।

उसे पाँच आवर्णों से युक्त कर सुशोभित करें। उसके दलों में सिद्धियों और केसरों में शक्तियों की कल्पना करे। वामदेव आदि आठ रुद्रों को पूर्व आदि दलों में क्रमशः स्थापित करे तथा कर्णिका में वैराग्य तथा बीजों में नौ शक्तियों की कल्पना करे।

कन्द में शिवात्मक धर्म, नाल में शिवाश्रित ज्ञान, कर्णिका के ऊपर अग्नि, सूर्य तथा चन्द्र मण्डल बनाये। उसके बाद शिव विद्यात्मक तीन तत्त्व तथा सब आसनों के ऊपर सुखद रंग-बिरंगे फूलों से तथा पंचावरण से युक्त पार्वती सहित शुद्ध स्फटिक के सदृश, प्रसन्न, शीतल कान्ति वाले देव की पूजा करे।

बिजली के कंकण के समान जटामुकुट से सुशोभित, बाघम्बर धारण किये हुये मन्द हास्य युक्त मुख कमल वाले लाल कमल जैसे जिनके पैर, हाथ, ओठ हैं, सब लक्षणों से युक्त, सभी आभूषणों से सुशोभित दिव्य आयुधों को धारण किये हुये, दिव्य गन्धों का अनुलेपन किये हुये, पाँच मुख, दस हाथ, शिखा में चन्द्रकला युक्त इनका पूर्वमुख सौम्य बालसूर्य के समान कान्ति वाला, तीन नेत्र कमल के समान मनोहर, सिर पर बालचन्द्रमा दाहिना नीले मेघ के समान कान्ति वाला, भृकुटि कुटिल तथा घोर, तीन आँखें लाल असह्य भयंकर दाढे, फड़कता हुआ होठ, उत्तर मुख मूंगे के समान तथा नीले बालों से सुशोभित विलास युक्त तीन नेत्र, चन्द्रमा के आभूषण से युक्त शेखर, पश्चिम मुख पूर्ण चन्द्र के समान तीन नेत्रों से शोभित चन्द्रकला धारण किये, सौम्यमूर्ति, मन्द हास्य से मनोहर, पाँचवाँ मुख स्फटिक मणि के समान चन्द्र रेखा से उज्जवल अत्यन्त सौम्य, खुले हुए तीन नेत्रों से शोभित, दाहिने हाथ में शूल, परशु, वज्र, खड्ग और अग्नि से उज्जवल बायें हाथ में नाग, बाण, घण्टा, पाश, अंकुश, निवृत्त कला से जानु अप्रतिष्ठा काल से नाभि सम्बद्ध कण्ठ तप विद्या कला और ललाट तक शान्ताकला से प्रतिष्ठित है।

उसके ऊपर शान्त्यतीत पराकला से युक्त है। पंचाध्वव्यापी साक्षात् कलापंचकस्वरूप, ईशान मुकुट देव जो पुरातन पुरुष है। अघोर जिनका हृदय है, वामदेव महेश्वर जिनके गुह्य हैं और सद्योजात जिनके चरण है वह अड़तीस कलामय मूर्ति हैं। ये ईशान मातृकामय तथा पंचब्रह्ममय हैं।

ये ॐकारमय तथा हंस शक्ति से युक्त हैं। जो इच्छात्मिका शक्ति से

कमण्डलों में आरूढ हैं। जो ज्ञानाख्या कला से दक्षिण की ओर क्रियाख्या कला से बायीं ओर विराजमान हैं। सदाशिव साक्षात् तत्वत्रय हैं अथवा वे विद्यामूर्ति हैं।

मूर्ति मूल संकल्प करके क्रमशः उनका संकलन करें। मूल विद्या से यथाविधि अर्घ्यदान पर्यन्त पूजा कर परम शक्ति के साथ साक्षात् मूर्तिमान शिव का आवाहन करके जो सत्-असत् विवेक से रहित, उन परमेश्वर का पंचोपचार से पूजन कर षडङ्गोक्त प्रणव पूर्वक वेद मन्त्रों से मातृकाओं के साथ क्रमशः पूजन करे।

शान्ति मन्त्रों से तथा और वेद मन्त्रों से पूर्णरूप से अथवा केवल शिवमन्त्रों से महादेव का पूजन करे। पाद्य से लेकर मुखवास पर्यन्त विसर्जन के विना करे। यथाविधि पंचावरण पूजा को भी आरम्भ करे।

ध्यान की महिमा

रावण ने कहा—श्रीकण्ठ नाथ का स्मरण करने वालों की सभी अर्थों की सिद्धियाँ हो जाती है और वे प्रसिद्ध हो जाते हैं—ऐसा मानकर कुछ लोग मन की स्थिति के लिये स्थूल रूप का ध्यान करते हैं। जब स्थूल रूप में मन स्थिर हो जाय तब सूक्ष्म का ध्यान करना चाहिए।

शिव का ध्यान करने से सभी सिद्धियाँ सिद्ध हो जाती हैं। दूसरी मूर्तियों का ध्यान करने पर फिर शिव रूप का ध्यान करे। मन की स्थिरता को देखकर बार-बार उसका ध्यान करे। पहले सविषय, फिर विषय रहित ध्यान करे।

सज्जनों का मत है कि निर्विषयक ध्यान होता ही नहीं। बुद्धि की निरन्तरा का नाम ही ध्यान है। अतः निर्विषयक ध्यान केवल इस संसार में ही प्रवृत्त होता है।

इसलिये सविषयक ध्यान सूर्य की किरणों के समान आश्रय वाला है। सूक्ष्म आश्रय का नाम ही निर्विषय है। इससे अधिक परिमार्थ और कोई नहीं है। अथवा सविषय ध्यान साकार के आश्रय वाला है।

निराकार आत्मा को जानने का ही नाम निर्विषय है। वह निर्बीज हो या सबीज हो उसी को ध्यान कहते हैं।

निराकार के आश्रय से साकार आश्रय वाला होता है। अतः पहले बीज सहित साकार का ध्यान करे। अन्त में निर्विषय ध्यान करे, निर्बीज ध्यान सभी सिद्धियों को देता है।

प्राणायाम से दिव्य शान्ति आदि से यह सिद्धियाँ मिलती है—शान्ति, प्रशान्ति, दीप्ति तथा प्रसाद। सभी आपत्तियों की शान्ति का नाम श्रम है। भीतर बाहर अन्य कार्य के नाश का नाम प्रशान्ति है। बाहर-भीतर प्रकाश का नाम दीप्ति है। बुद्धि

की स्वस्थता का नाम प्रसाद है। उसमें बाहर-भीतर के सभी अवयव कारण हैं। बुद्धि के प्रसाद से ये शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं।

ध्याता, ध्यान, ध्येय तथा ध्यान का प्रयोजन चारों को जानकर ही ज्ञान, वैराग्य तथा शान्त चित्त ध्यान करने का इच्छुक ध्यान करे। श्रद्धावान् तथा प्रसन्नचित्त पुरुषों को सज्जनों ने ध्याता कहा है।

'ध्यान शब्द' 'ध्यै चिन्तायाम्' से बना है। इसके द्वारा बार-बार शिव का ध्यान करे।

क्षण भर श्रद्धा से किया गया परमेश्वर का ध्यान थोड़ा भी योगाभ्यास से पापों का नाश करता है। मन में किसी प्रकार की हलचल न हो इसी को ध्यान कहते हैं। इस प्रवाह रूपी ध्यान का सहारा बुद्धि है।

जो ध्येय वस्तु है, वह है साम्ब सदाशिव—ऐसा विद्वानों का मत है। मुक्ति प्राप्ति के पहले अणिमा आदि आठ ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है। शिवध्यान का यही साक्षात् प्रतिफल है। जिस ध्यान से सभी प्रकार के सुख तथा सम्पत्ति मिलती है उसे सब कुछ करना चाहिए। बिना ध्यान के ज्ञान नहीं मिलता; जो योगी नहीं है, वह ध्यान नहीं कर सकता। ध्यान और ज्ञान दोनों ही जिसके पास हैं उसने भवसागर पार कर लिया।

प्रसन्न, एकाग्रचित्त तथा समस्त उपाधियों से रहित का नाम ज्ञान है। यह ज्ञान योगी को ही प्राप्त होता है।

जब सब पाप क्षीण हो जाते हैं तब ज्ञान, ध्यान में बुद्धि लगती है। पापियों को तो ज्ञान तथा ध्यान की बात भी दुर्लभ होती है। जैसे जलती हुयी आग सूखे तथा गीले पदार्थों को जला देती है, वैसे ही ध्यान रूपी आग शुभ अशुभ कर्मों को जला देती है।

छोटा भी दीपक बहुत बड़े अन्धकार को मिटा देता है। उसी प्रकार थोड़ा भी योगाभ्यास बहुत बड़े पापों का नाश कर देता है। क्षणभर भी श्रद्धा से परमेश्वर का ध्यान करने से जो महान् कल्याण होता है, उसका कभी अन्त नहीं होता है।

ध्यान के समान कोई तीर्थ, तप तथा यज्ञ नहीं है। इसलिये परमेश्वर का सदा ध्यान करे। योगी पुरुष आत्मविश्वास के कारण जलपूर्ण तीर्थों तथा मिट्टी, पत्थर की मूर्तियों की शरण में नहीं जाते।

योगियों का सूक्ष्म शरीर प्रत्यक्ष शिवमय होता है। सामान्य पुरषों के लिये वह मिट्टी काष्ठ आदि का बनाया जाता है, जिस प्रकार राजा को भीतरी सेवक प्रिय होते हैं; न कि बाहरी। वैसे ही अन्तःध्यान में तत्पर भक्त शिवजी को प्रिय होते हैं न

कि बाहरी। जैसे राजभवन में बाहरी कर्मचारी अधिक लाभ के भागी नहीं होते, वैसे ही यहाँ के सेवक भी हैं।

यदि ज्ञानयोग के लिये तत्पर भक्त मर जाते हैं, तो वे योग का प्रयत्न करने मात्र से रुद्र लोक से बाहर जाते हैं। वहाँ सुख भोग कर वह फिर योगियों के कुल में जन्म लेता है। फिर वह ज्ञान योग को पाकर भवबन्धन से मुक्त हो जाता है।

शिवयोग को जानने का इच्छुक पुरुष भी जिस शुभ गति को प्राप्त होता है, उस गति को महायज्ञ करने वाला भी नहीं पा सकता।

वेदों के ज्ञाता करोड़ ब्राह्मणों को पूजने का जो फल होता है, शिवयोगी को भिक्षा देने मात्र से वह फल मिल जाता है। यज्ञ, अग्निहोत्र, दान, तीर्थों में होम करने का जो फल होता है, वह फल शिव योगी को अन्न दान करने के समान ही है।

जो मूर्ख शिवयोगियों की निन्दा करते हैं, वह अन्य श्रोताओं के साथ प्रलय पर्यन्त नरक-यातना भोगते हैं। श्रोता होकर जो वक्ता से शिव योगियों की निन्दा सुनता है वह श्रोता महान् लोगों द्वारा दण्डनीय होता है और जो सदैव भक्ति से शिवयोगियों की भक्ति से सेवा करते हैं, वे महाभोगों को प्राप्त कर अन्त में शिवयोगी होते हैं।

इसलिये सुख भोग के इच्छुक मनुष्यों को चाहिए कि वे शिव योगियों का पूजन करे। घर, अन्न, पान, शैय्या, गद्दा, रजाई आदि देकर उनकी सहायता करे। योग धर्म ठोस है, वह पाप मुद्गरों से नष्ट नहीं किया जा सकता।

जैसे चावलों से वज्र नहीं टूटता, वैसे ही पाप से योगी नष्ट नहीं होते। वे पाप समूह से वैसे लिप्त होते हैं, जैसे कमल पत्र जल से।

जिस देश में शिव योगी मुनि निवास करता है, उसके कारण वह देश भी पवित्र हो जाता है। उसके पवित्र होने में क्या संदेह है; इसलिये बुद्धिमान् अन्य सभी कार्यों को छोड़कर सभी दुःखों का नाश करने के लिये शिव योग का अभ्यास करे।

योगफल की सिद्धि हो जाने पर योगी पुरुष संसार के हित की इच्छा से इच्छानुसार भोगों का भोग कर विचरण करे या साधारण व्यवहार करे अथवा विषय सम्बन्धी सुखों को तुच्छ समझकर इन्हें छोड़कर विरक्त होकर कर्मों को छोड़ दे।

जो योगी मनुष्य अरिष्ट लक्षणों को देखकर 'मृत्यु समीप आ गयी है' ऐसा जानकर योगाभ्यास में तत्पर हो कर शिवक्षेत्र का आश्रय ले। धैर्यवान् पुरुष वहाँ रहते हुये भी रोग आदि के बिना स्वयं भी प्राणों का त्याग कर दे।

उपवास करके अथवा अपने अंगों का शिवाग्नि में हवन करके अथवा तीर्थों में डुबकी लगाकर अपने शरीर को छोड़ दे। शिव शास्त्रोक्त विधि से जो अपने प्राणों को छोड़ता है, वह तत्काल मुक्त होता है, इसमें संदेह नहीं।

रोग आदि से विवश होकर जिसने शिवक्षेत्र का आश्रय लिया है और वह मर गया हो तो वह नि:संदेह मुक्त हो जाता है, जैसे उपवास आदि से हुयी मृत्यु को श्रेष्ठ कहा गया है। अत: शास्त्र पर विश्वास करने वाले को मन से इस क्रिया को करना चाहिए।

शिवनिन्दक का वध करके जो स्वयं भी घायल होकर जो इन न छोड़ने योग्य प्राणों को भी छोड़ता है, उसका पुर्नजन्म नहीं होता। शिव निन्दा करने वाले को मारने में असमर्थ जो स्वयं मर जाता है, वह इक्कीस कुलों के साथ स्वंय मुक्त हो जाता है।

जो शिवजी के लिये या शिवभक्त के लिये प्राणों को छोड़ता है, उसके समान कोई दूसरा पुरुष मुक्ति का अधिकारी नहीं है। उसकी संसार मण्डल से शीघ्र मुक्ति हो जाती है। इनमें से किसी एक उपाय का सहारा ले।

विधिवत् षडध्वशुद्धि किया हुआ पुरुष यदि मर जाता है, तो पशुओं की भाँति उसका क्रियाकर्म न करे। उसके पुत्र पौत्रादि को अशौच नहीं लगता। उसके शरीर को भूमि में गाड़ दे या पवित्र अग्नि में उसे जला दे या पवित्र जल में बहा दे। अथवा मिट्टी, लकड़ी की भाँति फेंक दे।

यदि इसके क्रिया कर्म करने की इच्छा हो, तो मंगल करे। शिवभक्तों को भोजन कराये। शिवभक्त सन्तान उसके धन की उत्तराधिकारी हो सकती है। ऐसी सन्तान न हो तो उस सम्पत्ति को शिव के लिये दे दे। उस धन सम्पत्ति को मूर्ख सन्तान को न दे।

॥ इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत सदाशिव उपासना पञ्चम परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ॥५॥

॥ शुभमिति ॥

❑❑❑

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी २२१००१

नमस्कार

PDF CREAT BY

RAJKUMAR RAMJI
SONI

SHIV-VIHAR COLONY
(DEVNAGERI) RAIPUR (C.G)
RAIPURA
MO:- 97544-23544
81036-97154

Thanks for Reading

All